MARJ-04

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

राजस्थानी लोक-साहित्य

MARJ-04

ISBN - 13/978-81-8496-146-1

MARJ-04

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

राजस्थानी लोक–साहित्य

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

अध्यक्ष

प्रोफेसर (डॉ.) नरेश दाधीच
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक/समन्वयक एवं सदस्य

प्रो. कल्याणसिंह शेखावत
परामर्शदाता, राजस्थानी कार्यक्रम
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

1. **डॉ. हीरालाल माहेश्वरी**
   पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
2. **डॉ. रघुराजसिंह हाडा**
   पूर्व प्रधानाचार्य, उच्च माध्यमिक विद्यालय (राजस्थान सरकार)
   झालावाड़ (राजस्थान)
3. **डॉ. गोरधनसिंह शेखावत**
   निदेशक, श्री कृष्ण सत्संग बालिका महाविद्यालय
   सीकर (राजस्थान)
4. **डॉ. अर्जुनदेव चारण**
   अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
   जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सम्पादन एवं पाठ्यक्रम–लेखन

सम्पादक

डॉ. एस. डी. चारण
प्रोफेसर अर पूर्व अध्यक्ष, (हिन्दी)
जय नारायणा व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

लेखक

डॉ. एस. डी. चारण — इकाई 1, 2, 3, 4, 7, 8, 9,10, 14
प्रोफेसर अर पूर्व अध्यक्ष, (हिन्दी)
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

डॉ. अर्जुन देव चारण — 11, 12
अध्यक्ष, (राजस्थानी)
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर

डॉ. रामप्रसाद दाधीच — 15
एसो. प्रोफेसर (से. नि.)
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास — 13
व्याख्याता
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

डॉ. (श्रीमती) धनन्जया अमरावत — 5, 6

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. (डॉ.) नरेश दाधीच	**प्रो. (डॉ.) अनाम जेटली**	**योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक	प्रभारी अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन : नवम्बर 2009 ISBN - 13/978–81–8496–146–1

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में 'मिमियाग्राफी' (चक्रमुद्रण) के द्वारा या अन्यथा पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

कुलसचिव, व.म.खु.विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित।
दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर द्वारा 500 प्रतियां मुद्रित।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

राजस्थानी लोक–साहित्य

इकाई सं.	इकाई रौ नाम	पृष्ठ संख्या
	खण्ड – I	
इकाई – 1.	लोक साहित्य : सामान्य सिद्धांत अर परिभासा	1
इकाई – 2.	लोक मानस अर लोक–वार्ता	11
इकाई – 3.	लोक–साहित्य अर अन्य विसय : पारस्परिक संबंध	20
इकाई – 4.	लोक–साहित्य : अध्ययन रा सम्प्रदाय	28
	खण्ड – II	
इकाई – 5.	लोक–गीत : परिभासा अर वर्गीकरण	36
इकाई – 6.	राजस्थानी लोक–गीत : विवेचन	45
	खण्ड – III	
इकाई – 7.	लोक–कथा : परिभासा, वर्गीकरण अर अभिप्राय	64
इकाई – 8.	राजस्थानी लोक–कथा : विवेचन	77
इकाई – 9.	लोक गाथा : परिभासा, वर्गीकरण, भारतीय परम्परा	89
इकाई – 10.	राजस्थानी लोक–गाथा : विवेचन	100
	खण्ड – IV	
इकाई – 11.	लोक–नाट्य : परिभासा अर वर्गीकरण	110
इकाई – 12.	राजस्थानी लोक–नाट्य : विवेचन	116
	खण्ड – V	
इकाई – 13.	राजस्थानी लोकोक्ति–साहित्य विवेचन	129
इकाई – 14.	राजस्थानी लोक–वाद्य	143
इकाई – 15.	राजस्थानी लोक–संस्कृति	153

सम्पादन – पाठ्यक्रम परिचय

देस–विदेस रा घणकरा विश्वविद्यालयां में स्नातकोत्तर स्तर रै पाठ्यक्रम मांय अेक प्रस्न पत्र रै रूप में 'लोक–साहित्य' रौ अध्ययन अध्यापन कराईजै। साथै–साथै शोध री सुविधा भी व्है। कैई विश्वविद्यालयां में तौ 'लोक–साहित्य' अेक सुतंतर विभाग रै रूप में व्है अर कठै ई कठैई किणी प्रमुख विसय रै सागै अेक प्रस्न–पत्र रै रूप में पढाईजै। लोक–साहित्य री भणाई अर इण विसय में करीजण वाळी सोध री दीठ सूं (समाज शास्त्र, नृतत्त्वशास्त्र, इतिहास, भाषा विज्ञान, मनोविज्ञान इत्याद) घणी महत्ता है। अठां रौ लोक–साहित्य अणूंतौ सांवठौ, समृद्ध अर संगीत री दीठ सूं घणौ सम्पन्न है। औ इज कारण है कै बरसोबरस विदेसी–विद्वान् अर प्रोफेसर इण प्रदेस रा लोक–साहित्य रै किणी न किणी पख बाबत सोध–करण नै राजस्थान आवै।

राजस्थानी लोक–साहित्य री भांत–भांत री विधावां बाबत पुख्ता जाणकारी करण सूं पैली लोक–साहित्य रै सैद्धांतिक पक्ष नै जांणणौ घणौ जरूरी है। लोक–साहित्य रै अध्ययन–विवेचन अर विस्लेसण सारू कैई इसा मापदण्डां–प्रतिमानां री ओळखांण जरूरी लखावै, ज्यांरै पांण आपां किणी देस–प्रदेस रै लोक–साहित्य री पुख्ता निरख–परख कर सकां। इण पोथी मांय लोक–साहित्य रै अध्ययन रा मूळ सिद्धांतां अर वां सिद्धांतां रै आधार पर राजस्थानी लोक–साहित्य री न्यारी न्यारी विधावां री बिगतवार जांणकारी दिरीजी है।

इकाई – 1

इण पोथी री पैली इकाई मांय लोक–साहित्य रै रूप बाबत चर्चा करीजी है। लोक–साहित्य रौ म्यांनौ कांई है? उण बिन्दु पर विचार करतां थकां बतायौ गयौ है कै 'लोक' सबद रा न्यारा–न्यारा कांई–कांई अर्थ हुय सकै। वेदां, ब्राह्मण–ग्रंथां, पौराणिक ग्रंथां, व्याकरण री पोथियां सूं उदाहरण दैय नै प्रमाणित करीजियौ है कै 'लोक' सबद कितरौ व्यापक है। औ इज लोक सबद साहित्य रै विसेसण रै रूप में प्रयुक्त हुय जावै, तद उणरौ अर्थ व्यापक रैवै कै नीं? इण पर भी विचार करीजियौ है। इणी'ज इकाई में नांमी गिरांमी विद्वानां री दीयौड़ी लोक–साहित्य री ठावकी–ठावकी परिभासावां सामी राखीजी है। आं परिभासावां रै पांण पाठक या अध्ययन' कर्ता लोक–साहित्य रै खरीकै स्वरूप री पिछांण कर सकै। इणी इकाई मांय औ भी साफ करीजियौ है कै इसा किसा किसा सिद्धांत है? ज्यां नै आधार बणायनै किणी देस या कै परदेस रै लोक–साहित्य री सांतरी परख करीज सकै। इण भांत इण इकाई में लोक–साहित्य रै सिद्धांत–पक्ष री सामग्री समेटीजी है।

इकाई – 2

पोथी री दूजी इकाई मांय औ बताईजियौ है कै लोक–मानस सूं कांई मतलब है? मानवी रौ मस्तिस्क अर उणमें उपजण वाळा भांत–भांत रा भाव–विचार इज उणनै इण जगत रा दूजा जीवां सूं सिरै सिद्ध करै। मिनख सोच–विचार सकै जद कै दूजा प्राणियां कनै आ मानसिक सगती नीं है कै वे किणी बात या कै बिन्दु माथै सोचै–विचारै अथवा उणरै अछाई या कै बुराई बाबत निर्णय ले सकै। बडा–बडा विद्वान, विचारक अर मनोवैज्ञानिक लोक–मानस बाबत कांई–कांई विचार दरसाया है, आं पहलुवां पर भी इणी इकाई में विचार करीजियौ है।

लोक–वार्ता (Folk Lore) नै भलीभाँत समझियां बिना लोक–साहित्य री साची परख संभव नीं है। इण सारू दूजी इकाई में लोक–वार्ता पर भी विचार करीजियौ है। अधिकारी विद्वान लोक–वार्ता बाबत कांई विचार राखै, वां पर भी विचार करीजियौ अर सार रूप आ बात सामी आई कै लोक–साहित्य लोक–वार्ता रौ अेक अविभाज्य अंग भी है अर लोक वार्ता री घणमूंघी मणियां नै आपरी ओट में ठावी ठौड़ दैय खतम हूवण सूं बचाई है।

इकाई – 3

तीजी इकाई इण सत नै उजागर करै कै लोक–साहित्य रौ ज्ञान–विज्ञान री जाणकारियां देवणिया दूजा घणकरा विसयां सागै कांई अर कितरौ संबंध है? लोक–साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां सूं आंचलिक इतिहास री अनेकू जाणकारियां मिळै, जकां रौ वर्णन–विवेचन राज्याश्रित साहित्यकार आपरी पोथियां में चावतां थकां ई नीं कर सकिया। इणी भांत लोक–साहित्य रै कलेवर में मनोविज्ञान, नृतत्त्व विज्ञान अर समाजसास्त्र री दीठ सूं ई घणी महताऊ सामग्री समायौड़ी है।

इकाई – 4

लोक–साहित्य बाबत दुनिया रा विद्वानां भांत–भांत सूं विचार राख्या है। लोक–साहित्य रौ अध्ययन किण–किण दीठ सूं व्है सकै? लोक–साहित्य में उपलब्ध सामग्री रौ कितरी भाँत सूं उपयोग कर्‌यौ जा सकै? इत्याद बाबत विचार करतां–करतां भारतीय अर विदेसी विद्वानां लोक साहित्य रै अध्ययन–विवेचन रै मांमलै नै लेयनै न्यारा–न्यारा सम्प्रदाय थरपिया है। इण पोथी री चौथी इकाई में लोक–साहित्य रा अध्ययन रा न्यारा न्यारा (भारतीय अर पास्चात्य) सम्प्रदायां री जांणकारी दिरीजी है।

इकाई – 5

लोक–साहित्य री सबळी विधा–लोक – गीत है। आ इज अेक अैड़ी विधा है, जकी आज दिन सामाजिक संस्कारां अर समारोहां रै साथै जुड़ियोड़ी है। पोथी री पांचवी इकाई में लोक–गीतां री परिभासावां देयनै औ दरसाईजियौ है कै लोक–गीतां रा वर्गीकरण करण रा कांई–कांई आधार हुय सकै।

इकाई – 6

छठी इकाई में राजस्थानी लोक–गीतां रा उदाहरण देयनै विसयवार विवेचन करीजियौ है। इण इकाई रै अंत में कैई घण चावा राजस्थानी लोक–गीत ई दीना है, ताकि पाठक नै गीतां रै मूळ पाठ रौ परिचय भी हुय जावै।

इकाई – 7, 8

इकाई सात में बतायौ गयौ है कै किसी कथा नै लोक–कथा मानणी चाहीजै। विद्वानां लोक – कथा री कांई–कांई परिभासावां दीनी है, इणरौ विवरण भी इणी इकाई में मिळै। आ इकाई लोक – कथा रै वर्गीकरण रा आधारां री भी जांणकारी देवै। अेक दीठ सूं आ इकाई इण पोथी री घण महताऊ इकाई गिणीज सकै। इणमें औ बताईजियौ है कै लोक–कथा री बणगट में अभिप्राय (Motif) रौ कितरौ महत्त्व व्है। विद्वानां बतायौ है कै संसार भर री लोक–कथावां में मिळणवाळी

समानता अभिप्रायां (Motifs) रै कारण इज है। अै अभिप्राय (Motifs) इज आखै संसार री लोक–कथावां में सूत्र रूप सूं मिळै अर आंरी डोर इज लोक–मानस नै आपस में बांधती निजर आवै। इण इकाई में बतायौ गयौ है कै अभिप्राय (Motif) लोक–कथा रै बणघट में कितरा सहायक व्है? इण इकाई में अभिप्रायां (Motif) री सूची भी दी गई है। आठवीं इकाई मांय राजस्थानी लोक–कथावां रौ प्रतिपाद्य री दीठ सूं विवेचन करीजियौ है।

इकाई – 9, 10

नवमी अर दसवीं इकाई लोक गाथावां सूं संबंधित है। नवमी इकाई में बतायौ गयौ है कै कुणसा विद्वान् लोक–गाथा री कांई परिभासा दीनी है। इणी'ज इकाई मांय लोक–गाथावां री समृद्ध भारतीय परम्परा बिगतवार लिखीजी है। भारतीय लोक–गाथावां री कांई–कांई विसेसतावां है? आं रौ ब्यौरौ भी इणी'ज इकाई नै पढियां मिळै। राजस्थान एक इसौ प्रदेस है जठै सबसूं ज्यादा लोक गाथावां रौ चलन रियौ है। दसवीं इकाई में खास–खास राजस्थानी लोक गाथावां रा प्रतिपाद्य लिपिबध हुया है। अै राजस्थानी लोक–गाथावां किसा–किसा क्षेत्र में घणी प्रचलित है? अर आनै कैवण री वाळा कुण–कुण अर किसी–किसी जाति रा है? इण बाबत भी इण इकाई में विचार हुयो है।

इकाई – 11

पोथी री इगियारवीं इकाई लोक–नाट्य सूं संबंध राखै। नाटक अर लोक–नाट्य में कांई फरक व्है? वे किसा–किसा तत्त्व है, जिणसूं कोई नाट्य रचना लोक–नाट्य गिणीजै? कुणसा विद्वान् लोक–नाट्य नै किण सबदां में परिभासित करियौ है? आ बात भी इण इकाई में बताईजी है। लोक–गाथावां री भाँत लोक–नाट्यां रै चलन री भी भारत में घणी जूनी परम्परा रैयी है। इण जुगां जूनी भारतीय लोक–नाट्य परम्परा नै इण इकाई में उजागर कीनी है। इण इकाई में औ भी लेख मिळै कै लोक–नाट्यां रौ सामाजिक दीठ सूं कांई अर कितरौ महत्त्व है? लोक–साहित्य रा नामी विद्वानां आप आपरै हिसाब सूं लोक–नाट्यां रा कितरा भेद बताया है? उणरौ खुलासौ भी इण इकाई में कीनौ है।

इकाई – 12

इण पोथी री बारहवीं इकाई में राजस्थानी लोक–नाट्यां पर विस्तार सूं चर्चा करीजी है। राजस्थान प्रदेस मांय प्रचलित भांत–भांत रा लोक–नाट्यां री ओळखांण कराय नै आं लोक–नाट्यां री विसय–वस्तु बाबत तथ्यात्मक जांणकारी दी गई है। इणी इकाई में आ बात ई बताईजी है कै राजस्थान प्रदेस में किसी सैली रा लोक–नाट्य घणा चावा हुया अर क्यूं ? इणां री प्रस्तुति–पद्धति नै प्रगट करण रौ ई प्रयास करीजियौ है। इणमें औ ई बताईजियौ है कै आज दिन ई राजस्थान रा लोक–नाट्य राजस्थान रा जन–जीवन रा इज अभिन्न अंग है, क्यूं कै आंमै आज रै समाज री कैई की समस्यावां रा लेखा – जोखा अर संदेस रूप वांरा समाधान करीजिया है। राजस्थान रा अंजस जोग वीर–धीर चरित्रां रै पांण अै ख्याल आज अर बीतोड़ै काल रै सागै सम्बन्ध जोड़ण रौ जबरौ काम सारता लखावै अर औ इज कारण है कै आज ई लोग रात–रात भर जाग नै आं ख्यालां रौ आणंद उठावै। अै ख्याल गुमेजजोग इतिहासू जन–नायकां री साख भरै, आज रा जथारथ नै सामी राखै अर ऊजळै भविस नै संवारण री सीख दैवै । इणी इकाई मांय औ तथ्य भी प्रगट कीनौ है कै राजस्थान रा इसा किसा–किसा लोक–नाट्य है, जकां नै देखण अर सुणण

खातर विदेसी विद्वानां अर सोध – खोज करणवाळा नै सात समंदर पार सूं आ धोरां री धरती तांई खींच लावै।

इकाई – 13

लोकोक्तियां सूं आंपणी बात साथै पुख्तापणै री छाप लाग जावै। पोथी री तेरहवीं इकाई लोकोक्तियां रै तीनू ई भेदां बाबत है। घणकरा विद्वानां लोकोक्तियां रा तीन भेद कीना है –

(1) कहावतां (2) पहेलियां (3) मुहावरा

आं तीनूं भांत री राजस्थानी लोकोक्तियां रौ विसयवार वर्गीकरण कर अर ओपता उदाहरण देयनै विवेचन इण इकाई में हुयौ है।

इकाई – 14

राजस्थानी लोक–वाद्यां रौ आखै संसार में जबरौ आकरसण। अठै इसा लोक–वाद्य प्रचलित है कै वांरा बजावणवाळा भी अबै नीं मिळै। आज दिन ई अनेकूं विदेसी विद्वान् आं लोक–वाद्यां बाबत जांणकारी लेवण सारू राजस्थान आवता रैवै। आज विदेसां में राजस्थानी लोक–कलाकार लोक–गीतां अर लोक–वाद्य–वादन सूं लोगां नै रिझावै। पोथी री चउदवीं इकाई राजस्थान रा खास–खास लोक–वाद्यां रौ परिचय करावै। अै भांत–भांत रा लोक–वाद्य किण तरै रा लोक–वाद्य गिणीजै? इण बाबत भी पुख्ता जांणकारी इण इकाई में दिरीजी है।

इकाई – 15

राजस्थानी लोक संस्कृति रौ डंको देसां–परदेसां में बाजै। पोथी री पन्द्रहवीं इकाई रै सरूआत में बताईजियौ है कै संस्कृति नै कीकर परिभासित कर सकां? लोक संस्कृति रौ कांई स्वरूप व्है? अर लोक–संस्कृति रै निर्माण री कांई प्रक्रिया व्है? आं सगळी बातां रौ खुलासौ इण इकाई में व्हियौ है। राजस्थानी लोक–संस्कृति अर राजस्थानी लोक–साहित्य रै आपस रा संबंधां नै भी इण इकाई में उजागर कीना है। आज दिन राजस्थानी लोक–संस्कृति सांमी कांई–कांई चुनौतियां है अर कांई–कांई खतरा है? इण बिन्दु पर भी विचार करीजियौ है।

सार औ कै राजस्थानी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम री आ पोथी लोक–साहित्य रा सैद्धांतिक पक्ष नै उजागर करती थकी राजस्थानी लोक–साहित्य, लोक–वाद्यां अर राजस्थानी संस्कृति री प्रामाणिक जांणकारी फरावै।

इकाई – 1

लोक साहित्य : सामान्य सिद्धांत अर परिभासा

1.0 उद्‌देस्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 लोक–सबद रा अरथ

1.3 लोक सबद री प्रयोग प्राचीनता

1.4 लोक अर लोक तत्त्व (भारतीय दीठ)

1.5 लोक अर लोक तत्त्व (पास्चात्य दीठ)

1.6 लोक–साहित्य रौ म्यांनौ

1.7 लोक–साहित्य अर 'शिष्ट' साहित्य रौ भेद

1.8 सार

1.9 अभ्यास – रा सवाल

1.10 संदर्भ ग्रंथ

1.0 उद्‌देस्य

'लोक' सबद रो म्यांनौ कांई है ? समाज में 'आभिजात्य' अर 'लोक' नांम सूं न्यारा–न्यारा वर्ग क्यूं है ? आं दोनूं वर्गं रा कांई–कांई अरथ हुय सकै ? समाज में यां दोनूं फांटां रौ मूळ आधार कांई है? अै दोनूं वर्ग एक–दूजै रा पूरक है या कै आं में आपस में कीं मेळ है या नहीं ? अर जे आं में कीं मेळ है तो किण सींव तांई ? इणामें फरक री भींत कितरी जाडी, मजबूत अर सबळ है ? फरक–फांटे री इण भींत नै किणी भाँत तोड़ सकां कै लांघ सकां कै नहीं ? विद्वानां री दीठ सूं 'लोक' सबद रा कितरा–कितरा अरथ हुय सकै ? कांई 'लोक' नै 'आभिजात्य' समुदाय में परिगणित कर सकां कै नहीं ? अर जे परिगणित कर सकां तौ उणरौ कांई आधार व्हैला अर कांई सीमावां व्हैला ? इणी भाँत 'आभिजात्य' समुदाय में गिणीजणिया लोगां रै मन–मानस में 'लोक' रा कीं भी तत्त्व परगट कै अपरगट रूप सूं विद्यमान व्है कै नहीं ? अैड़ा घणकरा मूळ सवालां रा पडूतर देवणौ–इण इकाई रौ उद्‌देस्य है। जद तक 'लोक' सबद रौ पारिभासिक दीठ सूं ? अरथ समझ नीं आवैला, तद तक 'लोकसाहित्य' नै नीं तौ समझ सकांला अर नीं ई लोक–साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां (यथा–लोक गीत, लोक–कथा, लोक गाथा, लोक नाट्य, आडियां अर ओखांणा इत्याद) रौ साहित्यिक–सांस्कृतिक मूल्यांकन कर सकांला। इण सबरै सारू सै सूं पैली 'लोक' सबद रौ अरथ समझणौ जरूरी है।

1.1 प्रस्तावना

कैवण नै तौ किणी कह दियौ कै मिनख मूळतः पसु है, पण इण तथ्य में कीं घणौ दम–खम नीं है। क्यूं कै कैई मूळभूत विसेसतावां मिनख नै दूजा जिनावरां सूं सिरै थरपै। भाँत–भाँत

री बातां, तथ्यां अर स्थितियाँ पर गहराई सूं विचार करण वाळी अर वां बाबत तर्क–कुतर्क करण वाळी बुद्धि, हियै–उपज्यौड़ा भावां अर मन–मानस उपज्यौड़ा विचारां नै मन माफिक परगट करण में समर्थ वांणी मिनख नै दूजा जीव–जिनावरां सूं महताऊ थरपण अर मानण रौ लूंठौ अर पुख्तौ आधार है। यूं तौ ओर भी कैई विसेसतावां ई मिनख रै सिरैपण री ओळखांण करावै। बुद्धि अर भासा–आं दो रै पांण इज मिनख री ओळखांण स्रस्टि रै सिरै प्रांणी रै रूप हुय सकै। समाज रौ औ सिरै गिणीजणियौ प्रांणी (मिनख) भेळप में रैवण रा कीं कुरब–कायदा बणाया।

भेळप में रैवण सूं मिनख खुद नै सुरक्षित महसूस करण लागौ। भेळप री इण भावना रै पांण इज गाँवां–खैड़ां अर नगरां री थरपणा हुई। वां दिनां कोई छापाखांना तौ हा कोनी। 'धन अंटे अर विद्या कंठे' जुगां जूनी कहावत है। बूडा–बडेरां रा अनुभव गीतां–कथावां–आडियां–ओखांणां रै सीगै पीढियां लग पूगता–पुगाईजता अर इण भाँत नुंवी पीढी रौ मारगदरसण हूवतौ। अै सगळी बातां लोक–साहित्य री न्यारी न्यारी विधावां में आज लग संजोयौड़ी है– सुरक्षित है। इण लोक–साहित्य बाबत विचार करण सूं पैली इण 'लोक' नै समझणौ जरूरी है। इण 'लोक' बाबत आद–अनाद काल सूं विद्वानां, विचारकां अर साहित्यकारां भाँत–भाँत सूं आपरा विचार राख्या है। आं मांनतावां रै पांण इज इण विसाळ–व्यापक 'लोक' नै समझ सकां अर समझाय सकां।

1.2 'लोक' सबद रा अरथ

सुरगां सूं ई नामी गिणीजण वाळी भारत भोम में आर्य–भासावां रौ आदि रूप संस्कृत में मिळै। 'लोक' सबद भी संस्कृत में तत्सम रूप में मिळै। 'लोक' सबद री व्युत्पत्ति बतावता थका विद्वान् कैवै कै 'लोक' सबद 'लोकृदर्शने' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगावण सूं बणै।[1] देववांणी संस्कृत में इण घात सूं 'देखण रै भाव' रौ बोध व्है। इण हिसाब सूं 'लोक' सबद रौ अरथ हुयौ–देखणवाळौ। वाणी संस्कृत में घात इण व्युत्पत्ति मुजब लखावै कै वो सगळौ जन–समूह, जकौ देखण रौ कांम करै, वो इज 'लोक' गिणीजै।

न्यारी–न्यारी पोथियां, जुदा–जुदा सबद–कोसां में 'लोक' सबद रा घणा–घणा अरथ दीयौड़ा है, ज्यां मांय सूं कुछैक अरथ अर परिभासावां इण मुजब हैः–

'हलायुध कोश' में 'लोक' सबद रा इतरा अरथ बतायौड़ा है।[2]

1. भुवन, 2. जगत्, 3. जन, 4. मनुष्य।

संस्कृत भासा रा विद्वान् श्री वी. एस. आप्टे 'लोक' सबद रा अरथ इण भाँत बताया है–

''1. संसार 2. विश्व का विभाग, 3. पृथ्वी, 4. मानव–जाति, 5. प्रजा, 6. समूह, 7. प्रान्त, 8. दृश्य, 9. कक्ष, 10. सात और चौदह की संख्या।[3]''

'हिन्दी शब्द–कल्पद्रुम' रा संपादक पंडित रामनरेश त्रिपाठी 'लोक' सबद रा अरथ बतावता

1. सिद्धांत कौमुदी (वेंकटेश्वर प्रेस, मुंबई 1989 पृ. 416)
2. हलायुध–कोश, सं. जयशंकर जोशी, पृ. 581
3. The Practical Sanskrit English Dictonary V.S. Apte P. No. 820

लिखै–

1. लोग, 2. मनुष्य, 3. व्याकरण, 4. यम, 5. यश, 6. नाम, 7. कीर्ति, 8. सन्तान, 9. सृष्टि के विभाग।[1]

अंग्रेजी भासा रै घणै चावै सबद कोस में 'लोक' (Folk) सबद नै इण भाँत अरथायौ है–[2]

1. People in general or any part of them without distinction

2. The Member's of one's family, one's relatives.

3. A Race of people a nation, a community.

1.3 'लोक' सबद री प्रयोग प्राचीनता

घणमानीता अर जग–चावा सबदकोसां में दीयौड़ा 'लोक' सबद रा भाँत–भाँत रा अरथां सूं जाणकारी मिळै कै सरूपोत सूं आज लग 'लोक' सबद 1. जन, 2. परजा, 3. मिनख जात, 4. मांनखै रौ पर्यायवाची रह्यौ है।

ऋग्वेद सब सूं जूनौ अर सिरै ग्रंथ गिणीजै। ऋग्वेद रै सै सूं चावै सूक्त 'पुरुष–सूक्त' में 'जीव' अर 'स्थान' आं दो अरथां में 'लोक' सबद रौ प्रयोग हुयौ है–

''नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौ समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिर्दशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन्।।[3]

इणरै टाळ ऋग्वेद में इज दूजी ठौड़ 'लोक' 'सबद' 'जन' रौ अरथ बतावतौ लखावै–

''य इमे रोदसी उभे अहमिंद्रमतुष्टवं। विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं ब्रह्मोदं भारतं जनं।''[4]

इणीज भाँत यजुर्वेद में 'लोक' रै विराट रूप री कल्पना करीजी है। 'लोक' नै समाज अर साक्षात् ईस स्वरूप मानता थकां लिखियौ है कै (सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्ष सहस्त्रपात)[5] औ 'लोक' (समाज) इज पुरुष रूप ईश्वर है। इणरै हजारूं मुख, हजारूं आंख्यां अर हजारूं ई पग है।

वेदां रै पछै जैमिनीय उपनिषद् ग्रंथ में ई 'लोक' सबद आयौ है।

''बहु व्याहितो वा अयं बहुतो लोकः। क एतद् अस्य पुनरीहतो अयात्।''

अठै औ खुलासौ करीजियौ है कै भाँत–भाँत सूं सगळै पसरीयोड़ौ 'लोक' हरैक ठौड़ पसरयौड़ौ है अर हरैक चीज–बस्त में ई 'लोक' रौ नजरियौ इज है। आपां कितरी कोसीस करलां पण इण 'लोक' री पूरी जांणकारी नीं पाय सकां।

बखत परवांण 'लोक' सबद रै व्यापक अरथ में फरक लखावण लागौ है। किणी बखत

1. हिन्दी शब्द कल्पद्रुम– सं. पंडित रामनरेश त्रिपाठी, पृ. 634–635
2. Webster's New Twentieth Centuary Dictionary, P. 681
3. ऋग्वेद, 10/90/14
4. यजुर्वेद 31
5. ऋग्वेद, 3/3/12

भगवान अर संपूरणता रौ बोध करावणियौ 'लोक' सबद कीं छोटी सींवां में समेटीजग्यौ। आखौ मानखौ (समाज) न्यारा–न्यारा फांटां में फंटग्यौ। हरैक देस–दिसावर रै मांनखै रौ कोई एक वरग कीं दूजी भाँत री जिंदगाणी जीवण लागौ तौ दूजौ वरग आपरी न्यारी साख बणावण लागौ। आपरै बुध–बळ रै पांण समाज में आपरी टणकाई री छाप छोडणिया खुदोखुद नै ऊँचा अर पूजनीक मानण लागा अर दूजा घणकरा लोगां नै ओछा अर छोटा गिणणलागा। वे आपरी जिंदगाणी वेदां री रीत–नीत सूं जीवण लागा। मोटा विधि विधान थरपीजिया। पोथी–पांनड़ां रै पांण आपरी जोरावरी थरपणियां आं मिनखां रै टाळ साधारण मानखौ आद–जुगाद सूं चालती लोक–लीकां (परम्परावां) पर आपरी जिंदगाणी री गाड़ी गुड़कावण लागौ। दोनूं ई वरगां री जीवण–सैली अर मानतावां में जमी–असमांन रौ फरक लखावण लागौ। समाज दो जुदा–जुदा वरगां में बंटग्यौ। इणमें आपरी बुध अर तर्क रै पांण एक वरग 'वेद रीत प्रधान' समाज कहीजण लागौ तौ दूजौ वरग हिरदै री भावुकता अर परम्परावां रै पाण 'लोक रीत प्रधान समाज' गिणीजण लागौ। इण भाँत लूंठै भू भाग रौ रैवासी 'लोक' वेद–रीत सूं न्यारौ हूय'र सीमित अरथ रौ बोध करावण लागौ। वेद–रीत सूं जिंदगाणी जीवणिया मिनख अति बुद्धिवादी हूयग्या। वे ग्यांन, पंडिताई अर दरसण रै गरब सूं गरवीजग्या। थोथी पोथियां रै ग्यांन आगै वांरी दीठ में बाकी सै कीं सारहीण लखावतौ। इणरै विपरीत साधारणीक जन जुगां जूनी परम्परावां नै जिंदगाणी जीवण सारू काठी पकड़ राखी ही। इण वरग रै मानखै री दीठ में बूढा–बडेरां रौ अनुभव अर ग्यांन बत्तौ, घणौ सिरै हो। इसा लोग मिनख परम्परावां नै सिरै गिणियौ।

मिनखा–जूण में जीवण री पद्धति रा दो न्यारा–न्यारा मारग थरपीजग्या–

1. **वेद रीत प्रधान**
2. **लोक–लीक प्रधान**

पाणिनी भी वेद सूं न्यारी 'लोक' री सुतंतर सत्ता नै स्वीकारै। आप आपरै व्याकरण ग्रंथ में सबदां री उत्पत्ति बाबत विचार करतां थकां पैलड़ौ औ तथ्य उजागर कीनौ कै अनेकूं सबदां रौ वेद पोथियां में ओ सरूप है पण 'लोक' में बां सबदां रौ जुदा–जुदा सरूप प्रचलित है। आगै रै बरसां में महाभाष्यकार पतंजलि विद्वान् 'लोक' में प्रचलित 'गौ' (गाय) सबद रा अनेकूं रूपां री चरचा आपरै ग्रंथ में करी है–

''केषां शब्दानाम् ? लौकिकानां च। एकैस्येव शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशाः। तद्यथा गौरित्यस्य शब्दस्य गावी–गोणी–गोता–गोपो– तालिकेत्येवमादयोऽपभ्रंशां।''

इतरौ इज नीं नाट्यसास्त्र रा रचणहार भरतमुनि 'नाट्यधर्मी अर 'लोक धर्मी' प्रवृत्तियाँ रौ उल्लेख करनै 'लोक' री आपरी न्यारी निरवाळी सत्ता नै स्वीकारी है। 'महाभारत' जिसै लूंठै ग्रंथ रा सिरजणहार महर्षि वेद व्यास जी 'लोक' सबद रौ प्रयोग 'जन साधारण' रै अरथ में करियौ है।

इणी'ज प्रसंग में वेद व्यास आदि पर्व में 'लोक' री महत्ता नै मांनता देवता थका लिखै **(प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः आदि पर्व 1/101–2)** कै 'लोक' नै भली भाँत

जाणणवाळौ इज सही जाणकार गिणीजै।

श्री कृष्ण भगवान भी 'श्रीमद्भागवत गीता' में लोक–संग्रह माथै बळ दीयौ है। बे वीरवर अरजुन नै उपदेसता थका फरमावै–

''कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।

लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि।।''

–गीता 3/20

संस्कृत रै पछै प्राकृत अर अपभ्रंश सावां में 'लोकजत्ता' (लोकजातरा) अर 'लोअप्पवाय' लोकापवाद जिसा सबदां रै प्रयोग सूं 'लोक' री महत्ता उजागर व्है। भगवान बुद्ध आपरा धरम रौ प्रचार–प्रसार करतां थकां बतायौ कै मिनख–मात्र 'लोक' री श्रेणी में गिणीजै। अठां तक कै प्रजापालक नरपति अशोक आपरा सिलालेखां में समस्त प्रजाजन नै 'लोक' सबद सूं संबोधित करिया है।

1.4 लोक अर लोक–तत्त्व (भारतीय दीठ)

इण विवरण सूं ज्ञात व्है कै वेद–विरोधी हूवतां थकां ई 'लोक' सबद सरूपोत सूं व्यापक अरथ रौ बोध करावतौ रियौ है, पण 'साहित्यिक विसेसण (लोक–साहित्य) रै रूप में परोटीजियोड़ौ 'लोक' सबद–इत्तो विसदार्थी नीं है। आगै केई इसी परिभासावां राखीजी है, जिणसूं औ पतौ चालै कै साहित्य–विसेस रौ बोध करावणियौ 'लोक' सबद रौ इण संदर्भ में कांई मतलब है ? हिन्दी रा चावा विद्वान् आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 'लोक' सबद नै समझावता लिखै–

''लोक शब्द का अर्थ 'जनपद' या 'ग्राम्य' नहीं है, बल्कि नगरों और गाँवों में फैली हुई वह समूची जनता है जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है। ये लोग नगर में परिष्कृत, रुचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएँ आवश्यक होती हैं, उनको उत्पन्न करते हैं।''[1]

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा संपादित 'हिन्दी साहित्य कोश' भाग एक में लोक–साहित्य मर्मज्ञ प्रोफेसर सत्येन्द्र 'लोक–तत्त्व' पर विचार करतां खुलासौ करियौ है कै–लोक–कदैई पिंडताई रौ घमण्ड नीं राखै अर परम्परा में जिंदगाणी जीवै।

''लोक' मनुष्य–समाज का वह वर्ग है जो आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना और पांडित्य के अहंकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है। ऐसे लोक की अभिव्यक्ति में जो तत्त्व मिलते हैं, वे लोक–तत्त्व कहलाते हैं।

उड़िया भासा रा विद्वान रै मुजब –

''लोक गीत उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा

1. जनपदः वर्ष 1, अंक 1, पृ. 65, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

सुसभ्य प्रवाहों से बाहर रहकर कम या अधिक रूप में आदिम अवस्था में निवास करते हैं।''[1]

'लोक' सबद पर डा. वासुदेवशरण अग्रवाल गहराई सूं विचार करियौ है। लोक–साहित्य रा अध्येता डा. अग्रवाल 'लोक' नै जिंदगाणी रौ महासमन्दर मांनै। 'लोक' इज देस रौ अमर स्वरूप व्है। बे मांनै कै 'लोक' रौ जीवण विधि विधान रा कायदां सूं बंधियोड़ौ नीं हुय'र सुतंतर व्है। आपरै विचार मुजब नागरिक अर ग्रामीण– दोनूं ई भाँत री संस्कृतियाँ में 'लोक–तत्त्व' किणी न किणी अंस में सदा विद्यमान रह्या करै। आप 'शास्त्र' अर 'लोक' रौ भेद भी दरसायौ है। आप आछी तरह समझावै कै 'शास्त्र' प्राचीनता री प्राचीर सूं जकड़ीजियोड़ौ है जदकै नूतनता 'लोक' रौ कंठहार है। 'शास्त्र' में बुद्धि–बळ अर 'लोक' में हियै री हूँस व्है। आप खुलासौ करै कै बुद्धि री गळियां में अळूझियोड़ै 'शास्त्र' में संकळाई है जद कै 'लोक' दीठ री पूग सूं ई बत्तौ पसरियौड़ौ महा समन्दर है।

''लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है, उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोक राष्ट्र का अमर स्वरूप है, लोक कृत्स्न ज्ञान और सम्पूर्ण अध्ययन में सर्व शास्त्रों का पर्यवसान है। अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है। लोक, लोक की धात्री सर्वभूत माता पृथिवी और लोक का व्यक्त रूप मानव, यही हमारे नये जीवन का अध्यात्मशास्त्र है। इसका कल्याण हमारी मुक्ति का द्वार और निर्माण का नवीन रूप है। लोक–पृथिवी–मानव, इसी त्रिलोकी में जीवन का कल्याणतम रूप है।[2]

'लोक' अर 'शास्त्र' रौ भेद दरसावतां डा. वासुदेवशरण अग्रवाल लिखै

''किसी व्रत, नियम या छन्द के भीतर बँधा हुआ जो धार्मिक जीवन है वह शास्त्रीय या मार्गीय या नियमानुगत कहा जायेगा। किन्तु इसके अतिरिक्त जो शास्त्रीय सीमाओं और व्रतों से व्यक्तिरिक्त है, जिसे अथर्ववेद के शब्दों में व्रात्य–जीवन कहेंगे, वह लोक–धरातल पर विकसित होने वाले समाज का विराट जीवन माना जायेगा। **XXXX** शास्त्र परिष्कृत उपवन है और लोक अरण्य है। शास्त्र की दृष्टि बुद्धि के मंथन का फल है। लोक की दृष्टि हृदय के मंथन से मिलने वाला वरदान है। हृदय और बुद्धि का अन्तर ही लोक और शास्त्र का अन्तर है, जैसा कि गोसांईजी ने कहा है– ''हृदय सिन्धु मति सीप समाना।''[3]

माळवी लोक–साहित्य रा गुणी अध्येता डा. श्याम परमार री दीठ सूं साधारण जन समाज इज 'लोक' व्है। आप साहित्यिक रूप में आयौड़ा 'लोक' सबद री सीमावां भी निर्धारित करता आपरी पोथी 'भारतीय लोक–साहित्य' में टिप्पणी करै–

''लोक साधारण जन–समाज है, जिसमें भू–भाग पर फैले हुए समस्त प्रकार के मानव सम्मिलित हैं। यह शब्द वर्ग–भेद रहित, व्यापक एवं प्राचीन परम्पराओं की श्रेष्ठ राशि सहित

---

1. हिन्दी साहित्य कोश– संपादक डा. धीरेन्द्र वर्मा, पृ. 747 (प्रोफेसर सत्येन्द्र रा सबदां में)
2. .... The people that live in more or less primitive condition outside the sphere of sophisticated influence.
3. सम्मेलन पत्रिका (लोक संस्कृति विशेषांक, 2010) डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृष्ठ 65

अर्वाचीन सभ्यता, संस्कृति के कल्याणमय विकास का द्योतक है। भारतीय समाज में नागरिक एवं ग्रामीण दो भिन्न संस्कृतियों का प्रायः उल्लेख किया जाता है, किन्तु 'लोक' दोनों संस्कृतियों में विद्यमान है। वही समाज का गतिशील अंग है। **XXXX** आधुनिक साहित्य की नवीन प्रवृत्तियों में 'लोक' का प्रयोग गीत, वार्ता, कथा, संगीत, साहित्य आदि से युक्त होकर साधारण जन–समाज, जिसमें पूर्व–संचित परम्पराएँ, भावनाएँ, विश्वास और आदर्श सुरक्षित हैं तथा जिसमें भाषा और साहित्यगत सामग्री ही नहीं, अपितु अनेक विषयों के अनगढ़ किन्तु ठोस रत्न छिपे हैं, के अर्थ में होता हैं।''[1]

1.5 लोक अर लोक तत्त्व (पाश्चात्य दीठ)

अंगरेजी भासा में 'लोक' सबद रौ समानार्थक सबद 'फोक' (Folk) है। इण 'फोक' (Folk) सबद रौ पूर्व रूप (Folc) मांनीजियौ है। औ सबद 'फोक' (Folk) ऐंग्लो सैक्सन रौ सबद है। जर्मन भासा में इणरौ समानार्थी सबद 'फोक' (Folk) चावो है। अंगरेजी में औ सबद (Folk) असंस्कृत, असभ्य अर मूढ़ (मूरख) समाज या जाति/वरग रौ बोध करावणियौ गिणीजै। पण कठैई–कठैई अर कदै ई कदै ई किणी देस रौ सगळौ मानखौ अर जन साधारण इसौ अरथ बोध करावण सारू ई इण सबद (Folk) नै बातां–बिगतां में काम में लैवै। 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' रै मुजब आदू (आदिम) समाज में तौ उण समाज रा सगळा सदस्य 'लोक' (Folk) इज गिणीजै, इण सबद रै विस्तार में सभ्य रास्ट्र री समूची जनसंख्या इणमें आ जावै। पण जद इणरौ प्रयोग विसेसण रै रूप में व्है (ज्यूं–लोक–वार्ता Folk lore, लोकसंगीत Folk music, लोक–साहित्य (Folk Literature), तद इणरौ अरथ–बोध संकुचित व्है जावै। आं प्रसंगां में औ सबद 'ग्रामीण' या 'गंवारां' रौ बोधक व्है जावै, जका अणपढ है अथवा ज्यांनै मामूली सो आखर ग्यांन है। जकां री पढाई किणी विधि–विधानं सूं नीं हुई है। इसा लोग नगरां री संस्क्रति सूं न्यारा अर अळगा इज रैवै। विद्वान डा. बार्कर भी (Folk) सबद री व्याख्या करतां लिखै कै सभ्यता सूं दूर रहण वाळी सगळी जात रौ बोध ई इण सबद सूं व्है अर इण सबद सूं इज सुसंस्कारवान देस रा सगळा लोगां री ओळखांण ई कराईजा सकै।

1.6 लोक साहित्य रौ म्यांनौ

'लोक' सबद पर गहराई सूं विचार कर्यां पछै, ग्यान व्है कै तथाकथित इणी'ज 'लोक' सूं 'लोक' सारू अर 'लोक' री इज संपत्ति रूप लिखीज्यौ साहित्य 'लोक साहित्य' रै नांव सूं जांणीजै! औ तौ मुख–जबानी पसरै अर मुख–जबानी ई पीढियां लग चालतौ रैवै! औ सिलालेखां रौ साहित्य नीं हूयनै सिकतालेखां रौ साहित्य है। इणरा सारा स्वर अर आखर माटी रै कण–कण में रळियोड़ा–घुळियोड़ा है। इण साहित्य में समै रै साथ फैर बदळाव हूवतौ रहै, आ इज इणरी खासियत है। लोक साहित्य मिनख–जात री सरूआत जितरौ जूनौ अर अबार जलमियाड़ै टाबर जितरौ नुवौ–निरवाळौ व्है। औ साहित्य इज आमजन रै अंतस श्रद्धा उपजावै, हियै हूँस जगावै अर लूंठी सूं लूंठी अबखायां सूं भिड़ण री सगती सांचरै। लोक–साहित्य सम्पूर्णता रौ सूचक व्है, उणरी दीठ कदैई एकांगी नीं व्है। उणरै

1. जनपदः वर्ष 1, अंक 1, पृ. 65, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

मारफत सकळ रै भलै री बात कहीजै। राजस्थानी भासा में अैड़ी कितरी ई बातां जगचावी है, ज्यांरौ समापन जन–कल्याणकारी, मंगळकामनाकारी अर सुभ–वाची सबदां सूं व्है– ''हे दसामाता। उणनै तूठी ज्यूं सकळ नै ई तूठजै, अर फलांणै सूं रूठी जैड़ी किणी सूं मत रूठजे।'' इण साहित्य रै सुर में सगळां रै भलै री भावना है, पण किणी रै अमंगळ हूवण देवण री इच्छा तक नीं है। इण साहित्य नै इज काळजयी साहित्य कैय सकां। लोक–साहित्य में सम्पूरण लोक री सनातन री भावना उजागर हुई है। आज कोरा मनोविग्यांनी, समाज सास्त्री अर नृतत्त्वसास्त्री ई नीं, कैई नामचीन विग्यांनी ई आपरा आविस्कारां खातर सामग्री जुटावण सारू देस दिसावरां रै लोक–साहित्य में बिखरी –पसरी ग्यांन–मणियां नै खोज'र वां रै आधार पर आपरा विग्यांनी चमत्कार करण सारू आखता पड़ता दीसै।

1.7 लोक साहित्य अर 'शिष्ट' साहित्य रौ भेद

बुद्धि री धरा पर समाज दो वरगां में बंटयौड़ौ है एक 'शिष्ट' (पढ़िया–लिखिया) अर दूजो लोक। इणी परवांण विद्वानां साहित्य रा दो भेद थरपिया 'शिष्ट साहित्य' अर लोक–साहित्य। मोटा–मोटी फरक तौ औ इज कै 'शिष्ट साहित्य' (आभिजात्य साहित्य) अणूता भणिया–पढ़िया अर आपरा पोथी–ग्यांन सूं दबयौड़ा लोगां री बणावटी अभिव्यक्ति रौ फळ है, जद कै लोक–साहित्य अणपढ़ अर आदिम (असंस्कृत) गिणीजणवाळा मानखै री थाती है। 'शिष्ट साहित्य' पोथियां रै खजानै रूखाळीजै अर लोक–साहित्य मिनखां रै कंठां आपरी लोक–जातरा करै। 'शिष्ट साहित्य' प्रयत्न–साध्य व्है, जद कै लोक–साहित्य स्वतः प्रसूत। 'शिष्ट साहित्य' रौ सिरजणहार अेक–अेक आखर अर सबद रौ प्रयोग करण सारू अणूती माथा पच्ची करै अर तद कठैई जायनै एक ओळी लिखै–

''चरण धरत चिंता करत, चितवत च्यारूं ओर।

सुवरण को खोजत फिरत, कवि व्यभिचारी चोर।।''

पण लोक–साहित्यकार तौ आपरा मन री मौज सूं, अंतस रै भाव सूं लगोलग साहित्य सिरजणा करतौ रैवै। बठै सिस्ट साहित्य रचण में सोचियां–बिचार्यां कै ढबियां–बिना कांम पार नीं पड़ै अर लोक–साहित्य सिरजण में नदी रै रेळै ज्यूं अपणै आप सिरजण व्है ।

'शिष्ट' साहित्य (आभिजात्य साहित्य) रै सिरजणहार नै 'काव्य–शास्त्र' या ग्यान –पद्धतियाँ री जांणकारी व्हैणी जरूरी व्है, जद कै लोक–साहित्यकार नै इण भांतरै किणी 'शास्त्रीय' जाणकारी री दरकार नीं व्है। 'शिष्ट' साहित्य ग्यांन रै गरूर सूं जकड़ीजियौड़ौ दीसै पण लोक–साहित्य अन्तस रै आलोक सूं पळपळाट करतौ निगै आवै। 'शिष्ट' साहित्य (जिणनै दूजा सबदां में 'क्लिष्ट साहित्य' भी नांव दिरीज सकै) रा केई का गूठार्थ हर कोई नीं समझ सकै (ज्यूं कै दृष्टिकूट पद, उलटबाँसियां इत्याद) पण इणरै ठीक विपरीत लोक–साहित्य री किणी ओळी या कै सबद नै समझण खतर किणी भाँत रौ मानसिक व्यावयाम करण री जरूरत नीं व्है। 'शिष्ट' साहित्य बेरा रै पांणी समान, जिणनै पीवण सारू आखी मानसिक अबखायां झेलणी पड़ै, पण लोक–साहित्य रौ ठाडौ–मीठौ–निरमळ नीर चोड़ै धाड़ै खळ–खळ बैवती वन सरिता रौ जळ है, जिणरै पीयां अबखायां आपै ई कम हुय जावै अर मिट जावै।

'शिष्ट' साहित्य रा पढणहार कम, पण लोक साहित्य रा स्नेही–श्रद्धालु अनाप–सनाप। यूं तौ साहित्यकार साँच री खोज कर, उणनै चरित्रां रै माध्यम सूं समाज में मानजोग गिणीजै, पण अनेक बार साच नै सही रूप सूं उजागर करतां समाजू नेतावां, राजनीत अर घरू वातावरण रै पगां हाल घणी अबखायां अर रूकावटां उण सांमी आय मंडै कै वो (साहित्यकार) साँच सूं टाळौ करलैवै। वो जिण राजा रै राज में रैवै, उणरै खिलाफ कीं नीं लिख सकै। दूजी काँनी लोक–साहित्यकार पूरमपूर सपाट बयानी करतौ खरी–खरी कैवै अर सांचीबात आपरा साहित्य में मांडै। बो किणी भी कीमत साच नै आँच नीं आवण दैवै। इणरै टाळ तादाद री दीठ सूं भी लोक–साहित्य 'शिष्ट' साहित्य सूं घणौ आगै है। इण भाँत लखावै कै सच्चाई, जिणरी आजादी गुणवत्ता, सरलता, सहजता हर दीठ सूं लोक–साहित्य, आभिजात्य साहित्य घणौ सबळ, घणौ सिरै मानीजै। अठांतक कै कैई बातां 'शिष्ट साहित्य', लोक–साहित्य सूं ग्रहण करै। आदर्स अर जथारथ रा ओपता अर खरा चितराम 'शिष्ट' साहित्य बिचै लोक–साहित्य में घणा मिळै।

1.8 सारांस

इण सगळा विवेचन सूं बैरौ पड़ै कै भारतीय अर पास्चात्य सगळा ई विद्वानां 'लोक' सबद बाबत लगैटगै एक जिसा ई विचार परगट कीना है। करीब करीब सारा ई नामधारी विद्वान 'लोक' सबद री लूंठी सींवा बाबत भी विचार दरसावै अर इणरी सांकड़ी सींसा भी तय करै। 'लोक' सबद आपरै व्यापक अरथ में आखै मानखै/समाज रौ बोध करावै तौ विसेसण सरूप काम में लियौ जावै। अठै इण बात रौ खुलासौ ई जरूरी लखावै कै लोक–तत्त्व सगळै मानखै रै मस्तिस्क रै किणी न किणी खुणै में बत्ती या कम मात्रा में सदा विराजमान रिया करै। सभ्य हूवण रौ गुमेज करणियां, सांतरी, ऊँची–ऊँची उपाधियां पायोड़ा, घणा भणियां–लिखियां री जिंदगांणी री घटनावां नै रळकाय नै टंटोळां तद ठा लागै कै वे भी अणभणियां री भाँत अंध विस्वास पाळै, सुगनां अपसुगनां रै पांण गाँव–गाँवतरौ करै, मिनखाजूण में सांसारिक उपलब्धियाँ खातर देवी देवतावां नै धोकै–दण्डवत करै, मंत्र–तंत्र रा ताबीज बाँधे। देस दिसावर में सायत ई कोई इसौ व्हैला जो इण तरै रा पंपाळ नीं पाळै। वैज्ञानिक दीठ सूं अणूती उन्नति करयौड़ा मुलक भी इसी अंधविस्वासी बातां नै अंगेजण में कीं कोर–कसर नीं राखै। तद तौ सार रूप औ इज तत्त्व निगै आवै कै लोक–तत्त्व री ताकत री जकड़ सूं सगळा ई मानवी जकड़ीजियौड़ा है। 'लोक' तत्त्व तौ आदिम मानस री इसी सबळी धारणा या मानता है जकी सगळा मुलकां रा सगळा मिनख–मानवियां नै आपरा मोवणा–रूपाळा रूप री रेसमी जकड़ सूं बाँध राख्या है।

1.9 अभ्यास रा सवाल

1. सबद–कोसां में 'लोक' सबद रा कांई कांई अरथ दीयौड़ा है ?
2. वेदां में 'लोक' री कल्पना किण रूप में करीजी है ?
3. संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंश रा चावा ग्रंथां में आयोड़ो 'लोक' सबद किण–किण अरथ रौ बोध करावै ?

4. 'लोकजत्ता' अर 'लोअप्पवाय' रौ कांई अरथ है ?

5. 'लोक–तत्त्व' रौ खुलासौ करौ।

6. 'लोक' अर 'शास्त्र' रौ भेद दरसावै।

7. 'वेद रीत प्रधान' समाज अर 'लोक रीत प्रधान' समाज सूं कांई मतलब है?

8. आप 'लोक' नै वेद–विरोधी मांनौ कै नहीं ? तर्क संगत पडूतर देवो।

9. लोक–साहित्य सबद में आयौड़ो विसेसण वाची 'लोक' सबद विसदार्थी है, कै संकुचितार्थी ? समझावो ।

10. लोक साहित्य अर 'शिष्ट' साहित्य में कांई फरक हैं ?

1.10 संदर्भ ग्रंथ

1. 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका'
2. भारतीय लोक–साहित्य– डा. श्याम परमार
3. लोक–साहित्य विज्ञान– डा. सत्येन्द्र
4. लोक–साहित्य की भूमिका– डा. कृष्णदेव उपाध्याय
5. हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1, सं. धीरेन्द्र वर्मा
6. लोक–साहित्य : स्वरूप और सिद्धांत– डा. एस.डी. चारण
7. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

इकाई – 2

लोक मानस अर लोक वार्ता

2.0 उद्देस्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 लोक–मानस री अवधारणा

2.3 लोक–मानस रा लक्षण

2.4 लोक–मानस : तात्त्विक विवेचन

2.5 लोक–वार्ता : विवेचन

2.6 लोक–वार्ता रौ खेतर (भोम)

2.7 लोक–वार्ता अर लोक–साहित्य

2.8 सारांस

2.9 अभ्यास रा सवाल

2.10 संदर्भ ग्रंथ

2.0 उद्देस्य

पाछली इकाई में 'लोक' सबद पर भाँत भाँत सूँ विचार हुयौ है। लोगां (आखै मानखै) में 'लोक' कुण–कुण है ? अर आभिजात्य साहित्य में कुण–कुण 'लोक' में गिणीज सकै? इणरी जाणकारी 'लोक–मानस' नै जांणियां सूं इज पड़ सकै। यूं तौ लगटगै सगळा मनोविग्यांनी, 'समाज शास्त्री' अर 'नृतत्त्वस्त्री' मांनै कै हर मिनख रै दिमाग में 'लोक–मानस' रा तत्त्व व्है, पण मोटै तौर पर विचार करां तद ज्ञात व्है कै कुछ मूळभूत तत्त्व इसा है, जकां री विद्यमानता 'लोक मानस' रै सरूप निर्धारण में सहायक बणै। किण मानस नै लोक–मानस मानणौ ? अर क्यूं मानणौ ? आं बातां पर गहराई सूं विचार करणौ, इण इकाई रौ प्रमुख उद्देस्य है। इणरै टाळ इण इकाई में इण बाबत भी पुख्ता अर प्रामाणिक विचार करीजसी कै आभिजात्य मानस में भी लोक–मानस रौ कीं ठायौ–ठिकाणौ है कै नहीं ? अर जे है तौ किण हद तक इणरी विद्यमानता रह्या करै ? इण इकाई में इण तथ्य री भी पड़ताल करीजसी कै लोक मानस, 'शिष्ट मानस' माथै आपरी धाक जमा सकै कै नहीं ? लोक मानस सूं 'शिष्ट मानस' क्यूं प्रभावित व्है ? अैड़ा किसा कारण है कै भणाई रै इतरै पसराव रै पछै भी किणी रै 'शिष्ट मानस' नै लोक–तत्त्व/आदिम मानस री अवधारणावां कीकर प्रभावित कर दैवै ? लोक मानस रा मूळ भूत तत्त्व आपणी जिंदगाणी रै विकास में साधक या बाधक क्यूं सिद्ध हुय रैया है ? इण पर भी इणी'ज इकाई में विचार करीजसी।

2.1 प्रस्तावना

यूं तौ थोड़ी घणी दिमागी ताकत हर प्रांणी कनै व्है, मिनख आपरी मानसी ताकत रै पांण इज आखा जगत रौ सिरै प्रांणी गिणीजै। भाखरां री गुफावां में रहणौ अर जीव–जिनावरां रौ काचौ माँस खावणौ या कै कंदमूळ फळ खाय जीवारौ करणौ– आ हालत ही आदिम मानव (Primitive Man) री ही। पण उण बखत भी उणरै कनै दूजा जीव–जिनावरां बिचै कल्पना करण अर सोच–विचार करण री, खरौ–खोटौ निरणय लेवण री अर उणरै अनुरूप काम–काज करण री दिमागी ताकत बत्ती ही। वो प्रकृति में बखत परवांण हूवण वाळा फैर बदळाव नै निरखतौ– परखतौ अर आपरा दिमाग में वां बाबत कीं मानतावां बणाया करतौ। वे मानतावां आज रै इण विग्यांनी चमत्कारां रै जुग में कितरी साची या झूठी सिद्ध हुयगी है, आं सगळी बातां पर वैग्यांनिक सोच सूं बिचार करियां बिना आज रौ मिनख ई वांसूं किनारो नीं करियौ। जुगां–जुगां सूं मानस रै किणी पड़दै माथै थिर हुयौड़ी वे मानतावां आज रै भणियै–गुणियै मिनख रै मस्तिस्क नै भी कमोबेस प्रभावित करै है। लोक–मानसी तत्त्वां री विद्यमानता आज भी आखै मांनखै री जीवन पद्धति में इसा इसा मोड़ अर बदळाव लाय दैवै कै वां हालात नै देखनै प्रबुद्ध मानस ई चकरी चढ जावै। इण लोक मानस रौ सरूप किसौ है ? इणरै निर्माण में किसा–किसा तत्त्वां रौ भरपूर सहयोग मिळै ? इणरा कांई–कांई लक्षण है ? आओ, इण इकाई में इण पर विचार करां।

2.2 लोक–मानस री अवधारणा

दुनिया भर रा विद्वान् इण बात में हांमळ भरै कै सामूहिक लोक–मानस इज, लोक–साहित्य रै सिरजण रौ मूळ आधार हुया करै। लोक–साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां (लोक–गीत, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–नाट्य, लोकोक्ति साहित्य) री लोक–कलावां में लोक–प्रतिभा रौ साचौ अर न्यारौ–निरवाळौ रूप दरसीजै। मन री ऊंडी अर गहरी गुफावां में किसा–किसा भाव–विचार किण–किण परिस्थिति में कांई–कांई रूपाकृति मांडता–मिटावता रैवै, उणरी जाणकारी उण मिनख नै ई नीं व्है, जिणरै मगज में अै उपजै अर तिरोहित व्है। मन री गुळगांठां बाबत संसार रा अनेकूं मनोविग्यांनी अर–मनोविस्लेसणकर्त्ता भांत–भांत सूं अर घणी गहराई सूं चिंतन–मनन कीनौ है, पण पूरी–पूरी सफळता किणी नै ई अजै नीं मिळी है। आं मनोविग्यांनियां में फ्रायड घणौ सरावण–जोग काम करियौ है। फ्रायड अवचेतन मानस री स्थिति अर उणरी किण भाँत अभिव्यक्ति संभव है, इण पर ऊंडी दीठ सूं विचार कीनौ है। मन री ऊंचाई री पड़तां उघाड़तां आप खुलासौ कीनौ कै मिनख रै दिमाग में दो भाँत रौ अवचेतन मानस हुया करै–

1. **सहज अवचेतन**
2. **उपार्जित अवचेतन।**

इण सहज अवचेतन रौ संबंध मिनख रै जलमजात अर परम्परागत संस्कारां सूं व्है, जद कै उपार्जित अवचेतन री निर्मिति संसारू आखती–पाखती री परिस्थितियां सूं व्है। मनोविस्लेसक फ्रायड रै मुजब ओ सहज अवचेतन मन इज 'लोक मानस' रूप सूं ओळखीजै। आदिम मन री मनोवृत्तियाँ बचयौड़ा रूप में लोक–मानस में थिर रहवास करयौड़ी व्है। जिण

भाँत भीड़ री अेक अलग–थलग अर विचित्र भाँत री मनोवृत्ति व्है, उणी'ज भाँत मानव–समूह री भी अनूठी, विचित्र अर अलग वृत्ति व्है। 'मानव समूह' रौ अेक अजीब सो मनोविज्ञान व्है, इणनै 'डेम्स फ्रेजर नामक विद्वान् 'मानव राशि' नांव दीनौ है। विचारक मांनै कै आ 'मानव राशि' इज मांनखै री सामूहिक प्रवृत्तियों नै परम्परा रै रूप में थिर राखण रौ लूंठौ कांम करै। 'लोक मानस' री भी आपरी खास अर सबळी सत्ता है। इण तथ्य अर सत्य रौ उद्घाटण सांस्कृतिक क्षेत्र री उल्लेखजोग घटना गिणीजै, क्यूंकै इणरै अध्ययन रै पांण इज कैई रहस्यां सूं परदा हट सक्या है। औ नीं व्हियौ व्हेतौ तौ आं रहस्यां री ओट में आध्यात्मिकता, धर्मांधता अर ठगलकड़ी रै पांण चालणिया कबाड़ा चालता रैवता। मानखौ स्वारथी धर्माधिकारियां सामी चम्मगूंगौ अर बगनौ हुयौड़ौ पिसतौ–मरतौ रैवतौ।

मनोविग्यांनियां री दीठ सूं औ तथ्य सोळै आना सही है कै मिनख रै मानसिक आचरण अर संस्क्रति रै निर्माण में जात/वरग (Race) रौ महताऊ हाथ व्हिया करै। घणकरा 'नृतत्त्वशास्त्री' भी मांनै कै डील रै डौळ (सरीर विन्यास) रै अनुरूप इज मिनख री बुद्धि, भावुकता अर द्रढ, संकल्प री ताकत विकसित व्है। घणा चावा मनोविग्यांनी **बुट** आपरी पोथी 'फोक साइकोलॉजी' में जोर देर'र आ बात कही है कै दुनिया भर रै मिनखां रै मानस में बहुत हद तक समानता मिळै।

2.3 लोक–मानस रा लक्षण

लोकवार्ताविद् फ्रेजर महोदय लोक–मानस रा लक्षणां पर गहराई सूं विचार कीनौ है। आप सै सूं पैली आ थरपणा करी कै लोक–मानस विवेकपूर्वी (Pre-Logical) हुया करै। आप औ ई खुलासौ कीनौ कै रहस्यसील (Mystic) हूवणौ लोक–मानस रौ दूजौ गिणावण जोग लक्षण है। जठै भौतिकवादी कार्य–कारण संबंध बाबत तर्क बुद्धि सूं गहरी खोज–खबर करै अर भाँत–भाँत रा तर्कां सूं कार्य–कारण संबंध नै प्रमाणित करण री चेस्टा करै, उठै लोक–मानस इण बाबत किणी भाँत रा तर्क–कुतर्क या वितर्क नीं करै। लोक–मानस सदा ई इणी'ज भावना नै पाळै–परिपुस्ट करै अर इण बात नै इज मानता सरूप थरपै कै सगळा भाँत रा काम–काज किणी न किणी पराप्राकृतिक ताकत (Super Natural) या दैवी सक्ति रै पांण इज सम्पन्न व्है। अै दैवी–सक्तियाँ कठै ई मांनखै रै काम–काज में भरपूर सहयोग करै तौ कठै ई मांनखै रै काम–काज में विघन भी पैदा करै। मिनख रा सगळा कांम आं ऊपरली ताकतां रै समर्थन अर अवरोध रै पांण पूरा पड़ै या अटकै। आद–अनाद काळ सूं घरोघर सम्पन्न कराईजता धार्मिक अनुस्ठानां (Rituals) रै विधानां अर वां री रोक/निसेध या वर्जनावां (Tabus) री पूठ में लोक–मानस री विवेकपूर्वी (Pre-logical) अर रहस्यसील (Mystic) वृत्ति इज मूळ कारण सरूप गिणीजै।

लोक–मानस रौ बतावण जोग तीजौ लक्षण औ गिणीजै कै लोक–मानस जीवतोड़ै अर मरियोड़ै में कीं घणौ लूंठौ भेद नीं करै। लोक मानस री सबळी मानता कै मरियां पछै ई जीव रौ अस्तित्व रैवै। लोक री दीठ में मरियौड़ौ जीव ई जीवतोड़ै रै ज्यूं रै ज्यूं सत्तावान है। मौत उणरी नासवान देह नै भलांई मिटाय दौ, पण जीव आपरा परिवार वाळां या वंसजां रै आंणै–टांणै, बार–तिंवार, ब्यांव–सावै अर अबखी बेळा में याद करियां रूपाकृति बदळण जरूर हाजर व्है। लोक–मानस री आ थिर मानता कै मिनख मरियां पछै ई जीवता ज्यूं इज है।

लोक री दीठ में अर मन–मानस में समग्र अर अंस में कीं फरक नीं व्है। इणी–ज भाँत लोक–मानस रै धरातल माथै तुल्य अर तुलनीय में कीं भी फरक नीं व्है। लोक मानस री इसी अभेदवादी अवधारणा नै पुखता करण वाळी अलेक्खूं बातां आज भी लोक में घणै चाव अर कोड सूं कहीजै–सुणीजै। आं लोक–कथावां रै तांनै–बांनै गूंथिजीयोड़ा अनाप–सनाप अभिप्राय (Molif) आं अभेदवादी धारणावां रौ बोध करावै।

अणपढ ही नीं मिनखाजूण में आज ई हजारूं भणिया–गुणिया ई इसा मिळ जासी जका भांत–भांत रा टूंणां–टोटकां में पूरो विसवास राखै अर बेळा–कुबेळा रौ ध्यांन राखनै वे टूंणा–टोटका सम्पन्न करै। औ इज लोक–मानस मूरत–अमूरत में कीं फरक नीं मांनै। अठां तक कै मिरतू नै ई 'मूर्त–सरूप' मांनै–पूजै अर अंगेजै।

लोक–मानस कदै ई भी व्यक्तित्वहीन किणी कुदरती चमत्कार या व्यापार री कल्पना इज नीं करै। मुतलब औ कै लोक–मानस रै अनुसार सगळा प्राकृतिक व्यापार किणी न किणी व्यक्ति (वो भंलाई खास प्रतिभा वाळौ या चमत्कारी व्है), लोक–देवता अथवा अद्‌भुत सगती वाळा देवता री रीझ या खीझ सूं इज संचालित व्है। लोक–मानस पूरमपूर विस्वास सूं मांनै कै धरती माता है अर सूरज, पवन, अगनी, जळ अै सगळा ई साक्षात् देवता है। इन्दर राजी व्है तद इज बिरखा व्है। सूरज री घरवाळी राणादे तूठै जद इज घर में बेटौ जलमै। इतरौ इज नीं, लोक–मानस आं भाँत–भाँत रा प्राकृतिक तत्त्वां मांय भी आपसी तनाव री कल्पना करै। लोक मानस तौ अठां तक मांनै कै अै प्राकृतिक तत्त्व सरूप देवता कैई वार आपसरी में लड़ै झगड़ै। बिरखा रौ देव इन्दर कदै ई पवन देवता सूं आथड़तौ निगै आवै तौ कदै ई सूरज सूं बाथेड़ौ करतौ दीसै। लोक–मानस री आ धारणा है कै मिनख मन, वचन अर करम सूं खाली गाँव–सींवाड़े तक इज नीं आखी स्रष्टि व्यापारां रौ अभिन्न अंग व्है। उणरौ सगळां में सीर अर सगळां रौ उणमें सीर। सैंग स्रष्टि (मांनखौ, रूंख, प्राणी–मात्र अर आखी कुदरत) रै साथै व्यक्ति री अभेदता–अभिन्नता लोक–मानस री समृद्ध पूंजी, सबळी सगती है। आदिम मानव सूं लैयर आज रा बुद्धिजीवी मिनख तकात लोक–मानस री विचार–धारणावां रूपी रेसमी डोरियां सूं बंधियोड़ा जीवा–जूण पूरी करैं अर आपरै व्यक्तित्व नै समग्र स्रष्टि सूं तटस्थ नीं राखै।

2.4 लोक–मानस : तात्त्विक विवेचन

लोक मानस री तात्त्विक जांच–पड़ताळ करण में समाजसास्त्री, नृतत्त्व विग्यांनी अर मनोविग्यांगी घणौ चिंतन–मनन कीनौ है। वां सगळां री निरख–परख परवांण लोक–मानस री अै च्यार श्रेणियाँ बताईजी है–

1. प्राकल्पना
2. सर्वात्मभाव
3. टोना–विचार
4. आनुस्ठानिक विचार

मिनख–मानवी समाज में इण लोक मानसिकता का परिणाम आज दिन ई इण भाँत लखावै–

1. लोक–मानस री दीठ सूं सत्य अर तथ्य में कीं फरक नीं व्है।
2. लोक–मानस मिनखादेह अर छाया देह में भेद नीं मांनै।
3. लोक–मानस मांनै मरयौड़ौ गैरी अर लंबी नींद सूतौ है अर बखत परवांण आत्मा फैरूं पाछी आयनै मरियोड़ै नै जीवतौ कर देवैला।
4. भूत–प्रेत में विस्वास।
5. जड़ अर प्रकृति पदारथां मांय आतम तत्त्व रा दरसण करणा– (रूंख, नदी–नाळा, डूंगर–भाखर, सगळा मिनख–मांनवी रूप धार, हालौ–चालौ, कर सकै।)
6. मानता आ कै– व्रत इकासणा, अर अनुस्ठान–उपासना सूं मन चाया फळ प्राप्त कर सकै।
7. टाबर (संतान) परमेसर रा दीयौड़ा वरदान सरूप है।
8. एकलपणै री ठौड़ सकळ (समष्टि) रै भलै सारू मान–मनौतियां करीजै।

औ लोक मानस, आखै मानवी मानस रौ एक अभिन्न अंग व्हिया करै। लोक–मानस नीं तौ पूरमपूर आदिम मानस (Prinitive Mind) व्है अर नीं ई प्रबुद्ध मानस री भांत बाणिया–बुद्धि रौ है। औ तौ सरल, सहज अर स्वाभाविक व्है। जात–पांत, भासा, पैरवेस अर देसकाळ री सीमावां लांघनै अर आपरी सीतळ सौरम पसरायनै ठोड़ौ ठोड़ खुद रै हूवण रौ विसवास करावणियौ मानस इज 'लोक मानस' गिणीजै। लोक–मानस नै इण चितराम सूं आछी तरै समझ सकां ।

सार रूप में कैय सकां कै मिनख री मूळ विरति (वृत्ति) अर 'लोक मानस' में कीं फरक

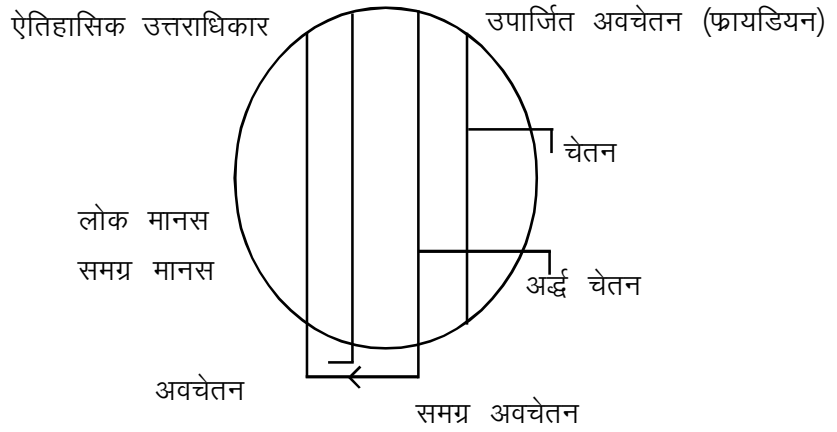

नीं व्है। मिनख री मूळ वृत्ति आद अनाद जुग सूं इतिहास अर देस–दिसावरां री सींवां लांघती थकी कठै ई आपरा मूळ रूप में अर कठै ई कठैई जरूरत मुजब थोड़ौ घणौ बदळाव लाय'र आज दिन ई जीवती जागती है।

2.5 लोक–वार्ता : विवेचन

मानखौ भलांई अणूंतौ सभ्य व्है अर भलांई साव असभ्य व्है– पण उणरा परम्परा–विधानां रौ बोध लोक–वार्ता सूं इज व्है। लोक–वार्ता रूपी छपरौ लोक–विसवासां री जाडी भीतां रै सहारै टिकियोड़ौ है। लोक–वार्ता लोक रौ महासमन्दर व्है, जिणमें 'लोक' रै अनुभवां

रा रतन भर्‌या–पड़िया है। लोक–वार्ता (folk lore) सबद रौ प्रयोग सै सूं पहला 1846 ई. में पुरातत्त्व रा मान्यौड़ा विद्वान् जॉम थामस कीनौ/घणकरा विद्वान् तथाकथित निम्न वरग री समस्त अभिव्यक्तियाँ नै लोक–वार्ता नांव दैवै, पण आ बात साव साची नीं गिणीज सकै। इसा विद्वानां रौ विचार है कै समाज रै जिकै वरग नै असभ्य समझां, उण री संस्कृति, परम्परागत विसय, आचार–विचार, गीत–गाथावां, कथावां, कहावता, दंतकथावां, निरत इत्याद 'लोक–वार्ता' रै नांवै जांणीजै पण गहराई अर ऊंडी समझ सूं विचार कर्‌यां लखावै कै सभ्य सूं सभ्य गिणीजण वाळी जातियां री जीवन–सैली में परम्परावां, सुगन विस्वासां अर धरम–करम रा भाँत–भाँतीला, अनुस्ठानां रा किणी न किणी रूप में पग–मांडणा हुयोड़ा निगै आवै। तद फैर लोक–वार्ता रौ दायरौ बध जावै। पोथी'ग्यांन सूं गैळीजियोड़ा मिनखां री जिंदगाणी में प्रचलित असभ्य जन रा अंधविस्वास रूढियां, रीत रिवाज, भरम, अन्ध श्रद्धाभावनां, गीत बातां–बिगतां, इणमें समेटीज जावै। आ बात सही है कै 'राजस्थानी कहावतें' पोथी री भूमिका में प्रख्यात भासाविद् डा. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या 'फोकलोर' रौ समानार्थी सबद 'लोक–वार्ता' नीं मांन 'लोकायन' सुझायौ है। इण बाबत वांरा विचार निरखण परखण जोग है–

''पितृ परम्परागत जीवन यात्रा की पद्धति जिन सामाजिक अनुष्ठानों, विचार–विश्वासों तथा वाड्मय से अपने लौकिक प्रकाश को प्राप्त करती है, उन्हें अंग्रेजी में 'फोकलोर– कहते हैं। इस शब्द का भारतीय प्रतिशब्द हमने 'लोकायन' यों बना लिया है।''[1]

लोक–वार्ता रौ खेतर अंणूतौ लंबौ–चौड़ौ है। इण री व्यापकता रौ खुलासौ करतां लेनिन लिखै कै लोकवार्ता जन–जन री आसावां अर आत्म–भावां (स्नेह संबंधां) सूं हदभांत जुड़ियोड़ौ व्है।

"folklore is material about the hopes and yearnings of the people"

लोक–वार्ता में सै सूं महती बात व्है– परम्परा री। मांनखै रै ऊंच्चा या निम्न दोनूं ई वरगां में भाँत–भाँत री परम्परावां रै प्रचलन री लूंठी परम्परा मिळै। लोकवार्ता 'लोक' री सनातन विचाराभिव्यक्ति, मानीजै। लोक–मानस री दीठ सूं लोक–वार्ता जुगां जूनी हूवतां थकां ई नित नवी लखावै। यूं तौ समै सै सूं ताकतवर गिणीजै, पण 'लोकवार्ता' माथै समै रौ भी घणौ असर नीं लागै। लोक–वार्ता रा खोज सब देसां–दिसावरां में अर भूत–भविस वर्तमान सगळा कालखण्डां में मिळै। लोक–वार्ता री इण सरावण जोग विसेसता रै कारण अंतस सूं राजी हूय'र विदेसी विद्वान् **बोटकिन** कह्यौ है कै लोक–वार्ता अणूंती अळगी अर अणूंती जूनी कोई चीज नीं है, वा तौ आपांणी जिंदगांणी रै बिचाळै, साम्प्रत साच सरूप अर जीवती–जागती जोत सरूप है।[2] आप इण बाबत आगै भी कैई ठोस अर ऊंडी समझ री बातां कही है–

''यहाँ भूतकाल को वर्तमान से और पुस्तकहीन समाज को उस समाज से कुछ कहना है, जो अपने विषय में पढ़ना चाहता है, जिसका संबंध हमारी मौखिक और लोकतांत्रिक संस्कृति की मूल कलाओं के प्रारंभिक रूपों और इतिहास के एक अंग के प्रकाश से है।''[3]

---

1. राजस्थानी कहावतें भाग–1, पृ. 11 भूमिका डा. सुनीति कुमार चार्टुज्या
2. American Folklore (Introduction) Boltkin
3. Ibid, पृ. सं. 15

इणसूं औ लखावै कै लोक–वार्ता में जुगां जूनी संचियोड़ी अर बचियोड़ी रूढ़ियां री इज खोज–खबर नीं लिरीजै बल्कि इणमें जीवती–जागती लोक–भावनावां, भाँत–भाँत री लोकाभिव्यक्तियाँ अर वां खळखळाटा करती बहती भव्या भागीरथी री लहर रौ ई लेखौ–जोखौ व्है। लोक वार्ता तौ लोक'री समग्र अर सर्वांग ओळखांण करावणियौ शास्त्र गिणीजै। आदिम–समाज लोक–वार्ता नै जितरी आदरै उतरी श्रद्धा री दीठ सूं भणिया गुणिया समाज ईं लोक–वार्ता री सामग्री नै निरखै–परखै अर अंगेजै। परम्परावां रै झीणै तारां मीठी झणकार सुणाती लोकवार्ता रौ जितरौ अंस समै परवांण खतम व्है, उणसूं दूणौ–चौगणौ नव–निर्मित व्है। लोक–वार्ता री जीवटता बाबत डा. वासुदेव शरण अग्रवाल रा विचार देखण जोग है–

''लोकवार्ता एक जीवित शास्त्र है। लोक का जितना जीवन है, उतना ही लोक–वार्ता का विस्तार है। लोक में बसने वाला जन, जन से भूमि और भौतिक जीवन तथा तीसरे स्थान में उस जन की संस्कृति इन तीन क्षेत्रों में लोक के पूरे ज्ञान का अन्तर्भाव होता है और लोक–वार्ता का संबंध भी उन्हीं के साथ है।''[1]

2.6 लोक–वार्ता रौ खेतर (क्षेत्र)

नामी विद्वान सोफिया बर्न लोक–वार्ता री सींवां निस्चै करती थकी लिखियौ है कै औ सबद 'लोक वार्ता' अेक जाति बोधक (Race) सबद रै रूप प्रचलित व्हैग्यौ है। पिछड़ी जातियां, असंस्कारी समुदायां, उपेक्षाकृत कम उन्नति करियौड़ी जातियाँ अर अति समुन्नत जातियाँ सगळी री ई जीवन सैली अर वां सूं जुड़ियौड़ा अनाप–समाप मसला लोक–वार्ता री सींवां में समेटीजै। लोक री दिमागी ताकत री पूग तक री सै चीज–बस्तां इणरै खेतर में गिणीजै। समाजू संगठण, इतिहास, तवारीख, काव्य–साहित्य, 'दर्शन–धर्म', विज्ञान–ओखद इत्याद कितरा ई मामला इणमें खुणै–खोचरै बचियौड़ा–बिखरियौड़ा लखावै। सोफिया बर्न लोक–वार्ता रा विसयां नै आं तीन प्रमुख समूहां में दरसाया है–

1. **वे विस्वास अर आचरण–अभ्यास–जकां रौ संबंध है।**

   धरती अर आकास सूं, वनस्पति सूं, जीव–जिनावरां (पशु–पक्षी) सूं, मिनख, मानवी सूं, मिनख रै हाथां सरजियौड़ी चीज–बसतां सूं, आत्मा–परमात्मा अर लोकपरलोक री जीवा–जूंण सूं, परा–मानवी सूं, दैवीय ताकतां (Super Natural Powers) सूं, सुगनां, अपसुगनां सूं, भविस वांणियां सूं, आकास–वांणियां सूं, टोणा टोटकां अर जादू सूं, हारी–बिमारी अर ओखद सूं, झाड़ै–झपटै सूं, मंतर–तंतर सूं, आंचलिक कलावां सूं सम्बंध राखणवाळी।

2. रीत–रिवाज कुंटब–कबीलै अर समाज रा राज–काज री संस्थावां रा, नीजू जीवण रै अधिकार बाबत, बिणज–बौपार अर उद्योग धंधां सूं संबंधित व्रत उपवास अर तीज–तिंवारां, खेल अर मनोरंजन सम्बंधी।

3. कहाणियाँ, गीत अर कहावतां (बातां–बिगतां, गीत अर आडियां ओखाणां)

क. कहाणियाँ (बातां)

1. पृथिवी पुत्र–वासुदेवशरण अग्रवाल, पृ. 85

अ. जका साची मांन'र कहीजै–सुणीजै

आ. मनोरंजन सारू (मनबहलाव सारू)

ख. गीत–सगळी भाँत रा

ग. कहावतां–पहेलियां (ओखाणा–आडियां)

इण विवेचन–वर्गीकरण सूं औ तथ्य चौड़ै आवै कै लोक–साहित्य लोक–वार्ता रौ एक महताऊ अंग है।

2.7 लोक–वार्ता अर लोक–साहित्य

लोक–वार्ता विपुल विसयां री सामग्री रौ अखूट भंडार है। औ चावौ सत है अर लोकवार्ता रौ सैसूं प्रधांन गुण है। मौखिकता (मुख जबानी परम्परा) (Oral traition)। इण सारू लोकवार्ता री घणकरी बातां लोक–साहित्य री विविध विधावां लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोकोक्ति साहित्य रै पांण इज मुखजबानी रूप सूं एक पीढ़ी सूं दूजी पीढ़ी नै समझाइजै, सूंपीजै। कह्यौ भी है **'धन अंटै अर विद्या कंठै।'** अठीनै लोक साहित्य नै परिभासित करतां थकां ई कहीजियौ है कै लोक–साहित्य बिना आखरां रौ साहित्य व्है (Literature without letters) अठै इणरौ म्यांनौ औ कै औ साहित्य लिपिबद्ध नीं व्है, मुख जबांनी इज पसरै। इण सारू लोकवार्ता री घणकरी बातां लोक गीतां, लोक कलावां में आपरौ थिर ठायौ ठिकाणौ कर, पीढियां लग चालती रैवै। टाबरां रा भाँत–भाँत रा खेल लोकवार्ता में गिणीजै, पण वां खेलां सागै गाईजणिया गीत लोक साहित्य री सींव में आवै। इण भाँत आं दोनुवां रौ आपसरी में घणौ गहरौ संबंध। एक दूजै री आतमा आपस में अळूझियोड़ी है।

बखत री ताकत मोटी–मोटी ताकतां नै धूड़ भेळी कर दैवै। इण मुजब लोकवार्ता अर लोक मानस सूं संबंधित कितरी ई सामग्री अर केई केई बातां बिगतां बखत परवांण भूलीजगी, बिसराईजगी व्हैला, पण जकी बातां, बिगतां अर जका अनुभवां नै लोक साहित्य रै कलेवर में संरक्षण मिळग्यौ, वै किणी भाँत काळ रौ कलेवौ नीं बण्या। लोक साहित्य रूप अथाह समन्दर में गहरा उतरयां ई लोक वार्ता रा घणमूंघा रतन हाथ लागै। लोकवार्ता में सगळा सूं महताऊ भूमिका लोक री, पण इण लोक री अभिव्यक्ति रौ मंच तौ लोक साहित्य अर लोककलावां इज है। सार ओ कै लोक साहित्य लोकवार्ता रै जिज्ञासु रौ सहायक साथी है, लोकानुरंजन रौ सफल साधन है अर लोकवार्ता री घणसूंघी धरोहर है।

2.8 सारांस

इण इकाई में लोक मानस अर लोकवार्ता बाबत सारगर्भित चरचा करीजी है। लोक मानस रौ सरूप कांई व्है अर लोक मानस किसा किसा तत्त्वां या प्राकृतिक व्यापारां सूं प्रभावित व्है, इण बिन्दु पर भी गहराई सूं विचार करीजियौ है। इण इकाई में औ भी दरसाईजियौ है कै आज इण वैग्यांनिक उपलब्धियां रै पांण आपरै बुद्धि बळ रौ गरूर गुमेज राखणियौ हुसियार मानवी ई तथाकथित लोक मानस री गहराई री पूरी थाग नीं लेय सकै। हॉ, आ खरी बात है कै इण बरणाव सूं खुद रा जीवन नै सफल बणाय सकै।

इणी'ज भाँत इण इकाई में लोकवार्ता रै व्यापक खेतर नै उजागर करण रौ प्रयास कीनौ है। लोकवार्ता रा विविध विसयां री पूरमपूर थाग आज दिन तक कोई नीं लगा सकियौ है। लोकवार्ता में बखत परवांण सिमटण, मिटण अर सिरजण री जकी बळवती व्यवस्था दीसै, वा इण लोकवार्ता नै जीवंतता अर जीवटता बगसै। लोकवार्ता री घणमोली परम्परावां री रास पकड़नै मिनख–मानवी आपरै जीवण नै सुख सूं जीय सकै। इणरौ खुलासौ भी इण इकाई में करीजियौ है।

2.9 अभ्यास सवाल

1. लोक–मानस रौ कांई सरूप है ? समझावो ?
2. लोक–मानस रा प्रमुख लक्षणां री विगत बतावौ।
3. लोक–मानस री तात्त्विक दीठ सूं किसी च्यार श्रेणियां है ?
4. लोक–मानस री प्रमुख मानतावां किसी है ?
5. लोक–वार्ता सूं कांई मतलब है ? खुलासौ करौ।
6. लोक–वार्ता रै व्यापक खेतर बाबत विचार प्रगट करौ ।
7. लोक–वार्ता में कोरी जूनी रूढियाँ रौ इज अध्ययन नीं व्है बल्कि जीवती जागती लोकाभिव्यक्तियाँ अर आज री प्रक्रियावां रौ भी ठावकौ अध्ययन व्है, समझावौ।
8. लोक–मानस अर लोक–साहित्य रौ संबंध दरसावौ।

2.10. संदर्भ ग्रंथ

1. लोक साहित्य विज्ञान– डा. सत्येन्द्र
2. भारतीय लोक साहित्य– डा. श्याम परमार
3. लोक–साहित्य की भूमिका– डा. कृष्णदेव उपाध्याय

इकाई – 3

लोक–साहित्य अर दूजा विसय : परसपर संबंध

3.0 उद्‌देस्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 लोक–साहित्य अर धरम गाथा

3.3 लोक–साहित्य अर 'नृतत्त्व शास्त्र'

3.4 लोक–साहित्य अर 'समाज शास्त्र'

3.5 लोक–साहित्य अर मनोविज्ञान

3.6 लोक–साहित्य अर इतिहास

3.7 लोक–साहित्य अर भासा विज्ञान

3.8 सारांस

3.9 अभ्यास सारु सवाल

3.10 संदर्भ ग्रंथ

3.0 उद्‌देस्य

अेक जमानै में भलांई लोक–साहित्य नै गंवारू साहित्य गिण'र उणरी खाली मनोरंजन री दीठ सूं इज महत्ता मानीजती रैयी। लोक–गीतां री कोरी आनुस्ठानिक दीठ सूं इज पूछ हूवती। लोक–कथावां अर लोक–गाथावां रै पांण दिन भर रौ थाकेलौ मिटावण री बात मानीजती। ख्याल (लोक–नाट्य) खयाली दुनिया रा रंगीन अर मोहक सपना री सैर करण रा साधन समझीजता। ओखाणा (कहावतां) अर आडियां (पहेलियां) री भी घणी पूछ नीं करीजती, पण जद सूं ज्ञान–विज्ञान रा नुंवा–नुंवा खेतर उजागर हूवण लागा। भाँत–भाँत री दीठ सूं मिनख अर मिनख सूं संबंधित हर तरै रै सोध परक ज्ञान री अनेकूं सरणियां ऊघड़ण लागी, तद विद्वानां नै लखायौ कै लोक–साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां (लोक–गीत, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–नाट्य अर लोकोक्ति साहित्य) में भांत–भांत रौ ज्ञान घणी गहराई सूं समाहित है। फैर तौ लोक साहित्य री समग्र सामग्री री भाँत–भाँत सूं निरख–परख हूवण लागी अर कैई उमदा नतीजा उजागर हुया अर कैई सार री बातां सांमी आई। इण इकाई में आ बताईजैला कै लोक साहित्य रौ इतिहास, समाजसास्त्र, नृतत्त्वसास्त्र, भासा–विज्ञान इत्याद दूजा विसयां सूं कांई संबंध है। लोक–साहित्य में निरूपित सामग्री रौ आं विसयां री दीठ सूं कितरौ महत्त्व है? औ भी इणी इकाई में दरसाईजैला।

3.1 प्रस्तावना

लारलै अेक सईकै में मिनख रै ज्ञान में जितरी विविधता अर गहराई आई, बित्ती सायत पैली कदै ई नीं ही। विज्ञान रा नुंवा–नुंवा आविस्कारां घणा रास्ता खोलिया अर अेक–अेक विसय रौ भाँत–भाँत सूं अध्ययन–विवेचन सरू हुयौ। भणाई रै स्तर में बधापौ हुयौ।

विस्वविद्यालयां में सैकड़ूं भांत री सोध–खोज हूवण लागी। आवागमन रा साधन ई बधिया। मानखौ आपसरी में नैड़ौ आयौ। अेक देस रा विद्वानां रौ संपर्क दूजा देस रा विद्वानां सूं हुयौ। आपसी संवाद होवण सूं ज्ञान री न्यारी न्यारी विधावां अर वांरा विसयां री गहरी जाणकारी हुई। देसां–परदेसां रै विस्वविद्यालयां मांय लोक–साहित्य रौ कठै ई स्वतंत्र विसय रै रूप में अर कठै ई दूजा विसयां रै साथै अध्ययन–अध्यापन सरू व्हियौ। इणसूं लखावण लागौ कै लोक–साहित्य कित्ता विसयां सारू बुनियादी सामग्री पुगावण में सहयोगी सिद्ध हुय सकै। कैई इसा विसय व्है, ज्यांमें आपरी लेखनी रौ पूरी सुतंतरता सूं उपयोग उण विसय रौ जाणकार अर अधिकारी विद्वान् भी नीं कर सकै, क्यूं कै उणरै सांमी घणी अबखायां आय ऊभी रैवै, पण 'लोक' तौ किणी री परवाह नीं करै। जैड़ो देखै वैड़ी भाखै। जैड़ी सूझै वैड़ी इज समझावै अर सुणावै। इण कारण उणरी अभिव्यक्ति में बणावटीपण या लुकाछिपी करण री गुंजायस नीं व्है, अर इण भांत उणरी रचना सांच रो दस्तावेज बण जावै। इणरै टाळ औ साहित्य आद–जुगाद सूं रचीजतौ रह्यौ है, जद कै दूजा विसय तौ लारला कीं बरसां सूं इज सामी आया है। आपरै जूनापणै में ई. लोक साहित्य रौ महत्त्व अर इणरै नुवापणै में ई इणरी आछी ओळखाण है। लोक साहित्य घणकारी विसयां रो मूळाधार है।

3.2 लोक–साहित्य अर धरम–गाथा

जद घणी गहराई सूं विचार करां तद औ तथ्य सुभट निगै आवै कै साहित्य री कुछेक विधावां री सिरजणा में सरस भावाभिव्यक्ति रै साथै साथै कोई उद्देस्य व्है, कोई प्रयोजन व्है। आदू मिनख प्रकृति रा भाँत–भाँत रा क्रिया–व्यापार देखनै राजी ई हुयौ अर भयभीत भी हुयौ। वो आं बाबत इचरज ई कीनौ अर उणरी जिज्ञासा ई जागी। मिनख आपरी सरूआती (जंगळी कै गुफावां री) जिंदगी में अणूतौ भावुक अर धरमभीरू हौ, इण कारण वो आं प्राकृतिक क्रिया–व्यापारां पर भांत–भांत रा धर्म रा माळीपन्ना चिपकाय दीना। उणरै सारू परभात री बेळा ऊगतौ अर रात रा आथमतौ सूरज कोरौ–मोरौ सूरज इज नीं हौ। वो तौ इण ऊगतै–आथमतै सूरज नै सूरज–भगवान बणाय दीयौ। इण भाँत धरम गाथावां री सरूआत हुई। धरम–गाथा रै सरूप बाबत 'हिन्दी साहित्य कोश' में विचार जोग टिप्पणी आं सबदां में देखण जोग है–

''यह किसी देवता अथवा पराप्राकृतिक सत्ता का एक विवरण होता है, इसे साधारणतः आदिम विचारों की शैली में लाक्षणिकता से अभिव्यक्त किया जाता है। यह वह प्रयत्न है, जिसके द्वारा मनुष्य का विश्व से संबंध समझाया जाता है और जो इसे दुहराते हैं, उनके लिए प्रमुखतः धार्मिक महत्त्व रखता है, अथवा इसका जन्म किसी सामाजिक संस्था, रीति–रिवाज अथवा परिस्थितियों की किसी विशेषता की व्याख्या करने के निमित्त होता है।''[1]

इण व्याख्या अर लारली इकाईयां में दियौड़ा लोक–साहित्य बाबत विवरण सूं भली भांत ठा लागै कै धरमगाथा अर लोक–साहित्य दोनुवां में आदिम विचारां री अभिव्यक्ति थोड़ी–घणी

1. हिन्दी साहित्य कोश, खण्ड–1, पृ. 385

मात्रा में जरूर मिळै। इणरै टाळ औ भी लखावै कै आं में मिनख रौ आखी दुनिया साथै संबंध बणावण री कोसीस करीजै, जिणसूं मिनख रौ मिनखपणौ अर मिनखीचारौ जगजाहिर व्है सकै। फरक इतरौ इज कै धरमगाथा में धरम नै प्रमुखता अवस दिरीजै।

धरम गाथा में बताईजै कै दैविक–सगती रौ जलम, विकास अर उदय किणभाँत व्है ? पसु अर पदार्थ री व्युत्पत्ति कीकर अर किण–किण देवी–देवता सूं हुई ? किसै देवता री रीस सूं कागलै री अेक आँख गायब हुयगी ? इत्याद सवालां रा जवाब धरम–गाथावां में इज मिळै। इसा विचार या कै विवरण लोक–साहित्य री विधावां मांय भी मिळै, पण वां रै मूळ कारण में धार्मिकता नीं हूय'र लोक–विस्वास या कै लोक–मानता व्है। धरम गाथा में धार्मिक आस्था रै सागै धार्मिक पूठभूमि रौ भी घणौ सहयोग व्है। धर्मगाथा में किणी दैविक–सगती रौ सामिल हूवणौ अणूतौ जरूरी व्है, पण लोक–साहित्य में दैविक–सगती रै प्रकटीकरण री अनिवार्यता नीं व्है। दाखला सरूप बताय सकां कै सूरज अर उसा (परभात री बेळा) री प्रेम–कथा लोक–कथा व्है, पण ज्यूं ई सूरज माथै ईस रौ आरोपण हुय जावै (भगवान पणै रा माळीपन्ना लाग जावै) तौ वा प्रेम प्रधान लोक–कथा धरम–गाथा में बदळ जावै। लोक–साहित्य री सगळी विधावां में वर्णित–विवेचित सामग्री सूं भांत–भांत री जांणकारियां ई मिळै अर पढ़ियां सुणियां याकै गीत–गाथा रूप में गायां लोक रौ मन ई मुदित व्है, जद कै धर्म–गाथा रौ ध्येय मनोमोदन रै साथै उणरै पढण अर सुणण सूं धर्म–लाभ हूवण री मांनता भी जुड़ियौड़ी व्है।

धर्मगाथावां न्यारा–न्यारा धरमां, खास सम्प्रदायां अर वरगा सूं इज जुड़ियौड़ी व्है अर इण कारण उण धरम री गाथावां में उणी'ज धरम या सम्प्रदाय रा सिद्धांतां अर उणरा देवी 'देवतावां री महानता री बाता–बिगतां, परचा–प्रवाड़ा मिळै अर वे इज सैसूं सिरै थरपीजै, पण लोक–साहित्य री विधावां री सामग्री में इसी बात नीं मिळै। इणरै टाळ अेक बात आ ई पक्कायत निगै आवै कै दोनूं (धर्मगाथा अर लोक–साहित्य) में सामग्री लगैटगै अेक जिसी ई व्है पण धरमगाथा में उण 'धर्म' सूं जुड़ाव रै कारण दूजा धरमां री कमियां बतायौड़ी व्है, पण लोक–साहित्य में इसी बातां कतई नीं व्है। बठै आपसी विरोध मिळै पण लोक–साहित्य में आपसी संप मिळै। औ इज कारण है कै सगळा देसां रै लोक–साहित्य में भावनात्मक स्तर माथै समानता मिळै। विसय री दीठ सूं लोक–साहित्य अर 'धर्मगाथा' में घणी अेक जिसी बातां हूवतां थकां ई 'धर्म–गाथा' अर लोक साहित्य में उद्देस्य री दीठ सूं फरक व्है।

3.3 लोक–साहित्य अर नृतत्त्व शास्त्र

सरूपोत में तौ 'नृतत्त्व शास्त्र' में जंगळी, असभ्य या कै बर्बरावस्था रै मिनख रै सरीर–गठण अर उणमें भौगोलिक कारणां सूं आया फरक रै कारण मिनख रै रंग, रूप अर ग्यांन रै फरक रौ लेखौ जोखौ दिरीजण री बात रौ प्रमुखता सूं वर्णन–विवेचन हूवतौ, पण पछै 'नृतत्त्वशास्त्री' इणरी विसय सामग्री नै मोटा रूप सूं दो खण्डां में बांट दी–

1. सारीरिक 'नृतत्त्वशास्त्र'
2. सांस्कृतिक 'नृतत्त्वशास्त्र'

सारीरिक 'नृतत्त्वशास्त्र' में मिनख रै देह विकास अर डील–डौळ रौ इतिहास बताईजै। इणमें बताईजै कै मिनख रै डील–डौळ में लगू विकास कीकर अर किण गत सूं व्हियौ। औ विज्ञान मिनखां रा संगठनां, वां रा न्यारा न्यारा वर्णां री संरचना रै साथै–साथै मिनख रै रगत, चामड़ी, अर रुंआळी रौ ई वर्णन–विवेचन करै। इणमें औ ई बताईजै कै मिनख री आदू अवस्थावां अर आज री अवस्थावां में डील–डौळ लेखै कांई–कांई फरक आयौ है ? न्यारी न्यारी जळ अर वायु वाळा देसां–परदेसां में रैवण वाळा मिनखां रै रंग–रूपां में कांई, कितरौ अर क्यूं फरक व्है ? इणरौ खुलासौ ई 'नृतत्त्वशास्त्र' में करीजै इणरै साथै आं बातां माथै ई विचार करीजै कै डीळ–डौळ रै फरक रै पांण मिनख नै किण–किण भांत रौ सांस्कृतिक जीवण सुलभ व्हियौ। 'नृतत्त्व शास्त्र' री इण सांस्कृतिक साखा री सरूआत एफ. ग्रेबनेर सूं मांनीजै। बे इणमें आं सवालां रा पडूतर पावण री कोसीस करी है–

1. आदू अवस्था में मिनख आपरौ जीवण कीकर बिताया करतौ ?
2. उणरा धार्मिक विस्वास कांई–कांई अर किण भाँत रा हा ? अर वांरो मूळ आधार कांई हो ?
3. आदू मिनख रै मगज (मस्तिस्क) में वंस परम्परा बाबत कांई–कांई अर किसा विचार हा ?
4. उणरौ मगज (मस्तिस्क) प्राकृतिक सगतियां बाबत कांई सोचतौ अर वांनै किण रूप में अंगेजतौ ?
5. आदू मिनख (जकौ गुफावां में रैवतौ, कंद मूळ फळ कै काचौ मांस खावतौ अर अधनागौ रैवतौ) री लोक–कला में जांण अणजांण में आयौड़ा प्रतीकां रा कांई अर्थ व्है सकै ?

आं रै टाळ उण आदू मिनख रा देवी–देवता, भूत–प्रेत इत्याद सूं जुड़ियौड़ा रहस्यां बाबत विचार करणौ भी 'नृतत्त्व शास्त्र' रौ अेक विसय है। इणा सारी जाणकारी सारू 'नृतत्त्वशास्त्री' नै आधारभूत सामग्री वास्तै लोक–साहित्य री विविध विधावां नै देखणी परखणी पड़ै। 'नृतत्त्वशास्त्र' री सांस्कृतिक साखा रौ तौ आधार इज व्है– लोक–गीत, लोक–कथावां अर लोक–गाथावां। इण मुख–जबांनी (मौखिक) परम्परा में इज 'नृतत्त्व शास्त्री' नै आपरी जरूरत मुजब सगळा सूत्र मिळ जावै। क्यूंकै समाज में अर सामाजिकां रै सोच में बखत परवांण कांई–कांई बदळाव आया अर कद–कद आया ? यां रौ लेखौ जोखौ उण बखत रै लोक–साहित्य में इज मिळ सकै। इण सारू आ बात सोळै आंना साची कै लोक–साहित्य 'नृतत्त्वशास्त्र' नै आधारभूत महताऊ सामग्री सूंपै।

3.4 लोक–साहित्य अर समाजशास्त्र

समाजशास्त्र (Sociology) में प्रमुख रूप सूं समाज रौ वर्णन–विवेचन व्है। सामाजिक संगठनां, सामाजिक संस्थावां, सामाजिक व्यवस्थावां, सामाजिक व्यवहारां इत्याद रौ लेखौ जोखौ समाजसास्त्र में मिळै। पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, नैतिक, व्यावसायिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, विधि विधान संबंधी, मिनख रै रैवण रा तौर–तरीकां बाबत

जातियां–उपजातियां कै वर्गां–उवपर्गां रै समाजू संबंधा बाबत–आं सगळी अर इसी औरूं ई घणी–घणी बातां रौ अध्ययन समाजसास्त्र में करीजै। समाजसास्त्र सामाजिक संबंधा रौ सास्त्र गिणीजियौ है अर लोक–साहित्य री सगळी विधावां में सामाजिक अर पारिवारिक संबंधा रौ इज ब्यौरौ मिळै। समाजू काम–काजां रा परिणाम या फळ समाजसास्त्र में वर्णित व्है अर लोक–साहित्य में भी औ इज संदेसौ दिरीजै कै किसी परिस्थिति में किसौ कांम करौला तौ उणरौ कांई फळ भोगौला ? समाज रा विचारां, धारणावां अर मान्यतावां रौ सास्त्र समाजसास्त्र है अर बो ही लोक–साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां समाज रै विचारां, धारणावां अर मान्यतावां नै इतिहास रै झरोखै दरसावै–प्रगटावै। समाजसास्त्र में आदू समाज अर वरतमांन समाज रौ ई वर्णन–विवेचन व्है। लोक–साहित्य पुरांणै रै साथै–साथै बदळतै समाज रा विचारां नै ई अंगेजतौ जावै अर ठेट आज रै समाज री स्थितियां, कमजोरियां, समस्यावां नै ई आपरी विविध विधावां में ठावी ठौड़ देवतौ लखावै। दाखला सरूप–ज्यूं आज 'एड्स' रोग किणी अेक देस या प्रदेस रै समाज री समस्या नीं हूय'र आखै संसार रै मांनवी–समाज री खतरनाक समस्या है। घणा–घणा प्रदेसां रै लोक–साहित्य में 'एड्स' बाबत केई लोक–गीत, केई लोक–कथावां प्रचलित व्हेगी। इण भांत देखां कै लोक–साहित्य अर 'समाजशास्त्र' दोनूं ई पुरातन रै साथै–साथै आज रै समाज री समस्यावां रा भी ब्यौरा अर चित्रांम उकैरै।

3.5 लोक–साहित्य अर मनोविज्ञान

मिनख रै मन री पड़तां मनोविज्ञान (Psychology) में उघाड़ीजै। मिनख जिसौ सीधो–सरल अर सारस सायत ई कोई दूजौ जीव व्है तौ दूजी कांनी औ ई ओभी सोळै आंना सांचौ कै मिनख जिसौ आंटाळ प्रांणी ई मुलक में हेर्‌यां ई नीं मिळै। मनोविज्ञान में मिनख रै अेकलपणै (व्यक्तिगत Individual) मगज (मस्तिस्क) बाबत ई चरचा करीजी है अर उणरै सामूहिक मानस (Group Mind) री भी चरचा हुई है। समाजू मनोविज्ञान (Social Psychology) में तौ समाजू मानसिक परिस्थितियां (Circumstances) अर समाजू मानसिक परयावरण (Social Mental environment) रौ अध्ययन खरीकै तरीकै सूं करीजै। लोक–साहित्य तौ सगळां री निधि, सगळां री बापौती अर सकळ समाज री रचना है। मनोविज्ञान में उण सामाजिक परम्परा रौ विस्लेसण करीजै, जिणसूं मिनख रौ मगज (मस्तिस्क) जलम सूं इज चौफेर घिरियोड़ौ व्है, प्रभावित व्है। मिनख रै दिमाग रै चौफेर फिरियोड़ी अै समाजूं मानतावां इज रीत–रिवाजां नै थरपै अर समाज में पसरावै। लोक–गीतां में इसी परम्परावां रा अर रीत–नीत रा चित्रांम घणा–घणा मिळै। किण किण परिस्थितियां में समाजू मगज में कितरी गिरावट आय सकै अर किण–किण परिस्थितियां में वो कितरौ आदर्सवादी हुय सकै, आं रा ओपता चित्रांम मनोविज्ञानी उण देस–प्रदेस रै लोक–साहित्य सूं लेवै अर उणरै आधार आपरा सिद्धांत थरपै। राजस्थान प्रदेस में प्रचलित 'घूघरी' नांवै गीत में भोजाई रै मानसिक ओछापणै अर नणद रै आदर्स आछापणै वाळै मगज रौ चित्रांम मिळै। इसा गीतां री सामग्री सूं मनोविज्ञानी समाजू–संस्कृति रा दरसाव करावण में सफळ व्है। मनोविज्ञानी नै लोक–साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां सूं घणकरी इसी सामग्री मिळै, जिण रै पांण वो निजू मगज (वैयक्तिक मानस), असामान्य मानस (Abnormal Mind) अर सामूहिक मानस (Mass Mind) बाबत आपरी टिप्पणियां करै अर सिद्धांत थरपै। जग चावा मनोविज्ञानी फ्रायड,

जुंग, एडलर इत्याद मनोवैज्ञानिक अध्ययन अर सिद्धांत थरपणा सारू लोक–साहित्य री सामग्री अर रचनावां रौ सहारौ लियौ, सहयोग लीनौ।

3.6 लोक–साहित्य अर इतिहास

आज इण तथ्य बाबत घणा विद्वानां अर तवारीख (इतिहास) रा जाणकारां रौ खरीकौ मतौ बणियौ है कै देसां–प्रदेसां में सगळै ई राजसाही हकूमत ही अर इण कारण बठां रौ इतिहास निरपेखपणै सूं नीं लिखीजियौ। राजा री मरजी मुजब स्थितियां, घटनावां अर चरित्रां नै बणाईजिया अर बिगाड़ीजिया। उणी'ज राज में रैयनै इतिहासकार या कै ऐतिहासिक काव्य रौ सिरजणहार कवि आपरै बखत रै राजा री मरजी रै खिलाफ जायनै कीं भी लिखण री हीमत नीं कर सकतौ। राजस्थान रै इतिहास रै मांमले में औरू ई घणी मनचाही बातां या कै मनगढंत बातां लिखीजी। कैई सासक तौ आपरा राज में लिखीजणिया तवारीख रा ग्रंथां अर ऐतिहासिक काव्यां में बडेरां री ई भूंड करावण सूं नीं चूकिया। ग्रंथकार लिखणी कीं चावतौ अर ऊपरलै जोर सूं उणनै लिखणौ कीं ओर इज पड़ियौ। राजस्थानी री चावी–ठावी लेखिका राणी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत खुद लिखै कै राजस्थान रौ साचौ इतिहास आज तक नीं लिखीजियौ है। जे आंपां नै राजस्थान रौ सोळै आंना सांचौ इतिहास लिखावणौ है तौ उण सारू राजस्थानी लोक–गीतां, लोक–कथावां, लोक–गाथावां, लोक–प्रवादां, लोक प्रचलित दूहां, ख्यालां (लोक–नाट्यां) अर आडी–अखांणां में बिखरयोड़ी–पसर्‌योड़ी सामग्री रौ उपयोग करणौ पड़सी, क्यूं कै लोक साहित्यकार कदैई किणी रै दबाव में नीं आयौ। मध्यकाळ अर अंगरेजी राज रै जुग में इतिहास ग्रंथां रै लेखन में बदळाव करीजिया। सुतंतरता सेनांनियां नै अंगरेजी राज डाकू अर धाड़ायती रै रूप में बदनाम करण में कीं कसर नीं राखी पण धरती रा रुखाळा इसा देस–भगतां नै लोक–साहित्य अमर कीना, लोक में पुजाया। जोरजी चांपावत, महेसदास अर डूंगजी–जवारजी रै देस–भगती वाळै असली रूप नै लोक–साहित्य इज चावौ कीनौ। राज कांनी सूं तौ वे डाकू–धाड़ायती बणाया जा चुक्या हा। इण सारू लखावै कै साचौ इतिहास तौ लोक–साहित्य में मिळण वाळी सामग्री रै पांण इज लिखीजणौ संभव व्है। इतिहास लेखन सारू लोक–साहित्य महताऊ योगदान देवण में सक्षम है।

3.7 लोक–साहित्य अर भासा विज्ञान

भासा अर लोक–साहित्य–आं दोनुंवा बाबत कह्योड़ौ है कै अै मिनखा–जूणं जितरा पुरातन अर अबार–अबार इज जलमियोड़ा टाबर जितरा नूतन व्है। आदू मिनख नै मन–मानस रा भाव–विचारां री अभिव्यक्ति सारू भासा री जरूरत पड़ी अर मनोरंजन अनै अनुभवां नै कायम राखण सारू मुख–जबांनी चालणियै लोक–साहित्य री जरूरत पड़ी। अठै औ उल्लेख जोग है कै सगळा विद्वान इण बाबत अेक मत कै भासा अर लोक–साहित्य दोनूं ई समयसार बदळाव अंगेजता चालै। भासा तौ हर पल बदळती रैवै। कैई सबद प्रचलित व्है, पण समाजू धरातल पर जरूरत नीं रैवण सूं वां रौ लोप हुय जावै। इसा लुप्त हुयौड़ा सबद लोक–साहित्य री विविध विधावां में सुरक्षित मिळै। इण सूं कैय सकां कै लोक–साहित्य रूपी संरक्षक जूना सबदां नै आपरै खोळै सुरक्षित राखै अर इण भांत भासा–विकास री कड़ियां जोड़ण में अनूठौ सहयोग करै। कैई सबद यूं तौ अेकदम निरर्थक व्है, पण वे किणी समोच्चारित सबद रै अैन कनै काम में लिरीजण सूं उण सबद नै दुगणौ–चौगणौ असरदार

बणाय दैवै। लोक–साहित्य री जुदा–जुदा विधावां में इण भांत रा सबदां रा प्रयोग मिळै, ज्यां सूं लोगां रौ मनोरंजन ई व्है अर वां रै मारफत दीयौड़ौ संदेसौ ई घणौ असर करै। इणरै टाळ किणी भासा में विदेसी भासा रा सबद लोक–साहित्य रै रस्तै इज आवै। विदेसी भासा रा सबद पैली–पैली लोक–गीतां, कथावां–गाथावां या कै आडी ओखाणां में आपरी ठावी ठौड़ बणावै अर धीरे धीरे वे उण प्रदेस री भासा–बोली में ई आपरा पग पसारदैवै। इण भाँत लोक–साहित्य दो न्यारी न्यारी भासावां रा सबदां नै अेक–दूजी भासा रूपी नदियां में प्रवेस दिरावणियौ केवट कैईज सकै। सार बात आ इज कै लोक साहित्य अर भासा–विज्ञान धरम भाई बैन ज्यूं लखावै।

3.8 सारांस

इण सारा विवरण सूं ठा लागै कै लोक–साहित्य रौ संबंध घणकारी अध्ययन पद्धति रा सास्त्रां सूं व्है। अै सारा ई विसय आपरी निजू ओळखांण कायम राखतां थका अेक–दूजा सारू सहयोगी सिद्ध हूवता रैवै। आं सगळा ई सास्त्रां रा अध्ययन सिद्धांत अर अध्ययन प्रक्रिया जुदा–जुदा हूवतां थकां ई अै आपसरी में जुड़ियौंड़ा व्है। 'नृतत्त्व शास्त्र' भलांई आदिम मिनख रै डील–डौळ री बणावट रौ लेखौ–जोखौ प्रस्तुत करै, समाजसास्त्र भलांई प्राचीन रै साथै–साथै आज रै सामाजिक गठन अर व्यवस्था बाबत जाणकारी करावै, मनोविज्ञांन भलांई मिनख रै निजू अर सामूहिक मन–मानस री गांठां उळझावै– सुळझावै पण लोक–साहित्य आं सगळा सास्त्रां नै बुनियादी सामग्री मौखिक परम्परा में सुरक्षित राखतौ थकौ उपलब्ध करावै। अै सगळा ई अध्ययन मिनखा–जूंण रा वां अंगां नै छूवण री कोसीस करै, जका भांत–भांत सूं लोक–साहित्य अर लोकवार्ता री सामग्री नै आलोकित करै। अठै इण बात रौ खुलासौ ई जरूरी है कै आं सगळी अध्ययन पद्धतियां रा आपरा न्यारा–न्यारा तौर–तरीका है, न्यारा–न्यारा सिद्धांत है, फेरूं भी अै सगळा ई अेक दूजै रै खेतर में भी आसानी सूं पूग जावै। सार बात आ कै मूळ सामग्री तौ लोक–साहित्य अर लोक–वार्ता री इज गिणीजै पण उण सामग्री रौ आपरी दीठ मुजब उपयोग अै सगळा सास्त्र ई कर दैवै। कांई ठा आवण वाळै बखत में लोक–साहित्य भी आपरौ खुद रौ अध्ययन रौ न्यारौ अर सुतंतर अनुसासन बणाय दै, पण आज तौ आं सगळा ई सास्त्रां रौ आपसी गहरौ अर महताऊ संबंध है।

3.9 अभ्यास रा सवाल

1. 'नृतत्त्वशास्त्र' में किण भांत रौ अध्ययन व्है ?
2. इतिहास रौ सांच कठां सूं ले सकां ?
3. समाजसास्त्र अर लोक–साहित्य रै आपसी संबंध नै दरसावौ।
4. मनोविज्ञान री मूळ अवधारणावां उजागर करौ ?
5. 'भाषा–विज्ञान' री दीठ सूं लोक–साहित्य रौ महत्त्व बतावौ।

3.10 संदर्भ ग्रंथ

1. लोक–साहित्य विज्ञान– डॉ. सत्येन्द्र

2. Standard Dictionary of Folklore - Maria Leach.
3. भारतीय लोक–साहित्य : डॉ. श्याम परमार
4. राजस्थानी लोक–साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन, डॉ. एस. डी. चारण
5. लोक–साहित्य की भूमिका, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय।
6. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य : डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

इकाई – 4

लोक–साहित्य : अध्ययन रा सम्प्रदाय

4.0 उद्‌देस्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 भारतीय सम्प्रदाय

4.2.1 'धर्मगाथावादी' सम्प्रदाय

4.2.2 प्रसारवादी सम्प्रदाय

4.3 'नृवंशीय' सम्प्रदाय

4.3.1 मनोविज्ञानवादी सम्प्रदाय

4.3.2 टोनावादी सम्प्रदाय

4.3.3 ऐतिहासिक सम्प्रदाय

4.4 लोक–साहित्यवादी सम्प्रदाय

4.5 रूपक तत्त्वीय सम्प्रदाय

4.6 इह्‌यूमरीय सम्प्रदाय

4.7 मूल मानसवादी सम्प्रदाय

4.8 हेतुकथावादी सम्प्रदाय

4.9 व्यक्तिवादी सम्प्रदाय

4.10 लोकवादी सम्प्रदाय

4.11 सारांस

4.12 अभ्यास रा सवाल

4.13 संदर्भ ग्रंथ

4.0 उद्‌देस्य

अेक जमांनौ हौ जद लोक–साहित्य री कोई गिनार ई नीं करतौ। इणनै गंवारूं अर असभ्य लोगां रौ साहित्य गिणता। इण सारू इणरै विधिवत अध्ययन रौ तौ सवाल ई नीं ऊठतौ पण जद न्यारा–न्यारा विसयां अर अनुसासनां रा पिछमी देसां रा विद्वान् लोक साहित्य री विविध विधावां (लोक–गीत, लोक–गाथा, लोक–कथा, लोक–नाट्य अर लोकोक्ति साहित्य) री मूळ सामग्री रौ खुद री दीठ मुजब अध्ययन विवेचन कर'र कैई थरपणावां थरपण खातर भांत–भांत सूं काम में लेवण लागा, तद सूं लोक–साहित्य रौ ई अेक सुतंतर विसय रै रूप में विस्वविद्यालयां में अध्ययन–अध्यापन हूवण लागौ। सोध–खोज री दीठ सूं भी विद्वान इण सामग्री नै निरखण–परखण लागा। कैई विस्वविद्यालयां अर सोध–संस्थानां में

लोक–साहित्य अेक सुतंतर विभाग रै रूप आपरी ओळखांण बणावण लागौ, जद सूं अभिप्राय (Motif) अेक सबळ–समर्थ सूत्र तंतु या तत्त्व रै रूप में विद्वानां री निजरां चढियौ, तद सूं घणा विचारक अर विद्वान लोक–साहित्य री घणमूंघी सामग्री रौ उपयोग करण सारू आखता पड़ण लागा। अेक होड सी माचगी। विद्वानां री इण होडाहोड में लोक–साहित्य रै अध्ययन विवेचन रै मामलै नै लेयनै न्यारा–न्यारा सम्प्रदाय थरपीजग्या। विद्वान आप–आप री निजरां इण साहित्य री कूंत करण लागा अर लोक–साहित्य री पारम्परिक सामग्री री सरूआत ढूंढण–खोजण लागा। इण इकाई में मुख्य रूप सूं लोक–साहित्य रै अध्ययन रा न्यारा–न्यारा सम्प्रदायां बाबत जाणकारी दिरीजसी। आं सम्प्रदायां नै सरू करणवाळा कुण–कुण है ? लोक साहित्य रै अध्ययन रा न्यारा न्यारा सम्प्रदायां री कांई–कांई विसेसतावां है ? आं री कांई–कांई मांनतावां है ? आं सब बातां नै उद्घाटित करण रौ भी इण इकाई रौ ध्येय है।

4.1 प्रस्तावना

उगणीसवीं सदी रा सरूआत रा बरसां सूं लोक–वार्ता अर लोक–साहित्य रौ अध्ययन–विवेचन, उणरी निरख–परख वैज्ञानिक दीठ सूं हूवण लागी। इण प्रसंग में तीन तरै री राय सांमी आयी–

1. इणरी सरूआत 'रोमांटिसिज्म' री विचारधारा रौ फळ है।
2. इणरौ संबंध यूरोप रै पुनर्जागरण सूं है।
3. आधुनिक रास्ट्रवाद री भावना साथै इणरौ जलम हुयौ।

घणकरा विद्वानां री राय में तीजोड़ी बात साची अर सबळ है। अै विचारक रास्ट्रवाद नै फ्रांसीसी क्रांति रै नतीजै रूप में कायम करै। सामन्तवाद रै खिलाफ जन–चेतना रौ विकास व्हियौ। जनमानस उछाळौ कीनौ। जनमानस री आ उद्घोसणा च्यारूं कूंट पसरी कै 'राष्ट्र' रौ निर्माण सामन्तां रै बळबुत्तै नीं जन–समुदाय रै पांण व्है। जद सूं इण भावना रौ पसराव व्हियौ, तद सूं लोक–वार्ता, लोक–संस्कृति, लोक–कलावां अर लोक–साहित्य सूं संबंधित सामग्री रौ संकलन करीजण लागौ अर उणरौ वैज्ञानिक अध्ययन, अध्यापन–विवेचन सरू हुयौ।

आधुनिक युग में लोक–वार्ता, लोक–संस्कृति अर लोक–साहित्य री सामग्री पर भांत–भांत सूं विचार करण री प्रवृत्ति पनपी अर औ प्रमाणित करण री चेस्टा हूवण लागी कै 'शिष्ट' (आभिजात्य) साहित्य री नींव ई लोक–चेतना माथै टिकयौड़ी है। लोक साहित्य सूं इज काफी–कुछ ग्रहण कर कोई साहित्यकार आपरी निजु रचना नै संवारै–सुधारै। हिन्दी रा चावा विद्वान् आचार्य रामचन्द्र 'शुक्ल' लोक–साहित्य रै अध्ययन री उपादेयता बाबत साफ–साफ लिखै–

''भारतीय हृदय का सामान्य स्वरूप पहचानने के लिए पुराने अपरिचित ग्रामगीतों की ओर भी ध्यान देने की महती आवश्यकता है।''

इणी'ज बात नै एन. के. चित्राविक आं सबदां में दरसावै – ''साहित्य के अनेक काव्य रूपों का उद्भव तथा विकास लोक–वार्ता की गोद में होता है।''

लारलै सईकै सूं लोक–साहित्य री विविध विधावां रौ महताऊ विवेचन देसां–परदेसां रा विद्वानां–विचारकां भांत–भांत सूं कीनौ अर उणसूं केई सार री बातां सांमी आई। जैकब ग्रिम अर विलहेल्म ग्रिम (ग्रिम बंधु) री तौ आ इज मान्यता कै सगळी यूरोपीय लोकवार्तावां री सरूआत अेक मूळ भारत–यूरोपीय स्त्रोत सूं हुई। आखै संसार में पसरियोड़ी बातां (लोक–कथावां) में घणी समानता मिळै, क्यूं कै आं सगळी लोक–कथावां री सांस्कृतिक परम्परावां अेक जिसी ई है। आ इज सांस्कृतिक समानता देस–जात रा सीमाड़ा लांघनै लोक कथावां अर लोक–गीतां में मुखरित व्है। विस्व रा मांनीजीयोड़ा लोक–वार्ता मर्मज्ञ इण बाबत कीं सिद्धांता री थरपणा करी। आगला बरसां में लोक–साहित्य रै अध्ययन रै सम्प्रदायां रै नांव सूं आं सिद्धांता री ओळखांण व्ही। इण बाबत 1891 में अेक 'अन्तर राष्ट्रीय सम्मेलन' ई बुलाईजियौ।

4.2 भारतीय सम्प्रदाय

इण सम्प्रदाय री थरपणा करण वाळा विद्वानां री मान्यता रैयी है कै आखै संसार में चावी सगळी भांत री लोक–कथावां अर लोक–गाथावां री सरूआत भारत सूं हुई। इण धरती माथै जलम लैय अै कथावां अर गाथावां आखी दुनियां में पसरी। अै विद्वान् भारतीय चिंतन तत्त्व अर भासा–विज्ञान रै सहारै लोक–तत्त्व नै समझण री कोसीस करी। इणा री मान्यता है कै लोक–कथावां अर गाथावां रै जलम अर दूजै देस री भासा में रूपांतरित हूवण रौ मूळ कारण सबद–विकार व्हिया करै। इणनै मैंक्समूलर 'मेलोडी ऑफ वर्ड्स' (Melody) of words) नांव दीयौ है। इण सम्प्रदाय नै थरपणिया विद्वानां तुलनात्मक पद्धति अपणाई, जिणनै विद्वान 'व्युत्पत्ति सोधक' प्रणाली रो भी नांव दीयौ है। इणमें फैरूं नीचै लिखिया मुजब उपसम्प्रदाय भी प्रचलित व्हिया।

4.2.1 'धर्मगाथावादी' सम्प्रदाय

नामी विद्वान अर भासाविद् मैक्समूलर इण सम्प्रदाय री थरपणा करी। आप मांनै कै सगळी भारत–यूरोपीय जातियां रौ मूळ आर्य वर्ग है। अै जातियां बखत–परवांण ऐतिहासिक अर भौगोलिक कारणां सूं जगह–जगह बसती अर पसरती रैयी। इण कारण जूना वैदिक देवी–देवतावां रा नांव अर वां सूं संबंधित घटना–क्रम मूळ प्रसंग अर रूप सूं बिसराईजता गया, पण वांरौ अर्थ–तत्त्व बोही रियौ। आर्य–जात कनै कथावां रौ अकूत भंडार हौ, जकौ इतिहास, पुराण अर मुख जबांनी रूप सूं लोक–वार्तावां में सुरक्षित है।

दूजा सबदां में औ सम्प्रदाय **'भाषा–विज्ञान वादी'** सम्प्रदाय भी गिणीजै। ग्रिम बंधुवां रौ भी इणमें सरावण जोग योगदान रियौ। ग्रिम बंधु मांनै कै अेक जिसी दिखण वाळी सगळी कहाणियां रौ मूळ यूरोपीय स्रोत है अर लोक–कथावां गाथावां रौ अवसेस मात्र है। इण सम्प्रदाय में **'मिथ'** (Myth) री महताऊ ठौड़ है। ई.बी. हाथलर उण जुग नै **'मिथ मेकिंग जुग'** (Myth Making period) नांव देवै। इण सम्प्रदाय नै मानण वाळा विद्वानां री राय में सगळा देवी–देवता प्राकृतिक पदारथां रा मिनख रूप है। अै विद्वान मांनै कै आदू मिनख हरेक चीज–बस्त नै सरजीव इज मांनै, भलांई वा निरजीव व्हौ। सार रूप बात आ कै सगळी लोक–कथावां/गाथावां री सरूआत अेक ठौड़ सूं व्ही। अेक जिसी गाथावां जठै–जठै प्रचलित व्ही, वां जातियां रौ उद्गम स्थल अेक है। भासा–विकार रै कारण गाथावां री

उत्पत्ति व्है। इण में नांव, ठौड़ अर अभिप्रायां (Motifs) रौ तुलनात्मक विवेचन करीजै। जरमनी रा अदालवर्त कुन्ह, स्कवार्ज, मनहाईट, एफ.आई. बुस्लमेव, ए. एन. आफनास्पैव, ओ. एफ. मिलर इण सम्प्रदाय रा मानीजियोड़ा विद्वान है।

4.2.2 प्रसारवादी सम्प्रदाय

इण सम्प्रदाय रा मानण वाळां री आ द्रिढ़ धारणा कै न्यारा–न्यारा देसां परदेसां रा लोक–साहित्य अर लोक–कथावां में विसय वस्तु (कथ्य) अर बणगट (शिल्प) रै धरातल माथै गजब री समानता मिळै। इणरौ प्रमुख कारण पसराव है। अेक ठौड़ या कै देस सूं दूर अै लोक–कथावां दूजी ठौड़ या कै देस मांय पसरी। इण सारू आं रै पसराव री प्रकृति अर रूप नै समझणौ जरूरी है। अेक भांत री कथावां एसिया सूं लेय'र आखै यूरोप अर ग्रीनलैण्ड सूं लेय'र दक्षिण अमेरिका तक पसरीयोड़ी है। टायलर नामक विद्वान इणनै **'समानान्तरवाद'** नांव देवै। बे बतावै कै सगळी कथावां में जकी समानता मिळै, उणरौ मूळ कारण मिनखै री मूळ प्रकृति है। अेक जिसी परिस्थितियां में अर अेक जिसै वातावरण में सगळा ई मिनख अेक जिसौ इज सोचै। उणरी परगत अेक जिसी ई व्है। बियोडोर बेन्फे नाम रा विद्वान बतायौ कै 'यूरोप–एशिया' में प्रचलित सगळी लोक–कथावां अेक इज केन्द्र सूं पसरी है अर वो केन्द्र है – भारत। कुछ विद्वान इणनै '**उधारवादी सम्प्रदाय**' रो भी नांव देवै। बेन्फे, टायलर, डा़ सत्येन्द्र, इण मत नै मानणवाळा है।

4.3 नृवंशीय सम्प्रदाय (एन्थ्रेपोलॉजिकल Anthropological सम्प्रदाय)

इंग्लैण्ड, फ्रांस इत्याद देसां रौ राज पद अफरीका, अमरीका अर एसिया तक पसरियौ तद सोधकर्त्तावां वां देसां री लोक–वार्तावां रौ संकलन–करवायौ। इण सम्प्रदाय री थरपणा अंग्रेज विद्वान टेलर आपरी नामी पोथी **'प्रिमिटिव कल्चर'** (Primitive Culture) में करी। इण संकलित विसाळ सामग्री री गहरी दीठ सूं खोजबीण कर्यां पछै बे आपरी पोथी में लिखै कै–

1. सगळी जातियां रै मिनखां री जीवण–पद्धति, वां रा रीत, रिवाजां अर वां री धार्मिक मानतावां में जबर्दस्त साम्य व्है पण इणरौ कारण औ नीं कै वांरौ पसराव एक ठौड़–ठायै सूं व्हियौ व्है। सगळी समानतावां प्रसारण रै कारण नीं व्हिया करै।
2. मिनख रौ सभाव, उणरी विचार पद्धति अर उणरै विकास क्रम में समानता व्हिया करै। इण कारण इज हर जात लोक–तत्त्वां रौ निर्धारण सुतंतर रूप सूं करै। आं लोक–तत्त्वां रौ उदय नीं तौ किणी अेक मूळ स्त्रोत सूं व्है अर नीं ई कोई जात दूजी जात सूं कीं उधार लेवै।
3. आदू मिनख इज संस्कृति रा मूळ बीजां (सिद्धांतां या कै थरपणावां) रौ निर्माण कीनौ अर वे इज अवसेस आज तक विद्यमान है। टेलर री मान्यता सूं ऐण्ड्रलेंग नाम रा विद्वान सहमत होय लिखै कै 'धर्मगाथावां' अर लोक–कथावां रै विकास रा केई पावड़िया है।
    1. 'सपैलड़ी' मूळ कथा अभिप्रायां (Motifs) या कै तंतवां सूं युक्त होयनै हब्सियां बणाई।

2. हब्सियां रै आदू समाज सूं निकळनै अै कथावां करसां (किसानां) री कथावां बणी।

3. तीजा पावड़िया (स्तर) माथै अै कथावां, अध साची वीर कथावां बणी।

4. चौथे पावड़ियै अै साहित्यिक रूप धारण करलैवै। इण सम्प्रदाय रा भी इण मुजब उपसम्प्रदाय है।

4.3.1 मनोविज्ञानवादी सम्प्रदाय

इण सम्प्रदाय रा थरपणहार लोक मानस रौ गहराई सूं अध्ययन कीनौ अर पछै आपरी मानतावां थरपी। जर्मन विद्वान विलहेम्स बुंट आपरी चावी पोथी 'साइकॉलॉजी ऑफ नेशन्स' (Psychology of Nations) में लिखियौ कै धरम अर काव्य रा भांत–भांत रा विचार बिन्दु मिनख रै मस्तिस्क में सपना या कै भरम–दरसाव रै रूप में उत्पन्न व्है। नामी मनोविज्ञानी फ्रायड भी आ इज थरपणा करी कै लोक गाथावां रा अभिप्राय (Motif) माडै दाबियोड़ी कांम–वासनावां रा नतीजा सरूप व्है।

4.3.2 टोनावादी सम्प्रदाय

चावा भू विज्ञानी अर नांमी विद्वान जेम्स फ्रेजर इण सम्प्रदाय री थरपणा करी। आप बतावै कै मिनख री भूतात्मवाद प्रवृत्ति रै पांण इज लोक–साहित्य री सिरजणा व्है।

4.3.3 ऐतिहासिक सम्प्रदाय

रूसी भू–वैज्ञानिक बी.ए. मिलर इण सम्प्रदाय री थरपणा करी। आप अर आप जिसा दूजा विद्वानां रूसी लोक–साहित्य रौ अध्ययन उणरी ऐतिहासिक पूठभूमि में कीनौ। आं विद्वानां लोक साहित्य अर इतिहास रौ गहरौ संबंध थरपियौ। इण सम्प्रदाय में इण बात माथै बळ दिरीजै कै लोक–वार्ता री सरुआत कद हुई ? कठै व्ही ? वा किसा–किसा इतिहासू सबूतां पर आधारित है ? अर किसा–किसा काव्य–स्रोतां रै सहयोग सूं उणरौ निर्माण व्हियौ। आं सगळी बातां री निरख–परख करणो, इण सम्प्रदाय री खासियत है।

4.4 लोक–साहित्यवादी सम्प्रदाय

इण सम्प्रदाय रा चिंतक विद्वानां रौ कैवणौ है कै लोक–साहित्य री धरम–परक व्याख्या करणी बेकार है। अै विचारक लोक–साहित्य री सिरजणा नै आदू मिनख रै जंगळी या कै असभ्य सभाव रौ परिणाम नीं मांनै। आं विचारकां रौ तौ औ मतौ है कै अभिप्रायां (Motifs) में जकी समानता मिळै, वा कबीलां रै आपसी मेळ–जोळ अर आदान–प्रदान रौ नतीजो है। लोक–साहित्य री सिरजणा अर सरूप रै विवेचन खातर इण दीठ सूं इज अध्ययन हूवणौ चाहीजै। इण बाबत लारली जूनां बरसां पुरांणी थोथी झिकाळ नीं कूटणी चाहीजै। अै विद्वान् आ मान्यता थरपै कै हरैक लोक–वार्ता रौ आपरौ निजू इतिहास व्है अर उणरौ आपरौ इज पसराव–क्षेत्र व्है। इण सारू इण तथ्य नै ध्यांन में राखनै इज उणरौ सुतंतर अध्ययन करीजणौ चाहीजै। इण सम्प्रदाय रा विचारकां, लोक–वार्ता साहित्य रै आखै संसार में पसराव रै मूळ में, ऐतिहासिक भौगोलिक पद्धति माथै गहराई सूं चिंतन–मनन करियौ

है। अै विद्वान बतावै कै सबसूं पैलां किणी लोक–गाथा अथवा लोक–गीत रा जितरा भी रूप–भेद प्रचलित व्है, वां नै संकलित करणा, वां री आपस में तुलना करनै उणरै मूळ रूप या कै पूरबलै रूप रौ पुनर्निर्माण करणौ चाहीजै। वां लोक गाथावां या लोक–गीतां में जका ई ऐतिहासिक भौगोलिक संकेत मिळै, वां रै आधार माथै उण गाथा या गीत रै सिरजणा रै समै बाबत निर्णय लेवणौ चाहीजै। इण गाथा या गीत रा क्षेत्रीय रूपांतरां नै अेकठा करनै वां मांय सूं बखतसर हुया भेळ (मिश्रण) रै पांण उण ठौड़–ठायै रौ पतौ लगावणौ, जठां सूं पैलड़ी गाथा री सरू बात व्ही। इण भांत किणी गाथा या गीत रै निर्माण बखत अर स्थान बाबत जाणकारी मिळ सकै। कैई विद्वानां इण सम्प्रदाय नै **'फिनीशियन स्कूल'** सूं दूजौ नांव दीनौ क्यूंकै इण विचारधारा री सरुआत फिनलैंड सूं हुई। सबसूं पैली जूलियस क्रोन्ह नाम रा विद्वान इण मत रौ प्रतिपादन कीनौ। इण प्रणाली (ऐतिहासिक, भौगोलिक पद्धति) सूं वीर गाथावां, लोक प्रचलित खेलां, आडियां–ओखांणां, गीत–गाथावां अर कथावां सगळां रौ भी आछी तरै अध्ययन करीज सकै। औ 'लोक साहित्यवादी सम्प्रदाय' गिणीजै। अमरीकी लोकवार्ता रै अध्ययन खेतर में इण सम्प्रदाय नै **'आर्ने टामसन सम्प्रदाय'** भी नांव दिरीजै। कुछैक विद्वान अर विचारक इणरौ सार्थक अर सही नांव **'ऐतिहासिक भौगोलिक सम्प्रदाय'** बतावै। इण सम्प्रदाय रा समरथकां लोक–कथावां रा भांत–भांत रा प्रचलित रूप अेकठा कीना। वांनै आं लोक–कथावां रा छोटा–मोटा अर अणूता मोटा कैई भांत रा रूप मिळ्या। वां रूपान्तरां रौ विस्लेसण करनै लोक–कथा रौ मूळ रूप थिर कीनौ, उणरै सरूआती ठौड़–ठायै री जांणकारी दीनी अर साथै औ ई बतायौ कै वा मूळ कथा किण रस्तै कठै–कठै देसां–परदेसां में पसरी। इतरौ इज नीं इण तथ्य रौ ई खुलासौ कीनौ कै किसा–किसा अभिप्राय (Motif) कठै कठै अर कदै कदै इणमें मिळिया अर इणरै सरूप में किण–किण भांत बदळाव आयौ। इण प्रणाली में कथा रै जनपदीय या स्थानीय स्रोतां तांई जावण री अर वांनै ढूंढण री कोसीस करीजै।

4.5 रूपक तत्त्वीय सम्प्रदाय

लोक–साहित्य रै अध्ययन बाबत जितरा ई सिद्धांत अर सम्प्रदाय प्रचलित व्हिया, वां में **रूपकतत्त्वीय सम्प्रदाय** सै सूं महताऊ गिणीजै। इण सम्प्रदाय री मान्यता है कै 'धर्मगाथावां' अर लोक–संस्कृतियां में वर्णित, विवेचित भांत–भांत रा देवतावां रा नांव किणी प्राकृतिक या कै दिव्य तत्त्व रा रूपक है। ज्यूं– विस्णु अर राम सूरज रा, हड़मांन वायु रा अर इन्दर बादळां रा रूपक है। भारतीय तौ कांई पास्चात्य गाथावां मांय भी इसा रूपक मिळै। ज्यूं–पोडिसन नाम रो देवता जळ रौ, हेरा देवता वायु रौ अर बलकन देवता अगनी रौ रूपक है। लोक–कथावां में वर्णित न्यारा न्यारा क्रिया व्यापार भी प्राकृतिक क्रिया–कलापां रा प्रतीक व्है। इण सम्प्रदाय रा समरथकां लोक कथावां रा क्रिया व्यापारां नै सूरज, चाँद, जळ, अगनी, आंधी, तूफान, इत्याद कार्य–व्यापारां रै रूप में दरसाया है।

4.6 'इह्युमरीय' सम्प्रदाय

इण सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक इह्युमरीय नाम रा व्यक्ति हा, इण कारण इण सम्प्रदाय रौ नाम इह्युमरीय राखीजियौ। इणारी पक्की मान्यता रैयी है कै लोक–कथावां अर 'धर्मकथावां' में किणी ऐतिहासिक तथ्य नै कल्पना रै सहारै तोड़–मरोड़ नै पेस करीजै। बेनियर अर लेम्प्रीअर

जैड़ा विद्वान इण विचार रौ समरथन कीनौ।

4.7 मूल मानसवादी सम्प्रदाय

इण सम्प्रदाय रा विद्वान मांनै कै लोक वार्तावां में मिलण वाळा अभिप्रायां (Motif) री सरूआत आदू–स्रस्टि मूलक या आदू मानव–मूलक सपना री अनुभूतियां व्है। जुदा–जुदा जातियां री लोक कथावां अर 'धर्मगाथावां' बारम्बार वर्णित हूवण वाळी अेक जिसी (समान) बातां, (जकी कै कला अर साहित्य रै मारफत अभिव्यक्त व्है) रौ मूळ आधार मिनख रौ अवचेतन मानस व्है, जकौ विस्व रा सगळा ई मिनखां में अेक जिसौ इज व्है। औ अवचेतन वंस–परम्परा सूं मिळै अर आवण वाळी पीढियां तांई चालतौ रैवै। मनोवैज्ञानिक विद्वान जुंग इण सिद्धांत नै चलायौ।

4.8 हेतुकथावादी सम्प्रदाय

दहन हार्ट अर राइवर्स नाम रा विचारक इण सम्प्रदाय रा प्रवर्तक अर पोसक है। अै दोनूं ई विचारक लोक–कथावां अर धर्मगाथावां नै हेतु–कथा इज मांनै। इण सम्प्रदाय री पक्की मान्यता है कै सगळी ई लोक कथावां अर धर्मगाथावां किणी न किणी व्यापार री व्याख्या करण सारू सृजित व्है। आद–जुगाद अर सनातन समै सूं ई मिनख इण जगत रा रहस्यां, क्रिया व्यापरां अर नित–नित रा अनुभवां नै किणी न किणी कथा रै माध्यम सूं समझावण री कोसीस करतौ रियौ है। इण सारू लोक कथावां रै पांण जुगां जूनी सांस्कृतिक मानसिकता रौ ब्यौरौ प्राप्त कर सकां अर म्यांनौ जांण सकां!

4.9 व्यक्तिवादी सम्प्रदाय

हैंस नउमन्न नामक विद्वान इण सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक हा। आप बतावै कै लोक में निर्माण री कीं भी सगती नीं व्है। लोक सदाई उतारू–फुतारू नै इज अपणावै। आभिजात्य वरग आपरी प्रतिभा सूं नित नवी–नवी चीज–बस्तां उपजावै। लोक पछै उणरी देखा–देखी करै। लोक में जका रीति–रिवाज या 'फेसन' अर पौसाकां प्रचलित व्है, वे लोक नै आभिजात्य वर्ग सूं इज मिळै। लोक आभिजात्य वरग री बणाई बातां अर विचारां नै आपरी मरजी मुजब ढाळलैवै अर पछै वां सूं घणै समै तांई चिपियोड़ै रैवै।

4.10 लोकवादी सम्प्रदाय

जे. पी. हरडर इण सम्प्रदाय री सरूआत करी। आप मांनै कै लोक रै कनै अणूती उद्भावनी प्रतिभा व्है, जिणसूं वो नवी–नवी उद्भावनावां करतौ रैवै। आप व्यक्तिवादी सम्प्रदाय री मान्यतावां रौ जबर्दस्त विरोध करतां थकां औ मतौ प्रकट करै कै लोक री ढेर सारी उद्भावनावां री चोरी करनै इज कोई व्यक्ति खास कला अर साहित्य में नुंवा–नुंवा चमत्कार करै अर आपरी प्रतिभा रौ परिचय देवै। इण भांत समस्त लोक देवणियौ अर व्यक्ति लेवणियौ है।

4.11 सारांस

इण भांत जाणकारी लागै कै लोक–साहित्य अर संस्कृति रौ अध्ययन कितो जरूरी अर

गुणकारी है। इणरै अध्ययन अर इणरै महत्त्व रै मोल–तोल री जांच पैली व्ही, अर लोक साहित्य री वैज्ञानिक निरख–परख पछै। इणरी मूळ सामग्री पर भांत–भांत सूं अर न्यारी–न्यारी दीठ सूं अध्ययन विवेचन करीजियौ है। इणरै अध्ययन रा मापदण्ड तय हुया है। आं अध्ययनां–विवेचनां में सम्प्रदाय या कै सिद्वांत रा प्रवर्त्तक अर विचारक लोक वार्तावां री पूठभूमि रौ पतौ करियौ, उणरी विकास–जातरा रा मारग उघाड़िया अर औ भी बतायौ कै इणरौ अध्ययन कर'र आंपां कांई उपलब्धि कर सकां। इणरै साथै–साथै लोक–वार्तावां में समायौड़ी समाजू समस्यावां पर भी पूरी तौर सूं अर गहराई सूं विचार करीजै। इतरौ इज नीं इण इकाई में औ भी बताईजियौ है कै इण भांत सूं लोक–साहित्य रौ मूल्यांकन करियां पछै ई ठा लागै कै हाल इण सामग्री रौ मोल–तोल औरूं किण दीठ सूं हूवणौ चाहीजै। तद इज आंपां आंपणी संस्कृति अर सभ्यता री धरोहर रो असली सरूप पिछांण सकांला अर इण भांत इज आपणी लोक–सम्पदा री ओळखांण आखै जगत नै करा सकांलां।

4.12 अभ्यास रा सवाल

1. आज रै युग में लोक साहित्य रै अध्ययन री कांई जरूरत अर महत्ता है ?
2. धर्मगाथावादी सम्प्रदाय री मूळ धारणावां उजागर करौ।
3. सबद–विकार (Melody of words) सूं कांई मतलब है ?
4. एन्थ्रोपोलॉजिकल सम्प्रदाय रौ परिचय करावो।
5. लोक–साहित्यवादी सम्प्रदाय अर रूपक तत्त्वीय सम्प्रदाय रा सिद्धांतां में कांई फरक है ? समझावो।

4.13 संदर्भ – ग्रंथ

1. लोक साहित्य विज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र
2. लोक साहित्य की भूमिका : डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
3. लोक साहित्य स्वरूप और सिद्धांत : डॉ. एस. डी. चारण
4. भारतीय लोक–साहित्य : डॉ. श्याम परमार
5. खड़ी बोली का लोक साहित्य : डॉ. सत्या गुप्त

इकाई 5

लोक गीत : परिभासा अर वर्गीकरण

5.0 उद्देस्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 लोक–गीतां रौ महत्व

5.3 लोक–गीत : परिभासा

5.4 लोक–गीत : वर्गीकरण

5.5 लोक–गीत : विस्तार

5.6 सारांस

5.7 अभ्यास रा सवाल

5.8 संदर्भ ग्रंथ

5.0. उद्देस्य

इण इकाई में लोक–गीत रै सैद्धांतिक–पख बाबत पुख्ता जाणकारी दिरीजी है। इण इकाई नै पढ़ियां सूं लोक–गीतां सूं संबंधित नीचै लिखी बातां विद्यार्थी जाण सकैला –

अ. लोक–गीत रौ मतलब

आ. लोक–गीत री परिभासा

इ. लोक–गीतां रौ महत्त्व

ई. लोक–गीतां रौ–वर्गीकरण

उ. लोक–गीतां में समाज

ऊ. लोक–गीत में लोक–संस्कृति

5.1. प्रस्तावना

लोक–मानस रा तत्त्व सगळा ई देसां, धरमां, सम्प्रदायां अर जातियां में मिळै। लोक–मानस अर लोक–हिरदै रै सुख–दुख री घड़ियां रा खाटा–मीठा अनुभव वांरा लोक–गीतां में मिळै। जित्तो फैलाव संसार अर प्रकृति रौ है बित्तो ई विस्तार लोक–गीतां रा विसयां रौ है। आखी धरती, इण धरती री सगळी वनसपती अर घण ऊँचौ आभो ही नीं, मिनख रा मन अर अन्तस री अनापसनाप कल्पनावां, भावनावां अर विचारधारावां सब कुछ लोक–गीतां में वर्णित–विवेचित व्है। नर अर नारी रा सगळा रिस्ता–नाता (माँ, बाप, भाई, बैन, धणी, लुगाई, सासू–बहू, नणद, भोजाई, भुआ, देरांणी, जेठाणी, दादौ, दादी, नानौ, नानी, काकौ–काकी, बेटौ–बेटी, पोतौ, पोती इत्याद परिवारिक–समाजिक संबंध) आं गीतों में भांत–भांत सूं गाईजियौड़ा है।

5.2. लोक गीतां रौ महत्त्व

इणा में सगळी भाँत रा बरणाव है। घर–परिवार में आं लोक गीतां रै पांण इज कुरब–कायदै, रीत–नीत अर जिम्मेवारी री लोक–सुभावती सीख दिरीजै। जिम्मेवारी अर मरजादावां आं गीतां री ओळ्यां आछी तरियां मंडियौड़ी है। आं गीतां रा हालरिया सुण'र सिसु सरूप मिनख सुखभर नींद सोवै। आं गीतां मांय जोध–जवांनी आपरै उनमादिया रूप में मनमोवणा चित्रामां मंडियोड़ी है अर थाकल बूढापा रा अखूट अनुभवां रौ सार है। अै लोक–गीत लोक – लीक खींचणहार अर समाज में प्रेम जळ सींचणहार मानीजिया है। धरम–करम री बातां आ गीतां रै पांण ई दिग–दिगंत पसरीजै। लोक–गीत मिनखाजूण री सरूआत पुरांणा अर तुरंत जलमियोड़ै टाबर रै जलम ज्यूं नुवा व्है। आदू जीवण रा आदू संदेसा आं गीतां में मिळै। देस रौ सांस्कृतिक इतिहास आं गीतां में मंडियोड़ौ है। तवारीख री घणकरी घटनावां आपरै जथारथ रूप में आं गीतां में आखरां ढळी है। मिनखा–जूणनै सिरै थरपण वाळी ओपती–रीत–नीत री बातां अर वांरा घणकरा पहलू आं गीतां रै मारफत अेक पीढ़ी सूं दूजी पीढ़ी नै सूंपीजै। आं लोक गीतां रै महताऊ भाव नै उजागर करता लाला लाजपतराय आं सबदां में लिखियौ है –

''देश का सच्चा इतिहास और उसका नैतिक और सामाजिक आदर्श इन गीतों में इतना सुरक्षित है कि इनका नाश हमारे लिए दुर्भाग्य की बात होगी।''

5.3. लोक–गीत : परिभासा

अधिकारी विद्वानां लोक–गीतां री परिभासावां इण मुजब दीनी है।

1. लोक–गीत न तो नया होता है,, न पुराना। वह तो संसार के एक वृक्ष के समान है, जिसकी जड़े भूतकाल की धरती में काफी गहरी घंसी हुई हैं, परन्तु जिसमें प्रतिक्षण नवीन कलियाँ, पल्लव और फल लगते रहते हैं। –वी. विलियम्स
2. ''लोकगीत तो स्वतः जन्मा है।'' – ग्रीम
3. ''आदि मानव के उल्लासमय संगीत को ही लोकगीत कहते हैं।'' – परली
4. ''लोकगीतों का बल जातीय संगीत में है।'' – देवेन्द्र सत्यार्थी
5. ''लोकगीत विद्यादेवी के उद्यान के कृत्रिम फूल नहीं, वे मानो अकृत्रिम निसर्ग के श्वास–प्रश्वास हैं। सहजानन्द में से उत्पन्न होने वाली श्रुति मनोहरत्व से सच्चिदानन्द में विलीन न हो जाने वाली आनन्दमयी गुफाएँ हैं।'' – डॉ. सदाशिवकृष्ण फड़के
6. ''ग्रामगीत प्रकृति के उद्‌गार हैं। इनमें अलंकार नहीं; केवल रस है। छन्द नहीं, केवल लय है, लालित्य नहीं; केवल माधुर्य है। सभी मनुष्यों के स्त्री–पुरुषों के मध्य में हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति मान करती है। प्रकृति के वे ही मान ग्राम्य–गीत हैं।'' – रामनरेश त्रिपाठी
7. ''आदिम मनुष्य हृदय के गानों का नाम लोकगीत है। मानव जीवन की, उसके उल्लास की, उसकी करुणा की, उसके रुदन की, उसके समस्त दुःख–सुख की

कहानी, इनमें चित्रित है। – सूर्यकरण पारीक एवं नरोत्तम स्वामी

8. ''लोकगीत मानवीय कृतित्व की वह सामान्य धरोहर हैं, जो विश्व मानव की भूमि पर प्राप्त हुई है।'' – डॉ. सत्येन्द्र

5.4. लोक गीत : वर्गीकरण – लोक–गीतां रा सुचारा अध्ययन सारू विद्वानां लोक गीतां रा नीचै लिख्या मुजब भेद थरपिया है –

(1) पं. रांमनरेश त्रिपाठी

(1) संस्कार संबंधी

(2) चक्की और चरखे के गीत

(3) धर्मगीत, त्यौहारों के गीत

(4) ऋतु संबंधी गीत

(5) खेती के गीत

(6) भिखमंगों के गीत

(7) मेले के गीत

(8) भिन्न भिन्न जातियों के गीत

(9) वीर गाथा गीत

(10) गीत कथा

(11) अनुभव के वचन

(2) डॉ. सत्येन्द्र

(1) अनुष्ठान–आचार संबंधी

(2) मनोरंजन संबंधी

(3) डॉ. श्याम परमार

(1) संस्कार विषयक

(2) धार्मिक गीत

(3) माहवारी गीत

(4) ऐतिहासिक/अर्द्धऐतिहासिक गीत

(5) विविध गीत

(7) अन्य गीत

(4) डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय

(1) संस्कारों की दृष्टि से

(2) ऋतु संबंधी गीत

(3) व्रत संबंधी गीत

(4) जाति संबंधी गीत

(5) श्रम सबंधी गीत

(6) विविध गीत

(5) डॉ. शंकरलाल यादव

(1) लघु गीत

(2) प्रबन्ध गीत

(6) भास्कर रामचन्द्र भालेराव

(1) संस्कार विषयक

(2) माहवारी गीत

(3) सामाजिक ऐतिहासिक गीत

(4) विविध

(7) आचार्य शिव पूजन सहाय

(1) गाथा गीत

(2) ऋतु गीत

(3) संस्कार गीत

(4) व्यवसाय गीत

(5) व्रतोत्सव या पर्व गीत

(6) भजन या श्रुति गीत

(7) लीला गीत

(8) विरहा

(9) जादू–टोना/मान के गीत

(10) विशिष्ट गीत

(11) लोरियां

(12) बाल–क्रीड़ा गीत

(8) डॉ. सत्यागुप्त

(1) आनुष्ठानिक गीत

(2) लोक–गीतों में ऋतु वर्णन

(3) श्रम गीत

(4) बाल गीत

(9) डॉ. गोविन्द चातक

(1) धार्मिक गीत

(2) संस्कार के गीत

(3) ऋतु गीत

(4) नृत्य गीत

(5) प्रणय गीत

(6) विविध गीत

(7) लोक–गाथाएं।

(10) पं. सूर्यकरण पारीक

(1) देवी–देवता और पितरों के गीत

(2) तीर्थों और बहिन के गीत

(3) संस्कारों के गीत

(4) भाई और बहिन के गीत

(5) पति–पत्नी प्रेम के गीत

(6) प्रेम के गीत

(7) बालिकाओं के गीत

(8) ग्राम गीत

(9) राजकीय गीत

(10) धमालें

(11) जन्म के गीत

(12) वीरों एवं ऐतिहासिक गीत

(13) पशु–पक्षी संबंधी

(14) गांवों के गीत

(15) ऋतुओं के गीत

(16) व्रत, उपवास और त्यौहारों के गीत

(17) विवाह के गीत

(18) साले–सालियों के गीत

(19) पणिहारियों के गीत

(20) चक्की पीसने के गीत

(21) चरखे के गीत

(22) हरजस

(23) देश प्रेम के गीत

(24) राज–दरबाद, मजलिस, शिकार

(25) सिद्ध पुरुषों के गीत

(26) ग्वालों के गीत व हास्य गीत

(27) शांत रस के गीत

(28) नाट्य गीत

(29) विविध गीत

(11) डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया

(1) धार्मिक लोक गीत–संस्कार संबंधी, देवी–देवताओं संबंधी, व्रत संबंधी

(2) मनोरंजनात्मक लोकगीत–गणगौर के गीत, तीज के गीत, दीपावली के गीत, होली के गीत और शिकार के गीत

(12) डॉ. नारायणसिंह भाटी

(1) ऋतु गीत

(2) श्रम–गीत

(3) संस्कार गीत

(4) धार्मिक गीत

(5) बाल गीत

(6) कहावतें

(13) सीताराम लालस

(1) संस्कार संबंधी गीत – पुत्र–जन्म, उपनयन–संस्कार, विवाह, गौना

(2) व्यवसाय संबंधी गीत – श्रम गीत, जीविका–संबंधी गीत

(3) आवसरिक गीत – ऋतु संबंधी गीत, त्यौंहार एवं पर्व–संबंधी गीत, देवी–देवताओं संबंधी गीत, व्रत–उपासना संबंधी गीत।

(4) पारिवारिक गीत

(5) विभिन्न गीत – ऐतिहासिक गीत, बात–गीत, अन्य गीत।

(14) डा.एस.डी. चारण –

(1) संस्कारों के अवसर पर गाये जाने वाले लोक, गीत

(2) पर्वों के अवसर पर गाये जाने वाले लोक गीत

(3) श्रम गीत

(15) नानूराम संस्कर्ता

(1) संस्कार संबंधी – जन्म, विवाह, देवताओं के गीत, बनड़े, संवादात्मक गीत, पीठी के गीत, हलदी के गीत, मृत्यु।

(2) अन्य गीत – मौसमों के सामयिक गीत, देवी देवताओं एवं व्रत त्यौहारों के गीत, रातीजोगे के गीत, बालूड़ो (कथात्मक गीत), तपस्या गीत, शील और साहस के गीत।

5.5. लोक–गीत : प्रतिपाद्य विस्तार

जीवण री मधुर झणकार, हिवड़े रौ प्यार, मनड़े री पुकार, माँ रौ दुलार, विरह रौ विलाप, सावण री फुहार, बसन्त री बहार जैड़े सरल, सहज, साफ सुथरै अणगिणत गेयात्मक अर लयात्मक भावां री अभिव्यक्ति रौ नांव लोकगीत है। हिवड़ै सूं सहज रूप सूं फूट पड़'णै वाळा अै लोकगीत लोकमानस री लोक लहर है। लोकगीतां रै इण फूठरैपणै मांय मिनख रै जीवण रा सगळा रस अर रंग समायोड़ा है। मिनख रौ बाळ पणौ लोरियां मांय झूलै, जोबन प्रेम मांय रंगिजियोड़ो रैवै अर बुढ़ापौ री जीवण जातरा आं गीतां मांय बिसाई लैवे। सांचै अरथां मांय लोकगीत लोकसंस्कृति रा चावा दरपण है। लोकगीत जूना होवता हुआ भी नुंवा है। इण मांय जुनैपण अर नुवैपण रा दोन्यू ऊजळा रंग झलकै है। लोकगीत लोकमानस रौ हियौ है जिण मांय मिनख री कल्पनावां अर भावानावां अंकुरित अर पल्लवित हुवै है। लोक गीता मांय जीवण री अनुभूत सच्चाई, प्रणय री मधुर व्यंजना, विरह वेदना री पीड़ा, साहित्य, संगीत अर कलात्मक वैभव रै सागै संस्कारां रा झरणा अर सामाजिक रीत–रिवाज अर परम्परावां रा महानद हिलोरा लैवै है।

घणौ निराळौ है आं लोकगीतां रौ संसार ! लोक गीतां री स्रिस्टी मांय सास्त्रीय गायन री सूं कोसां दूर भावां री सौंधी महक सूं सामूहिकता री इन्दर धनुसी छटा बिखरियोड़ी है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी रौ कथन है –

''लोकगीत की एक – एक बहू के चित्रण पर रीतिकाल की सौ सौ मुग्धाएँ और खण्डिताएँ न्यौछावर की जा सकती है क्योंकि ये निरलंकार होने पर भी प्राणमयी हैं और वे अंलकारों से विभूषित होने पर भी निष्प्राण हैं। ये अपने जीवन के लिए किसी शास्त्र विशेष की मुखापेक्षी नहीं है। ये अपने आप में पूर्ण हैं।''

लोकगीत भावसील मिनख रौ रागात्मक सुभाव है। अे भारतीय संस्कृति रा अैड़ा समृद्ध भण्डार है, जिण मांय भारतीय जन जीवण रौ प्रतिबिम्ब झलकै है। मिनख जीवण रौ कोई भी खुणो इण सूं अछूतो नीं है। इण कारण लोकगीत मनोरंजन ताई सीमित नीं है वरन इण रौ मूल प्रयोजन मिनख रै जीवण सूं जुड़ियौड़ौ है। लोक गीतां रै महताऊ पख नै उजागर करतां शांति जैन लिख्यौ है

''लोकगीतों में लोक का समस्त जीवन चित्रित होता है। शिशु के प्रथम क्रन्दन से लेकर जीवन की अन्तिम कड़ी तक के भावचित्र इनमें हैं। भाई से मिलने को

व्याकुल बहन की व्यथा कथा, स्त्रियों का आभूषण प्रेम, सास, ननद तथा सौत के अत्याचारों से पीड़ित स्त्री की मनोव्यथा, कृषक परिवार की विपन्नता, वीरों की शौर्य गाथा तथा विरह के रंगारंग भाव इन गीतों में मिलते हैं। दूसरे शब्दों में इन लोकगीतों में जीवन का शाश्वत सत्य झलकता है।'' महादेवी वर्मा रौ कथन है –

''सुख दुःख की भावावेशमयी अवस्था विशेष को गिने चुने शब्दों में स्वर साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है और इस गीत में सहज चेतना जुड़ जाती है तो वह लोकगीत बन जाता है। लोकगीत गगन चुम्बी हिमश्रेणियों के बीच में एक ऐसा सजल आलोकोज्ज्वल मेघखण्ड है, जो न तो इनके टूट टूटकर गिरने वाले शिलाखण्डों से दबता है और न इन श्रेणियों की सीमाओं में आबद्ध होकर ससीम बनता है, प्रत्युत इन चोटियों का शृंगार करता है और संगीत लहरी के प्रत्येक स्पन्दन कम्पन के साथ उड़कर उस विशालता के कोने कोने को मादकता का सागर प्रस्तुत करता है।''

लोकगीतां रा रचणाकार, रचणाकाल अर रचणास्थल अग्यात व्है। लोकगीत लोक री आत्मा है। अै जनता रा मौखिक बखाण है, जिका अेक कंठ सूं दूजै कंठ मांय, अेक हियै सूं दूजै हियै मांय गूंजता, पीढ़ी दर पीढ़ी चालता आ रिया है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी रौ कथन है–

''लोकगीत जिसमें विराट् प्राण स्वयं गा उठता है! इसे सच ही : Poetry of the people that 'sings it self' कहा गया है। यह इसी कारण अलिखित और अनाम भी होता है।''

लोकगीत अमर है। इण सारू इण'री हियै नै छूवण वाळी गहराइयाँ नै किणी भी देसकाल, परिस्थिति री विभाजन रेखा मांय नीं बांध सकां। लोकगीत लोकजीवण सूं पुस्ट हुवै अर लोकजीवण नै इज रसमय करै। लोकगीतां मांय जीवण रसाप्लावित होयनै प्रगट व्हियौ है, इण इज वास्तै लोकगीत रंगा सूं भरियोड़ौ अपणै आप मांय लूठौ संसार है।

5.6. सारांस

'लोकगीत' लोक वाड्मय री अनमोल धरोहर है। लोकगीत विसय वैविध्य रै अलंकरण सूं मण्डित है। इण वास्तै आं लोकगीतां मांय गांव री गळियां अर हरा–भरा खेतां री हवा, कस्बां री कंकरीळी रेत री गंध महकै, नवयौवना रा जोबन री अमिट अभिलासावां अंगड़ाइयां लेवै तो टाबरां रौ उल्लास अर उमंगा सूं भरियोड़ै मनड़ै रौ मोर आं ही लोकगीतां मांय नाचै। इण भांत मिनख जीवण रौ सगळौ भाव संसार आं लोकगीतां मांय समायोड़ौ है। अे लोकगीत आकास री भांत उन्मुक्त अर हवा री भांत स्वच्छन्द है। जिण भांत जंगळ मांय पंछी सुतन्तर व्है'नै गीत गावै उणी'ज भांत लोकगीत भी स्वाभाविक रीत सूं अन्तस सूं फूट'नै निकळै। इण मांय सरल काव्य होवै, भावां री खींचताण नीं होवै, अर अभिव्यक्ति री इणी'ज सहजता, गेयता अर संगीतात्मकता रै मुजब लोकगीत स्वाभाविक हियै नै द्रवित करण वाळा स्वर घोळ'र रस उपजावै अर मिनख रागात्मक भाव सूं आपरै सुख दुःख रै

भावां नै आं गीतां रै मांय अभिव्यक्त करै। इणां गीतां मांय प्रेम, करूणा, वात्सल्य, हास्य, सिणगार, वीर इत्याद सगळाई नौ रसां री भावपूर्ण लयात्मकता देखतां'ई बणै। अै गीत मिनखां रा जीवण साथी है। आं ही लोकगीतां मांय इतिहास, परम्परा अर संस्कृति री सम्पत्ति संचित है।

लोकगीत लोकमानस री काळजयी जातरा रा अमर जय तंभ है। अै गीत काव्यसास्तर रा साधारणीकरण पर खरा उतरै है। अै गीत सुतन्तरता, स्वच्छन्दता, सहजता, सरलता, अर रागात्मकता सूं रंगियोड़ी बोधगम्य, मौलिक अर मधुर रचणा है। लोकजीवण मांय सैं'सू घणा रस घोळण वाळी मन मांय मिठास भरण वाळी, पण ऊपर सूं अणगढ़, सरल अर बेरोक–टोक अभिव्यक्ति इज लोकगीत है। दूजै सबदां मांय कह्यौ जा सकै कै जीवण री मधुरता अर कठोरता रौ गंगा–जमुनी भावां रौं समन्दर इज लोकगीत है। लोकगीत सगळै लोक जीवण री गीतिमय अभिव्यक्तियाँ है। ओ इज इणरौ काळजयी मोल अर महत्व रौ अखूट आधार है। समाजसास्त्रीय दीठ सूं सामाजिक संरचना, मनोविज्ञान दीठ सूं मन री गहराइयां अर इतिहास री दीठ सूं तवारीख रौ जथारथ समझणौ है तो लोक–गीतां रा महासागर में उतरणौ पड़ैला।

5.7. अभ्यास रा सवाल

1. लोक–गीत रौ मतलब बतावौ?
2. लोक–गीतां रा वर्गीकरण रा कांई–कांई आधार हुय सकै?
3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी रा लोक–गीत बाबत कांई विचार है?
4. लोक–गीतां रै सामाजिक महत्त्व नै उजागर करौ?
5. लोक–गीत री सरलता–सहजता पर विचार लिखो ?

5.8. संदर्भ ग्रंथ

1. लोक–साहित्य विज्ञान–डॉ. सत्येन्द्र
2. लोक–साहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
3. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास – भाग – 16
4. Folk lore Dictionary - Maria Leach
5. लोक–साहित्य स्वरूप और सिद्धांत – डॉ. एस.डी. चारण
6. भारतीय लोक–साहित्य – डॉ. श्याम परमार
7. हिन्दी–साहित्य–कोश – सं. धीरेन्द्र वर्मा

इकाई – 6

राजस्थानी लोकगीत : विवेचन

6.0 उद्देस्य

6.1 राजस्थानी लोक गीतां रौ वर्गीकरण

6.2 देवी देवतावां रा गीत

6.3 संस्कार संबंधी गीत

6.3.1 जलम रा गीत

6.3.2 ब्याव रा गीत

6.3.3 जनेऊ रा गीत

6.3.4 मरण संस्कार रा गीत

6.4 तिंवारां रा गीत

6.4.1 गणगौर

6.4.2 आखातीज

6.4.3 सांवणी तीज

6.4.4 रामदेव जी रौ मेळौ

6.4.5 होळी

6.5 टाबरां रा गीत

6.6 पारिवारिक संबंधां रा गीत

6.7 पेसेवर गायकां रा गीत

6.8 अेतिहासिक गीत

6.9 जगचावा राजस्थानी गीतां री बानगी

(1. केसरिया बालम 2. कुरजां, 3. जल्लौ, 4. झालौ, 5. कांई रे मिजाज करूं, 6. निहालदे, 7. पणिहारी, 8. बायरियौ, 9. मेहंदी, 10. मोरियौ, 11. रतनरांणौ, 12. मूमल, 13. घूमर)

देस प्रेम परक लोक–गीत– (14. गोरा हट जा, 15. झल्लै आउवौ, 16. जोरजी चांपावत, 17. मोडकी मगरी रौ पांणी, 18. झांसी वाळी राणी जग में....., 19. जै जै भारत माता री !

6.10 राजस्थानी लोक–गीतां मांय विसेसण

6.11 अभ्यास रा सवाल

6.12 संदर्भ ग्रंथ

6.0. उद्देस्य

इण इकाई री उद्देस्य आपनै राजस्थानी लोक साहित्य री जगचावी विधावां रौ परिचय देवणौ है। औ तौ आपांनै जाणकारी है कै राजस्थान रा लोकगीतां मांय अठै री ऊजळी संस्कृति रा चितराम अर जीवण रै अनुभव रा भांत भांत रा रंग, दरसीजै। आं गीतां में दीन दुनिया रै ग्यांन रौ गूढ़ भण्डार भरियौड़ौ है। भांत–भांत रा राजस्थानी लोक–गीतां रै प्रतिपाद्य री जांणकारी करनै इज आंपां राजस्थानी संस्कृति री ओपती ओळखांण कर सकां। इण इकाई रौ उद्देस्य राजस्थानी लोक–गीतां रौ विसयवार विवेचन करणौ है।

6.1. राजस्थानी लोक गीतां रौ वरगीकरण

राजस्थानी लोकगीतां रौ नांव लेवतां ही हिवड़े मांय अेक हैत री कूंपळ फूटै, होठां माथै मुसकान आ जावै, तन मन नाचण सारू उत्साहित व्है जावै, मन गुणगुणावण लाग जावै। जीवण री सगळी धन पूंजी आं लोकगीतां माथै निछावर करण री लालसा स्वतः ही बलवती व्है जावै। अैड़ी मिठास प्रेम, करूणा अर रूदन, हास्य अर व्यंग्य रा छींटा उडावता राजस्थानी लोकगीत सगळै संसार नै आपरै कानी खींचण मांय समर्थ है।

राजस्थानी लोकगीत राजस्थानी लोकमानस री सुख–दुःखात्मक अनुभूतियां री सरस अर रागात्मक अभिव्यंजना रा लयात्मक उपहार है। इणा गीतां मांय राजस्थान रै लोकमानस री भावनावां सरस अर विसुद्ध भाव सूं रागात्मक रूप मांय परगट होवै। ब्याव, तिंवार, गीगा रै जलम माथै हरस रौ भाव है तो बै'न अर बेटी री विदाई रै बगत अै गीत लौकिक दुःख री तीव्रता नै सहन करण री सगती देवै है। इण भांत लोकगीत मन रै भावां नै उजळा कर, सुख, सान्ति अर नुवौ रंग देवै। मिनख रै जीवण री सगळी इच्छावां राजस्थानी लोकगीतां मांय सजीव व्है। ओळूं, आम्बौ, इमली इकथंभियो महल, उमराव, निहालदे, नींबू, नारंगी, नीमड़लौ, नीमड़ली, नागजी, नींदड़ली, बड़ळौ, बावळियो, सपनो, कुरजा, कसुंभौ, लहरियौ, जल्लौ, पणिहारी, हिंडोळौ आदि 'मनड़े री प्रीत' रा गीत है। लोकगीत लोक मानस रूपी महासागर सूं जलमियौड़ा काछबियौ, मूमल, केसरिया बालम, बायरियौ, सूवटियौ इत्याद काव्य रूपी रतन है। इण री सिरजणा लोक सूं अर लोक रै वास्तै इज व्ही। लोकगीतां नै रचियौ लोक, गायौ लोक अर सुणियौ लोक। इण री दुनिया मांय आपां री विरासत अर धरोहर है। राजस्थानी जीवण दरसण री गेय व्यंजना लोकगीतां मांय ही बसै।

राजस्थानी लोकगीतां रौ भाव जगत घणौ लम्बौ चौड़ो है। इण सारू सार रूप मांय लोकगीतां रौ वरगीकरण अठै दियौ गयौ है।

6.2. देवी देवतावां रा गीत

राजस्थानी लोकसमाज भगती भाव सूं भर्‌यौ है। भिन्न भिन्न तिवारां, परब, ब्याव, रातीजोगां इत्याद अवसरां माथै देवी देवतावां रा गीत गायर जनमानस आपसी आस्था परगट करै। इण गीतां मांय देवी देवताओ री महिमा, दिव्य छवि अर वां रा अलौकिक कामां रौ बरणन होवै –

गीत – चालो चालौ आपां चौसठ देवियाँ रौ जोधांणौ जोवा जी जावां।

जोधाणां रौ मिंदर सुहावणौ अे, जोधांणै महाराज रा राजा।।

भैरूंजी रा गीत –

भैरव काळा अर भैरव गोरा ओ वेगौ सो आव।

तो आयां बिन ओ भैरव तो आयां बिन औ भैरव।।

6.3. संस्कार संबंधी गीत

गरभाधान, जलम, न्हावण, मुण्डन, जनेऊ, ब्याव अर मरण इत्याद संस्कारां रै अवसर माथै अठै घणा–घणा अर भांत–भांत रा गीत गाईजै।

6.3.1. जलम रा गीत

आं गीतां मांय नौ महिनां, तांईं दो (अर्थात् गर्भिणी) रै सारीरिक अर मानसिक बदळावां रा चितराम घणी बारीकी रै सागै मंडियोड़ा लखावै–

पैलो मास उतरियो अे जच्चा, उणरा आळसिये मन जाय।

अे दूजो अे मास उतरियो अे जच्चा वैरा थूकतड़े मन जाय।।

प्रसव पीड़ा रौ चितराम इण गीत मांय मिळै –

नैनी सी नार नारेळी सो पेट, चालै है चीस उतावळी सा।

इण गीत रै अलावा घेवर, पीळौ, घूघरी, पीपरा मूळ, अजवायण, दाई, सूंठ, गूंद आदि रा गीत भी समय परवांण उछब रै सागै गाइजै।

6.3.2. ब्याव रा गीत

संस्कारां रा लोकगीतां मांय ब्याव रा गीतां री छटा घणी निराळी है। ब्याव रा विविध रीति रिवाजां सूं जुड़ियौड़ा अणगिणत लोकगीत राजस्थान संस्कृति री धरोहर है। ब्याव रै मांगळिक गीतां मांय पीठी, मेहन्दी, तेल, कांकण डोरा, विनायक आदि गीत गाइजै। ब्याव सूं पै'ली 'घी पिलावा' री रीत रै बगत गीत री एक बानगी देखीजै।

घी ही पी म्हारा आध्या लाडा घी ही पी
थारी दादी पावै थारी माता पावै।

ब्याव रै अवसर माथै मायरो भरणै रौ रिवाज राजस्थान मांय प्रचलित है। भाई बै'न रै अठै मायरौ लेजावै, जद् औ गीत गाईजै –

बीरा थै आइजो भावज लाइजो

सिरदार भतीजा, उमराव भतीजा

साथै लाइजो जी ओ वीरा रिमक झिमक होय आइजो।

ब्याव माथै बन्ना गीत भी गाइजै –

बन्ना म्हारा ओ अंगूरा रा महल चुणाय

छाजा लगवाय दो दाड़म दाख रा।

'फेरां रा गीत' भी घणै उमाव–उछाह रै सागै गाइजै। इण गीत मांय बेटी री विदाई रो दरद भी आखरां ढळ्यौ है –

पैला फेरे तौ बनड़ी बाबोसा री लाडली।
दूजे फेरे तौ बनड़ी काकोसा री लाडली।
तीजे फेरे तौ बनड़ी वीरासा री लाडली।
चौथे फेरे तौ बनड़ी हुई रे पराई।।

कन्या री विदाई रै बगत हिवड़ौ भरीज जावै, आसुवां री धारा सूं डील भीग जावै। इण बगत कोयलड़ी, मींजळियो, ओळूं आदि गीत गाइजै।

आंबा पाका ने आंबली
महूड़ा लैहरा खाय
कोयल बाई सिध चाल्या।

6.3.3 जनेऊ रा गीत

राजस्थानी लोकसंस्कृति मांय जनेऊ संस्कार भी प्रमुख है। इण अवसर माथै ब्याव जैड़ी इज धूमधाम रैवै। अेक गीत इण भाँत है –

जनेऊ पहरिने मति कीजे आड़ो
जनेऊ बिना दीसे छे बाडो
जनेऊ पहरिने मति कीजे भरड़ो
जनेऊ बिना दीसे छे धगड़ो।

6.3.4. मरण संस्कार रा गीत

मरण चिर साँच है। राजस्थान मांय मरण माथै सोक रा गीत गाईजै। मौत सूं बारहवैं दिन ताईं गीत भजन आदि गाईजै। इण मौके 'हर रौ हिंडोलौ' गीत गायौ जावै, वो इण भाँत है –

हर हर करता वडेरा थे उठ हालिया
कोई तुलछां री माळा थांरै हाथ।
बेटा तौ देवै थारै परकमा कोई पोता जी करै रे डंडौत।
जीओ बड भागी हर रौ हिंडोळौ सदा संग रे चालै।

6.4. तिवारां रा गीत

रंग रंगीले राजस्थान मांय घणकरा तिंवार मनाया जावै हैं। 'बारह मास चौबीस तिंवार' कहावत अठै इण वास्तै ईज प्रसिद्ध है। इणा तिंवारा नै मनावण सूं मिनख आपरो सगळो दुःख भुला देवै। होळी, गिणगौर, काजळी तीज, राखी, दसरावो, दीवाळी, जन्मास्टमी, रामनवमी आद तिंवार मुख्य रूप सूं मनाया जावै।

6.4.1. गिणगौर

राजस्थान मांय गिणगौर री पूजा चैत मास री सुक्ल पख री तीज नै विसेस रूप सूं चावी है। उण दिल मेळौ लागे अर गणगौर री सवारी निकळै। लुगायां गणगौर पूजण रै वास्तै आपरै धणी सूं अरज करै –

खेलण दो गणगौर भंवर म्हानै पूजण दो गणगौर।
ओ जी म्हारी सहेलियां जोवै बाट।।

सीतलास्टमी सूं 'घुड़लौ' घुमायो जावैं। कन्यावां कुम्हार रै घर सूं ठींडा (छेद) वाळी मटकी लावै। उण मांय दीयौ जळा' नै गीत गावै –

घुड़लौ घूमैला जी घूमैला, घुड़ला रै बांध्यौ सूत।
घुड़लौ घूमैला जी घूमैला, सुहागण बारै आव।।
घुड़लौ घूमैला जी घूमैला।

तीज रै दिन तालाब मांय गणगौर रौ विसरजन कर दियौ जावै।

6.4.2. आखातीज

बैसाख मास री सुक्ल पख री तीज रै दिन आखातीज मनाई जावै। इण दिन बड़ी री सब्जी, गुड़ री मीठी गळवाणी अर साबूत अन्न (गेहूँ, बाजरा आदि) रो 'खीच' बणायौ जावै। ओ दिन ब्याव रै वास्तै चोखो मुहरत मानिजै। टाबरिया बींद बींदणी बण'र घर घर जावै अर ओ गीत गावै–

आखातीज बांडा बीज
गलवाणी रौ गळियो खीच
घालो आखा घालो गुड़
नहीं घालो तो पइसा दो।

6.4.3. सांवणी तीज

सावण मास री सुक्ल पख री तीज नै सावणी तीज अर भाद्रपद री क्रिसण पख री तीज नै 'बडी तीज' रौ तिंवार मनायौ जावै। ओ सुहाग रौ तिंवार है। इण दिन झूला झूलण री रीत भी प्रचलित है।

सावणियौ रौ हींडौ रे बांधण जाय
भादवियै रौ हींडौ रे बांधण जाय।
हींडौ रे बांधण धण गई रे
सात सहेल्यां रै साथ।

6.4.4. रामदेव जी रौ मेळौ

भाद्रपद री सुक्ला दसमी नै पोकरण रै कनै रामदेवरा नामक स्थान माथै रामदेव जी रौ मेळौ भरीजै। रामदेव जी नै हिन्दू देवता अर मुसलमान पीर मानै। अे हिन्दू मुस्लिम एकता रा प्रतीक अर सामाजिक समानता रा प्रतिरूप कहीजी है। रामदेव जी रै दरसण रै वास्तै घणकरा जातरू आवै अर रात भर जागण करता भजन गावै–

खम्मा खम्मा ओ महारा रूणिचा रा धणियां
थानै ध्यावै आखी मारवाड़ ओ, आखी गुजरात ओ, अजमल जी रा कँवरा।

6.4.5. होळी

होळी उछब अर मस्ती रौ तिंवार है। होळी रै दिन रंग खेलण री रीत अठै चावी है। चंग बजावता अठै रा जनमानस फाग गावै –

फागण आयो फागण मास म्हारे घर
फाग मची फाग मची
म्हारै हाथ गुलाल मारूजी रै पिचकारी जी।

6.5. टाबरां रा गीत

टाबरा रौ आपरौ निराळौ संसार है। बठै सहजता है कोई छळ कपट नहीं हुवै। टाबरां रा घणकरा लोकगीत प्रचलित है, खेल खेलता बखत टाबर आं लोक गीतां नै घणै आनंद सूं गावै –

अतनी पतनी पीपळियां रा पान।
पकड़ साथण इण रौ कान।।

दूजौ गीत इण भांत है –

कान्या मान्या कुर्रर्र
जाइजो जोधपुर्रर्र
लाऊं कबूतर्रर्र
उड़ाय देऊं फुर्रर्र।

फूंदी लेवती बगत छोरियां गीत गावै –

फूंदी रौ फड़ाको, जिया बाई रौ काकौ
काकौ लायौ काकड़ी, काकी मांगे बीज
काकै दीनी लातरी, काकी गाया गीत

इणरै अलावा 'ढुल्ला ढुल्ली', 'चौक च्यानणी', 'चांद चढ्यो गिगनार' जैड़ा सरल गीत भी टाबर खेलती बखत गायनै आपरौ मनोरंजन करै।

6.6. पारिवारिक संबंधां रा गीत

परिवार, सामाजिक जीवण रौ महताऊ अंग है। इण परिवार मांय बाप, माँ, बीरो, भोजाई, नणद, पोता, दोहिता, बहू बेटी इत्याद संबंधा वाळा भाव गीतां मांय इण ढंग सूं मिळै –

म्हारै आंगण आंबो मोरियो पसवाड़ै जी पसरी गज बेल
सहेल्या ए आंबो मोरियो
म्हारा सांसूजी पूछै बहू थारे गहणां रो अरथ बताय

सहेल्या आंबौ मोरियौ

गहणा म्हारा देवर जेठ।

इण गीत रै टाळ 'नींबू', इण सरवरिये री पाळ', 'सावण आयो', 'इकथमियो महल', 'कसूंम्बों', 'ओळूं', 'पपीहा', 'सूवटियो', 'मखण झोला खाय' आद गीतां मांय दाम्पत्य प्रेम अर संयोग वियोग रो सजीव चितराम है।

6.7. पेसेवर गायकां रा गीत

राजस्थान मांय कुछ अेड़ी जातियां है जिका लोकगीत गायनै आपरौ गुजर बसर करै। 'निहालदे' गीत पेसेवर गायकां रौ प्रमुख गीत है –

सावण तो लागौ पिया, भादवो जी कांई बरसण लागौ मेह,
अब घर आयजा, गोरी रा बालमा हो जी।

'मूमल गीत' मांय राजकुमारी मूमल रौ नखसिख बरणाव सुन्दरता रौ चितराम है –

काळी रे काळी काजळियै री राखड़ी रे
हांजी रे, काळोड़ी कांठळ में चमकै बीजळी
म्हारी मीठी बोली अे मूमल, हालौ नीं आलीजै रे देस।
सीसड़लो मूमल रो बागड़ियौ नारेल ज्यूं,
कोई बेणी तौ मूमल री बासग नाग ज्यूं,

'पिणिहारी गीत' भी जग चावौ है। बरसात मांय इण नै घणै चाव सूं गाइजै–

'काळी कळायण ऊमड़ी ए पिणियारी जिये लो
ए मिरगानैणी जिये लो
मोटोड़ी छांटा रौ बरसै मेह बाला जो।'

आं गीतां रै टाळ 'रिड़मल', 'काछबियो राणो', 'ढोला मरवण', 'नागजी', 'बींजा सोरठ' 'रतन राणो', गीत भी पेसेवर गायक गावै।

6.8. अेतिहासिक गीत

राजस्थान वीरां री रण भूमि अर वीरांगनाआं री जौहर भूमि है। अठै रा वीर मायड़ भूमि री रक्षा रै वास्तै मध्यजुग मांय मुस्लिम सासकां अर बाद में अंगरेजां रै खिलाफ विद्रोह रौ झण्डो उठायौ अर जूंझता थका प्राण त्याग दिया। इसा सूरवीरां मांय रतन राणा, आउवा ठाकुर, भरतपुर नरेस, रणजीत सिंह, डूंगजी जवारजी इत्याद लोक गीत उल्लेख जोगा है। आं सूरवीरां रै चरितर रै आधार माथै अेतिहासिक लोकगीतां री रचणा हुई। आं गीतां मांय अंगरेजा री 'फूट डालो राज करो' री नीति रौ बखाण भी मिळै –

वा वा रोळो वापरियौ
मोडकी मगरी रौ पाणी ढाळो ढाळ ढळियो रे
आबू थारे पहाड़ां मांय अंगरेज बड़ियो रे
काळी टोपी रौ हां हां काळी टोपी रै।

'डूंगजी जवारजी' अर उणारा साथी लोटिया जाट अर करणिया मीणा रै चरितर रौ बखाण इण गीत मांय इण भांत है –

सिवंरू देवी सारदा कोई तने भवानी ध्यांऊ
जा मरदां री छांवळी में च्यारूं कूंट में गाऊं
डूंग न्हार री कोटड़यां जुड़ी कचेड़ी आय
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही, खूब पड़ै रजवाड़
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, डूंगसिंह सरदार
तीनूं मिळ भेळा हुवै तो करै तीसरी बात।

सारांस रूप सूं ओ क्यौ जा सकै कै आं लोकगीतां मांय राजस्थानी जनजीवण, धरम अर दरसण, भगती अर नीति, कला अर संस्कृति रौ जैड़ौ जीवन्त चितराम मिळै वो साँचे रूप मांय अनूठौ अर अविस्मरणीय है। इणां री सहजता अर सरलता सूं भरियोड़ौ कलात्मक वैभव किणी काव्य सास्तरीय व्याख्या री कल्पना भी नीं करै, क्यूंकि इण'रो रचणाकार किणी अेक वरग विसेस रौ नीं है। सगळो लोक समाज इणां रौ सिरजणहार है। इणां गीतां री दुनिया इज लोक है। छन्द, अंलकार, रस, सबद सक्तियाँ या गुण दोस उणा सिद्धियाँ रै समान है जिकी 'भगती' रूपी राजराणी रै हाथ 'जोड़'र लारै चालै। लोक आस्था री जगमगावती आं मणियां री आभा रौ कुण मूल्याकंन कर सकै। लोकमानस ही इण रौ संरक्षक है। वो इज रस स्रस्टा, रसिक अर आस्वादक है। लोकगीतां नै किणी भी भास्यकार अर व्याख्याकार री जरूरत नीं है। आ धरोहर तौ धरती रै पूतां री है। इण मांय चिरजोबन है। रस री अखण्ड धारा है। राजस्थानी लोकगीत इमरत रा लहरावता महासरोवर है।

6.9. जग चावा राजस्थानी गीतां री बानगी

(1) केसरिया बालम

'केसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देस, (पधारो म्हारे देस)
आवण–आवण कह गया और कर गया कोल अनेक
गिणतां गिणतां घस गई म्हारी आंगळियां री रेख।
(केसरिया) थारी ओळूं म्हें करां और म्हारी करे न कोय
दूर दूर पर करे सहेलियां अर मुड़ मुड़ देखे तोय (केसरिया)
जो मैं ऐसो जाणती प्रीत कियां दुख होय,
नगर ढिंढोरो पीटती रे प्रीत न करज्यो कोय
केसर सूं पगल्यां धोवती भळे पधारो पीव
ओर बधाई कांई करूं, पल पल वारूं जीव।
आंबां मीठी आमली चौसर मीठी सार।
सेजां मीठी कामणी रणमीठी तलवार।
मारू थारा देस में, निपजै तीन रतन

इक ढोलो, दूजी मारवण, तीजो कसूमल रंग।

(2) कुरजां

सूती छी सुख नींद में, सुपनो भयो ए जंजाळ भंवर सुपने
बतळाइजी ए
थने सुपना मारस्यूं रे, द्यूं थारौ कतल कराय
सुपने बैरी झूंठो वूंय आयो रे
क्यां ने गोरीं म्हानें मारस्यो ए क्यूं म्हारे कतल कराय।
गोरी अे! थाने पीव सूं मिलाया ए
आज संवारा उठिया जी, गई मायड़ रे पास
सुण मायड़ थाने बात कहूं केहता आवे लाज।।

6.9.3 छोडो मरी बैयां

हिवड़े रो हार टूटै राज, छोडो म्हारी बैयां
मौत्यां री लड़ियां तूटी राज, छोड़ो म्हारी बैयां
एक डर है म्हारी सास नणद रो इक डर है
रसोड़ा में हेलो मारे ओ सा। छोडो.....
इक डर है म्हारी नैनी नणद रो एक डर है
पणघट पर हैला मारै सा, छोडो म्हारी बैयां
इक डर है म्हारी पाड़ोसण रो, इक डर है
ओ झरोखै झांके सा छोडो म्हारी बैयां
इक डर है, म्हारी सोकड़ली रौ इक डर है
सेजां में झाला देवे सा, छोडो म्हारी बैयां।

(3) जलाल

माँ म्हारी कोई रे बतावो जलाजी नै आवता।
जल्ला रे, म्है तो राज रा डेरा निरखण, आइ हो जलाल।
जलामारू, देखी थारै डेरा री चतराई ओ।
म्हारी जोड़ी रा जलाल, मिरगा नैणी रा जलाल,
जला मारू रात्यूं धण रो पेटड़लो घणौ दूख्यो ए
म्हारी जोड़ी रा जलाल, थे तो धण री खबर कोनी लीनी हो जलाल।
जला मारू, नार्यां मांयली नार भली भटियाणी हो जलाल

जला मारू, मरदां मांयला मरद भला, राठौड़ी हो जलाल।
जला मारू, छीटां मायली छींट भली, मुळतानी हो जलाल।

(4) झालौ

ऐ, माँ, हेलौ, देती लाज मरू
झालो म्हासूं दियो ही न जाय।
छोडूं तो पौंचू नीं, अर हेलौ देती लाज मरूं
घड़ियक ऊबो सायबा, थांसू दो दो बात करूं।
प्यारा आजो पावणा प्यारी धण रै देस
म्हारा पीव नै, हिरदै मांय, राखूं जी हमेस
ऊंची चढूं, तौ म्हारी पायळड़ी बाजै
नीचे म्हासूं, ए, मांय रह्यो ई न जाय
सुणियो री म्हारी संग री सहेल्यां, ओ दुःख
म्हासूं सह्यो ही न जाय
झालो म्हासूं दियौ ही न जाय।।

(5) कांई रे मिजाज करूं

दळ बादळ बिच चमके जी तारा
सांझ पड़्यां पिव लागो जी प्यारा।
कांई रे जवाब करूं रसिया।
कांइ रे मिजाज करूं रसिया।
जवाब करूंली, जवाब करूंली।
आलीजे री सेजां मांहे रीझ रहूंली।
कांई रे मिजाज करूं रसिया।
माथा रौ रस मैंमद लाओ।
मैंमद रो रस हंजामारू लीनो।
कांइ रे गुमान करूं रसिया।
कांइ रे मिजाज करूं रसिया।
जवाब करूंली जवाब करूंली,
हां रे मद छकिया री सेजा में रीझ रहूंली।
कांइ रे जवाब करूं रसिया।

(6) निहालदे

सावण तो लागो पिया, भादवो जी
कोइ बरसण लागो मेंह, हां जी ढोला मारू
अबे घर आयजा, गौरी रा, बालमा हो जी।
छप्पर पुराणा पिया, पड़ गया जी, कोई तिड़कण लाग्या बोदा बांस।
हो जी ढोला बोदा बांस, अबे घर आय जा, गोरी रा बालम हो जी
बादळ में चमके पिया, बीजळी रे, कोइ महला में
डरपे घर री नार
हो जी छोटी नार, अबे घर आवो जी,
फूल गुलाब का हो जी।

(7) पणिहारी

काळी रे कळायण उमड़ी ए पणिहारी जीये लो
मोटोड़ी छांटां रौ बरसे मेह, बाला जो
आज धुराऊं धूंधलो ए पणिहारी जीयेलो।
मोटोड़ो छांटां रौ बरसै, मेह, सैणांलो।।
भर नाडा भर नाडियां, ए, पणिहारी जीये लो।
भरियो भरियो समद तळाव बाला जो।
किणजी खुदाया नाडा नाडिया जी पणिहारी जीये लो।
किण जी खुदायौ भीम तळाव, बाला जो।
सासूजी खुदाया नाडा नाडिया ए पणिहारी जीयेलो।
सुसराजी खुदायौ भीम तळाव, बाला जो।।

6.9.10 बायरियो

धीमो मुधरो बाज रे बायरिया
बायरिया, धीमो मुधरो बाज
सात रे सहेल्यां रे झूलरै, बायरिया
पाणीड़ै नै गई रे तळाव
पाणीड़ै नै गई रे तळाब, बायरिया
सैणां रा बायरिया धीमो मुधरो बाज।
घड़ियो नहीं डूबे (म्हारो) बेड़ियौ रै महाराजा
ईंडोणी तिर तिर जाय बायरिया

सैणां रा बायरिया धीमो मुधरो बाज
घड़ियो रे उखणती अंगड़ो रे मोड़ियो
तूटी म्हारै बाजूबंद री लूंब, बायरिया
सैणां रा बायरिया धीमो मुधरो बाज।

(9) मेहन्दी

मेहंदी बायी बाळूड़ा री रेत
प्रेम रस मेहंदी राचणी
मेहंदी सींची सींची जळ जमना रे तीर,
मेहंदी सींची सींची काचै दूध,
प्रेम रस मेहंदी राचणी,
मेहंदी चूंटी काळजा री कोर,
प्रेम रस मेहंदी राचणी,
मेहंदी पीसी पीसी चाकी कै रे पाट (प्रेम रस)
मेहंदी भीजे भीजे कटोरे बीच (प्रेम रस)
मेहंदी मांडी मांडी म्हारी छोटी बैन (प्रेम रस)
मेहंदी निरखे निरखे नणंद बाई रा बीर
कुण मांड्या ऐ सुहागण थारा हाथ (प्रेम रस)
थारा हाथ म्हारै हिवड़ै री चतर नार (प्रेम रस)
थारा ऊपर वारूं पन्न जुहार (प्रेम रस)

(10) मोरियौ

मोरिया, आछ्यो बोल्यो रे, ढळती रात में,
म्हारै हिवड़ा में बहगी रे दुधार
हां ए, मारूणी, म्हें तो बोल्या म्हारी मौज सूं, मौज सूं, मौज सूं
थारै किण विध बैगी रे दुधार
हां रे मोरिया, पिउ पिउ री वाणी छोड़ दे, छोड़ दे, छोड़ दे
म्हारा पिऊजी बसै रे परदेस। मोरिया.....
मारूणी पिऊ पिऊ री वाणी, बोलस्यूं, बोलस्यूं, बोलस्यूं,
म्हारै मौज उड़े दिन रात।।
हां रे मोरिया थारे बागां में कांई कांई नीपजे, नीपजे, नीपजे

जिणरी आवै है सुगन्धी बास
गोरड़ी म्हारै बागां में मरवो केवड़ो, केवड़ो, केवड़ो
जिण री आवे है, सुगन्धी बास
बाबल अबके परणा दे आखातीज ने, तीज ने, तीज ने
नीतर जाऊंली, मोरिया री लार।

(11) रतन राणा

म्हारा रतन राणा, एकर तो अमराणै घोड़ो फेर,
अमराणै में बोले सुवा मोर हो जी, म्हारा रतन राणा,
बागां बोले छै काळी कोयलड़ी।
रे म्हारा सायर सोढ़ा, एकर तू अमराणै घोड़ो फेर।
अमराणै में महूड़े रो पेड़, हो जी म्हारा रतन राणा।।

(12) मूमल

काळी काळी काजळियै री रेख सा
काळोड़ी कांठळ में चमकै बीजळी
ढोले री मरवण, हालै तौ ले चालां, मरूधर देस में
सीस मूमल रौ बागड़ियौ नारेळ सा
वैणी मूमल री बासक नाग ज्यूं
ढोलै री मूमल, हालै तौ ले चालां मरूधर देस में।
नाक मूमल री सूवा केरी चांच
आंख मूमल री प्याला मद भरिया

(13) घूमर

म्हारी घूमर है नखराळी ये माय घूमर रमबा म्है जास्यां
म्हांनै रमती नै काजळ टीकी लादी अे माय घूमर रमवा म्हे जास्यां
म्हांनै रमती नै लाडूड़ौ लादो अे माय
म्हांनै सिसोदयां रै सीस गुथावै अे माय
म्हांनै देवड़ा रै घरे मत दीजौ अे माय
म्हांनै राठौड़ा रै घर भल दीजौ अे माय
म्हांनै राठौड़ा री बोली प्यारी लागै अे माय
म्हांरी घूमर है नखराळी अे माय, घूमर रमवा म्हे जास्यां।

(14) गोरा हटजा

(भरतपुर रा जाट राजा रणजीतसिंह अर अंग्रेज सेनापति लार्ड लेक रै बीच हुया जुद्ध नै दरसावणवाळो लोक–गीत)

आछो, गोरा हट जा!
राज भरतपुर को
रे गोरा हट जा !
भरतपुर गढ़ बांको, किलो रे बांको,
रे गोरा हट जा !
यूं मत जांणी रे गोरा लड़ै रे बेटौ जाट को,
ओ कंवर लड़ै रे राजा दसरथ को रे
रे गोरा हट जा !
गढ़ पर ऊभा रे म्हांरा बावन भैरूं,
कांगरां ऊभी रे चौंसठ जोगणियां रे
रे गोरा हट जा !
कांई तौ करैला थारा बावन भैरूं ?
कांई तौ करैली थारी चौंसठ जोगणियां रे
रे गोरा हट जा !
चक्कर चलावैला म्हांरा बावन भैरूं
खप्पर भरैली चौसठ जोगणियां
रे गोरा हट जा !

(15) झल्लै आउवौ

(अंग्रेज विरोधी बगावत रा आगीवाण आउवा ठाकुर रो लोक – गीत)

बणियां वाळी गोचर मांय
काळा लोग बड़िया ओ
राजाजी रे भेळै तौ
फिरंगी लड़ियौ ओ
कै झल्लै आउवौ।।
बारली तोपां रा गोळा,
धूड़गढ़ में लागै ओ
मांयली तोपां रा गोळा,

तंबू तोड़ै ओ
कै झल्लै आउवौ
कै झल्लै आउवौ
ओ झल्लै आउवौ
आउवौ धरती रौ थांबौ ओ
कै झल्लै आउवौ।।
मांयली तोपां तौ छूटै
आडावळौ धूजै, ओ
राजाजी रा घोड़लिया,
काळां रै लारै दोड़ै ओ
आउवै रा घोड़ा तौ,
पछाड़ी तोड़ै ओ
कै झगड़ौ हूवण दो,
कै झल्लै आउवो।।
आउवा रा नाथ तौ,
सुगाली पूजै ओ
आउवौ झगड़ै में,
बांको ओ
कै झगड़ौ हूवण दो,
कै झल्लै आउवौ।।
आउवा री सूरज पौळ,
मुकनौ हाथी घूमै ओ
जोधाणा रा किला मांही,
कामेती धूजै ओ
कै झगड़ौ हूवण दो,
कै झल्लै आउवौ।।
हाँ रे झगड़ौ हूवण दो,
कै झगड़ा में जीत थांरी व्हैला ओ
कै झगड़ौ हूवण दो,
कै झल्लै आउवौ।।

(16) जोरजी चांपावत

(प्रसिद्ध क्रांतिकारी जोरजी चांपावत री वीरता रो लोक–गीत)

जोरजी चाँपावत घोड़ा,
बाजारां में खड़िया रे,
होळै होळै खड़िया नै,
दरवाजा जड़िया रे।
कै मोड़ौ बतळायौ।
हाँ रे मोड़ौ बतळायौ
औ जोरजी न्हारी रौ जायौ रे
कै मोड़ौ बतळायौ।।
तंबू में बैठोड़ै रांघड़
हाकल कीनी ओ
कै धूजै जोधांणौ
तंबू में बैठोड़ै जोरजी
आंख्यां काढी ओ
कै धूजै जोधांणौ।
जोरजी रौ जोर
आखै जोधांणै में चावौ रे
जोरजी झूंझार रा
बखांण गावौ रे
कै जै जै वीरां री
हाँ रे जै जै वीरां री
अै माथां नै भचीड़ नै
अै अणियां मोड़ै तीरां री
कै जै जै वीरा री
हाँ रे जै जै वीरां री
औ जोरजी न्हारी रौ जायौ रे
कै जै जै वीरां री

(17) मोडकी मगरी रौ पांणी

वा 'वा' रोळो वापरियो

मोडकी मगरी रौ पांणी
ढाळोढाळ ढळियो रे
आबू थांरे पहाड़ां में
अंग्रेज बड़ियो रे
काळी टोपी रौ
हाँ हाँ काळी टोपी रौ
देस में छावणियाँ नाखै रे
काळी टोपी रौ
देस में अंग्रेज आयौ
कांई कांई लायो रे
फूट नांखी भायां में
बेगार लायो रे
काळी टोपी रौ
हाँ हाँ काळी टोपी रौ
देस में छावणियाँ नाखै रे
काळी टोपी रौ
घोड़ा रोवै घास नै
टाबरिया रोवै दांणां नै
बुरजा में ठुकरांण्यां रोवै
जामण जाया नै
कै रौळौ वापरियौ
देस में अंग्रेज आयौ रे
कै रौळौ वापरियौ

(18) झांसी वाळी रांणी जग में

(झाँसी री राणी लक्ष्मीबाई री वीरता रो लोकगीत)

झांसी वाळी रांणी जग में,
मोटौ नांव करियौ रे
अंगरेजां जैड़ी ताकत नै,
वा कर दी फीकी रे
कै झगड़ौ झेलियौ
हाँ रे झगड़ौ झेलियौ।

आ देस पर कुरबाण होगी रे
कै झगड़ौ झेलियौ।।

(19) जै जै भारत माता री

जै जै भारत माता री,
हाँ जै जै भारत माता री
कैतां कैतां हिवड़ौ हरखै रै
जै जै भारत माता री
जै जै भारत माता री।
नेताजी सुभास जायौ
नांव थारौ बढियौ रे
भगतसिंह हंसतौ हंसतौ
फांसी चढ़ग्यौ रे।
दिल्ली रै दरवाजै माथै,
झंडौ लाग्यौ तिरंगौ,
तिरंगै नै देख नै,
औ भागौ फिरंगौ
कै राज रैयत रौ,
हाँ रे राज रैयत रौ
भारत रै गांधी रै चेलां रौ
कै राज रैयत रौ।।
नेहरू जैड़ा भाग्य विधाता,
होया भारत मांयनै,
अरे गांधी जैड़ा देस प्रेमी,
आया सामनै
कै हिंसा छोड़ दौ,
हाँ रे हिंसा छोड दौ,
बम गोळां नै आगा न्हांख दौ
कै हिंसा छोड़ दौ।।
नेहरू थारौ देसड़ौ
जग में नाम कमावै रे।

अणु वाली सगती रा

राकेट बणावै रे

कै दुनिया बूझै रे

हाँ रे दुनिया बूझै रे,

दुस्मण रा हाडकिया थर थर धूजै रे,

कै दुनिया बूझै रे।

6.10. राजस्थानी लोकगीतां मांय विसेसण

राजस्थानी लोक–गीता में धणी–लुगाई (पति–पत्नी) नै बतळावण–सारू घणा–घणा विसेसण–सबद परोटीजै, ज्यांरी जाणकारी आगै री ओळियां में दिरीजी है। धणी (पति) सारू आं लोक–गीतां में घणा विसेसण प्रयुक्त हुआ है। ढोला, राजानामी, सांईना, सैणां रा लोभी, बांका राजा, जुग बाला, सायबा, भंवरजी, गामेती, पीवर प्यारी रा सिरदार, मदछकियौ, बिलाला, लाडेसर, पन्ना–मारू, सियाळै रौ सूरज, ऊनाळै रौ आंबौ, बरसाळै रौ बादळ, चौमासै रौ चंपौ, रेसम रा रेजा, केसरिया सिरदार, रंगभींणौ, रायजादौ, भरजोड़ी भरतार, गाढ़ा–मारू, छतर धारी, जला गेहाणी, पंच हजारी, गैर गुमांनी, मीठा मारू, रूपा–रूड़ौ, असाढ़ां रौ इन्दर, धण–रीझाळू, लसकरियौ, जल्ला–मारू, आंटीलौ आदि सबदां रो प्रयोग हुयौ है। लुगाई (पत्नी) सारू पीहर प्यारी, सायधण, मिरगानैणी, प्राणप्यारी, मांनेतण, जुगवाली, चुड़लाळी, भायां री प्यारी, मिजाजण, मारू, गोरी, गवरल, गोरादै, कळैगारी, छन्दांगारी, धण, गोरड़ी, हंसाहाळी, बनी, रंग–भींणी, घरनार, भायां री बैनड़, लाडलड़ी, बौह परवारी, मूमल, सोना सोही, आंगण सोही, मैलां मूंघी इत्याद सबदां रौ प्रयोग व्हियौ है। विसेसता सूचक आं सबदां मांय कैई सबद व्यक्तिवाचक भी है, पण गीतां में परोटीजतां ई बे सबद व्यक्तिवाचक नीं रिया है, वांरो साधारणीकरण हुयग्यौ है। कैई सबद राजसाही सूं संबंधित है, पण गीतां में प्रयुक्त हूवतां इज सम्रद्धि सूचक हुयग्या है। आं विसेसणां रै निर्माण में लोक रै मन री कंवळास प्रगट व्ही है।

6.11. अभ्यास रा सवाल

(1) राजस्थानी लोक गीतां में किसा–किसा प्रमुख संस्कारां रौ वरणण व्हियौ है ?

(2) होळी माथै गाईजै, जका राजस्थानी लोक – गीतां रौ कांई नांम है ?

(3) 'जलौ' लोक–गीत किण अवसर पर गाईजै ?

(4) 'कुरजां' लोक गीत रौ मूळ भाव कांई है ?

(5) राजस्थानी लोक–गीतां में धणी–लुगाई नै बतळावण सारू कोई पाँच विसेसण सबद बतावौ।

6.12. संदर्भ ग्रंथ

(1) राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन : डा. सोहनदान चारण

(2) लोक साहित्य विज्ञान–डा. सत्येन्द्र

(3) संस्कृति के चार अध्याय – रामधारीसिंह 'दिनकर'

इकाई – 7

लोक–कथा : परिभासा, वर्गीकरण अर अभिप्राय (Motif)

7.0 उद्देस्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 लोककथा : परिभासा, इतिहास अर महत्त्व

7.3 लोककथा : वर्गीकरण

7.4 लोककथावां अर अभिप्राय (Motif)

7.5 अभिप्राय : अनुक्रमणिका (Motif Index)

7.6 सारांस

7.7 अभ्यास रा सवाल

7.8 संदर्भ ग्रंथ

7.0 उद्देस्य

लोक साहित्य री विधावां में लोक–कथा इज अेक अैड़ी विधा गिणीजै, जकी टाबरां सूं लैयर बूडा–बडेरां तक सगळां नै घणी आछी अर व्हाली लागै। इण इकाई में लोक–कथा रै सरूप नै समझावण री चेस्टा करीजी है। कितरी भाँत री लोक–कथावां न्यारा–न्यारा देसां प्रदेसां में प्रचलित व्है, उण बाबत जाणकारी दियां बिना बात अधूरी गिणीजसी। लोक–साहित्य–रा जाणकार आ मान्यता थरपी है कै लोक–कथा री बणगट में अभिप्राय (Motif) इज मूळाधार व्है। आं अभिप्रायां रै तांनै–बांनै लोक–कथा किणभांत बणै, इण बिंदु माथै इण इकाई में चरचा करीजसी। आखै संसार री लोक–कथावां में अै अभिप्राय–तंतु इज पसरियौड़ा व्है। बातपोस (कत्थक्कड़) कीकर कुछैक अभिप्रायां नै जोड़नै कथा रै तांतै नै लांबौ अर छोटौ कर दैवै। सार बात आ कै लोक कथा में सारौ खेल अभिप्रायां रौ व्है। आज भी जद कै लोक साहित्य री दूजी विधावां री ओप कमती पड़ रैयी है, पण लोक–कथा रौ प्रचलन तौ ज्यूं रौ त्यूं है। इणरा कांई कारण है ? इण पर भी इणी'ज इकाई में विचार करीजसी। जोगा विद्वानां लोक–कथा बाबत कांई–कांई विचार करिया है? वां विचारां रौ सार पाठकां सामी राखणो इण इकाई रौ लूंठौ ध्येय है।

7.1 प्रस्तावना

लोक में जिणरौ प्रचलन व्है अर जकी कथा परम्परा सूं चालती या पनपती रैयी व्है, वा इज लोक–कथा गिणीजै। कठै ई लोक–कथा, लोक–प्रवाद रै पर्यायवाची सबद रै रूप में भी परोटीजै। कैई विद्वान धरमकथावां नै इज लोक कथा नांव देवता रिया, पर आ बात सही अर खरी नीं है, क्यूंकै लोक–कथावां में इज अेक वरग धरम कथावां रौ व्है। इण सारू अेक भाँत री लोक कथावां नै भलांई धरमकथावां कह दियौ जावै, पण सगळी

लोक–कथावां नै धरम कथावां कहणौ उचित नीं है। 'धर्म–कथा' री प्रस्तुति में तौ कथा कहणियौ अर कथा सुणणियौ दोनूं ई मांनै कै म्हांनै इणसूं 'धर्म–लाभ' व्हैला, म्हांरी कोई कामना पूरी व्हैला पण लोक–कथा कैवण में अैड़ी कोई कामना पूरी हूवण री बात नीं व्है। मोटै रूप में आ इज कै जिण कथा में लोक मानस तत्त्व मिळै, वा कथा लोक–कथा गिणीजै। आज कैई देसा–प्रदेसां री लोक–कथावां रा संकलन छप भी गया है अर कैई संकलनां रा अनुवाद दूजी भासावां में हुयग्या है, पण लोक–कथा तौ आपरै मूळ मुख–जबांनी रूप में इज फाबै, सोभा देवै। मुख जबांनी परम्परा लोक–कथा री आतमा री ओळखांण करावै अर लोक–कथा में सगती सांचरै। लिखित या कै छपियोड़ै रूप में आवतां इज इण कथा रौ रूप थिर हुय जावै अर रूप रौ औ थिर हूवणौ, उण कथा री मौत हूवणौ गिणीजै। उणरी ओप तौ बहतै पांणी री निरमळता ज्यूं मुख–जबांनी परम्परा में जीवती रैवण में है।

7.2 लोक–कथा : परिभासा, इतिहास अर महत्त्व

जद सूं मिनख–मानवी थोड़ौ कीं ई समझण लागौ तद सूं इज लोक–कथा रौ जलम मानीजसी। गुफावां में आदिम अवस्था में रैवतै मिनखां नै भी लोक–कथावां चोखी लागती अर आज वैज्ञानिक जुग में भी लोक कथावां आछी लागै। लोक कथा री सरलता अर सहजता सगळां नै मोहित करै, इण वसीकरण मंत्र सूं आज तक कोई बच नीं सकियौ है। मानवी जीवण रै सरूपोत सूं लैय'र आज तक रै प्रचलन रै पांण इज कह्यौ जा सकै कै लोक–कथावां अणूंती अपरबळी है। काळ री ताकत नै पछाड़नै आज ई समाज में जागती जोत ज्यूं ओप रैयी है। जिज्ञासा अर मन–मोहकता इणामें काळजयी सगती सांचरै। अै कथावां लोक–जीवण सूं पूरी तरै जुड़ियोड़ी है। आं रौ संदेसौ सनातन सांच रौ संदेसौ है। अै कथावां करण–अकरण रौ बोध करावण में समर्थ है। रीत–नीत रै नाप जोख रौ आधार है। मिनखीचारै रौ मारग बतावण वाळी आं कथावां में साचा–खरा चरित्रां रा सांतरा बखांण भी व्हिया है अर फोरा–खोटा चरित्रां नै भूंडै ढाळै भूंडिया है। इणरौ खास कारण औ कै आवण वाळी पीढियां आं बातां सूं सीख लैयर सच्चरित्रां नै अपणावै अर दुस्टां नै दूर राखै। आं कथावां में मिनख रै बिचै मिनख रै चरित्र नै घणौ मांन–सन्मान दिरीजियौ है, क्यूंकै मिनख तौ किणी नै प्रभावित या प्रेरित कर सकै कै नीं, पण मिनखीचारै प्रधान चरित्र तौ सोळै ही नीं इक्कीस ई आनां प्रभावित करै, प्रेरित करै। इसा चरित्र मिनख री नीं समाज री धरोहर गिणीजै।

लोक मानस री दीठ सूं कथा–नायक रौ चरित्र सद्गुणां री खांण हूवणौ चाहीजै, जिणसूं आवण वाळी पीढियां सीख लैय सकै। औ इज कारण कै कथा–नायकां रा चरित्र अणूंता ऊजळा दरसाईजै। लोक–कथा रै व्यापक प्रभाव नै दरसावता नांमी लोक–साहित्यविद् प्रोफेसर सत्येन्द्र आपरी पोथी 'लोक–साहित्य–विज्ञान' में लिखै–

'कहानी लोक मानस की मूल भावना के रूप को स्थूल प्रतीक से अभिव्यक्त करती है। यह प्रयत्न जीवन के सभी क्षेत्रों में होता मिलता है; अतः कहानी की सत्ता की व्यापकता सिद्ध होती है।[1]

1. लोक–साहित्य विज्ञान– डॉ. सत्येन्द्र, पृ. 189

आदू (आदिम) मिनख री भाँत–भाँत री भावनावां, मानतावां, उण समाज रा रीत–रिवाज, वां री परम्परावां इत्याद सै कुछ लोक–कथावां में वर्णित–विवेचित व्है, इण सारू मनोविग्यांन (Psychology), 'नृतत्त्वशास्त्र' (Anthropology) अर 'समाजशास्त्र' (Sociology) री दीठ सूं आं कथावां रौ घणौ महत्त्व है। उण जमांनै री न्याय प्रक्रिया री झलक ई आं कथावां में इज मिळै। लोक जीवन अर लोक कथा दोनूं आपसरी में फूलां रै हार ज्यूं गूंथीजियोड़ा है ! इण तथ्य जै नामी लोक–साहित्य विद् डा. वासुदेवशरण अग्रवाल यूं समझावै–

"मानव के सुख–दुख, प्रीति–शृंगार, वीर भाव और बैर इन सबने खाद बनकर लोक–कथाओं को पुष्ट किया है। रहन–सहन, रीति–रिवाज, धार्मिक विश्वास, पूजा–उपासना आदि इन सबसे कहानी का ठाट बनता और बदलता रहता है। कहानी मनुष्य के लिए अपूर्व विश्रांति का साधन है। मन के प्रायास को हटाने के लिए कहानी मानव समाज का प्राचीन रसायन है।[1]

7.3 लोककथा : वर्गीकरण

सगळी विधावां बिचै लोक कथावां रौ वर्गीकरण कीं अबखौ काम, पण वर्गीकरण कर्‌यां इज लोक–कथावां रै मरम नै या संदेसां नै समझ सकां। जे आंपां नै आं लोक–कथावां रूपी मणियां रौ खरो मोल–तोल करणौ अर अंगेजणौ है तो औ काम वाजिब वर्गीकरण बिना पार नीं पड़ैला। भारत रा प्राचीन आचार्य तौ मोटै रूप सूं कथा–साहित्य नै दो भागां में बांटियौ है –

1. **कथा**–जिणमें कल्पना री ऊँची उडांण भर्‌यौड़ी व्है।
2. **आख्यायिका**–जिणरौ आधार कोई ऐतिहासिक घटना व्है।

आनन्द वर्धनाचार्य कथावां रा तीन भेद बतावै–

1. परी कथा
2. सकल कथा
3. खंड कथा

तौ हरिभद्राचार्य कथावां रा च्यार भेद गिणावै–

1. अर्थ–कथा
2. काम–कथा
3. धर्म–कथा
4. संकीर्ण कथा

आज रा विद्वानां ई आपो आप रै हैसाब सूं लोककथावां रा वरग थरपिया, ज्यां मांय सूं कुछैक ओपता अर टाळवा वर्गीकरण देखण जोग है –

1. आजकल (लोक कथा अंक, मई 1954) पृ. 9 डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल

1. डॉ. सत्येन्द्र

    1. गाथाएँ
    2. पशु–संबंधी अथवा पंचतंत्रीय कथाएँ
    3. परी की कहानियाँ
    4. विक्रम की कहानियाँ
    5. बुझौवल संबंधी
    6. निरीक्षण गर्भिता कहानियाँ
    7. साधु–पीरों की कहानियाँ

आं रै टाळ डॉ. सत्येन्द्र दो प्रकार फैरूं बताया है :–

    8. कारण निर्देशक कहानियाँ
    9. बाल–कहानियाँ

2. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय

    1. उपदेशात्मक
    2. मनोरंजनात्मक
    3. व्रतात्मक
    4. प्रेमात्मक
    5. वर्णनात्मक–पौराणिक
    6. सामाजिक

3. डॉ. दिनेशचन्द्र सेन

    1. रूप कथा
    2. हास्य कथा
    3. व्रत कथा
    4. गीत कथा

4. डॉ. सत्यागुप्त

    1. धार्मिक कथाएँ
    2. ऐतिहासिक कथाएँ
    3. अलौकिक कथाएँ
    4. सामाजिक कथाएँ
    5. नीति कथाएँ

6. हास्य कथाएँ
7. पशु पक्षी संबंधी कथाएँ

5. डॉ. मनोहर शर्मा
   1. शौर्य – प्रधान कथाएँ
   2. प्रेम प्रधान कथाएँ
   3. हास्य प्रधान कथाएँ
   4. कुतूहल प्रधान कथाएँ
   5. नीति प्रधान कथाएँ
   6. पुण्य प्रधान कथाएँ

6. डॉ. एस. डी. चारण

राजस्थानी लोक कथावां नै कैवणगत (प्रस्तुति) रै हैसाब सूं दोय वरगां में राखै।

1. मांडनै कहीजण वाळी लोक–कथावां
2. उद्धरणात्मक लोक कथावां

7.4 लोक–कथावां अर अभिप्राय (Motif)

हरैक देस–प्रदेस री लोक–कथावां बठां री सामाजिक अर आर्थिक दसावां दरसावै अर संस्कृति रौ सार–संदेस समझावै। विदेसी विद्वान् ठौड़–ठौड़ री लोक–कथावां रौ वैज्ञानिक दीठ सूं अध्ययन कीनौ अर आ मांनता थरपी कै **अभिप्रायां (Motif) रै बिना लोक–कथा री संरचना संभव नीं व्है। विद्वान् बतावै कै अभिप्राय (Motif) खास सांचै में ढळियोड़ौ इसौ विचार व्है जकौ अेक जिसी स्थितियां परिस्थितियां में अथवा समान मन स्थिति अर प्रभाव पैदा करण सारू किणी पोथी अथवा अेक ई जात कै समाज री घणकरी रचनावां में बारम्बार आवै।** अभिप्राय (Motif) कथानक रूढ़ि, कथानक प्ररूढ़ि अर कथा तंतु रै नांव सूं भी जाणीजै। इण बाबत एस. थामसन गहराई सूं चिंतन–मनन कीनौ अर वैज्ञानिक दीठ सूं इण निरणै माथै पूगा कै लोक–कथावां रा मानक रूपां में भी इतरी कुछ छोटी कथावां या कै घटनावां मिळै, जकां नै मानक रूपां रौ मुख्य तत्त्व मान सकां। अै मूळ अर मुख्य तत्त्व इज अभिप्राय (Motif) गिणीजै। आं रै अभाव में लोक–कथा री बणगट असंभव है। आं नै कैई विद्वानां 'लघुतम कथा' भी नांव दीनौ है। कुळ मिळायनै आ बात खरी कै अभिप्राय (Motif) कथा रै मानक रूप रौ लघुतम (छोटै सूं छोटौ) रूप व्है। अभिप्राय (Motif) कथा–निर्माण सारू कितरौ महताऊ व्है, इण बाबत विचार करता डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाळ लिखै–

''ईंट गारे की सहायता से जैसे भवन बनते हैं, वैसे ही भिन्न अभिप्रायों की सहायता से कहानियों का रूप संपादित होता है। किसी भी देश की साहित्यिक रूढ़ियों के अध्ययन के लिए उस देश के साहित्य में प्रचलित साहित्य संबंधी अभिप्रायों का अध्ययन आवश्यक है।

इणसूं औ बैरौ पड़ै कै अभिप्राय (Motif) इज लोक–कथा रा मूळ तत्त्व व्हिया करै। अभिप्रायां (Motifs) री समानता लोक–कथावां री मूळभूत अेकता अर लोक–मानस रै अेक सरीखै सोच–विचार नै प्रमाणित करै। अभिप्राय (Motif) रै बळबुत्तै इज अेक देस या कै प्रदेस री लोक कथा दूजै देस या कै प्रदेस री लोक–कथा रै खेतर में प्रवेस पायलैवै, ठावी ठौड़ बणायलैवै। मोटा रूप सूं तौ सगळा देस–दिसावरां री लोक–कथावां मांय आयोड़ा अभिप्रायां (Motif) नै दोय वरगां में राखीजिया हैः–

1. लोक विस्वास आधारित अभिप्राय
2. कवि कल्पित अभिप्राय

लोक–विस्वास आधारित अभिप्रायां (Motifs) नै नांव इण भाँत दिरीजिया है–

1. संभावना या कै कल्पना आधारित
2. अलौकिक अर अमानवीय सक्तियां सूं संबंधित
3. अतिमानवीय अर अतिरंजनात्मक मानवीय ताकतां सूं संबंधित
4. आध्यात्मिक अर मनोवैज्ञानिक
5. संयोग अर भाग्य सूं संबंधित
6. सरीर विज्ञानी तथ्यां सूं संबंधित
7. सुगन–अपसुगन अर रोक (निसेध) सूं संबंधित
8. समाजू रीत रिवाज सूं संबंधित

भारत में अभिप्रायां (Motifs) रै अध्ययन कांनी पैलड़ौ ध्यांन पास्चात्य विद्वान् टेम्पल दीनौ। आप अभिप्राय (Motif) नै 'घटना' नांव दीयौ है। अभिप्रायां (Motifs) रै अध्ययन बाबत काम करणवाळा उल्लेख जोग विद्वानां में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्रो. सत्येन्द्र, डा. कन्हैयालाल सहल अर प्रो. एस. डी. चारण रा नांव गिणाईज सकै। आगला कीं पांनां में राजस्थानी लोक–कथावां सागै आखा संसार रा देसा–प्रदेसां री लोक–कथावां में मिळण वाळा सामान्य अभिप्रायां (Motifs) री सूची दी जा री है।

7.5 अभिप्राय अनुक्रमणिका (Motif Index)

(क) पौराणिक अभिप्राय

1. मानव री उतपति (ईस रै मूंडै, पेट, भुजा अर पगां सूं च्यारां वरणा रो जलम)
2. सुरग

   क. सुरग सूं पतन (ख) सुरग में बडेरां नै खाणौ पुगावणौ।
3. नरक
4. देवतावां रा न्यारा न्यारा रूप
5. पुत्र–प्राप्ति हेतु देवतावां नै बळी चढ़ावणी

6. वचनबद्ध 'बेमाता' भाग्य–लेख बतावै

(ख) पसु–पक्षी अर अन्य जीवां सूं संबंधित अभिप्राय

(1) (अ) जिनावर

1. बुद्धिमान पसु
2. चालाक पसु
3. धूर्त्त पसु
4. पसुवां कानीसूं भविस्यवाणी
5. पसुवां रा अद्‌भुत दरबार
6. पसुवां रा ब्याव
7. पसु अर मानव रो ब्याव
8. विस्वास पात्र अर सहायक पसु
9. सूर्यमुखी घोड़ौ।
10. पवनपंखी घोड़ौ।
11. सोनै रौ मिरगलौ।

(आ) पक्षी (पंछी)

1. पक्षिया रौ मानव–वाणी में बोलणौ
2. चकवै–चकवी रौ वार्तालाप
3. लकड़ी रौ हंस
4. खजानै रा खोज बतावणियौ कागलौ
5. लाडू बदळणवाळी सुगन चिड़ी
6. मंतरियोड़ौ डोरौ बांधताई मिनख रौ पंछी बणणौ

(इ) दूजा जीव

1. विपन्न सरप नै सुरक्षा मिलणी
    1. मिनख रै पेट में
    2. बटाऊ रै कटोरे में
2. रूप बदळणियौ सरप
    1. मिनख रौ रूप धारणौ
    2. लकड़ी बणणौ

3. सरप रक्षित खजाना

4. नुगरौ सांप

5. सुगरौ सांप

6. उडणवाळौ अजगर

7. सोनै रौ सांप

8. सुख (तोता) रौ मिनख री वांणी में बोलणौ

9. सरप रै साथै घर गृहस्थी कायम करणी

(ग) वर्जनाएँ (रोक)

1. वर्जित जागां अर दिसा

2. श्रापीजियोड़ी लुगाई रौ मूंडौ नीं देखणौ

3. परी नै नग्नावस्था में नीं देखणौ

4. पति या पत्नी री जात नीं पूछणी

(घ) जादू

1. जादू सूं रूप बदळणो

2. जादुई प्रभाव सूं जोबन–मिलणो

3. जादुई प्रभाव सूं जीवन पाछो मिलणो

4. जादुई काजळ

5. बाळ में जादुई ताकत

6. जादुई दवायां/जादुई ओखद

7. जादुई विमांण

8. मन्त्र सगती

9. कांमण

(ड़) राकस अर भूत–प्रेत

1. राकस अर दैत्य

(अ) नरभक्षी रोक

(आ) दैत्य रो बालिका या राजकुमारी रौ हरण

(इ) दैत्य रा प्रांण किणी दूजा में

1. सात समन्दर पार मन्दिर में

2. इमी री कूंपळी में (अमृत री डिबिया में)

(ई) दैत्य रक्षित खजानौ

(उ) लालची दैत्य

(ऊ) साधु वेसधारी (राक्षस) राकस

(ए) दैत्य री मौत

1. सिंहनी रै दूध सूं धोयोड़ी तरवार सूं
2. सात तहखाना मांय पड़ी तरवर सूं
3. हिरणी सींग छाती में घुसैड़ियां सूं
4. वर्जित बावड़ी रा पाणी में सात बार धोयोड़ी नहलाई तरवार सूं

2. डाकण (डाइन), चुड़ैल, स्यारी और सीकोतरी

अ. डाकण रा कड़ा

आ. जीभ काटनै काळजौ खावणवाळी डाकण

इ. डाकण री सवारी–मिन्नी, नाहरी, सांयड इत्याद

ई. मन्त्र–बळ सूं दूध–घी स्यार (खींच) लेणौ

3. भूत–प्रेत

अ. भूत रै रूप रो बदळाव

1. पसु रूप धारण–ऊँट, भैंसौ, बकरौ, घेटौ
2. पक्षी रूप धारण कबूड़ौ गिरजड़ौ

आ. मन्त्रां सूं भूत नै बांधणौ

1. रूंखड़ै में खील (कील) ठोक नै
2. घड़ै या कै दीवड़ी में बन्द करनै जमी में गाडणौ

इ. भूतां री उपासना (मसांण जगावणा)

1. बाकळा चढावणा
2. बकरे री बळी

च. चमत्कार या अद्‌भुत कार्य

1. परलोक री जातरा

अ. पाताल गमन

1. मन्त्र बळ सूं
2. सरप रै साथै

आ. इन्द्रलोक गमन

1. परियां रै साथै (विमान पकड़नै)

2. मन्त्र–बळ सूं

2. दूजा लोक सूं प्राणियां रौ धरती माथै आवणौ

अ. परियां रौ

1. नारी रूप में

2. पक्षी रूप में

आ. देवतावां रौ मनुस्य–रूप में धरती माथै विचरणौ

3. अद्‌भुत प्रण

अ. मोतियां री पगरखीवाळी सूं ब्याव करण रौ प्रण

इ. सुपनै में दीखणवाळी सूं ब्याव करण रौ प्रण

ई. मून तोड़ावण वाळै सूं ब्याव

उ. आडियां रा सही पडूतर देवण वाळै सूं ब्याव

ऊ. असम्भव कार्य करण वाळा सूं ब्याव

4. अद्‌भुत घटनावां अर अद्‌भुत काम

अ. समन्दर में पड़ियोड़ै हार नै लावणौ

आ. सात कोस में बिखरी राई नै भेळी करणी

इ. अमरफळ लावणौ

ई. डाकण रा कड़ा लेवणा

उ. इमरत लावणौ

ऊ. पैप रा फूल लावणा

5. अनोखी जागां

अ. सोने रो महल

आ. पाणी रौ महल (बादळ महल)

इ. कुंकुम अर केसर सूं बण्यौ महल

छ. भांत भांत री परीक्षावां अर अनोखा सवाल

1. आडियां पूछणी

2. उळीझयोड़ा सवाल

अ. अकल कठै रैवै ?

आ. अकल कांई खावै ?

इ. दूध सूं धौळौ कांई व्है ?

ई. आसमान सूं ऊँचौ कांई ?

उ. अन्धकार सूं काळौ कांई ?

ऊ. पाप रौ बाप कुण है ?

3. पेचीदा सवालां रा पडूतर निर्जीव वस्तुवां कानी सूं

अ. हार सूं

आ. खाट सूं

इ. चूंदड़ी सूं

ज. बौद्धिक कोसळ अर मूर्खता–

1. बौद्धिक कोसळ

अ. बिकण खातर बाजार में आई सगळी चीजां मोल ले लेणी

1. सजीव–मानवी, पसु कीड़ा–मकोड़ा

2. निर्जीव छाणा, दैवाळौ, भाटा

2. मूर्खता

अ. खुदोखुद नै नीं गिणणौ

आ. बिना कारण जांण्यां, दूजां नै रोवता देख रोवणौ

झ. धोखौ

1. चोरां रो धन हड़प लेवणौ

अ. रूंखड़ै माथै सूं सूखौ खालड़ौ न्हांखनै

आ. विचित्र प्रकार सूं बोलनै

अ. भविस्यवांणी अर सपना में दरसण

1. भविस्यवांणी

अ. मिनखां अर देवतावां सूं

आ. पसु, पक्षियां अर जीवां सूं

2. भविस्यवांणी सूं भावी सुख–दुखां री जांणकारी

3. सपना में दरसण

अ. भावी जोड़ायत सम्बन्धी

आ. भविस्य में मिळण वाळै धन बाबत

इ. सपना में दरसण साहसिक काम रा प्रेरक

ट. भाग्य अर संयोग

1. कर्मवाद

अ. बाप–कर्मी

आ. आप–कर्मी

ठ. वरदान सराप

1. सराय लाग्यां पछै री जिंदगांणी

अ. सांप रै रूप में

आ. ध्राव–ढांढ़ै रै रूप में

इ. पंछी रै रूप में

ई. कुरूप आदमी या कै नारी रै रूप में

2. सराप सूं मुगती

अ. कीं गिणती रा बरस बीत्यां

आ. सिव–पार्वती रै वरदांन दियां पछै

3. विविध अभिप्राय

1. पाछौ जीवतौ हूंवणौ

2. देस–निकाळौ

3. होड

4. पाछौ आवण री उडीक

5. हरौ पेड़ जीवण रौ प्रतीक

6. कबर माथै ऊगियौड़ा पौधा प्रेमियां रा प्रतीक

7. सबसूं छोटौ भाई सबां सूं बत्तौ हीमती

8. अद्‌भुत सौगन

9. सदाव्रत बांटणौ

10. राजा रौ चुणाव हथणी रै हार पहरायां

11. दीठ – गरम

7.6 सारांस

टाबर–टींगरां सूं लगाय'र बूढा–ठाडा तकातक री मनभावती लोक–कथावां मिनख–मानवियां रौ कोरौ–मोरौ मनोरंजन ई नीं कीनौ, बल्कि मिनखां नै भाँत–भाँत रा दाखला बताय'र सोरै–सांस अर नीरांयत सूं जीवणौ सिखायौ। लोक कथावां सरल–सरस हूवण रै कारण इज जन–जन रै कंठ रौ हार गिणीजै। पैली–पैली तो आंरै महताऊ पख माथै घणौ विचार नीं करीजियौ पण जद कैई लोक–साहित्यविद्, नृतत्त्वसास्त्री, इतिहासकार, समाजसास्त्री, भासा–विद, मनोविज्ञांनी, आपोआप री सैद्धांतिक, अर वैज्ञानिक दीठ सूं गहरौ विचार करण लागा, तद अणूंती सार री बातां सांमी आयी। आं तथ्यां में महताऊ आ खोज है कै लोक–कथावां री बणगट में अभिप्राय (Motif) रौ सैसूं घणौ योगदान व्है। औ इज कारण कै सगळा विद्वान् अभिप्राय (Motif) नै लोक–कथा रौ मूळाधार मांनै। आं अभिप्रायां (Motifs) नै जोड़ता जावौ कथा में आपै ई बधापौ हूवतौ रहसी। अभिप्राय (Motif) नै भलीभाँत समझियां मिनख री प्रवृत्ति, उणरै स्वभाव अर उणरी जीवण–पद्धति नै आछी तरै समझ सकां। आखै संसार री लोक–कथावां में उपलब्ध समान अभिप्राय (Motif) इण बात नै पुख्ता रूप सूं प्रमाणित करै कै अेक जिसी परिस्थिति अर अेक जिसै वातावरण में जीवता मिनख मानवी किणी मुद्दे या कै बिन्दु बाबत अेक जिसी बातां इज सोचैला, भलांई बे न्यारा–न्यारा देसां–प्रदेसां में क्यूं नीं, रैवता व्है। औ इज कारण है कै भारत, चीन, जापान, इग्लैंड, अमरीका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका इत्याद देसां री लोक–कथावां अेक जिसा अभिप्रायां (Motifs) रै तांतां गूंथिजीयौड़ी लखावै। विविध विद्वानां लोक–कथावां रा किसा–किसा वरग थरपिया है ? अर आं में राख'र लोक–कथावां रौ मोल–तोल कीकर करीज सकै ? इणरौ खुलासौ भी इण इकाई में व्हियौ है।

7.7 अभ्यास रा सवाल

1. लोक–कथा री ओपती परिभासा देवो।
2. लोक–कथा रै विकास रौ क्रम समझावौ।
3. लोक–कथावां रा कितरा भेद व्है।
4. अभिप्राय (Motif) रौ कांई अरथ हैं ?
5. लोक–कथा रै निर्माण में अभिप्राय (Motif) रौ कांई योगदान है?
6. परा प्राकृतिक तत्त्वां सूं संबंधित सात अभिप्रायां (Motifs) री सूची बणावौ।

7.8 संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य कोश– सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा
2. भारतीय लोक–साहित्य डा. श्याम परमार
3. हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास (सोलवां भाग)
4. लोक–साहित्य विज्ञान– डा. सत्येन्द्र
5. राजस्थानी लोक–साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन – डॉ. एस. डी. चारण।

इकाई – 8

राजस्थानी लोक–कथा : विवेचन

8.0 उद्देस्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 बातां रा सरूआती छोगा

8.3 बिड़दाव

8.4 वीरता प्रधान अेतिहासिक लोक–कथावां

8.5 प्रेम प्रधान लोक कथावां

8.6 सरप–कथावां

8.7 अति प्राकृतिक तत्त्वां सूं संबंधित कथावां

8.8 चोरां–ठगां, धाड़ायतियां री कथावां

8.9 धार्मिक अर व्रत कथावां

8.10 सारांस

8.11 अभ्यास रा सवाल

8.12 संदर्भ ग्रंथ

8.0 उद्देस्य

किणी प्रदेस री लोक–कथावां रौ अध्ययन करण रौ मतलब व्है – उण प्रदेस में बसणिया लोक अर उणरै जीवण री जाणकारी सारू जातरा संपूरण करणी। इण जातरा में अध्ययन करण वाळा शोधार्थी नै घणमूंघा अनुभव मोती मिळै। लोक रै अध्ययन रौ कोई आर न कोई पार। लोक तौ महासमन्दर गिणीजै। लोक री सम्रद्ध परम्परावां अर जन–जन रौ आपसरी रौ बैवार (व्यवहार) री पुख्ता जाणकारी लोक–कथावां रै अध्ययन सूं इज संभव व्है। इण इकाई में राजस्थानी लोक–कथावां रौ मूल्यांकन अर विवेचन इणी'ज दीठ सूं करीजसी।

कथ्य री दीठ सूं घणकरा देसां–प्रदेसां री लोक–कथावां में समानता मिळ सकै पण कथा री बणगट अर उणरी प्रस्तुति में प्रदेसवार फरक मिळै। राजस्थान में लोक कथा सारू 'बात' सबद बपराईजै। राजस्थानी बातां (लोक कथावां) रौ बरणाव घणो फूठरौ, सुहावणौ, लुभावणौ अर आकरसक है। ब्याळू करियां पछै जद गाँव–गवाड़ में बातपोस बात मांडै तौ उणरौ दरसाव कीं न्यारा ई भाँत रौ व्है। कथा रौ कुसळ कारीगर जद अेक खास अंदाज में 'पछै रामजी भला दिन दै.....,' कैय'र जद बातां–बिगतां सरू करै अर हुसियार 'हुकारियै' रा 'हां सा', 'हां सा, पछै कांई बात है, वाह सा वा,' इत्याद 'हुंकारा' गूंजण लागै, तद उण ठौड़, री छिब ई न्यारी–निराळी लखावै। इण इकाई में इण बात री ई पुख्ता जाणकारी

दिरीजसी कै राजस्थानी बात रौ मंडाण (सरूआत) कीकर व्है, अर अंत में बात नै कियां समेटीजै। राजस्थानी बातां में बात री सरूवात सूं पैली कीं काव्य री ओळ्यां रौ उच्चारण करीजै, जकां नै अठां री भासा में 'छोगा' कैवै। आं छोगां री ओळखांण ई इण इकाई में कराईजसी। इण इकाई मांय राजस्थानी बातां रा प्रकारां अर वां री विसय–वस्तु बाबत ई सांतरी चरचा हूसी।

8.1 प्रस्तावना

राजस्थानी बातां (लोक–कथावां) री छिब इज न्यारी। इण प्रदेस में प्रचलित कैई बातां तौ अेक अेक नीं दो–दो तीन–तीन, रात तांई कैहीजती रैवै, जद जायनै पूरी व्है। इसी बातां नै बातपोस खास अंदाज में मांडनै कैवै। आंनै सरू करण सूं पहलां अेक खास भाँत रौ वातावरण बणाणौ पड़ै। सिंझ्यां पड्यां पछै टाबर टींगर, जोध–जंवान अर बूढा–ठाडा सगळा ब्याळू करियां पछै गाँवाऊ गवाड़ में हथाई खातर भेळा हुय जावता। बातपोस बात सरू करण सूं पहला 'छोगां' रौ लयबद्ध उच्चारण करै। आं छोगां रै मिस भी भांत–भांत री सामाजिक–सांस्कृतिक सीख दिरीजी है। बातपोस रौ बात करण रौ अेक इसौ अनूठौ, अनोखौ अर आकरसक ढंग व्है, जकौ बात सुणणियां नै हरपल सजग–सावचेत राखै। वांरौ मन–मानस औ जाणण सारू आखतौ पड़तौ रैवै कै अबै आगै कांई व्हैला। कथा कैवणिया कुसळ कारीगर रै साथै 'हुंकारियै' री उपस्थिति जरूरी लखावै। कह्यौ भी है– 'फौज में नगारौ अर बात में हुंकारौ।'

अठै इण सामाजिक मानता सिद्ध साँच रौ उद्घाटण जरूरी लखावै कै राजस्थान में जद 'एकांतरै' रै ताव री बात कहीजै, तद कोई 'हांकारौ' नीं देवै। अैड़ी धारणा प्रचलित व्हैगी कै जे कोई इण बात में भूलै सूं ई 'हांकारौ' दे दीनौ तौ दूजै दिन सूं उणनै एकांतरै रौ ताव आवण लाग जावैला। इणरै टाळ सगळी ई भाँत री बातां में 'हूंकारौ' अवस करनै दिरीजै अर उणसूं इज बात–सभा रै रूप में सवायौ बधापौ व्है। इसी बातां में प्रसंग मुजब, अवसर परवांण अर आपरी याददास्त माफिक बातपोस कैई बंधा–बंधाया वरणन (प्रकृति, सेना, जुद्ध, सरोवर, नख–सिख, सिणगार–साधन, राज–सभा, खेत–बेरा–बाड़ी मेळा–खेळां सूं संबंधि ात) जोड़ता रैवै अर बात नै आगै बधावता रैवै। इण भाँत री बातां (मांड'र कहीजण वाळी बातां) रै टाळ दूजी इसी बातां भी इण प्रदेस में प्रचलित है, जकी उदाहरण सरूप किणी तथ्य–सत्य री पुस्टि या समर्थन खातर कहावत रूप में पेस करीजै। इसी कथावां नै 'कहावती कथावां' नांव देय सकां। राजस्थानी लोक कथावां रा कथ्य री दीठ सूं भी वरग थरपीज सकै, जिणरौ ब्यौरेवार विवेचन आगला पांनां में करीजसी। इणसूं पैली अठै कीं 'छोगा' प्रस्तुत करीजै, जका मांड'र कहीजण वाळी बातां रै सरू में बोलीजै।

8.2 बातां रा सरूआती छोगा

(अ) अद्भुत घटनावां सूं संबंधित छोगा

बात भली दिन पाधरा पैडैं पाकी बोर।
घर भूंडण घोड़ा जणै, लाडू मारै चोर ।।

कैई नर सूता कैई नर जागै, जागतोड़ां री पागड़ियां ढ़ोलिया रै पागै।
सूतोड़ां री पागड़ियां जागतोड़ा लेय भागै, फोरा पतळां रौ डांव नीं लागै।।
अेक तिल वो ई कांणौ, नित उठ कन्थ कढ़ावै घाणौ।
पाड़ोसण मांगे खळ रौ डळौ, कठै री तेलण कठै रौ पळौ ।।
अेक गेऊ वो ई फीदौ, नित उठ कन्थ करावै सीदौ ।
देखली सीदै री सोय, लेणा अेक न देणा दोय।।
लाई उधारी करगी गटकौ, मांग्यां बतायौ ताळी रौ तटकौ, तद भागौ गंवार
पींजण घालौ खाक में झूंपड़ी करौ जवार
सासू आगली बऊ आई, गेंऊं देयनै चिणौ लाई
थोथौ चिणौ बाजै घणौ, बात करै जणौ जणौ
खेजड़ी रौ कांटौ साढ़ी सोळै हाथ
भागै तो बंचै नीं, नींतर राजा रांमचन्दरजी रै हाथ
जिणरा हुया तीन पाट, दो सुळियौड़ा अेक चढ़ै ई नीं
ज्यां में थपिया तीन गांव, दो ऊजड़ अेक वसै ई नीं
ज्यां में बसिया तीन कुंभार, दो ठोटी अेक घड़ जांणै ई नीं
ज्यां घड़ी तीन हांडियां, दो फूटोड़ी नै अेक चढै ई नीं
ज्यां में रांधिया तीन चावळ, दो कटकटा नै अेक सीजै ई नीं
ज्यां में निंवतिया तीन बांमण, दो इगियारसिया अेक जीमै ई नीं
ज्यांनै दीनी तीन गायां, दो बांजड़ी अेक ब्यावै ई नीं
ज्यांरा बटिया तीन रिपिया, दो खोटा नै अेक बाजै ई नीं
ज्यांनै परखिया तीन सुनार, रात रा रातिंदौ दिन रा दीसै ई नीं
ज्यांरै मैली तीन थाप, दो टळगी नै अेक लागी ई नीं
सार बाबा सार, पल में लंगार, थाकोड़ा सा टारड़ा नै दूबळा असवार
फौज में नगारौ बात में हुंकारौ, हुंकारै बात प्यारी लागै, बात सुणियां भाग जागै
जीवै बात रौ कहणवाळ अर जीवै हुंकारै रौ देणवाळ।'

(आ.1) भलाई भूंड सूं संबंधित छोगा–

'बात साची भली, पोथी बांची भली, देह साजी भजी, बहू लाजी भली
लूवां बाजी भली, नौबत गाजी भली, गाय दूजी भली, गवर पूजी भली
जीवन जोड़ी भली, कच्छी घोड़ी भली, मौत मोड़ी भली, मंसा थोड़ी भली

अंब केरी भली, माळा फेरी भली, कांठळ काळी भली धीणै छाळी भली
घाव पाटी भली, भाख फाटी भली, बिरखा बूठी भली, नांणै मूठी भली
आई तूठी भली, विपदा खूटी भली, मैथी फाकी भली, साख पाकी भली
पंथ गाडी भली, भैंस पाडी भली, प्रीत गाढ़ी भली, भींत जाडी भली
बात साची भली, पोथी बांची भली।'

(आ. 2) 'भोजाई रौ बोल खोटौ, रिपियां रौ कौल खोटौ
बांणियै रौ पासौ खोटौ, जेळ रौ तौ बासौ खोटौ
अेकलियै रौ लाटौ खोटौ, बांमण रौ तौ बांटौ खोटौ
अेवड़ बिचै छाळी भूंडी, खेत बिचै पाळी खोटी
बाबोजी रै चेली खोटी, घरवाळी तौ बोळी भूंडी
तिरिया दिन गेह भूंडौ, सियाळै रौ मेह भूंडौ
परनारी सूं नेह भूंडौ, उगूणौ तो खेत भूंडौ
भगतण सूं हेत भूंडौ, उधारी बौपार भूंडौ
बिधवा रौ बणाव भूंडौ, साधु वाळौ हेत भूंडौ
मौसर री तौ रीत भूंडी, दासी सूं प्रीत भूंडी
पाड़ोसी सूं राड़ भूंडी, कांटां री तौ बाड़ भूंडी
देवाळिया री साख भूंडी, आकड़ै री राख भूंडी
खीचड़ै में लोदौ भूंडौ, घरै हिलियौ खोदौ भूंडौ
दाढ़ी बिना ठोडी भूंडी, घर में रांड मोडी भूंडी
काळी–बोळी रात भूंडी, कूड़ी सोई बात भूंडी।'

(इ) अनुभव ग्यांन/साँच सूं संबंधित छोगा

बाप जैड़ा बेटा, रूंखां जैड़ा छोडा, घड़ै जैड़ी ठीकरी, मायड़ जैड़ी डीकरी
झाड़ जैड़ी मूळ, धरती जैड़ी धूळ, रूई सूत, माईत जैड़ा पूत
भाखर जैड़ा भाटा, बिरखा जैड़ा लाटा, मंडी जैड़ा मोडा।

जैड़ी दीठ वैड़ी सीख, जैड़ी खांण वैड़ी बांण
जैड़ौ वास वैड़ौ–अभ्यास, जैड़ौ दीजै वैड़ौ लीजै
जैड़ी रात वैड़ा परभात, जैड़ी करणी वैड़ी भरणी!

(ई) प्रसिद्धियाँ रा छोगा–

प्रथम पिंड पांणी रौ, देवळ तौ आबू रा
हवेलियां तौ जेसांणै री, गढ़ तौ चित्तौड़ रौ
ताल तौ भोपाळ रौ, मिन्दर तौ मथुरा रा
नीर तौ गंगाजी रौ, धीणौ तौ भैंस रौ
भैंस तौ नाळी री, बळद तौ नागोरी
गाय तौ सांचोरी, ऊंट नाचणै रै टोळै रा
उजास तौ सूरज रौ, आदर तौ माया रौ
कांकण तौ केदार रौ, गदा तौ भींव री
बांण तौ अरजण रौ, तिलक तौ केसर रौ
चूड़ौ तौ हस्ती–दांत रौ, रूपौ तौ जावर रौ
सला तौ पंचा री, ममता तौ मां री।

(उ) कहावती छोगा–

अेक–राली अर जणा पचास, ओढ़ण री करै सारा ई आस
आधी रात रा लागी खीचातांणी, **खातां खांण नीं पीतां पांणी**
अेक लरड़ी अर सातां रौ सीर, नित उठ पीव रंधावै खीर
छछवारियां नै छाछ घलावै, आडौ फिर फिर माडै लावै
मिंतरियां नै बगसै लांणी, **खातां खांण नीं पीतां पांणी**
आधी बाटकी नवमी बाटकी, ज्यां में पुरसी अढ़ाई सांकळी
उकरड़ै चढ़ नै निंवत्यौ गांव, अेक अेक गोडै तीन तीन ठांव
पुरसण आळी सोळै जणी, **हांती थोड़ी ने हळवळ घणी।**
आं छोगां में बड़ा आखरां वाळा वाक्यांस कहावती वाक्य है।

(ऊ) राजस्थानी धरती अर संस्कृति री महिमा संबंधी छोगा–

साळ बखांणू सिंध री, मंडोवर देस।
क्षीणौ कपड़ौ माळवै, मारू मरुधर देस।।
बोर मतीरा बाजरी, खेलर काचर खांण।
धांन रा धीणा धौपटा, बरसाळै बीकांण।।

मौज सुरंगां माळिया, फूल बाग चहुं फेर।
चीज अनोखी चोवटै, अै बातां आंबेर।।
केहर लंकी गोरियां, सोढ़ौ भंवर सुजांण।
बड़ झुकिया लांबै सरां, आई धर अमरांण।
ऊंचौ तौ आडावळौ, नीचा खेत निवांण।
कोयलियां गहका करै, अइयौ धर गोढांण।।
अहै थांन इकलंक रा, पावस घटा पहाड़।
सरब चीज पाकै सदा, मोटी धर मेवाड़।।
घोड़ा कीजै काठ रा, पिंड कीजै पाखांण।
लोह तणा हुवै लूगड़ा, जद जोईजै जेसांण।।

8.3 बिड़दाव

आं छोगा नै भाँत कथा–कैवण सूं पैली 'बिड़दाव' री परम्परा ई है, जिणमें कथा री महत्ता प्रगट करीजी है।

बातां हंदा मांमला, नदियां हंदा फेर।
बहता ज बहै उतावळा, घरमर घालै घेर।।
बात बात सब अेक है, बात बात में फेर।
उणी इज लोह री कुस घड़ी, उणी इज लोह समसेर।।
ज्यूं केळै रै पात में, पात पात में पात।
त्यूं चातर री बात में, बात बात में बात।।
बात बात सब अेक है, बात बात में बैण।
वौ इज काजळ ठीकरी, वौ इज काजळ नैण।।
बातड़ल्यां घर ऊजड़ै, चूल्है दाळद होय।
जे कोई जांणै बातड़ी, बातड़ल्यां घर होय।।
बात रैवै पुळ बीत जा, समय पलट जा काळ।
साजन सिळौ न खाइये, जो सोनै री बाळ।।
सोरठियौ दूहौ भलौ, भल मरवण री बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात।।
बात सुणौ अर सांभळौ, या सूं लेवौ सीख।

सदा ज आडी आवसी, यां री जुग बाली रीत।।

बात कह्यां सुख ऊपजै, मन निरमळ हुय जाय।

ग्यांनी हिरदै राखलै, मूरख सै पिछताय।।

प्रीत रीत अर नीत में, बातड़ल्यां परमांण।

सुण रे सुगणा सायबा, बातां रा फरमांण।।

बातपोस बात (कथा) नै पूरी करतां बखत भी कीं पद्यात्मक पंक्तियां बोलै, ज्यां में दीयौड़े अमर अर सासवत संदेस नै सुण'र श्रोता आणंद री अनुभूति करै।

चालणहारा चलि गया, वौळाऊ वळियाह।

सदा सनेही लाकड़ा, साथै परजळियाह।।

सूरां दातां पिंडतां तीनूं अेक सुभाव।

जनमै सो मरसी खरा, अमर बात रह जाय।।

आया संग न चल्लही, मर मर गये जवान।

मेरी तेरी कर मुवै, हिन्दू मुसळमांन।।

सुर नर नाग न घट्टियां, केळे केहरियांह।

जळपुरिया परवांण ज्यूं, गल्लां ऊबरियांह।।

8.4 वीरता प्रधान ऐतिहासिक लोक–कथावां

राजस्थान में 'बात' अर 'ख्यात' री समृद्ध परम्परा रैयी। वीरांगनावां रै ऊजळै चरित्र बाबत अनेकूं बातां राजस्थान में प्रचलित है। अठां रा नर–नारियां 'मांन' रै मोल नै सदाई सैसूं सिरै गिणीयौ अर 'मांन स्वाभिमांन' खातर प्रांणां री परवा ई नीं करी। इसी घणकरी कथावां घटित घटनावां सूं जुडियौड़ी है। आं कथावां बाबत राजस्थान रा चावा इतिहासवेत्ता ठा. किसोरसिंह वार्हस्पत्य रा विचार उल्लेखजोग है–

''प्राचीन समय में जब राजकुमारों को चारण कवियों के संरक्षण में रखकर शिक्षा दिये जाने का नियम प्रचलित था, तब उक्त कवि किसी प्राचीन वीर धीर ऐतिहासिक चरित्र को रोचक बनाकर उसको कथानक के रूप में लिखा करते थे और वही अपने शिष्यों को पढाते थे। साथ ही उनमें लिखी हुई बातों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए अपने शिष्यों को बराबर प्रोत्साहित करते रहते थे। ये कथानक जिस प्रकार पुरूषों के पढ़ने की चीज है, वहीं उसी प्रकार स्त्रियों के हाथों में भी बिना किसी हिचकिचाहट के दिये जा सकते हैं। अश्लीलता तो इनमें नाममात्र भी नहीं। जिस प्रकार पुरूषों के गुणयुक्त चरित्रों का उल्लेख इनमें किया गया है, उसी प्रकार स्त्रियों के पातिव्रत्य, शौर्य, सतीत्व रक्षा आदि–आदि गुणों का भी इनमें उल्लेख मिलता है।''[1]

1. राजस्थान त्रैमासिक (कलकत्ता) वर्ष 1 अंक 2, संवत् 1992 में छपिया ठा. किशोरसिंह रा 'डिंगल भाषा के प्राचीन ऐतिह्य' लेख सूं।

आं कथावां रै पांण राजस्थान रौ साचौ सामाजिक–सांस्कृतिक जन इतिहास बणायो जा सकै। आं कथावां में राजसी ठाट–बाट, मांन–मरजाद रा चित्रांमां रै साथै–साथै छळ–पड़पंचां भरी राजनीत रा पोत ई ऊघड़ता दीसै। आपसी बैर अर अंतलालची वृत्ति किण भाँत भायां–भायां नै लड़ा देवती, इणरौ लेखौ–जोखौ ई आं कथावां में मिळै। आं कथावां में जगदेव पंवार री बात, बात कांधळजी री, बात राव चूंडैरी, बात राणा अमरा रै बिखैरी, बात अणतराय सांखलै री, बात अमरसिंघ–गजसिंघोत री इत्याद बातां घणी चावी व्ही।

8.5 प्रेम प्रधान लोक कथावां

इण वरग री बातां रै रचाव में इण प्रदेस रा प्रेमी–युगलां रै निस्छळ प्रेम नै अमर करण री मंसा रैयी है। प्रेम री श्रेष्ठता अर सर्वोपरिता सिद्ध करती अै बातां संदेसौ देवै कै अंतस रौ प्रेम सैसूं सिरै। रक्त संबंध उण सांमी कीं नीं व्है। प्रेमीजन संसार री किणी भाँत परवा या कै चिंता नीं करै, जद कै संसारी वां रा प्रेम मारग में ठौड़–ठौड़ कांटां राखण में कीं कसर नीं छोडै। आं प्रेम प्रधान बातां में सिणगार रा संजोग–विजोग दोनूं पख वर्णित–विवेचित है। नख–सिख वरणन में परम्परित उपमानां रौ प्रयोग व्हियौ है। कथावां में दरसायौ है कै पैलड़ी चौनिजरां हूवतां ई दोनूं प्राणियां रै हियै हैत री जकी कूंपळ फूटै, उणसूं सिरै कीं बात नीं। राजस्थानी बातां में मुस्लिम प्रेमीजनां रै अन्तस रै प्रेम रा ई ओपता चित्रांम कुरियोड़ा–मंडियोड़ा है। 'जलाल–बूबना री बात' इणरौ ओपतौ उदाहरण। आं कथावां में साहित्य सास्त्र वर्णित 'शुक्लाभिसारिका' अर 'कृष्णाभिसारिका' जिसा नायिका भेद रा चित्रांम ई मिळै। अेक उदाहरण–

''चतुरंगी रायजादी किरत्यां रौ झूंमकौ। मोतियां री लड़ी हुवै तिणि भाँत री ऊजळी गोरंगिआं ऊजळै गात, ऊजळै बावनै चंदण री खोळि कियां, ऊजळा मोतियां रा गहणा पैहरियां, ऊजळा वागां रा बणाव कियां, ऊजळा फूलां रा चौसर घातियां, हाथां ऊजळा फूलां रौ गैंद उछाळती थकी ऊजळी साखियां रै साथै सहेलियां री टोळी सो रास–मंडळ रमण रै उछाह चांदणी राति री चालि जाय छै ऊजळा बणाव कियां ऊजळी चांदणी मिळ जाइ छै। ऊजळी ठुकरांणी ऊळा ठाकर सूं जाइ जाइ मिळै छै। इण भांत सरद चांदणी रंग विलास मांणीजै छै।''

आभल–खिंवजी, बींझा–सोरठ, ऊमादे भटियांणी, ढोला–मरवण, पन्ना–वीरमदे, रिसाळू कंवर, बिजड़ बिजोगण, बगसीराम प्रोहित नै हीरां, रतना–हमीर, बाघौ–भारमली, जलाल जलाल बूबना इत्याद बातां राजस्थानी री प्रमुख अर खास प्रेम कथावां है। भारत रा किणी दूजा प्रदेस में इतरी प्रेम कथावां नीं मिळै।

8.6 सरप–कथावां

राजस्थानी बातां में कैई बातां रा नायक सरप रूप में मिळै। आं कथावां रा तार वैदिक कालीन नागपूजा सूं जुड़ियोड़ा लखावै। इण धरती माथै गोगाजी अर केसरिया कंवरजी तौ नाग देवता रै रूप में घणा चावा है। पताळ लोक नै नाग लोक बताईजियौ अर सेसनाग इण लोक रौ राजा मांनीजियौ है। कैई बातां में साहसी राजकुमार इणलोक री जातरा कर इमरत लेयनै आवै। अनेकूं बातां इसी है, ज्यां में सांप प्रेमी रूप में दरसाईजियोड़ौ है। कुछैक कथावां रै वरणन रै मुताबिक पत्नी रै अधरां रौ रस चूसतां इज साँप रौ जोध

जवान बण जाणौ चित्रित है। घणकरी बातां इसी, जिणमें सांप किणी रै पेट में सरणौ लेय आपरौ बचाव करै अर पछै आपरौ ठायौ उण सरणदाता रै पेट नै इज बणायलै वै। वो मिनख बेमार रैवण लागै। पछै कोई दूजौ सांप बतावै कै जे थे बळबळतौ तेल पीवोला तौ पेट मांयळौ सांप मर जावैला अर उणरा टुकड़ा–टुकड़ा उल्टियां रै रूप बारै आय पड़ैला। केई सरप कथावां में निस्संतान व्यक्ति रै घरै सांप पुत्र रूप में जलम लेय पूरी सेवा करै, सारसंभाळ करै। आं बातां में सुगरा अर नुगरा दोनूं ई भाँत रा सरपां रा चित्रांम मिळै। कठैई सांप धरम भाई बण दुखियारण बहन नै रोज री अेक सोनै री मोहर देवतौ दीखै, कठैई सैमूळै परिवार नै डसण रै ध्येय सूं गयोड़ी नागण जद परिवार वाळां रै मूंडै नाग–परिवार री हित–कामना करतां सुणै तौ आपरौ मतौ बदळनै उण घर में नवलखौ हार न्हांखती निगै आवै। केई सरप कथावां में भांत–भांत री आडियां पूछीजी है। रस कस तौ दिवलौ बळै, नुगरौ सांप, लिखिया लेख नीं टळै, सीधौ हिसाब, बांड्यौ वीर, काळिंदर री सुगराई, नागण थारौ बंस बधै, फूलकंवर, पीळौ सांप इत्याद राजस्थान री घणी चावी नै चाव सूं सुणीजण वाळी सरप कथावां है।

8.7 अति प्राकृतिक तत्त्वां (भूत–प्रेत, राकस, परिया इत्याद) सूं संबंधित कथावां

राजस्थानी लोक–कथावां में अति प्राकृतिक ताकतां (भूत, प्रेत, राक्षस, डाकण, चुड़ैल, परियां इत्याद) भी मिनखां जिसा काम–काज अर सुधारा कबाड़ा करती चित्रित है। इसा मानवेतर चरित्र कठै–ई कठै–ई अणूता अपरबळी रै रूप में निगै आवै पण चतुर अर साहसी मिनख रै सामी चढियां साव निबळा हुय जावै। वो मिनख आं नै आपरै बस में करनै आं सूं भांत–भांत रा मुस्किल सूं मुस्किल काम (रात–रात में बावड़ी कै तळाव खोदणौ, रातोरात राज रै दोळौ परकोटौ बणावणौ) करावै। अे इसा चरित्रां रा अजीब–अनूठा निजारा है। वे कदैई पाणी माथै दौड़ता दीसै तौ कदैई हवा में उडता निजर आवै अर कदैई दीखता–दीखता अलोप व्है जावै। इन्दर लोक री अपसरावां मिरतू लोक री सैर करण नै आवै अर वांरा विमांण रौ पागौ पकड़नै कोई युवक राजा इन्दर रै दरबार में पूग जावै। वो निरत री बखत सांतरौ बाजौ बजाय इन्दर नै रीझाय दै अर वरदान रूप में इण अपसरा नै मांग लैवै। भूतां री बातां में सुगरा–नुगरा दोनूं ई भांत रा भूत चित्रित। सुगरा सहायता करै–करसण में गड़ियोड़ौ धन बतावण में अर नुगरा पग–पग माथै नुकसांण पुगाबण री कोसीस करै। हीमती मिनख भूतां री चोटी पकड़नै वांनै आपरै बस में करलैवै अर पछै वांसूं आपरा घणा–घणा काम करावै। मंत्र तंत्र सूं भी अै भूत–पलीत बस में व्है। आं कथावां में भूतां अर अपरबळी मिनखां नै आपसरी में बाथियां आवता भी दरसाया है। दैत्य किणी सुन्दरी या कै राजकुमारी रौ हरण कर सात समंदरां पार जळमहल रै तहखांनै में लुकायनै राखै। उण दैत्य या कै राक्षस रा प्रांण भी सात समंदरां पार पींजरै में बंद सूवै (तोतै) में व्है। सेवट कोई साहसी युवक सगळी बाधावां पार कर बठै पूगै। सूवै नै मारतां ई दैत मरे अर वो समाजू रीत–नीत नै अपणावै। इसी कथावां में दुविधा, सातां नै गटकाय जाऊं, खौडियौ भूत, डाकण रा चाळा, गधा रौ खोळियौ, इत्याद कथावां खासी लोक चावी है।

8.8 चोरां, ठगां, धाड़ायतियां री कथावां

चोरी चौसठ कळावां में अर ठगी ई सोळै विद्यावां री गिणती में गिणीजी है। अै चरित्र हाजर जबाबी, भांत–भांत रा जीव–जिनावरां री बोली बोलण में कारीगर अर जीव–जिनावरां री न्यारी–न्यारी बोली रा संकेत अर्थ ग्रहण करण में घणा चतुर व्है। अै अणूता चालबाज ई व्है अर सुगनां–अपसुगनां में घणौ विसवास राखै। सुगन बिचार'र चोरी–ठगी सारू बहीर व्है अर आछा सुगन नहीं व्हियां आळांणौ कर दैवै। अै भांत–भांत रा भेस धारण कर ठगी करै पण आं रा भी कीं उसूल व्है। राजस्थानी लोक–कथावां रौ अेक चरित्र (खापरियौ चोर) किणी घर में चोरी री नीयत सूं कूदै, पण ज्यूं ई सूतोड़ी गृहिणी रै मूंडै 'कुण है बीरा ?' सुणै अर पाछौ घर बारै निकळ जाकै, क्यूं कै बहन रै घरै वो चोरी कीकर करै। इणी'ज भांत अेक दूजै घर में कूदै उणरौ हाथ लूंण री बाटकी माथै जा पड़ै। हाथ चाटतां ई चोरी कर्यां बिना पाछौ निकळ जावै। कारण कै जिण घर रौ लूंण खाय लियौ, उण घर में वो चोरी कीकर करै। इसा चरित्र बोलण में घणा चतुर, फटाफट काम करण वाळा व्है। अै सांतरा पागी व्है। धाड़ायती अमीरां रौ धन–माल खोस–झपटनै लावता अर आपरा खरचा मुजब कनै राखनै बाकी बच्यौ सगळौ गरीब–गुरबां में बांट देवता। इण खातर लोक में वांरी ई बातां चालै। अै डाकू–धाड़ायती नामी सूरमा व्हैता। अैड़ौ लखावै कै लोक–मानस इसी कथावां रै मारफत साचै समाजवाद री भावना रौ प्रसार करै। अनीति रा कांम करतां थकां ई आपरै धंधे री नीति रै कळंक नीं लागण दैवै। आं कथावां में धन–दौलत रै समान बंटवारै री भावना व्यक्त करी है अर औ इज कारण रह्यौ है कै लोक डाकू धाड़ायतियां नै घणौ आव–आदर दीनौ है। खांतीलौ चोर, खापरियौ चोर, लालजी–पेमजी, ठगां रौ गुड़ौ, ठगां रौ ठरकौ, ओमपुरी, लालपुरी, बांकासर रौ बळवंत सिंघ, बिड़दौ चारण, चिमन जी धाड़वी इत्याद कथावां इण भांत री नांमी कथावां गिणीजै।

8.9 धार्मिक अर व्रत कथावां

राजस्थानी समाज धरम प्रधान कर आस्थावादी समाज है। वार अर तिथियां तौ सीमित पण इण प्रदेस रा रैवासियां कानीसूं करीजणिया व्रत–उपवास असीमित। कदै ई कदै ई तौ अेक ई दिन में दो–दो, तीन–तीन व्रत–उपवास राखणा पड़ै। धार्मिक अर व्रत संबंधी बातां में देवी–देवता ई साधारणीक मिनखां साथै उठता–बैठता, रूठता–रीझता दरसायौड़ा है। लोक मानै कै अैड़ी कथावां रै बांचण अर सुणण सूं घणौ–घणौ पुन्न मिळै, मनोरथ पूरा व्है। आं कथावां में उण व्रत–उपवास रौ महातम ई बतायोड़ौ व्है। साथै–साथै औ भी उल्लेख मिळै कै जे कोई उण व्रत–उपवास नै बीच में छोड़ दै या कै कथा पूरण व्हियां पैली अर चरणाम्रत–प्रसाद लियां बिना जावै परौ तौ उण व्रत रौ देवता रूठ जावै अर सारा ई मामला बिगड़ जावै। सुफळ–मनोरथ तौ आगो गयौ उलटौ नुकसांण हुय जावै। इण सारू आं सगळी कथावां रै अंत में इसौ इज लेख मिळै कै ''हे देवी–देवता! फलांणै नै तूठिया जिसा सकळ नै ई तूठजो अर अमुक सूं रूठिया जिसा किणी सूं मत रूठजौ।'' आं धार्मिक कथावां में धरती रै जलम री चर्चा मिळै तौ सुरग–नरक रा चित्रांम ई मिळै अर पिरथी परळै री बगत कांई हालात व्हैला, इणरौ बरणन ई मिळै। आं में कैईक पौराणिक चरित्रां रा बखांण–कुबखांण ई करीजिया है। अठै परोपकारी प्रवृत्ति घणी सराहीजी है। व्रत

कथावां में व्रत सूं संबंधित देवता नै सरब सगती वांन अर फळदायक बताईजियौ है। आं में एकासणा अवासां (व्रत–उपवासां) रा विधि–विधांन ई बतायौड़ा है। सांवण री तीज, बछ, बारस, निरजळा इगियारस, ऊभ छठ, रिख–पांचम इत्याद इसा इज व्रत है, जकां री कथावां घणी चालै। इण प्रदेस री नारियां पूरै पूरै महीने व्रत राखै, जिणनै नांव दिरीजै–बैसाख न्हावणौ, काती न्हावणी। इण बेळा भी व्रत कथावां कहीजै। बैसाख री बात, दीवाळी री बात, सांवण री तीज री बात, संतोसी माता री बात, पूनम री बात, दछादाड़ै री बात, सनीसर री बात, इत्याद अैड़ी इज कथावां है!

ऊपर लिखियौड़ै मुजब कथावां रै टाळ राजस्थानी लोक में अनोखा काम–काजां सूं संबंधित कथावां भी चालै अर प्रतीकात्मक अर उद्धरणात्मक, कथावां भी चालै। आं उद्धरणात्मक या कै कहावती कथावां रा नाम कोई न कोई कहावत व्है। आं कहावतां में बडेरां रा अनुभवां रौ ग्यांन संचियौड़ौ है। अै कहावती कथन श्रोता अर वक्ता में सम–भाव थापित करै। कहावती कथन कैईजतां ई श्रोता सगळी स्थिति–परिस्थिति समझ जावै। अेक दाखलौ–

''हाथां कीना कांमड़ा, किणनै दीजे दोस।

काजीजी री पालड़ी, कांदा लीनी खोस।।''

8.10 सारांस

लोक–कथा मिनख–मानवी रै सुख–दुख में साथ इज नीं दैवै, बल्कि धीजौ बंधावै, साहस संचरित करै। आं में कल्पना अर जथारथ रौ गंगा–जमनी मेळ मिळै। लोक–मानस आं रै मारफत कदै ई तौ सीधे सपाट अर सरल ढंग सूं स्थितियाँ–घटनावां रा बरणन करदै वै अर कदैई भांत–भांत रा प्रतीकां रै सहारै बात नै समझावण री कोसीस करै। अै कथावां मात्र मिनख–मानवियां रै मारफत इज नीं, अपितु लोक देवी–देवतावां, भोपां–भरड़ां, पसु–पंखेरुवां, जीव–जिनावरां, पागी–पिंडतां, भूत–प्रेतां, दैत्यां–राक्षसां, परियां–अपसरावां रै मिस ई कैई–कैई तथ्यां, तत्त्वां, सिद्धांतां अर लोक–ब्यौवारां रा संदेसा देवै। आं कथावां रै मारफत दीयौड़ी सीख घणी असरदार व्है। आ बात तौ जग चावी है कै पंचतंत्र री कथावां रै मारफत इज तौ महामूर्ख राजकुमारां लोक–ब्यौवार अर राज–ब्यौवार रा झीणा पाठ पढ लीना।

कथावां रौ असर तौ घणी बात है, आं रै सरूपोत में कहीजणिया छोगां रै मिस ई घणी बातां सीखीज सकै। बातपोस कैईक पूर्व प्रचलित या बंधा–बंधाया पद्यावतरण अर गद्यावतरण रटलैवै अर अवसर आयां वांनै कथा में जोड़नै कथा रै फूठरापै में बधापौ कर दैवै। ज्यूंके नायका रै फूठरापै रा चित्रांम उजागर करती बगत औ अंस किणी बात रै सागै जोड़ी'ज सकै– ''केसर री क्यारी, प्रेमरस प्यारी। चन्दबदनी, मिग्रलोचनी। लगन री लड़ी, जीव री जड़ी। हियै री हार, चित्त री उदार। हसतमुखी सदा सुखी। छबीली। बंकीली। लंकीली। रंगीली। रमकीली। झमकीली। जोबन रै जोरै, सुगंध रै धोरै। प्रेम रस लेणी, कळा रस देणी। चुतर सुजांण, मन री पिछांण। हाथां री चतुर, कांम री आतुर। इधक रस सरूप, सिणगार री चूंप। चढतौ नूर, जोबन में पूर। असमांन सूं ऊतरी। इन्दर री अपछरा। सरोवर रौ हंस। सरद रौ कमळ। वसन्त री मंजर। भादवै रौ बादळ। बादळ री बीज। मेह रौ ममोळयौ।

बावनौ चन्नण। सोळमौ सोनौ। रायकेळ रौ ग्रभ। राजहंस रौ बच्चौ। लिखमी रौ अवतार। परभात रौ सूरज। पूनम रौ चाँद। सुरंग री झाम। सनेह री लहर। गुणां रौ प्रवाह। रूप री निधांन। गुण–चुतराई रौ आदर। जोबन रौ पैंखड़ौ। कोख रौ लाडू। मुगलां रौ मीमचौ। किरत्यां रौ झूमकौ। सुख री सिळाव। कांम री केळ। रतनां री रास। अंधारै रौ आदीत। रूप रौ रूंख। प्रेम रौ प्यालौ। आभै री बीज।'' इणरै टाळ सिकार, सेना अर प्रकृति सूं जुड़ियौड़ा इसा चित्रांम भी हर कथा में अवसर आयां जोड़ीज सकै। अै चित्रांम सुणण वाळां रौ भी मन मोह लेवै। इसा चित्रांमां में श्रोतावां नै कथा सूं बांधीयोड़ा राखण री अर मंत्र मुग्ध करण री अद्‌भुत क्षमता व्है।

8.11 अभ्यास सारु सवाल

1. राजस्थानी में लोक–कथा सारू किसौ सबद काम में आवै ?
2. 'छोगा' रौ अरथ समझावता बताऔ कै छोगा कितरी भांत रा व्है ?
3. 'बिड़दाव' रौ कांई तात्पर्य है ?
4. राजस्थान में प्रचलित वीरता अर इतिहास सूं संबंधित कथावां बाबत विचार प्रगट करौ।
5. राजस्थानी व्रत–कथावां रौ कथ्य अर उद्‌देस्य कांई है ?
6. राजस्थान री किणी अेक प्रेम–कथा रौ सारांस आपरा सबदां में लिखौ।
7. सुगरा अर नुगरा भूत–प्रेतां रौ फरक बतावता ओ भी समझावौ कै राजस्थानी बातां में भूत किण प्रतीक रै रूप में वर्णित है।

8.12 संदर्भ ग्रंथ

1. Folk lore Dictionary-Maria Leach
2. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास (सोलहवां भाग)
3. लोक–साहित्य की भूमिका : डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
4. लोक साहित्य विज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र
5. भारतीय लोक साहित्य : डॉ. श्याम परमार
6. लोक–साहित्य स्वरूप और सिद्धांत : डॉ. एस.डी. चारण
7. खड़ी बोली का लोक–साहित्य : डॉ. सत्या गुप्त

इकाई – 9

लोक–गाथा : परिभासा, वर्गीकरण, भारतीय परम्परा

9.0 उद्देस्य

9.1 लोक–गाथा : परिभासा

9.2 लोक–गाथा : भारतीय परम्परा

9.3 लोक–गाथा : वर्गीकरण

9.4 लोक–गाथावां री सामान्य विसेसतावां

- **9.4.1** अज्ञात रचयिता
- **9.4.2** मंगळाचरण
- **9.4.3** लोक–वाद्य री संगत
- **9.4.4** स्थानीय रंगत
- **9.4.5** पद्य–गद्य रौ मेळ
- **9.4.6** संदिग्ध ऐतिहासिकता
- **9.4.7** व्यंग्य–वाक्य : प्रेरणा स्रोत स्वरूप

9.5 सारांस

9.6 अभ्यास रा सवाल

9.7 संदर्भ ग्रंथ

9.0 उद्देस्य

लोक–साहित्य बाबत जाणकारी कर्यां पछै लोक–साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां री जाणकारी करणी जरूरी लखावै। लोक–साहित्य री भाँत–भाँत री विधावां मांय लोक–गाथा घणी महताऊ विधा है। अंग्रेजी सबद 'बैलेड' (Ballad) रौ समानार्थी सबद 'लोक–गाथा' गिणीजै। इण इकाई मांय वां सामान्य विसेसतावां री चरचा करीजसी, जिकां रै पांण कौई साहित्यिक रचना 'लोक–गाथा' रै नांव सूं जांणीजै। कोरी विसय–वस्तु इज सौं कीं नीं हुया करै, रचना रौ सिल्प या कै रूप रौ भी घणौ महत्त्व व्है। अेक ई विसय–वस्तु नै लैयर अेक साहित्यकार छोटो–मोटौ गीत लिखै तौ दूजौ रचनाकार उणी'ज विसय नै बातां–बिगतां में मांडै अर तीजौ सिरजणहार पड़ां में चित्रांम कोर नाच–गाणै सागै गद्य–पद्य रै धागां पिरोवै। आखी–आखी रात गाईजती–बांचीजती लोक–गाथा समाज री किसी जरूरतां नै पूरी करै ? कीकर पूरी करै ? आं सगळी बातां पर इण इकाई में विचार करीजसी। कैय सकां कै आ इकाई लोक–गाथा री विसेसतावां दरसावती, लोक–गाथावां रा चरित्रां नै उद्घाटित करती राजस्थानी भासा री लोक–गाथा रा सामाजिक सरोकार रै महत्त्व नै उजागर करै। लोक–गाथावां रा अै महताऊ चरित्र समाज में कितरौ आछौ अर सरावणजोग

वातावरण बणावता रैया है ? इण पर भी इणी'ज इकाई में जाणकारी दिरीजसी। आज रा भौतिकता अर बाणिया–बुद्धि रा व्यावसायिकता प्रधान जुग में भी अै गाथावां अर आं में वर्णित ओपता चरित्र आज री नुंवी पीढी नै कीं प्रेरणा दे सकै कै नीं, इण पर भी विचार करीजसी। इणरै टाळ आं बातां रौ खुलासौ भी इण इकाई में इज व्हैला कै इणा गाथावां में मंडियौड़ा मन रा मैला अर दुरबुद्धि चरित्रां री गाथा रै अंत में हुयौड़ी दुरगत नै देखनै श्रोता अर दरसक किण भांत गळत मारगां नै त्याग'र आपरी बाकी रही जूंण सुधारण में सफळ हुय सकै ? आं गाथावां रा काळजयी संदेसा कांई है ? आं सगळी बातां री सार्थक चरचा करणी, औ इज इण इकाई रौ लूंठौ उद्देस्य है।

9.1 लोक–गाथाः परिभासा

सरूपोत में अंग्रेजी सबद 'बैलेड' (Ballad) रौ अर्थ–बोध करावण सारू कैईक सबद आधुनिक भारतीय आर्य भासावां में प्रचलन में आया। आं में प्रमुख अै सबद हा–

1. ग्राम–गीत
2. निरत–गीत
3. आख्यान गीत
4. आख्यानक गीत
5. वीर–गाथा
6. वीर गीत
7. वीर काव्य इत्याद।

पण करीब–करीब अै सगळा ई सबद बगत रै बायरा में बहग्या अर सेवट 'लोक–गाथा' सबद पूरीतरै सूं प्रतिष्ठित व्हैग्यौ।

अंग्रेजी रौ (Ballad) सबद लैटिन सबद (Ballare) सूं बण्यौ मानीजै। इण (Ballad) सबद रौ अरथ व्है– नाचणौ। घण चावै 'वेबस्टर' सबद कोस में बताईजियौ है कै संज्ञा सबद Ballade रौ अरथ व्है– A dancing Song अर क्रिया पद Ballad रौ अरथ व्है– To Dance इणी'ज सबद कोस में Ballad री परिभासा आं सबदां में दिरीजी है–

A short narrative poem, especially such as is adopted for singing a poem partaking of the nature both of the Epic and the Lyric.[1]

जगचावै ब्रितानिका सबद–कोस (इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका) में लोक गाथा री परिभासा देवतां बतायौ गयौ है कै लोक–गाथा अेक अैड़ी पद्य–सैली है, जिणरौ सिरजणहार अज्ञात व्है। इणमें साधारण उपाख्यान रौ वरणन व्है, जकौ कै सरल ई व्है अर मुख–जबांनी याद राखण री परम्परा रै लायक व्है। लोक–गाथा में ललित कला जिसी जटिलतावां, बारीकियां अर अबखायां नीं हूवणी चाहीजै।

प्रोफेसर किट्रीज अंगरेजी अर स्काटलैंड री लोक–गाथावां पर सांतरौ सोध–कार्य कीनौ है। आप बतावै कै बैलेड (लोक–गाथा) अेक इसौ गीत व्है, जिणमें कोई कथा कयौड़ी व्है।

1. Webster's New Twentieth Centuary Dictionary P. 138

आप आगै लिखै कै आपां इण तथ्य नै यूं भी बता सकां कै बैलेड वा कथा व्है जकी गीतां में गाईजियोड़ी व्है।

"A ballad is a song that tells a story or to take other point of view a story told in songs."[1]

इणी भाँत एफ.बी. गुमेर आपरी पोथी handbook of Literature (Ballad) में लिखै कै लोक–गाथा गावण सारू रचियोड़ी अेक इसी कविता व्है जकी सामग्री री दीठ सूं पूरण रूप सूं व्यक्ति–सून्य व्है अर सरूआत री दीठ सूं समूह–नृत्यां सूं जुड़ियोड़ी व्है, पण आ मुख–जबांनी परम्परा में पळै–पनपै। इणरा गायक साहित्य रै प्रभाव सूं मुगत व्है।

"A poem ment for singing, quite impersonal in meterial, probably conected in its origin with the communical dance, but subsitted to a process of oral tradition among people who are free from literary influences and fairly monogains in character."[2]

डा. कृष्णदेव उपाध्याय भोजपुरी लोक–साहित्य बाबत सांतरौ अर सरावण जोग सोध–खोज रो काम कीनौ है। उणां हिन्दी साहित्य रौ वृहद् इतिहास लिखियौ, जिणरौ सोळवौ भाग पूरौ'र पूरौ भारत रा सगळा प्रदेसां रै लोक–साहित्य बाबत इज है। इण खण्ड री भूमिका डा. कृष्णदेव उपाध्याय लिखी है, जिणमें लोक–साहित्य रै सैद्धांतिक पक्ष नै उजागर करियौ है। आप लोक–गाथा री परिभासाा इणभांत दीनी है–

''लोक–गाथा वह गाथा या कथा है जो गीतों में कही गई है।''[3]

महाराष्ट्र में लोक–गाथा सारू 'पवाड़ा' सबद प्रचलित है। गुजराती लोक–साहित्य रा नांमी जांणकार झवेरचंद मेघाणी लोक–गाथा नै 'कथा–गीत' नांव देवै तौ राजस्थानी रा हेताळू अर लोक–साहित्य–संग्राहक विद्वान् सूर्यकरण पारीक 'बैलेड' सारू 'गीत–कथा' नांव वाजब बतावै।

9.2. लोक–गाथा : भारतीय परम्परा

भारत रै पुरांणै वांङ्गमय में सैसूं पहली ऋग्वेद (1/7/1) मांय 'गाथिन्' सबद इसै मिनख सारू बपराईजियौ है, जकौ किणी पुराणी कथा या कै आख्यान नै मांड'र कैवतौ। इण सबद री 'निष्पत्ति' 'गाथा' सबद में 'इन्' प्रत्यय लगावण सूं व्है अर गाथा सबद रौ अरथ व्है– कोई कथा या कै आख्यान (पुरांणौ वृतान्त)। इणी'ज ऋग्वेद में 'गाथा' सबद रौ प्रयोग मंतर विसेस सारू भी व्हियौ है। बखत परवांण 'गाथा' सबद एक खास तरै रै छंद रौ सूचक ई व्हैग्यौ।

आपणा जूना ग्रंथ–वेद है। वेदां रै जुग में गाथावां घणै आव–आदर अर मान–सम्मांन सूं गाईजती अर सुणीजती। इण बखत 'रेमी' अर 'नारासंसी' आं दो नांवां सूं न्यारी–न्यारी गाथावां री सिरजणा होवती। सायण भास्य में आयै उल्लेख मुजब ब्याव–बधावणै रै

1. English and Scotish popular ballads, P. No. 11.
2. A handbook of literature (Ballad) F.B. Gumer, P. NO. 37
3. भोजपुरी लोक–साहित्य का अध्ययन, पृ. 390

आंणै–टांणै जका गीत गाईजता, वे 'रेमी' अर 'नारासंसी' गाथावां रै नांव सूं जांणीजता। इणसूं बैरौ पड़ै कै वेदां री बखत में मंगळीक टांणै गाईजणिया गीत 'गाथा' गिणीजता। ऋग्वेद रा कैईक सूक्तं अर नारासंसी गाथावां इज पुरांणी लोकगाथावां मानीजी है।

आगै रा बरसां में ब्राह्मण ग्रंथां नै टंटोळियां ठा लागी कै गाथावां 'ऋक्', 'यजु' अर 'साम' सूं न्यारी हूवती। 'ऐतरेय ब्राह्मण' – मुजब 'मृक्' दैवी गिणीजती अर 'गाथा' मानुसी। 'शतपथ ब्राह्मण' अर 'ऐतरेय ब्राह्मण' में इसी गाथावां रा दाखला मिळै, ज्यां में 'अस्वमेध जग्य करणवाळा राजावां रा ऊजळा चरित्रां रा बखांण हूवता। अठां तक पूगतां–पूंगतां 'गाथा' नै साहित्य री अेक अनूठी, न्यारी अर सबळ विधा रूप में मानता मिळगी ही।

पुराणा आख्यानां–उपाख्यानां अर गाथावां नै अेक सागै पेस करणै या कै वां रै सांतरै संकलन रौ नांव इज–पुरांण है। पुरांण में आयोड़ी 'सुवर्ण री गाथा' अर 'कडु अनै वनिता री गाथा' घणी चावी व्ही। पुरांणा री बखत में 'गाथा' समाज में कितरी ठावी ठौड़ बणायली ही, उणरी जाणकारी देवता थका वेद व्यास जी खुदोखुद लिखै–

'आख्यानेश्चाप्युपाख्यानेर्गाथामिः कल्पशुद्धिमिः।
पुराण संहिता चक्रे पुराणार्थ विशारदः।
प्रख्यात व्यास शिष्योऽभूत सूतो वेलोमहर्षणः
पुराण संहिता तस्मै ददौ व्यासो महामुनिः।।[1]

पछै भगवान बुद्ध रौ अवतार हुयौ। बुद्ध भगवान रौ जुड़ाव–लोक सूं हो। आप खुद रा उपदेसां सारू ई लोक भासा नै अपणाई। बुद्ध रै बखत में 'गाथावां' रौ प्रचलन आम जन में हुयग्यौ। वेदां रै बखत में जकी गाथावां मंतर पाठी ब्राह्मण री हक हकूमत में ही, वे अबै आमजनता री जायदाद जाणीजण लागी। सात वाहन आपरी बखत में लोक मांय प्रचलित हजारूं गाथावां मांय सूं टाळवी सात सौ गाथावां रौ संकलन 'गाहा सत्तसई' (गाथा सप्तशती) नांव सूं कीनौ। इण पोथी रै पांण हाल (सातवाहन) नै घणी प्रसिद्धि मिळी। भगवान बुद्ध रै जीवण सूं संबंध राखण वाळी अनेकूं कथावां अर गाथावां पालि भासा में रचित 'जातक' ग्रंथां रै नांवै आपरी अनूठी ओळखांण थरपी। 'अपभ्रंश' अर जूनी राजस्थानी में 'रासक' या कै 'रासो' ग्रंथां रै रूप हजारूं लोक गाथावां प्रचलित व्ही। घणकरा विद्वानां री राय है कै आद कवि वाल्मीकि आपरी अमर काव्य–कृति 'रामायण' री रचना उण बखत लोक प्रचलित राम संबंधी लोक गाथावां सूं सामग्री लेय'र करी ही। सीता सुत लव अर कुस ऋसियां–मुनियां नै राजी करण सारू वीणा रै झीणा सुरां सागै आपरी मीठी राग में 'रामायण' लोक गाथा गाया करता। इण बाबत सगळा विद्वान् अेकमत कै महाकाव्यां री रचना अर विकास में लोक–गाथावां रौ विसेस योगदान रियौ है। अै सगळा तथ्य इण बात री पुस्टि करै कै भाँत–भाँत री लोक गाथावां (चरित्र–गाथावां, यज्ञ–गाथावां, नीति–गाथावां, साहित्यिक गाथावां इत्याद) भारत में घणै पुरांणै बखत सूं चावी रही है।

9.3 लोक–गाथाः वर्गीकरण

किणी देस या कै प्रदेस में प्रचलित लोक–गाथावां नै मोटारूप सूं दो मापदण्डां सूं वर्गीकृत

1. The common Muse, P. No. 18.

कर सकां।

1. उण लोक–गाथा रौ सरूप या कै आकार किसौ है– उणरी प्रस्तुति में घणौ बखत लागै कै कम बखत लागै। इणनै आकृतिपरक वरग भी कैय सकां।

2. उण लोक–गाथा रौ मूळ भाव कांई है ? अर्थात् उणरौ वर्ण्य–विसय या प्रतिपाद्य माथै विचार करनै उण गाथा नै वीरता प्रधान, भगती प्रधान, श्रृंगार प्रधान, नीति–निर्वेद प्रधान नांव देय सकां।

पण कैई लोक–साहित्य–विद् कैवै कै लोक–गाथा रै वर्गीकरण रौ मुख्य आधार 'सौन्दर्यशास्त्र' परक या कै कला–परक इज हूवणौ चाहीजै।

"If the ballad is to be classified at all, it must be classified on aesthetic grounds, the best possible grounds, after all, for literary critic".[1]

सोध–खोज करण वाळा कैईक विद्वानां आपरा ग्रंथां या कै पत्र–पत्रिकावां में छपिया आलेखां में लोक–गाथावां रा ठावका वर्गीकरण कीनां है, ज्यां मांय सूं कुछैक प्रमुख विद्वानां रा वर्गीकरण अध्ययन री सुविधा खातर अठै पेस है–

लोकवार्ताविद् टेम्पल लोक–गाथावां नै 6 चक्रां (Cycles) में बांटै–

1. रसालू चक्र (चमत्कारी अर साहसी कामकाज सूं संबंधित)
2. पांडव चक्र (महाभारत जिसी लोक गाथावां)
3. गूगा (गोगा) चक्र/वीरता अर सिद्धि सूं संबंधित (जोध–जवानां अर सिद्धां री लोक गाथावां)
4. सिद्ध संबंधी
5. सखी सरवर संबंधी
6. स्थानीय वीरां (भोमियां) सूं संबंधित।[2]

प्रोफेसर किट्रीन दो भाँत री लोक–गाथावां गिणै :–

1. 'मिनस्ट्रल बैलेड्स' – चारण गाथाएँ (Minobal Ballads)
2. 'ट्रेडिशनल बैलेड्स' – (परम्परागत गाथाएँ) (Traditional Ballads)

पण प्रोफेसर गूमर लोक–गाथावां रा छः वरग गिणावै

1. प्राचीनतम गाथावां (Oldest Ballads)
2. कौटुम्बिक गाथावां (Ballad)
3. दुखभरी अर अलौकिकः (Koronech and Ballads of the Supernatural)
4. लिजंधरी गाथावां (Legendary Ballads)
5. सीमांत गाथावां (Border Ballads)

1. विष्णु–पुराण अंश 3 अंक–6
2. The legends of the Panjab (Ist part), P. No. 12 R. C. Temple.

6. आरण्यक गाथावां (Green wood Ballads)

डा. सत्या गुप्ता आपरा पी–एच.डी. रा 'शोध प्रबंध' मांय बतायौ है कै तीन भाँत री लोक गाथावां मिळै–

1. पौराणिक लोक–गाथाएं
2. वीर गाथाएँ
3. प्रेम गाथाएँ[1]

डा. कृष्णदेव उपाध्याय भी लोक गाथावां री तीन श्रेणियां मांनै–

1. प्रेम कथात्मक
2. वीर कथात्मक
3. रोमांच कथात्मक[2]

राजस्थानी लोक–गाथावां पर सोध री दीठ सूं सरावण जोग काम करण वाळा डा. कृष्ण कुमार शर्मा लोकगाथावां रा नीचै मुजब भेद मानैः–

1. वीर कथात्मक लोक–गाथाएँ
2. प्रेम कथात्मक लोक–गाथाएँ
3. रोमांच कथात्मक लोक–गाथाएँ
4. पौराणिक लोक–गाथाएँ
5. निर्वेद कथात्मक लोक–गाथाएँ

लोक साहित्य रै अध्ययन रा सिद्धांतां नै आधार बणाय'र समग्र राजस्थानी लोक–साहित्य रौ सैद्धांतिक विवेचना करतां थकां प्रोफेसर एस.डी. चारण राजस्थानी लोक–गाथावां रा अै वरग थरपिया हैः–

1. प्रेम प्रधान लोक गाथाएँ
2. वीरत्व व्यंजक लोक गाथाएँ
3. पौराणिक लोक गाथाएँ
4. भगतीपरक लोक गाथाएँ[3]

9.4 लोक–गाथावां री सामान्य विसेसतावां

लोक–गाथा मिनखां रै कंठां री सोभा गिणीजै। अे गाथावां अेक पीढी रै कंठां सूं दूजी पीढी रै कंठां सूंपीजती रैवै अर इण भाँत पीढ़ियां रै पावड़ियां विकसित हूवती रैवै। मिनखां–मानवियां रा कबीला'रा कबीला जद जंगळां मांय रैवता हा, तद इज लोक–गाथावां

1. खड़ी बोली का लोक–साहित्य, पृ. 241, डा. सत्यागुप्त
2. भोजपुरी लोक–साहित्य का अध्ययन, पृ. 394, डा. कृष्णदेव उपाध्याय।
3. राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन– पृ. 223, एस. डी. चारण

री सिरजणा व्हैणी सरू होयगी ही अर धीरै–धीरै विकसित हूवती रैयी। औ इज कारण है कै लोक गाथावां आद जुगाद सूं आज तक सगळा समाज री संपती गिणीजै। अेक कांनी पुरांणी लोक गाथावां कण्ठानुकण्ठ विकसित हूवती रैयी अर दूजी कानी बखत परवांण नुंवी–नुंवी लोक गाथावां ई रचीजती रैयी। मिनख–मानवी री आसु–कविता करण री आदत रै पांण आं रै सरूप (कलेवर) में बढोतरी हूवती रैयी। अेक औ तथ्य भी साचो है कै लोकगाथावां रौ मूळ पाठ सगळै ई अेक जिसौ नीं मिळै। आखै संसार रा न्यारा–न्यारा देसां–प्रदेसां में प्रचलित भाँत–भाँत री लोक–गाथावां में कुछैक अैड़ी समानतावां मिळै, जकां नै लोक–गाथा री सामान्य विसेसतावां री संज्ञा देय सकां। कुछैक इसी सामान्य विसेसतावां री चरचा आगला पांनां में करीजसी, जकी राजस्थानी लोक गाथावां में भी मिळै।

9.4.1 अज्ञात रचयिता

लोक गाथा रौ सिरजणहार कोई अेक आदमी नीं व्है। इण रचना नै पूरणता देवण सारू समाज रा घणकरा सदस्यां रौ सहयोग रैया करै। आज कोई कितरौ ई तगड़ौ अर पारखू विद्वान् पकायत थरपणा नीं थरप सकै कै अमुक लोक–गाथा री सरूवात सूं लेय'र आज तक रै विकसित रूप में कांई ठा कितरा–कितरा सामाजिकां आपरौ सहयोग दीयौ है ? अर आगै भी कितरा जणां इणमें कितरौ भेळ या कै फेर बदळ करैला, इण बात बाबत ई कोई अंदाज नीं लगा सकै। बखत रा चईलां चालती अै लोक गाथावां आपरा मूळ रूप नै कायम राखतां थकां अर समै रौ हेलौ सांभळतां थकां वाजब बदळाव नै अंगेजती जावै। आ बात कोई बताई नीं कै आं गाथावां रै रूप–विकास में, कथ्य–बदळाव में अर प्रेरणा–सुर में कुण, कदै अर कितरौ योगदान कीनौ है ? अै लोक गाथावां व्यक्ति–मानस री ठौड़ सामूहिक–मानस री अभिव्यक्ति रौ इज सुफळ है, जकौ सकळ रै भलै री भावना पसरावै। लोक–गाथावां री इण अनूठी विसेसता बाबत लोक–वार्ता विद् फ्रेंक सिजविक जका विचार प्रगट कीना है, वे बतावण जोग भी है अर सराहण–जोग भी हैः–

"The first and the formost quality of the ballad in any language is not its personality but its impersonality."[1]

इतरौ इज नीं बखतसर सामाजिक या कै कैवण–लिखणवाळा लोक–गाथा रा चरित्रां में ई कीं न कीं बदळाव करता रैवै पण औ बदळाव समाज–सुहातौ अर समै री जरूरत मुजब व्है।

9.4.2 मंगळाचरण

लोक–मानस में धरम–करम री ठावी ठौड़ अर घणौ आवआदर है। जिण भाँत जीवण रा दूजा–दूजा कांम–काजां में सरूपोत में आपां देवी–देवतावां रौ सुमरण करां, उणी भाँत लोक–गाथा बांचणी–पढ़णी या कै गावणी सरू करण सूं पैली इस्ट देव नै मनावण री जूनी परम्परा रैयी है। इण परम्परा में सैसूं पैली विघन–विनासक गणपति जी नै याद करीजै। इणरै पछै दूजा दूजा देवी–देवतावां (पौराणिक, प्रादेसिक आंचलिक अर गांवाऊ) रौ सुमरण व्है पण अठै औ तथ्य खास बतावण जोग है

1. The ballad P. No. 11, Frank Sizvik.

कै लोक–मानस री दीठ में सगळा ई देवी–देवता बराबर व्है। पूर्वाग्रह ग्रसित 'शिस्ट मानस' री तरै किणी देवी देवता रौ घणौ मान अर किणी रौ मान कम नीं व्है। लोक–मानस कदैई किणी नै कम नीं आंकै, सगळां रौ सिरे सन्मान करै। ज्यूं–ज्यूं बखत बीततौ जावै अर लोक–मानस अर जीवण मांय नुंवा–नुंवा देवता थरपीजता–मांनीजता जावै, उणी ढाळ में मंगळाचरण में स्तुतियाँ जुड़ती जावै। उणमें आ नीं देखीजै–परखीजै कै बगड़ावतां या कै पाबूजी रै बखत में फलांणौ देवता हुयौ भी हौ कै नीं। भलांई उण लोक देवता रौ आविर्भाव या कै अवतार गाथा–नायक रै बखत सूं पछै हुयौ व्है, पण मंगळाचरण में बारी–आयां उणरी ई स्तुति अवस करीजै। इणरै टाळ आ बात ई सोळै आना साची है कै देवी–देवतावां री स्तुति रौ कोई निस्चित क्रम नीं व्है। लोक गाथा गायक नै ज्यूं–ज्यूं याद आवै, त्यूं त्यूं वो मंगळाचरण रै रूप में वां–वां देवी–देवतावां री स्तुति करतौ जावै, गावतौ जावै। कदैई कदैई प्रसंग रै फबती कोई छोटी–मोटी कथा ई जोड़ीज जावै अर इण भाँत मंगळाचरण में खासौ बखत लाग जावै।

9.4.3 लोक–वाद्य री संगत

घणकरी लोक–गाथावां रै साथै कोई न कोई लोक–वाद्य जरूर जुड़ियौड़ौ व्है। उण लोक वाद्य री संगत बिना जे लोक–गाथा प्रस्तुत करीजै तौ ओपती नहीं लखावै। इण खास लोक–वाद्य री संगत सूं उण लोक–गाथा रौ फुठरापौ निखर जावै। लोक–गाथा रै पद्यात्मक अंस नै पेस करतां उण लोक वाद्य रौ उपयोग करीजै जिणसूं गीत संगीत रै सागै होय घणौ असरदार बण जावै। राबर्ट ग्रेव्स नांवै लोक–वार्ता विद तौ साफ कयौ है कै लोक–वाद्य अर संगीत री संगत बिगर लोक–गाथा री प्रस्तुति अधूरी गिणीजै।

"The ballad is incomplete without an exciting and repetitive music".[1]

लोक–वाद्य रै उपयोग सूं गाथा तौ असरदार बणै, साथै–माथै लोक–वाद्य उण लोक–गाथा रा गायक रै कंठ नै थोड़ी देर सारू आराम पुगावण वास्तै भी मदतगार बणै। गीत अर संगीत रै मेळ सूं लोक–गाथा सरस बण जावै। सगळी राजस्थानी लोक–गाथावां रै सागै भी लोक वाद्य पूरी तइै जुड़ियौड़ा है। पाबूजी री पड़ तौ रावण हत्थै बिना साव अलूणी लखावै। 'भारत' नांव सूं जांणीजण वाळी सगळी लोक–गाथावां साथै भी भांत–भांत रा लोक–वाद्य जुड़ियौड़ा है। जोगी 'भरथरी' अर 'गोपीचंद' री गाथावां तन्दूरौ बजायनै पेस करीजै। केई लोक–गाथा गायक 'बगड़ावत गाथा' पेस करती बखत पीतळ री थाळी बजावै। रावण हत्थौ, डेरू, तन्दूरौ, थाळी, चंग, भाँत–भाँत रा माटा– इत्याद लोक–वाद्य घणकरी राजस्थानी लोक गाथावां सागै जुड़ियौड़ा है।

9.4.4 स्थानीय रंगत

यूं तौ लोक–मानस विस्व–धरातल माथै लगैटगै एक जिसौ ई व्है, फेरूं भी बो आपरी

1. The English Ballad-Robert Graves P. 17

ठावी ठौड़ री ठावकी बातां नै ई अंगेजतौ चालै। किणी ई प्रदेस री लोक–गाथावां रा नायक किणी खास ठौड़–ठायै सूं जुड़ियौड़ा व्है। इण कारण वां लोक–गाथावां मांय उण इलाकै, री मानतावां, उणरी जीवन सैली, बठै रौ पैरवेस, बठै रौ खाण–पाण, टूणा–टोटका, सुगन–अपसुगन इत्याद रौ वरणन–विवेचन अवस मिळै। लोक–गाथा आपरै इलाकै री खास छाप सुणणवाळां या कै देखणवाळा माथै जरूर छोडै। जे उण गाथा में कठैई प्रसंगवस किणी पौराणिक देवी–देवता रौ वरणन ई मिळ जावै तौ वो ई स्थानीय रंग में रंगीजियौड़ौ लखावै। मौको लागियां लोक–गाथा गायक विसय–वस्तु में जरूरत मुजब उण ठौड़ विसेस रै बिड़दाव रा जन–प्रचलित दूहा भी जोड़ण सूं नीं चूकै। आं दूहां में इतिहास भी व्है अर नीति भी व्है। आं रौ खास उद्देस्य लोक–चेतना जगावण रौ व्है। ज्यूं जे लोक–गाथा में स्त्री रै मान रौ प्रसंग बखांणीज रियौ है तौ घणकरी बार लोक–गाथा गायक ऊमादे भटियाणी सूं संबंधित औ दूहौ कथा में जोड़ दैवै –

''मान रखै तौ पीव तज, पीव रखै तज मान।
दो दो गयंद न बंधही, अेकै खंभै–ठांण।।''

इणी'ज भाँत जे गाथा में कंजूसी रौ बरणन है तो लोक–गाथा गायक कंजूस लोगां नै चेतावतौ राजस्थानी समाज में घणौ प्रचलित औ दूहौ पेस कर सकै कै कंजूसी मत करौ, दांन–पुन्न करौ। खावौ खरचौ। औ धन तो थांरै खनै नहीं रहणौ है। थे तौ कंजूसी करौला, पेट रै भाटा बांधोला पण थांरै सौ बरस पूगां बेटा–पोता इण धन–माल नै इण भाँत उडावैला कै बस पूछौ इज मत।

खाया सो ही खरचिया, दीना सो ही दत्त।
जसवंत धर पौढाविया, मान परायै हत्थ।।

हर प्रदेस में प्रचलित लोक गाथावां में उण ठौड़ री प्रकति रा ई ओपता चित्रांम कुरियौड़ा व्है।

9.4.5 पद्य–गद्य रौ मेळ

हरैक लोक–गाथा रौ घणकरौ अंस तौ पद्यात्मक इज व्है, क्यूंकै पद्य मुख–जबांनी सोरौ अर सटकै याद व्है, पण बीच–बीच में गद्य रौ पुट ई दिरीजतौ रैवै। अै गद्य–खण्ड गीतां में गाईजीयौड़ी गाथा रा तागा–धागा आपसरी में जोड़ण रौ काम काढ़ै। कदैई कदैई गाथा गायक कंठ रै थाकेलै नै दूर करण सारू आराम री आस सूं कथा रौ थोड़ौ–घणौ हिस्सौ गद्य रूप में इज पेस कर दैवै। कैई वार पद्यात्मक अंसां नै भली भाँत अरथावण अर सामान्य जन नै समझावण सारू भी गद्य रौ प्रयोग करीजै। लोक–गाथावां मांय प्राय प्रमुख–प्रमुख घटनावां रा वरणाव तौ पद्य में व्है अर बाकी गद्य रूप में कहीजतौ रैवै। इण भाँत अै गद्य खंड सांतरी कड़ियां री गरज सारै। पद्य खण्ड में घणो बदळाव नीं आवै जितरौ बदळाव गद्य खण्ड में आवै।

9.4.6 संदिग्ध ऐतिहासिकता

लोक–गाथावां लोक रौ कंठहार गिणीजै। आ बात सोळै आना साची कै पौराणिक चरित्रां रै टाळ बाकी सगळी लोक–गाथावां रा नायक सांपरत आ मिनखा जूण सदेह जीवी। वे आपरा ओपता लोक हितकारी कामकाजां, वीरता रा उदाहरणां, त्याग–तपस्या, परचां प्रवाड़ां अर चमत्कारां रै पांण पूजीजग्या, अमर हूयग्या। पण जे आपां गाथावां में वर्णित कैईक नांवां–ठांवां अर घटना–क्रमां नै इतिहास ग्रंथां अर तवारीख री दीठ सूं निरखां–परखां तौ दोनुवां री तिथियां–मितियां में मेळ नीं लखावैला, क्यूंकै लोक–गाथा गायक आपरा चरित्र–नायक रै साथै कैई इसी बातां–बिगतां अर घटनावां जोड़ दैवै ज्यांरौ इतिहास या कै तवारीख में अंगै ई लेखौ–जोखौ नीं मिळै। लोक–गाथावां मांय इसा चरित्रां रा बरणाव भी मिळ सकै, जकां रौ कदैई देह रो साथ अस्तित्व ई नीं रियौ व्है। पण लोक–गाथा नायक रै चरित्र नै उत्तमता दिरावण सारू, उणनै अणूतौ पूजनीक अर सैसूं सिरे थरपण सारू अै सगळा कळाप लोक–गाथा गायक नै करणा पड़ै।

9.4.7 व्यंग्य–वाक्य (अंवळा बोल) प्रेरणा स्रोत सरूप

राजस्थान इज नीं दूजा प्रदेसां री लोक–गाथावां में औ तथ्य निरूपित है कै लोक गाथा में वर्णित किणी न किणी चरित्र रा कयौड़ा अंवळा बोल या कै तानौ गाथा–नायक रै काळजै चुभ जावै। इसा कड़वा–अंवळा बोलां सूं साधारणीक सी जिंदगाणी जीवतै उण चरित्र में इसौ जबरदस्त–पलटाव आवै कै उणरौ सौ कीं बदळ जावै। काळजियै चुबता वे बोल उणनै नीं तौ रात रा सोरै सास सोवण दैवै अर नीं ई दिन रा हंसी–खुसी जीवण दैवै। घणकरी गाथावां में इसा बोल भाभी रै मूंडै सूं सुणीजण में आया है। कैई वार बाळपणै सूं नांनाणै मांय पळतै–पोसीजतै टाबर नै कोई पिणिहारी इसा बोल सुणावती दीसै अर उणनै तौ उणरौ मन–मानस अर सगळौ जीवण बदळयौड़ौ लखावै। धुन रौ घणी बण वो आपरै नुंवा मारगां बहीर व्है अर आखिरकार सफळ होयनै इज नहचौ धारै। कैई वळा आपरा वचन अर आपरा ध्येय खातर बो प्रांण गंवायनै अमर हूवतौ दीसै। अै अंवळा बोल सदाई गाथा–नायक नै अनोखा–अनूठा कांम करण री प्रेरणा ई दैवै अर उणमें सगती ई सांचरै। वो इसा बोलां नै चुनौती रूप मांनै। राजस्थानी लोक गाथा 'तेजाजी' अर 'चौपड़ रौ पवाड़ौ' में इसी इज स्थिति सांमी आवै।

9.5 सारांस

इण इकाई मांय खासी भली परिभासावां देय'र बताईजियौ है कै कुणसी रचना लोक–गाथा रै नांव–साथै आपरी ओळखांण बणावै। सरूपोत में लोक–गाथा साथै निरत, गीत अर कथा–अै तीनूं बातां जुड़ियौड़ी ही पण बगत परवांण निरत तत्त्व कम महताऊ हूवतौ गयौ अर कथा तत्त्व प्रबळ हुयग्यौ। गीत तत्त्व आपरै पांण जुड़ियौड़ौ रयौ। लोक–गाथा रौ 'अर्थ–बोध' करावणिया सारू न्यारा–न्यारा सबदां (ग्राम गीत, नृत्य–गीत, आख्यान गीत, आख्यानक गीत, वीरगाथा, वीर गीत, वीर काव्य इत्याद) रौ उल्लेख कर इण इकाई में बताईजियौ है कै लोक गाथा सबद इज सही, सार्थक अर उपयुक्त (फबतौ) है। भारत रा किसा–किसा प्रदेसां में 'लोक गाथा' रौ बोध करावण सारू कांई कांई सबद प्रचलित

है, इणरी जाणकारी भी दिरीजी है। लोक–गाथा रै महत्त्व नै उजागर कर सार रूप औ तथ्य प्रतिपादित कीनौ है कै लोक–गाथावां रौ उद्देस्य कोरौ लोकानुरंजन नीं है, बल्कि आं लोक–गाथावां रै पांण लोक आपरा आदर्स नर–नारी रतनां नै जीवता राखै अर वां रा ऊजळा चरित्रां री सीख पीढियां लग पुगावै। इणसूं देस–प्रदेस री पिछाण कायम रैवै। आं चरित्रां पांण इज प्रदेस रौ धूंसौ चौथाळै बाजै। लोक–गाथावां रै रूप–भेदां नै दरसावण सारू इण इकाई में न्यारा–न्यारा विद्वानां रा लोक–गाथा वर्गीकरण ई प्रस्तुत करीजिया है। ओपतै वर्गीकरण रै बळबुत्तै ई सांतरौ विवेचन संभव व्है। भारत में लोक गाथावां रै प्रचलन री सांवठी अर समृद्ध परम्परा रही है, इणरौ विवरण ई इणी'ज इकाई मांय है। आ सुदीर्घ परम्परा दरसावै कै भारतीय समाज में लोक–गाथावां रौ कितरौ मान–सन्मान। आं लोक–गाथावां रा संदेसा पीढ़ियां लग मिनख–मांनवियां नै अपणायत, त्याग, वचन–निर्वाह, सत्य वक्ता हूवण रा पाठ पढावता रिया है। जग जाहिर लोक–चित अर खास ठायै–ढिकाणै[1] (अंचल विसेस) रौ लोक चित कितरा, अंसां में तौ मेळ खावै अर किण–किण बातां में आपरौ न्यारौ–निरवाळौ पिछाण कायम करै, आं बिन्दुवां पर भी इण इकाई में विचार करीजियौ है। लोक–गाथावां री सामान्य विसेसतावां बाबत उदाहरण देय'र चरचा करीजी है। इण भांत आ इकाई में लोक–गाथा रै सैद्धांतिक पक्ष नै सांतरै ढंग सूं राखीजी है।

9.6. अभ्यास रा सवाल

1. लोक–गाथा सारू फेरूं कितरा सबद प्रचलित रिया है ?
2. लोक–गाथा री ओपती परिभासावां दैवो।
3. लोक–गाथा सारू 'पवाड़ा' सबद रौ प्रयोग किण प्रदेस में व्है?
4. भारतीय परम्परा में लोक–गाथावां सरुआत कठा सूं मानीज सकै?
5. आपरी दीठ सूं लोक–गाथा रै वर्गीकरण रौ कांई आधार हुय सकै?
6. लोक–गाथा री सामान्य विसेसतावां उद्घाटित करौ।
7. वरतमान जुग में लोक–गाथावां री कांई हालत है ?

9.7 संदर्भ ग्रंथ

1. एनसाइक्लोपीडिया ब्रितानिका
2. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास (सोलहवां भाग)
3. लोक–साहित्य की भूमिका– डा. कृष्णदेव उपाध्याय
4. हिन्दी साहित्य कोश भाग–1, सम्पां. धीरेन्द्र वर्मा
5. The Ballad - Frank Sizvik.

इकाई – 10

राजस्थानी लोक–गाथा : विवेचन

10.1 उद्देस्य

10.2 प्रस्तावना

10.2.1 राजस्थानी लोक गाथावां रा प्रकार

10.2.2 प्रेम–प्रधान राजस्थानी लोक गाथावां

10.2.3 पौराणिक राजस्थानी लोक–गाथावां

10.2.4 भगती–परक राजस्थानी लोक गाथावां

10.3 प्रमुख राजस्थानी लोक गाथावां : प्रतिपाद्य

10.3.1 बगड़ावत

10.3.2 पाबूजी

10.3.3 निहालदे सुलतान

10.3.4 वीर तेजा

10.4 सारांस

10.5 अभ्यास रा सवाल

10.6 संदर्भ ग्रंथ

10.0 उद्देस्य

राजस्थान रौ सांस्कृतिक अर साहित्यिक योगदान अनूठौ अर जगचावौ है। आज ई सैकडूं परेदसी सोधार्थी भाँत–भाँत री सोध–खोज सारू राजस्थान रा परगनां रौ चुणाव करै। राजस्थानी लोक–कलाकारां रौ धूंसौ आखै संसार में बाजै। राजस्थान री प्रमुख लोक गाथा पाबूजी री पड़ माथै तौ कैई पास्चात्य विद्वान् महताऊ पोथ्यां लिखी है। इण इकाई रौ उद्देस्य राजस्थान री लोक–गाथावां रौ सामान्य परिचय करावणौ इज नीं है, बल्कि औ भी उजागर करणौ है कै आं गाथावां अर इणामें वर्णित–विवेचित चरित्रां सूं आखी मिनख जात कांई प्रेरणा लेय सकै। भारत रा प्रदेसां ही नहीं अपितु संसार रा किणी प्रदेस में इतरा जोगा वीर नर–नारी नीं व्हिया। राजस्थानी संस्कृति अर साहित्य बाबत अेक आंग्ल विद्वान् कयौ भी है –

"Rajasthan heroic literature and culture is a message of blood flooded life and stormy death".

राजस्थान रौ वीर गाथा काव्य रक्त रंजित जिंदगी अर तूफांनी मौत रौ संदेसौ देवै। इण इकाई रा दोय न्यारा–न्यारा भागां में राजस्थानी लोक–गाथावां रौ वर्गीकरण परक विवेचन अर प्रमुख लोक–गाथावां में वर्णित मूळ कथा रौ सार रूप प्रस्तुत करीजसी।

10.1 प्रस्तावना

लोक–साहित्य री दूजी–दूजी विधावां री भाँत राजस्थानी लोक–गाथावां री भी सबळी सांतरी परम्परा रही है। सतवंती नारियां आपरी इज्जत–आबरू री रूखाळी जौहर री झाळां नै अंगेज नै ई करी, तौ वीर पुरसां प्रांण देयनै नै जलम भोम अर सरण आयां री रिछ्या करी। 'ईसरा परमेसरा' रै विरूद सूं चावा भगत कवि ईसरदास जी 'हालां–झालां रा कुण्डळिया' नांवै वीर–काव्य में इण तथ्य नै आं अमर सबदां में उजागर कीनौ है–

'केहरि केस भमंग मणि, सरणायां सुहड़ांह।

सती पयोहर क्रपण धन, पड़सी हाथ मुवांह।।''

जका प्रदेस में इसा सूरा–पूरा नाहर–नर व्है अर सतवंत नाहरी नारियां व्है, उण प्रदेस रौ जसनामौ सगळै बखांणीजै। गिणती री दीठ सूं राजस्थानी लोक–गाथावां अेकै कांनी अर आखै भारत रै प्रदेसां में प्रचलित लोक–गाथावां दूजी कांनी राखीजै, तौ ई राजस्थान रौ पलड़ौ भारी। राजस्थान में पचास रै लगैटगै, भाँत–भाँत री लोक–गाथावां घणी प्रचलित रैयी है अर आज दिन ई अणूंतै उछाव अर चाव सूं गाईजै–सुणीजै। भौतिकता अर वैज्ञानिकता रै इण जुग में ई आखी रात जागता रैयनै मिनख–मानवी आं गाथावां रौ आणंद लूटै, आं में वर्णित आदर्स चरित्रां रै गुणां सूं सीख लेवै। आं गाथावां में लोक रै कल्याण रौ मारग बतायौड़ौ है। अै लोक–गाथावां जीवण रै हरैक पख बाबत ग्यांन दैवै, जिणनै हियै उतार मिनख–मानवी आपरी मिनखाजूण सुधार सकै।

राजस्थानी लोक–गाथावां रा नांमां साथै कुछैक पारिभासिक सबदां रा प्रयोग करीजै। ज्यूं कै पाबूजी, बगड़ावत अर देवनारायण लोक–गाथा साथै 'पड़' सबद बपराईजै, तौ 'भारत' नांव सूं ओळखीजण वाळी लोक गाथावां (काळा–गोरा रौ भारत, माताजी रौ भारत) में जुद्धां रौ प्रमुखता सूं वर्णन मिळै। 'ब्यावलौ' नांव री लोक–गाथावां (दयाळ बाई रौ ब्यावलौ, रामसा पीर रौ ब्यावलौ, संकर रौ ब्यावलौ) में जलम सूं लेय'र ब्याव तक री घटनावां रा बरणाव मिळै।

10.2 राजस्थानी लोक–गाथावां रा प्रकार

राजस्थानी लोक–गाथावां रौ वर्गीकरण रा कैई मापदण्ड व्है सकै, पण आंरै वर्ण्य विसय री दीठ सूं विचार कर्यां इण मुजब भेद तय करीज सकै–

1. वीरत्व–व्यंजक राजस्थानी लोक गाथावां
2. प्रेम–प्रधान राजस्थानी लोक–गाथावां
3. पौराणिक राजस्थानी लोक–गाथावां
4. भगती परक राजस्थानी लोक–गाथावां।

10.2.1 वीरत्व व्यंजक राजस्थानी लोक–गाथावां

इण संसार में हीमत री कीमत व्है। हीमती नर–नारी री कीरत जुगां'न'जुगां तक चालै। सौ बरस पूगियां नर–नारी री देही रौ तौ विणास व्है, पण वां रौ जसनामौ

वां रा पवित्तर करमां रै पांण पसरतौ रहै। आवण वाळी पीढियां इसा मिनख–मानवियां नै देवता सरूप मांनै अर पूजै। आ खरीकी बात राजस्थानी लोक–गाथा 'निहालदे सुलतान' में आं सबदां में बखांणी है–

''इळ ऊपर रहसी अमर, कीरत रा कमठांण।''

कीरत रा इसा सबळ अर अडिग थांभा रा कमठांण थरपणिया चरित्रां में किसी–किसी चारित्रिक विसेसतावां हूवणी–चाहीजै, इणरौ सांतरौ खुलासौ ई राजस्थानी लोक–गाथा 'निहालदे सुलतान' में इण भाँत करीजियौ है–

''सदा रहै काछ रौ द्रढ, जुद्ध सूं पीठ नीं मोड़ै।
रण में रहै निसंक, सीस सत्रुवां रा तोड़ै।।

बोलै नहँ बडबोल, काठ नहीं मन का।
विपत देख न संचरै, गरब होय न धन का।।

सरणागत री रिच्छा करै, दया धरम अर चातरी।
दस लच्छण रजपूत रा, नांव धरावै छातरी।।''

वीरता प्रधान राजस्थानी लोक–गाथावां संदेसौ दैवै कै जिण मिनख रै चरित्र में अै दस लक्षण मिळै, वोइज साचौ क्षत्रिय। क्षत्रियत्व सारू राजपूत जात रौ इज हूवणौ जरूरी नीं है। कांई तौ सुलतान, कांई पाबू राठौड़, कांई बगड़ावत, कांई तेजौ जाट, कांई गोगादे चव्हाण अर कांई प्रथीराज–सगळा ई आं लाखीणा लक्षणां सूं विभूसित। 'नर' ही कांई नारी 'सजना' ई आदमी रौ भेस धार आपरौ फरज निभाय बूढा बाप री चिंता दूर करी। इणी भांत नारी 'निहालदे' वीर पुरख री पौसाक धारण कर विजयी वीर री भांत जळदीप री माँ 'रूपादे' सूं ब्याव कीनौ। प्रथीराज री बैन सुरजां भाई री रक्षार्थ मर्दाना भेस धारणकर डाकवां रै लारै ब़ार चढी। इसी गाथावां में बखाणीजियौ है कै सांचौ वीर लुळताई राखै, परोपकारी व्है, लूंठै सूं लूंठै दुसमण सूं नीं डरै, बिखै रा दिन धीरप अर हीमत सूं बितावै अर स्वाभिमानी व्है। वे सत्य अर धरम रा रुखाळा गिणीजै। वीरता प्रधान आं राजस्थानी लोक–गाथावां में तौ अठां तक कयौड़ौ है कै इसा वीरां अर इसी वीरांगनावां रै पांण साँच री साख भरती आ धरती टिकीयौड़ी है, नींतर कदैई रसातळ में जाय डूबती।

वीर तौ वीर अठै तौ जुद्ध री झाकझीक बाजतां वीर–वीरांगनावां रा घोड़ां नै ई सूरापण चढ़ै। अेक–इसौ इज चित्रांम– **'तोपां चाली तद नौलखै बछेरै नै सूरापण चढ्यौ। मार–मार खुरां री भींत तोड़ जमीं में उतरयौ। घोड़ौ निगै नीं आयौ तद नेवोजी पायगा में गया। घोड़ै री कनौती निजर आयी।''**

इणां गाथावां में औ ई दरसाईजियौ है कै **'पांणी केरो बुद्बुदौ, अस मानुस री जात'।** जीवण क्षणभंगुर है। इण सारू बखत रैवतां जस कमाय लेवणौ चाहीजै।

10.2.2 प्रेम प्रधान राजस्थानी लोक–गाथावां

मिनखा जूंण में प्रेम रौ घणौ महत्त्व। निस्छळ अर निस्कपट प्रेम रौ राजस्थानी

लोक–गाथावां में घणौ बरणाय हुयौ है। हियै रौ हेत अर अंतस रै उछाव रै पांण प्रेमीजन आपरै प्रिय सारू सौ कीं लुटायनै ई प्रेम नै पांगरण दैवै। इकतरफौ प्रेम तौ पार नीं पड़ै पण दूतरफौ प्रेम 'सोनै में सुगंध' ज्यूं गिणीजै।

प्रेम प्रधान राजस्थानी लोक–गाथावां में नायक–नायिका री देही रै फूठरापै अर नख–सिख रौ वर्णन मिळै। आं गाथावां में पैलड़ी निजर रै प्रेम नै सै सूं ऊँचौ अर सांतरौ बतायौ है। प्रेमीजन आपरै में इज मस्त रैवणी चावै पण औ खोड़ीलौ जग वां नै नैहचै सूं जीवण नीं दैवै। वां रै प्रेम रै मारग में लगोलग मुसीबतां खड़ी करीजै। लोज–लाज आं प्रेमियां सारू सबसूं बड़ी बाधा। मूमल–महेन्द्रौ, आभल–खिंवजी अर नागजी–नागवंती सगळां रै जीव में औ इज सांसौ। कैई प्रेम प्रधान लोक गाथावां में प्रेमियां रै हिरदै उपजीयौड़ै प्रेम में खून री रिस्तेदारी मोटी अबखाई सरूप। घर रै भांणजै बींझे अर मामी सोरठ रै हियै हेत री कूंपळ फूटी, पण आ बात जमांनै नै कठै सुहावै।

''बींझौ घर रौ भांणजौ, नित उठ मिळबा आय।
पग सूं पाथर घस गयौ, बींझा भेद बताय।।''

कठै ई कठै सौतण प्रेमियां रै मिळण में रोड़ा अटकावै। घण–चावी 'ढोला–मारू' री गाथा में सौतण मारवणी ढोला–मारू सूं मेळ नीं हूवण देवण सारू भांत–भांतरा तरळा तोड़ै। प्रेमियां माथै रिस्तेदारां रा पहरा बैठाईज जावै पण आखिरकार जीत साचै प्रेम री इज व्है। आं प्रेम गाथावां में 'बाळपणै री प्रीत' री घणी मानता, वा प्रीत सैसूं चोखी अर सिरै मांनीजै। नागजी–नागवंती री गाथा री आं ओळियां में आ इज भावना है–

''नागजी नागर बेलड़ी रे बैरी,
पसरै पण फूलै नहीं ओ नाग जी।

नागजी बाळपणै री प्रीत रे बैरी,
बिछड़ै पण भूलै (तूटै) नहीं ओ नागजी।''

प्रेम परक राजस्थानी लोक–गाथावां में मीठी मनुहारां, मीठा ओळमां, भाँत–भाँत सूं भेजयौड़ा संदेसां, विरह–बेळा अर प्राकृतिक क्रिया व्यापारां रा ओपता चित्रांम मंड्या है। घणकरी गाथावां तौ सुखांत है पण कैई की गाथावां दुखान्त भी है। 'जसमा ओडण' अर 'रामू चनणा' दुखांत लोक–गाथावां में गिणीजसी।

10.2.3 पौराणिक राजस्थानी लोक–गाथावां

इण प्रदेस में इसी लोक–गाथावां भी घणै चाव सूं गाईजै–सुणीजै ज्यां रा नायक प्रादेसिक नीं हूय'र पौराणिक है। लोक रै धरातळ माथै भारत री आतमा अेक सरीखी है। इसा पौराणिक चरित्र अर पौराणिक प्रसंग है, जका आखा भारत रै जन–मानस नै आकरसित करै, प्रभावित करै। आं पौराणिक चरित्रां अर प्रसंगां रै चित्रांमां रै मिस लोक चित सांमी आदर्स पेस करीजिया है। आं गाथावां में हिन्दू अर सनातन धर्म री मानतावां रौ ब्यौरौ मिळै। कठै ई कठै ई गाथाकार या कै गाथा फैवणिया

पौराणिक चरित्र माथै प्रसंग मुजब प्रादेसिक रंग चढ़ाय दैवै। पुरांणै भारत अर पुरातन राजस्थान री सामाजिक व्यवस्था, उण बखत रा लोगां रा विचारां इत्याद री पुख्ता जाणकारी आं गाथावां सूं मिळै। अै पौराणिक चरित्र प्राकृतिक अर पराप्राकृतिक ताकतां सूं पूरै आतमबळ सूं लड़ै। इसी गाथावां में पौराणिक चरित्रां रै सागै–सागै दैविक–चरित्रां रा चित्रांम भी मिळै। अै दैविक चरित्र कदैई तौ गाथा–नायक री मदत करता दीखै अर कदैई उणरै मारगां नै अवरोधै। 'स्यावकरण घोड़ौ', 'काळा गोरा रौ भारत' 'रामदला री पड़' 'कृष्णदला री पड़', इत्याद राजस्थान री प्रसिद्ध पौराणिक लोक–गाथावां गिणीजै घणकरी वार आं गाथावां रा पात्र मिरतू लोक रै टाळ पताळ लोक, सुरग लोक इत्याद री ई जातरा करता दीखै। इसी गाथावां में उपदेसां री भरमार परोपकार सुखां रौ मूळ, जस मिनख नै अमर कर दैवै, धन–जोबन च्यार दिनां रा पांवणा, घमंडी रौ सिर नीचौ–इत्याद उपदेस कैई गाथावां रा संदेस सूत्र सरूप आवै। अेक दाखलो– 'स्यावकरण घोड़ौ' गाथा सूं–

''आज पांडव धरती पर करग्या अम्मर नांव

फूल कुमळावै जीवै वासना

ओ मोट्यारां मत रे करजो गुमांन

धन जोबन माया पांवणा, दिन दोय च्यार।''

''धरम–अधरम, पाप–पुन्न, सुख–दुःख कांई है, करमां रा फळ भोगणा पड़ै, भाग भरोसौ''– इत्याद कैई संदेसा आं गाथावां सूं दिरीजिया है। 'रामदला री पड़' में असार संसार सूं मिथ्या मोह नीं राखण री सलाह दिरीजी है। गाथा गायक मोकौ लागियां इण कळजुग री स्थितियां रा चित्रांम ई मांड दैवै। अेक उदाहरण –

''आज कळजुग रौ पेड़ौ इसौ आयौ कै मात–पिता नै धक्का देवै। तिरिया हेत लगावै। बेटी रौ धन ले खावै। बेटी नै बेच–बेच बीरां रा करज चुकावै। पाँच पंचा में बैठ'र झूठी साख भरै अर झूठी गंगा उठावै। कळजुग में सास–बहू लड़ै। सास बिचारी धरम करै, बहू नीं करण दै। सासू री चोटी बहू रै हाथ अर बहू री चोटी सासू रै हाथ में। सासू रै हाथ में सोटौ अर बहू रै हाथ में मूसळ।''

आं पौराणिक लोक गाथावां में भारतीय संस्कृति रै सागै–सागै आज री समाजू–परिस्थितियां रा चित्रांम भी मिळै।

10.2.4 भगती परक राजस्थानी लोक गाथावां

धरम में अटूट आस्था, गहरी श्रद्धा अर भगती भाव राजस्थानियां नै जलम घूंटी सागै मिलयोड़ा है। आस्था री अपरबळ ताकत रै पांण इज राजस्थानीजन इतरै बिखै री जिंदगांणी जीव'र ई मुळकता–मोदीजता रैया है। भगत आपरी भगती रै पांण कस्टां अर बिघन–बाधावां री परवाह इज नीं करै। राजस्थान में कैईक लोक–गाथावां रै नांव–सागै 'ब्यावलौ' सबद जुड़ियौड़ौ। इसी सगळी लोक गाथावां में नायक नै साधारण जूंण पूरी करतौ बतायौ है। अैन ब्याव री बखत कै ब्याव रै थोड़ौ'क पछै उणरा बिचार बदळै अर संसार नै त्याग बैराग धारण करलैवै अर पछै लगोलग भगती

रा प्रसंग अर घटनावां मिळै। संसार त्यागी इसै भगत रै जीवण में सरूवात रा दिनां घणा बिघन आवै पण वो कीं परवाह नीं करै अर आतम बळ रै पांण वां विरोधां अर अबखायां सूं पार पावै। भगत तौ सांत–निरांयत भाव सूं आपरा भगती पथ पर अग्रसर हूवतौ रैवै। जका लोग सरू–सरू में इसा महान त्यागी चरित्रां रौ विरोध करै, वे इज पछै उणरा अनुयायी बण जावै। 'रूपादे' लोक गाथा में सरूपोत में रूपादे रौ धणी उणरै चरित्र रै प्रति संका करतौ दीसै पण सेवट उणरी आंखिया उघड़ै अर वो आपरी जोड़ायत री अद्वितीय अलौकिक सगती नै श्रद्धा सूं नमन करतौ निगै आवै। भरथरी गोपीचंद री लोक–गाथा में 'करमां में लिखिया लेखां' नै पूरी मानता दिरीजी है–

''करमां में लिखिया जोग, अंग तौ लिखिया भगवा कापड़ा'' भाग रौ कोई सीरी कोनी। आं रौ संदेसौ है कै जीव–मात्र रै प्रति दयाभाव राखौ। किणनै ई संतावौ मत। सतायोड़ै री हाय सूं मिनख तौ कांई उणरै कुळ रौ नास हुय जावै। भरथरी गाथा री आं ओळियां में कह्यौ है कै भरथरी नै हिरणियां रौ सराप लागौ–

''मिरगल्यां रौ लागैला सराप, झुरती छोड चाल्याजी

लागैला रांणीनै दुहाग, राजा भरथरी जी।

भोगियां छूटैला सराप, राजा भरथरी जी।।''

मिनख–मांनवी नै समाजू–सदुपदेस देवण री दीठ सूं आं लोकगाथावां रौ घणौ महत्त्व है। आं में ग्यांन अर नीति री सूक्तियां भरी पड़ी है, जकी जीवण–जातरा में पग–पग माथै आपांनै चेतावै अर सत्पथ–चालण री सीख देवै।

10.3 प्रमुख राजस्थानी लोक–गाथावां प्रतिपाद्य

10.3.1 बगड़ावत

लीला खेड़ी गाँव में अेक सिंह नितरा मिनखां नै मार खावतौ। एक वीर सिंह मार प्रमाण स्वरूप सिंह रौ माथौ लेय'र गाँव आवतौ तौ रस्तै में तिरस लागी। पांणी पीवण गयौ। बठै नाडी में ब्राह्मण कन्या सिनान करती ही। उणरी दीठ उण कन्या माथै पड़ी अर उणरै आस मंडगी। नौ महीणां सूं उणरै बेटौ व्हियौ जिणरौ सिर बाघ जिसौ हौ। उणरौ नांव बाघौ राखियौ। वो घणौ कुरूप हौ। घर वाळा उणनै नाग पहाड़ माथै ले जाय'र छोड दीनौ। बठै अेक बाग (बगीचै) में बंद कर राख्यौ हौ। अेकर बठै सांवण री तीज रौ हींडौ हींडण गाँव री कन्यावां आई। वां झूलती कन्यावां रै च्यारू कांनी बाघौ अेक चक्कर लगाय दीनौ। बरसां परवांण वे ब्याब जोगी हुई तौ वां रा घरवाळा अठी–उठी घणाई फिरिया पण वांरौ सावौ नीं निकळ्यौ। वांरा माईत पंडित जी नै पूछताछ करी तद् ठा लागौ कै आं रौ ब्याव तौ बाघा साथै हुयोड़ौ है, इण सारू सावौ नीं निकळै। वे कन्यावां न्यारी न्यारी जात री ही। सेवट वांरौ ब्यांव बाघा साथै करणौ पड़ियौ। वां कन्यावां सूं चौबीस बगड़ावतां रौ जलम व्हियौ ज्यां में सवाई भोज सै सूं मोटौ हौ।

मोटा व्हियां अै भाई गायां चरावण रौ काम करण लागा। अेक दिन सवाई भोज अेक गाय री चराई लावण उणरै लारै गयौ। गाय अेक गुफा में बड़गी। गुफा में बैठौ जोगी चराई सरूप जवार रा दांणा दीना ज्यां नै सवाई भोज फैंक दीना। दो च्यार दांणा थैली में रयग्या। घरै जाय'र थैली देखी तौ ठा लागौ वे दांणा तौ हीरामोती बण्या पड़िया है। वो पछतायौ। दूजै दिन फैर गयौ। जोगी कैयौ इण गरम ऊकळतै तेल रै कड़ाव रै च्यारूं कांनी चक्कर काट, पछै चराई देसूं। सवाई भोज कह्यौ म्हनै ठा नीं चक्कर कीकर काटै, आप बताय दौ। जोगी चक्कर काटण लागौ तौ सवाई भोज उणनै जोर सूं धक्कौ दीनौ अर जोगी ऊकळतै तेल में पड़ग्यौ। वो तौ पड़तां ई सोनै रौ पूतळौ बणग्यौ। वो जोगी जोगी नीं बल्कि साक्षात् सिव भगवान हा। सिवजी वरदान दीनौ औ धन माल ले जावौ अर बारै बरस तांई खावौ–खरचौ खूटैला ई नीं थे ई अबै बारै बरस इज जीवौला। बारा बरस री काया अर बारै बरस री माया। अै तौ चौबीस भाई मौजां मनावणी सरू करी। वै रैण नगरी आया अर रैण रा राणाजी नै धरम भाई बणाय लीना।

अेकर अै सगळा इतरौ दारू पीयौ कै ढुळतै ढुळतै दारू री अेक छांट पताळ में सेसनाग रै लागी। वासुकि, हड़मान, गणेस इत्याद देवता बगड़ावतां नै खपावण री घणी कोसीस करी पण बातं नीं बणी। सेवट देवी वां नै खपावण रौ बीड़ौ उठायौ।

देवी रांणी जैमती रै रूप में जलम लीनौ। जवान व्हियां पंडित इणरै ब्याव रौ नारेळ रैण राणाजी नै दीनौ। जैमती ब्याव री बखत समाचार कीना कै रैण राणाजी सूं पैली सवाई भोज तोरण री वंदना कर दैवै। वो इज हुयौ। जैमती लोक–दिखावटी राणाजी साथै फेरा खाया, पण मन सूं सवाई भोज नै पति मान लीनौ।

अेकर रैण रांणाजी सिकार खेलण गया। जैमती सवाई भोज नै बुलावौ मेलियौ। सवाई भोज गयौ अर जैमती नै आपरै अठै लियायौ। राणाजी कागद लिखियौ कै जैमती नै पुगाय दौ नींतर जुद्ध व्हैला। सेवट जुद्ध हुयौ अर चोबीस ई भाई रणखेत रिया। जैमती लारै सती व्ही। सवाई भोज री जोड़ायत साढू भी सती हूवण री त्यारी करण लागी तद आकासवांणी हुई कै थारै पेट में जकौ टाबर पळै है वो ईस रौ अंस है, इण सारू थूं सती मत हूजै। बगत परवांण भगवांन देवनारायण रौ अवतार व्हियौ अर बड़ौ व्हियां वे आपरै पिता अर काका रौ बैर लीनौ। देव नारायण गूजरां में भगवान ज्यूं पूजीजै।

10.3.2 पाबूजी

पाबू राठौड़ कोळू गाँव रा रैवासी। चाँदौ अर डामौ आं रा खास सहयोगी। पाबू राठौड़ रै जवान व्हियां ऊमरकोट रै राणा रै अठै सूं ब्याव रौ नारेळ आयौ। संबंध तय हुवौ। पाबूजी राठौड़ चारण देवी देवलबाई रा धरम भाई बणियौड़ा हा। दैवल देवी रै गोधन री रुखाळी सारू केसर काळमी नांवै सांतरी घोड़ी ही, जिणरी चौताळै घणी तारीफ ही। जायल रा जिंदराव खीची री सरूपोत सूं ई इण घोड़ी माथै अर देवलदेवी रै गोधन माथै आँख ही। पाबूजी ब्याव रै बखत देवल देवी सूं अरदास कर नै केसर काळमी घोड़ी माँग ली। देवलदेवी घोड़ी तौ देय दी पण

औ वचन लियौ कै जे म्हारै गौधन री रक्षा री जरूरत पड़ी तौ उणी बखत ऊभघड़ी आवणौ पड़ैला। मौको देख'र जिंदराव खीची देवल देवी री गायां घेर ली अर हरण कर ले जावण लागौ। देवलदेवी चील रौ रूप धार ऊमरकोट पहुँची कर पाबू राठौड़ नै वचन याद दिरायौ। फेरा लेवता पाबूजी राठौड़ अधबीच में इज बहीर व्है गायां री बार चढ़िया। पाबूजी जिंदराव खीची सूं गायां तौ छोडाय दी पण खुद रणखेत रिया। लारै सोढी रांणी पाबूजी रा कपड़ां साथै सती व्ही।

10.3.3 निहालदे सुलतान –

सुलतान चकवे बेन रौ पोतौ मेनपाल रौ बेटौ। टाबरपणै ब्राह्मण–कन्या रौ कळस फोड़ियां सुलतान नै देस निकाळौ दिरीजियौ। बठै सूं वो ईडरराज पूगियौ। ईडरकोट रौ कमधजराव इणनै साहसी युवक जांण आपरै साथै लेयग्यौ जठै उणरै राजकुमार फूलकुंवर साथै सुलतान री मित्रता हुयगी। अेकर अै दोनूं सिकार चढ़िया। पाखती रै राज केलागढ़ पूगिया। निहालदे इण राज री राजकुमारी ही। अै दोनूं घूमता–घूमता जनाना–बाग गया। बठै सुलतान अर निहालदे चौनिजरियां हुया अर दोनां रै हियै हेत री कूंपळ फूटी। केलागढ़ राजा मघ निहालदे रौ स्वयंवर रचायौ। सुलतान मत्स्य भेद करनै निहालदे सूं ब्याव कीनौ। सुलतान निहालदे नै ऊन्दा नांवै भाट कन्या अर कमधजराव रै भरोसै छोड़ ढोलकुंवर रै नरवरगढ़ पूगौ। इणरी हीमत देखनै ढोलकुंवर री रांणी मारूणी सुलतान नै लाख टकां री नौकरी माथै राख लीनौ। लोग मारूणी अर सुलतान नै लेय'र ऊंधी सूंधी चकचक करण लागा। सुलतान नै ठा लागी। सूरज नै साख भराय सुलतान बोल्यौ कै जे म्हारै अर मारूणी रै भाई–बैन रौ रिस्तौ व्है तौ कोट रा कांगरा झुक जावै। साचै रिस्तै री जीत व्ही, कोट रा कांगरा झुक गया। मारूणी आपरी बेटी फूलकंवर रौ ब्याव मांड्यौ तौ माहेरौ भरण सारू सुलतान नै निंवतियौ। मारूणी रौ माँजायौ बीरौ अर उणरौ पिता बुधसिंह भाटी ई माहेरौ लेय'र पूगा। सुलतान रस्तै री अबखायां झेलतौ उठै पूगौ, कांकड़ री चून्दड़ी ओढ़ाय माहेरौ भरियौ। ब्याव निवड़ियां बैन सूं सीख ली। सुलतान नरवरगढ़ जावती बेळा रस्तै में पड़तै ईडरगढ़ सूं पुरांणै बेली फूलकुंवर नै ई साथै लेगौ। रस्तै में फूलकुंवर सुलतान साथै धौखौ कीनौ। बूंदी रा हाडा राजावां नै बुलाय निहालदे रौ हरण कराय दियौ! पण सुलतान रौ बेली जानी चोर निहालदे नै छोडाय लायौ। अेकर कीचलगढ़ में फूलकुंवर बावड़ी में न्हावती अेक सुन्दरी नै देख उणसूं ब्याव करण रौ हठ कीनौ, जिणनै ई सुल्तान कीकर ई पार लगायौ। इण गाथा में छोटी–छोटी घणी कथावां है।

10.3.4 वीरतेजा

वीर तेजा जाट ई गौ रक्षक रै रूप में ख्यात–नांव सूरौ पूरौ। तेजाजी रौ गाँव खरनाळ। आं रौ ब्याव टाबर पणै इज हुयग्यौ पण मुकलावौ नीं व्हियौ हौ। अेकर बरखा रुत में अै खेत में काम करता हा। भाभी दोपार रा भातौ लेयनै मौड़ी पूगी। तेजौ भाभी नै ओळमौ दीनौ तौ भाभी ई खरी खरी सुणायदी कै अैड़ी'ज बैगी रोटियां भावै तौ आपरै पीहर बैठी थांरी परणेतण नै लियावौ। भाभी रौ तांनौ तेजाजी रै

काळजै घणौ कसकियौ अर तेजाजी घरै पूग, माँ सूं सासरै रौ अतौ–पतौ पूछ परणी नै लावण खुदरै सासरै सिंझ्या री बेळा में पूगा। सासरै रै बाड़ै में आंरी सासू गायां री दुवारी करती ही। तेजाजी रै घोड़ा री पौड़ां सूं गाय भिड़कगी अर दूध ढोळाय दीयौ। अणजाण में सासू रै मूंडै सूं सबद निकळिया– ''कुण है रे नाग रौ जायोड़ो जकौ म्हांरौ दूध ढोळाय दीनौ।'' तेजाजी रूठ'र रात रा सासरिया रै घरै नीं ठहरिया, उणी'ज गाँव री लाछां गूजरी रै घरै रात बासौ लीनौ। उणी'ज रात डाकू लाछां गूजरी री गायां ले भागा। लाछां गूजरी गाँव रा ठाकर नै अरज करी पण कीं पार नीं पड़ी। सेवट वा आपरै घरै रुकियोड़ा तेजाजी नै कयौ। तेजाजी बार चढ़िया। रस्तै में अेक सांप नै लाय में बळतौ देखियौ तौ उणनै बचायौ। लाय सूं बारै आवतांई सांप कयौ कै म्हे तौ थांनै डसूंला। तेजाजी कयौ गूजरी री गायां छोडाय थारी बांबी आसूं थूं डस लेजै। अै थारै म्हारै बिचै कौल–बाचा। जाय डाकवां नै लालकारिया। जुद्ध हुवौ। गायां छोडाय लाछां गूजरी नै सूंपी अर खुद लोईझांण हुयौड़ा सांप री बांबी पूगा। सांप कयौ थांरै तौ आखा डील सूं लोही टपकै, कठै डसूं तेजाजी मूंडा बारै जीभ काढ़ नै कयौ अठै। सांप रै डसण सूं वांरा प्रांण पंखेरू उडग्या। वां रौ मैंमद मौळियौ लेय वांरी जोड़ायत सती व्ही। गौ रुखाळा देवतावां में तेजाजी रौ नांव घणौ सिरै।

10.4 सारांस

छोटा–छोटा सरल पद्यां में रचियौड़ौ कथा–काव्य लोक–गाथा व्है, जिणमें जरूरत मुजब ठौड़ौ ठौड़ गद्यात्मक ओळियां भी व्है। राजस्थानी री सगळी लोक–गाथावां पद्य–गद्य रौ मंजुल मेळ मिळै। 'पाबूजी री पड़' लोक–गाथा रै सागै निरत ई जुड़ियौड़ौ है। भोपा–भोपी रावणहत्थौ बजावता नाचता रैवै अर पड़ बांचता रैवै। प्रसंग आयां गाथा–गायक आज रै समाज री समस्यावां रौ जिक्र भी कर दैवै अर वांसूं बचण रा मारग ई बतायदैवै। गाथा भलांई कितरी ई पुरांणी व्हौ, आज रै जुग रा चित्रांम ई प्रसंग–परवांण मांडीजता रैवै। आपरै जूनै जुगां रा आदर्स चरित्रां साथै राजस्थानी गाथा–गावणिया नुंवा–नुंवा विसय अर बिन्दु जोड़'र आं गाथावां नै सामाजिक सरोकारां सूं जोड़ै। पुरातन अर नूतन आं दोनां रै मेळ सूं राजस्थानी लोक–गाथावां सबळी अर सफळ विधा रै रूप में आज ई समाज में प्रतिस्ठित है, आदरीजै। परा प्राकृतिक तत्त्वां रै पांण अै गाथावां आखै ब्रह्मांड सूं जुड़ जावै अर सामान्य लोक–मानस रै इण भाव नै प्रगटावै कै अै पराप्राकृतिक (अतिमानवीय भूत–प्रेत, दैत्य दानव देवी–देवता इत्याद) तत्त्व मिनखा जूण नै किण हद तक प्रभावित करै ? लोक कथावां री भाँत राजस्थानी लोक गाथावां में ई कैई अभिप्राय (Motifs) लोक–मानस अर लोक धारणा रौ बोध करावता लखावै। ज्यूं कै पाबूजी री पड़ रै वर्णन सूं ज्ञात व्है कै पाबूजी जिंदराव खीची सूं लड़ता लड़ता केसर काळमी घोड़ी समेत ठेट आंकासां पूगग्या अर अजै तक बठै ई है। धरती सूं आकास तक पूगण री आ घटना पाबू राठौड़ नै पाबू लोक देवता रै रूप में थरप दैवै। प्रायः अै सगळी राजस्थानी लोक–गाथावां मिनख नै सामान्य सूं खास बणण रौ मारग बतावै। राजस्थानी लोक–गाथावां में अेक अधिकारिक (मूळ) कथा रै सागै–सागै कैई छोटी–मोटी उपकथावां भी मिळै, जकी लोक–गाथा रै सरूप में बधापौ करै।

10.5 अभ्यास रा सवाल

1. राजस्थानी भासा री तीन प्रसिद्ध लोक–गाथावां रा नांव लिखौ।
2. 'निहालदे सुलतान' लोक–गाथा में वर्णित 'पराप्राकृतिक तत्त्वा' नै उजागर करौ।
3. केसर काळमी घोड़ी किणरी ही ?
4. वीर तेजा नै तांनौ कुण दीनौ ?
5. बगड़ावत कितरा भाई हा ? वां में सबसूं मोटौ कुण हौ ?
6. 'पड़' किणनै कैवे ? राजस्थान री 'पड़–परम्परा' पर विचार करौ।
7. राजस्थानी लोक गाथावां में 'भारत' नांव सूं किसी गाथावां जांणीजै ?

10.6 संदर्भ ग्रंथ

1. लोक–साहित्य की भूमिका– डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
2. लोक–साहित्य विज्ञान– डॉ. सत्येन्द्र
3. लोक–साहित्य स्वरूप और सिद्धांत– डॉ. एस.डी. चारण
4. The Ballad - Frank Sivik
5. The English Ballad - Robert Graves
6. लोक–साहित्य (धरतीनुं धावण) झवेरचंद मेघाणी
7. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

इकाई 11

लोक–नाट्य परिभासा अर वर्गीकरण

11.0 उद्देस्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 लोक–नाट्य : परिभासा

11.3 लोक–नाट्य : भारतीय परम्परा

11.4 लोक–नाट्य : वर्गीकरण

11.4.1 डा. कृष्णदेव उपाध्याय

11.4.2 डा. सत्येन्द्र

11.4.3 डा. अर्जुनदेव चारण

11.4.4 डा. महेन्द्र भानावत

11.4.5 डा. एस. डी. चारण

11.5 लोक–नाट्य री सामाजिक महत्ता

11.6 अभ्यास रा सवाल

11.7 संदर्भ ग्रंथ

11.0. उद्देस्य

इण इकाई मांय लोक–नाट्यां रै बाबत जाणकारी दिरीजी है।

इण इकाई नै पढ्यां आप नीचै लिखी बातां जांण सकोला –

अ. लोक – नाट्य सूं कांई मतलब है ?

आ. लोक – नाट्य री विद्वानां कानी सूं करयौड़ी परिभासावां

इ. लोक – नाट्य वर्गीकरण रा कांई आधार हुय सकै?

ई. लोक – नाट्य री परम्परा

उ. लोक – नाट्य अर साहित्यिक नाटक में फरक

ऊ. लोक – नाट्य अर लोक रंगमंच

ए. लोक – नाट्य रो मंचन

11.1 प्रस्तावना

भारत में लोक–नाट्यां रै प्रचलन री घणी जूनी परम्परा मिळै। आज भलांई आधुनिक जन–संचार अर मनोरंजन रा घणा साधन उपलब्ध व्है, पण लारला सैकड़ां बरसां तांई समाज रै धरातल माथै सीख अर मनोरंजन दोनूं ई दीठ सूं लोक–नाट्यां रौ इज राज रियौ है।

भारत रा सगळा प्रदेसां में चावा भांत–भांत रा लोक–नाट्यां नै देख्यां पतौ चालै कै आंपणौ भारतीय समाज कितरा सांतरा अर अपणावण जोग जीवन–मूल्य हिरदै में उतार राख्या हा। आं जीवन–मूल्यां रै पांण इज भारत जगद् गुरु मानीजियौ है। सादगी लोक–नाट्यां री सै सूं उत्तम अर गिणावण जोग खासियत है। आचार्य भरत आपरा 'नाट्य शास्त्र' में लोक–धर्मी नाट्य प्रकार नै परिभासित करतां साफ–साफ सबदां में लिख्यौ है–

''स्वभावभावोपगतं शुद्धन्त्वविकृंत तथा।
लोक वार्ताक्रियोपेतमंगलीला विवर्जितम्।। (14–64)

स्वाभावाभिनयोपेतं, नानास्त्रपुरुषाश्रयम्।
यदीदृश भवेनाट्यं लोकधर्मी तु सा स्मृता।।'' (14–60)

अर्थात् लोकधर्मी नाटक में लोक–स्वभाव रै अनुसार भाव प्रदर्सित व्हिया करै। इणमें किणी तरै री बणावटी या कै झूठै दिखावै री भावना नीं व्है। इसा लोक–नाट्यां री कथावस्तु मांय सामान्य प्रजाजन रै आचरण अर वांरी क्रियावां रा ओपता चित्रांम मिळै। आं लोक–नाट्यां रा चरित्रां रौ अभिनय अर वां री आंगिक चेस्टावां सादगी अर सहजता प्रधान व्है। अै लोक–नाट्य सामूहिक अभिव्यक्ति रा साधन हुया करै।

11.2. लोक–नाट्यः परिभासा

कैई देसी–परदेसी विद्वान् लोक–नाट्यां (बाबत उणनै परिभासा रा दायरा में बांधता थका) भांत–भांत री परिभासावां दीनी है। इण मांय सूं कुछैक परिभासावां इण मुजब है –

''लोक–नाटक सामूहिक आवश्यकताओं और प्ररेणाओं के कारण निर्मित होने से लोक–कथानकों, लोक–विश्वासों और लोकतत्त्वों को समेटे चलता है, और जीवन का प्रतिनिधित्व करता है।''

(भारतीय नाट्य साहित्य–सं. डॉ. नगेन्द्र)

''लोक – नाट्य से तात्पर्य नाटक के उस रूप से है, जिसका संबंध विशिष्ट शिक्षित समाज से भिन्न सर्वसाधारण के जीवन से है और जो परम्परा से अपने–अपने क्षेत्र के जन समुदाय के मनोरंजन का साधन रहा है।''

(डॉ. श्याम परमार)

11.3. लोक–नाट्यः भारतीय परम्परा

साहित्य री सगळी विधावां मांय नाट्य विधा घणी महताऊ गिणीजी है। कयौ भी हैः– **'काव्येषु नाटकम् रम्यम्'** अर्थात् काव्य में नाटक इज सगळां सूं रम्य अर सिरे गिणीजै। इण सूक्ति वाक्य मांय 'काव्य' सबद रौ व्यापक अरथ में प्रयोग व्हियौ है अर इणरौ अरथ है– साहित्य। इण भाँत लखावै कै नाटक विधा कितरी महताऊ विधा रही है। 'लोक' सूं मतलब साधारण या कै अणपढ मांनखै री दीठ सूं तौ नाटक री ठावी अर महताऊ ठौड़ मानीजी है, क्यूंकै भणिया–लिखिया तौ पोथियां पढ़–बांचर वांरौ आणंद लेय सकै, वांसूं सीख लेय सकै अर वां में वर्णित–विवेचित सामग्री सूं आपरौ मन–राजी (मनरंजन) भी कर सकै पण अणपढ मांनखा रौ तौ सहारौ लोक–नाट्य इज है। इणरौ फगत कारण औ कै नाटक

इज अेक मात्र इसी विधा है, जिणनै देखनै आमजन उणरौ संदेसौ ग्रहण कर सकै। भारतीय परम्परा मांय तौ आम मान्यता आ रही है कै वेद–पाठ सूं वंचित मानखा सारू खुदोखुद ब्रह्माजी पांचमै वेद सरूप नाट्य वेद री सिरजणा करी।

संसार रा सगळा ई विद्वान् इण बात सूं सहमत है कै हजारां बरसां री परम्परा मांय पनपियौड़ा आं लोक–नाट्यां री सरूआत किणी न किणी धार्मिक भावना या कै चेतना रै पांण इज व्ही है। 'हिन्दी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक–अध्ययन' नामक पोथी में इणरा लिखारा वेदपाल खन्ना आ बात आं सबदां में दरसावैः–**''संसार के प्रायः सभी देशों में नाटक के आदि रूप का उदय किसी न किसी धार्मिक भावना अथवा चेतना के फलस्वरूप हुआ है। वीरपूजा की भावना धार्मिक उपदेश–आदेश, जो कि प्रायः प्राणिमात्र के हृदय में किसी न किसी अंश में निहित रहता है, धीरे धीरे नाटक का रूप धारण कर लेता है। यद्यपि अपने आदि रूप में यह नाटक बड़ा ही साधारण और अपरिमार्जित होता है।''** लोक–नाट्यां सूं इज हिन्दी–नाट्य–परम्परा री सरूआत मांनीजी है। इण बाबत नाट्य–विधा–पारंगत डॉ. दशरथ ओझा रा अै विचार सराहण जोग भी है अर उल्लेखजोग भी है–

''हिन्दी नाट्य परम्परा का मूल स्त्रोत ये जन–नाटक ही हैं, जो 'स्वांग' आदि नाम से प्राचीन रूप में अब तक विद्यमान हैं। क्रमशः इन जन–नाटकों की एक शाखा ने विकसित होकर साहित्यिक रूप धारण किया। इस चिरंतन प्रवाह में काल तथा देश के संयोग से संस्कृत आदि भाषाओं के स्त्रोत भी आ मिले। इस सम्मिलन से यह प्रभाव अधिकाधिक रम्य तथा गतिशील होता रहा है।''

मनोवैज्ञानिक दीठ सूं भी विद्वानां रै मत सूं आ बात सोळै आंना साचौ मानीजियौ है कै मिनख हर हालत में आत्माभिव्यक्ति करण वाळौ प्रांणी है। वो जद तक सारिरिक क्रिया–प्रतिक्रिया नीं करै, मुख–मुद्रावां नीं बणावै अर कायिक अभिनय नीं करै तद तक उणनै नैहचौ अर संतोस नीं व्है। जद आपां सबदां सूं भावाभिव्यक्ति सावधानी सूं नीं कर सकां तद स्वाभाविक रूप सूं हाथां रा इसारां सूं उण बात नै समझावां। आ स्थिति भी अभिनय या कै नाटक रौ इज अेक रूप है। मिनख जद गुफावां–कंदरावां में रैवतौ हौ, वन–वासी हौ तद कैई वार बो भाव–विभोर होयनै नाचण भी लाग जावतौ। ज्यूं ज्यूं संस्कृति अर सभ्यता रौ विकास व्हियौ, तौ मिनख ई धीरै धीरै आपरी भावनावां रै नगन–प्रदर्सन नै विराम दीनौ अर आपरै सभ्य रूप मांय संयमित अभिव्यक्ति करण लागौ। आ संयत अभिव्यक्ति इज नाटकां अर लोक–नाटकां री सरूआत रो आदि स्त्रोत गिणीज सकै। इण अभिव्यक्ति मांय सीख, सभ्यता अर संस्कृति रौ त्रिवेणी संगम लखावै।

11.4. लोक नाट्य : वर्गीकरण

अधिकारी विद्वान लोक नाट्यां रा नीचे मुजब भेद बताया है–

11.4.1 डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय

(1) प्रहसनात्मक लोक नाट्य

(2) नृत्यनाट्यात्मक लोक नाट्य (डांस–ड्रामा)[1]

11.4.2 डॉ.सत्येन्द्र –

(1) नृत्य प्रधान

(2) नाट्य हास्य प्रधान

(3) संगीत प्रधान कथाबद्ध

(4) नाट्य वार्ता प्रधान

11.4.3 डॉ. अर्जुन देव चारण

(1) आनुष्ठानिक लोक–नाट्य

(2) उत्सव के लोक–नाट्य

(3) व्यावसायिक लोक–नाट्य

11.4.4 डॉ. महेन्द्र भानावत –

(1) कुचामणी ख्याल

(2) शेखावाटी ख्याल

(3) चिड़ावी ख्याल

(4) नौटंकी ख्याल

(5) अलाबक्षी खयाल

(6) रामत ख्याल

(7) किसनगढ़ी ख्याल

(8) जयपुरी ख्याल

(9) नागौरी ख्याल

(10) मारवाड़ी ख्याल

(11) दाँतारामगढ़ी ख्याल

(12) हाथरसी ख्याल

(13) मेवाड़ी ख्याल

(14) कड़ा ख्याल

(15) तुराकलंगी ख्याल

11.4.5 डॉ. एस.डी. चारण –

(1) पौराणिक ख्याल

(2) वीरता प्रधान ख्याल

(3) प्रेम प्रधान ख्याल

11.5. लोक–नाट्य री सामाजिक महत्ता

लोक नाट्य इज जन–साधरण नै सीख देवण अर आम आदमी रै मनोरंजन री अेक मात्र ओपती, सांवठी अर असरदार विधा गिणीजी है। लोक–नाट्य अेक इसी आडम्बर–हीण साहित्यिक विधा है जकी विसाळ जन–समुदाय रै हरख–उलास रो मुख्य आधार गिणीज सकै। सभ्यता, सजगता अर विकास रा साधनां सूं घणा–घणा अळगा गाँवां, भाखरां अर वनां मांय रहण वाळा ग्रामीण जन रै मनोरंजन सारू इज लोक–नाट्यां रौ प्रचलन व्हियौ। आं लोक–नाट्यां री महत्ता फगत मनोरंजन री दीठ सूं इज नीं है, अपितु आं नाट्यां रौ सामाजिक दीठ सूं भी पारम्परिक महत्त्व मानीजै। इतरौ इज नीं, आं नाट्यां रौ विसय भलांई पौराणिक, धार्मिक या कै आस्था प्रधान व्है, पण अै सगळा ई लोक–नाट्य उण अंचळ विसेस री खासियातां सूं पूरी तरै – प्रभावित व्हिया करैं इण तथ्य नै इण भाँत भी बतायौ जा सकै कै मूळ प्रतिपाद्य भारतीयता प्रधान हूवतां थकां ई ठावी–ठावी ठौड़ां आं लोक–नाट्यां में उण खास क्षेत्र री स्थानीय विसेसतावां रा ओपता चित्रांम चित्रित व्है। अै चित्र इतरा मनोरम, अंजसजोग अर आकरसक व्है, कै वां पर बठांरा रैवासी घणौ गरब–गुमेज करै। आं लोक–नाट्यां में मंडयौड़ा घणकरा सनातन भारतीय आदर्स चरित्र (राम, क्रिस्ण, सिव, गणेस, देवी इत्याद) क्षेत्रीयता रै सांचै ढळ परा'र आमजन रा पारिवारिक सदस्यां ज्यूं लखावै अर इण कारण इज आं पात्रां अर लोक–नाट्यां री सामाजिक महत्ता थरपीजी है। प्रादेसिक संस्कृति, प्रादेसिक प्रकृति अर प्रादेसिक परिस्थितियां सूं अेकमेक हुयोड़ा इसा चरित्र आम जन–जीवण नै प्रेरणा दैवै अर प्रभावित करै।

लोक–नाट्य इण दीठ सूं भी महत्त्वपूर्ण गिणीजै कै आं नै दरसावण सारू किणी खास या कै विसेस प्रकार रै रंगमंच री अणूंती जरूरत नीं व्हिया करै। लोक–नाट्य में अभिनय करण वाळा चरित्रां री साज–सज्जावा कै वां रै बणाव–सिणगार सारू भी अणूंतै मोल–कीमती सामग्री री जरूरत नीं व्हिया करै।

आं लोक–नाट्यां रौ उद्देस्य मात्र मनोरंजन इज नीं, बल्कि आम–जनता रौ नैतिक–उन्नयन करणौ भी प्रमुख ध्येय रियौ है। लोक–नाट्यां री विसय–वस्तु में यथार्थ अर आदर्स री अधिकता मिळै। लोक–नाट्यकारां दूजा साहित्यकारां री भाँत कल्पना री ऊँची उडांण नीं भरी है। इण कारण इज आं नाट्यां रौ जन–जीवन में खास महत्त्व है।

11.6. अभ्यास रा सवाल

1. लोक–नाट्य री ओपती परिभासा दिरावौ?
2. लोक–नाट्य रै वर्गीकरण रा कांई–कांई आधार हुय सकै? खुलासौ करौ।
3. भारतीय लोक–नाट्य री परम्परा पर आलेख लिखौ?
4. लोक–नाट्य री सामाजिक दीठ सूं महत्ता प्रतिपादित करौ?

11.7. संदर्भ ग्रंथ

1. लोक–साहित्य–विज्ञान–डॉ. – सत्येन्द्र
2. लोक–साहित्य : स्वरूप और सिद्धांत – डॉ. एस.डी.चारण
3. लोक–साहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
4. भारतीय लोक साहित्य : डॉ. श्याम परमार
5. हिन्दी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन – वेदपाल खन्ना
6. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याण सिंह शेखावत

इकाई 12

राजस्थानी लोक–नाट्यः विवेचन

12.0 उद्देस्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 भाँत–भाँत रा राजस्थानी लोक–नाट्य

- 12.2.1 रावळां री रम्मत
- 12.2.2 तुर्रा कलंगी
- 12.2.3 तेराताळी नृत्य नाट्य
- 12.2.4 जसनाथी सिद्धां रौ अगनी नृत्य नाट्य
- 12.2.5 कठपुतळी
- 12.2.6 भांड अर बहुरूपियां रा नाट्य
- 12.2.7 बोलियाँ
- 12.2.8 टाबरां रा नाट्य
- 12.2.9 ख्याल

12.3 राजस्थानी ख्याल : विवेचन

- 12.3.1 पौराणिक ख्याल
- 12.3.2 वीरता प्रधान ख्याल
- 12.3.3 प्रेम प्रधान ख्याल

12.4 अभ्यास रा सवाल

12.5 संदर्भ ग्रंथ

12.0 उद्देस्य

अनेकूं पोथियां में विद्वान् भलांई 'लोक' सबद रौ अरथ अणपढ़ अर गँवार मिनखां रै रूप में बतायौ है, पण साच तौ औ है कै 'लोक' नाम सूं जांणीजतौ समाज अेक सावचेत, चतुर अर पक्कावट जाणकारी राखणवाळौ इसौ समाज है, जकौ आपरै आखती–पाखती रै चर–अचर, अचेत–सचेत सगळी भाँत रै जीवण साथै रळियौ–मिळियौ रैवै। औ समाज प्रकृति अर प्रकृति रै हरैक उपादान सागै सांतरौ संतुलन अर साथ बणायौ राखै। इसै लोक में चावो नाटक 'लोक–नाट्य' लोक–लीक री सीख देवण रौ काम सारता रैया है। इण इकाई रौ उद्देस्य इण इज भाँत रा राजस्थानी लोक–नाट्यां बाबत पूरी अर पुख्ता जाणकारी देवणौ है। इण इकाई मांय इणा पहलुवां पर चर्चा करीजसी –

(1) राजस्थान प्रदेस मांय किण–किण भाँत रा लोक–नाट्य प्रचलित है?

(2) आं लोक–नाट्यां री विसय–वस्तु कांई है?

(3) राजस्थानी लोक–नाट्यां मांय किण भाँत रा लोक–नाट्य ज्यादा चावा है?

(4) राजस्थानी लोक–नाट्यां री किसी प्रस्तुति पद्धतियां घणी चावी व्ही?

(5) आं राजस्थानी लोक–नाट्यां रा कोई लिखारा है कै नीं?

12.1 प्रस्तावना

बखत रा बायरा रा झपीड़ां रै पांण लोक री कैई घणमूंघी मणियां या तौ गमगी अर या वांरी आभ कम पड़गी। जमांनै री विग्यांनी परख लोक री घणी सम्पदा नै भुलावण–बिसरावण रौ बीड़ौ उठायौ अर लोक–साहित्य री कैई विधावां नै नुकसाण पुगायौ। सिनेमा रै आवण सूं लोक–गाथावां री प्रस्तुति प्रभावित व्ही अर आज दिन लोक–गाथावां रा आयोजनां रौ टौटो पड़ग्यौ लखावै। जीवण में घणकरा अवसर लोक–गीतां रा सुरीलै सुर सूं गूंजायमान रैवता, पण आज वां सामाजिक समारोहां में लोक–गीतां री ठौड़ सिनेमाई केसैटां ले लीनी। आज रा टाबर दादी–नानी कनै बैठनै लोक कथावां रौ आणंद लेवण री जागा टी.वी. रा सूगला सीरियलां मांय, आँखियां गडायौड़ा बैठा लागै। अै सगळा ई साधन समाज–हित री सीख नीं देय'र भूंडै ढाळै बिगाड़ौ करै। इसी कुजरबी बखत मांय भी लोक–साहित्य री जे कोई विद्या थोड़ी घणी जीवती रही है तौ वा है – लोक–नाट्य। आज दिन ई राजस्थानी समाज में (सहरां अर गांवां–दोनूं ई जागां) राजस्थानी लोक–नाट्य घणै चाव सूं खेलीजै अर इण नै घणै चाव देखणियां री ई कमी नीं लखावै। इसा लोक–नाट्य भाँत–भाँत सूं आज दिन ई जीवता–जागता है। आं में सबसूं सबळी भाँत है – राजस्थानी 'ख्याल' री। समाज री समस्यावां, अंजसजोग राजस्थानी वीरां रा चरित्र, राजस्थानी संस्कृति रा प्रेरक चित्रांम, राजस्थानी जन–जीवण रा दरसाव इत्याद सै कुछ आं ख्यालां मांय मंडियौड़ी दीसै। दरसक जद आं नै आधी–आधी रात तांई जागतौ रैयनै देखै तद घणै गुमेज सूं उणरै कंठां सुर निकळै–म्हारौ अर म्हारै बडेरां रौ राजस्थान तौ औ इज है, जिणरी भारत भर में अमिट छाप है।

12.2 भाँत–भाँत रा राजस्थानी लोक–नाट्य

यूं तौ हरेक प्रदेस में भांत भाँत रा लोक–नाट्य लोक मंचा पर खेलीजै अर इणांनै देख आम जनता आपरौ मन ई राजी करै अर सीख ई ग्रहण करै। आखै भारत में राजस्थान इज अेक इसौ प्रदेस गिणीजै, जठै अनेकू भाँत रा लोक–नाट्य प्रचलन में है। इण मामलै में राजस्थानी लोक उदार है। राजस्थानी जन खुद रै प्रदेस रै आखती–पाखती रा प्रदेसां रा कुछैक भाँतरा लोक–नाट्यां नै अपणाया, पण वां री प्रस्तुति खुदरी अकल अर लकब मुजब राखी। आं भाँत–भाँत रा राजस्थानी लोक–नाट्यां मांय सूं प्रसिद्ध लोक–नाट्यां बाबत जाणकारी अठै दिरीजी है।

12.2.1 रावळां री रम्मत

राजस्थान में अेक जात (जकी कै 'रावळ' नांव सूं ओळखीजै) इसी है, जिणरी

जिंदगाणी लोक–नाट्य सूं इज जुड़ियौड़ी है। इण जात रा लोग होळी रै तिंवार रै ओळै–दोळै गाँव–गाँव जायनै रम्मत मांडै। आं री रम्मत में न्यारी–न्यारी जातियां रा स्वांग करिया जावै। स्वांग करण में सायत ई कोई दूजी जात इतरी चतुर व्हैला। हालांकि राजस्थान में होळी रै महीणै कुम्हार जात रा लोग भी स्वांग धरै, पण रावळां रा स्वांगां सामी सगळा फीका लागै। इण जात री अेक खास अर उल्लेख जोग विसेसता आ भी है कै अै आपरी जजमान चारण जात रै किणी अेक सदस्य री उपस्थिति में इज 'रम्मत' मांडैला। जे कठै ई चारण जात रौ कोई अेक भी मिनख नीं व्हैला तौ रावळ रम्मत नीं मांडैला। दूजी उल्लेख जोग बात आ है कै रावळां री रम्मत में रावळ जात री कोई लुगाई कदैई उपस्थित नीं व्है। अभिनय क्षमता आं में अद्‌भुत व्है। कैय सकां कै अभिनय रौ इणा नै कोई दैवी–वरदान मिलयौड़ौ है। अधनारी (अर्द्धनारीस्वर) रै स्वांग भरती बखत अै नाचता थका माता जी री चिरजावां इज गावै। इण स्वांग नै करणियौ सदस्य नृत्य में निपुण अर तलवार–बाजी में प्रवीण व्है। अै लोग यूं तौ घणा ई स्वांग भरै, पण प्रमुख स्वांग इण भाँत है – चच्चै भोरै रौ स्वांग, कान्ह गूजरी रौ स्वांग, सूरदास रौ स्वांग, मलिया मैणै रौ स्वांग, बीकोजी रौ स्वांग इत्याद रावळां री रम्मत रै स्वांगां में कदैई अस्लीलता या कै फूहड़पणौ निजर नीं आवै। संयत हास्य अर चुटीलौ व्यंग्य आं स्वांगां री खासियत गिणीजै। गीत–संगीत अर निरत री त्रिवेणी आं री रम्मत रा स्वांगां मांय व्ही है। कलाकारां रै साथै आं री मंडळी रा कुछ सदस्य प्रसिद्ध लोक–वाद्य 'मादळ' माथै संगत दिया करै।

12.2.2 तुर्रा–कलंगी

यूं तौ महारास्ट्र अर मध्यभारत मांय तुर्रा–कलंगी लोक–नाट्य रौ घणौ प्रचलन है, पण राजस्थान प्रदेस रै मेवाड़ क्षेत्र में भी तुर्रा–कलंगी लोक–नाट्य रौ प्रचार–प्रसार है। मेवाड़ रा घीसूंडा में इणरौ घणौ प्रचलन है। तुर्रा–कलंगी लोक–नाट्य मांय दो दळ (तुर्रादळ अर कलंगी दळ रै नांव सूं) हुया करै। कलंगी दळ री ठौड़ मंच माथै व्है जद कै तुर्रा दळ री ठौड़ मंच रै नीचै व्है। आं दोनूं ई दळां (तुरादळ अर कलंगी दळ) रै आपसरी में वाद–विवाद व्हिया करै। इण लोक नाट्य रै सरूआती दौर में इणरै मूळ में बैठकी ख्यालां री परम्परा रैयी है पण घणा बरसां पछै बखत बीतियां अबै तुर्रा–कलंगी मंच माथै आसण जमाय लीनौ है, इण कारण इज इणनै 'मांच' री संज्ञा दिरीजी है।

तुर्रा–कलंगी रा वाद–विवाद में आध्यात्मिक अर दार्सनिक विसयां री इज घणकरी चर्चा व्है। कलंगी दळ वाळां री मान्यता है कै कलंगी आदिसगती री प्रतीक है अर तुर्रो सिवजी रौ प्रतीक है। किलंगी दळ वाळा तुर्रे री उत्पत्ति भी कलंगी सूं इज मांनै। इण मत रै विरोध में तुर्रे दळवाळा मांनै कै तुर्रो अखण्ड चैतन्य रै रूप में 'ऊँ' सबद रौ प्रतीक है। अै लोग तुर्रे नै सगती सूं उत्पन्न व्हियौड़ौ नीं मानै। आं लोगां रै विचार सूं तुर्रो भोम रौ भार उतारण सारू हर जुग में अवतरै। त्रेता जुग में औ इज तुर्रो राम रै रूप अवतार लियौ। द्वापर में इण तुर्रे इज क्रिसन रै रूप

अवतार लीनौ अर अबै इण घोर कळजुग में इणरौ तुर्रे रै रूप में अवतार व्हियौ है। इणी भाँत अवतार मुजब आ कलंगी कदैई सीता रूप में अवतरी तौ कदै ई राधा रूप में। कैईक खिलाड़ी तुर्रा–कलंगी नै एक बानौ मात्र गिणै। इण मत नै मानण वाळा मिर्जा खाजू बेग साफ–साफ सबदां में बतावै –

"कलंगी तुर्रे रौ बरन
तू सुण ले आँख खोलकर मूढमती
म्हैं कहूँ बाने का नाम
तूं कहता सिव–पारवती।

तुर्रा कलंगी रा मूळ भावां रौ आधार सिद्धां अर नाथां री दार्सनिक भावनावां मानीजी है। आं रै पछै रा संत भी इणी'ज परम्परा में निर्धारित प्रतीकां अर रूपकां वाळी सबदावली काम में लेवता रैया है। इण लोक–नाट्य री वाद–विवाद री सरूआती ओळ्यां इण भाँत पेस करीजै –

कलंगी –

है आदसगती अवतार हमारी कलंगी

सब स्रस्टि रचावणहार हमारी कलंगी

तुर्रा –

है ऊँ सबद ओंकार हमारा तुर्रा

तेरी सगती का सरदार हमारा तुर्रा

12.2.3 तेराताळी नृत्य (नाच रो) नाट्य

राजस्थान रा गोडवाड़ क्षेत्र में अेक चावौ गाँव है – पादरला। इण गाँव में बसण वाळी कामड़ जात रौ औ तेराताळी 'नृत्य' जग–चावै राजस्थानी लोक–नाट्य रौ अेक रूप है। इण 'नृत्य नाट्य' री प्रस्तुति कामड़ जात री महिलावां कानी सूं इज करीजै। कामड़ महिलावां आपरा डील माथै न्यारी–न्यारी ठौड़ मजीरा बांधै। वां मंजीरां नै अेक न्यारी–निरवाळी धुन में बजावती थकी अनेक प्रकार री मुद्रावां बणावै, भाँत–भाँत रा घर–ग्रहस्थी रा काम–काजां रा अभिनय करै। आपरा डील रा अंगां री चेस्टावां सूं जतावै–बतावै कै आटौ कीकर पीसीजै। फलका कियां पोईजै। बिलोवणौ कीकर करीजै। कामड़ स्त्रियाँ तेरह मंजीरां मांय सूं नौ मंजीरा तौ जींवणै पग माथै बांधै अर दो पासळियां रै नीचै बांधै अर बाकी रा दो मंजीरा हाथ में राखिया करै। आपरा हाथ मांयला मंजीरां सूं डील माथै ठौड़ ठौड़ बंधियौड़ा मंजीरां नै बजावती निरत करै अर तेरह भाँत रा भाव–नाट्य प्रस्तुत करै। जिण बखत कामड़ महिलावां इण भाँत री आंगिक चेस्टावां करै, उण बखत कामड़ पुरस तानपुरै माथै संगत देवता थका भजन गाया करै। अै सगळा भजन लोक देवता बाबा रामदेवजी सूं संबंधित व्है। कामड़ जात बाबा रामदेव री उपासक है। इण नाट्य में कदैई तौ मात्र अेक लुगाई इज 'नृत्य–नाट्य' पेस करै अर कदैई कदैई चार–पाँच लुगायां

सामूहिक रूप सूं 'नृत्य–नाट्य' करै। इण नाट्य रै सरु में गणेस भगवान री वंदना गाईजै, जकी, इण भाँत है –

'दो नारी रे गजानन्द थारै दो नारी
आपनै सोवै (छाजै) रे गजानन्द दो नारी
अेक तौ नारी झारी भर ल्यावै, दूजी सिनांन करावै ओ देवा
अेक तौ नारी चंदण घस ल्यावै, दूजी तौ तिलक लगावै ओ देवा।

कैई वार रामदेवजी रै भजनां रै साथै–साथै मीराँबाई अर कबीर रा रचियौड़ा भजन भी गाईजै। इण 'नृत्य नाट्य' में आं तेरह मुद्रावां री झांकी दरसाइजै –

1. धान काटणौ
2. धान साफ करणौ
3. धान कूटणौ
4. धान पीसणौ
5. आटौ छांणणौ
6. आटौ ओसणणौ
7. रोटी बणावणौ
8. सूत लपेटणौ
9. अरटियौ फेरणौ (सूत कातणौ)
10. माथै ऊपर कळस राखणौ
11. दही बिलोवणौ
12. माखण निकाळणौ
13. माखण सूं घी काढणौ अर छाछ न्यारी करणौ

12.2.4 जसनाथी सिद्धां रौ अगनी नृत्य–नाट्य

सिद्ध सम्प्रदाय रा भारत भर मांय सिद्धपीठ है। आं में जसनाथी सिद्ध भी घणा चावा है। सिद्धां सूं संबंधित घणी रोचक अर चमत्कारी दांत–कथावां अर लोक–कथावां आज भी जन सामान्य में प्रचलित है। आं सिद्धां में सिद्धाचार्य जसनाथजी अर रुस्तम जी री कथा घणी महताऊ है। जसनाथी सिद्धां में अेक सिद्धाचार्य जसनाथ जी टाबरपणै अंगीठी माथै बैठग्या। उण बखत वांरी ऊमर फगत अेक बरस री इज ही पण पूरबली पुन्नाई रै परताप अंगीठी री अगनी सूं वांरौ कीं बिगाड़ नीं व्हियौ। उणी'ज भावना रौ आदर करतां अर गरूजी री अगनी परीक्षा री परम्परा निभावतां थकां आगै रै बरसां में जसनाथी सिद्ध (जका कै जसनाथजी रा चेला हा) आपरा गरूजी री सगती रै पाण अगनी–निरत सरू कीनौ। इण कथा सूं मेळ खावती अेक कथा रुस्तम जी सिद्ध रै बाबत ई चावी है। बतावै कै अेकर बादसाह औरंगजेब

रुस्तम सिद्ध नै आपरै कनै बुलायौ। जिण रस्तै सूं रुस्तम जी सिद्ध नै आवणौ हौ, उण रस्तै रै बिचै बादसाह अेक अग्नि कुण्ड बणाय राख्यौ हौ, जिणमें बळबळता अर धगधगता खीरा भर राख्या हा। ऊपर अेक पतळौ सो आवरण राख राख्यौ हो ताकि किणी नै ठा नीं लागै कै नीचै जगजगता खीरां भरियौ अगनी कुण्ड है। रस्तै चालतां–चालतां ज्यूंई उण ठौड़ रूस्तम जी पग मेलियौ कै नीचे उण अगनी कुंड में पड़ग्या। आपरी तपस्या अर गरू भगती रै परताप सूं वांरौ कीं ई नीं बिगड़यौ अर वे सही–सलामत राजी खुसी पाछा बारै निकळ आया। आवती बखत वे आपरै साथै कैई चीज बस्तां ई लेता आया, जिणनै देखनै बादसाह औरंगजेब घणौ अंचभौ कीनौ अर वांनै पूरो आव–आदर दीनौ। अगनी कुण्ड में पड़ण सूं पैली वांरै कनै अै चीजां नीं ही। सिद्ध रूस्तम जी भगती री सगती रौ प्रभाव बतावण सारू अै चीजां अगनी कुण्ड सूं बारै आवती बखत लेता आया।

''जामौ छत रौ साल छत्तीसौ, सांवण हो तौ आगै
भर करळौ सिटां रौ लायौ, हरियौ मतीरौ सागै।''

इण भाँत री दंत–कथावां सूं आज भी अगनी–निरत करण वाळां रौ मनोबळ बधै। इण अगनी निरत नाट्य में 6 फुट लंबौ, 4 फुट चौड़ौ अर 3–4 फुट ऊँचे नाप रौ खीरां (अंगारां) रौ ढेर लगाईजै। आं खीरां (अंगारां) पर नृतक ऊँकार री धुन रौ ऊँचा सुर में जाप करतो, नाच करता रैवै। साथै साथै पाखती ऊभा सहयोगी जोर–जोर री नगाड़ां री धुन सूं संगत देवता रैवै। निरत करती बखत नगाड़ां रौ लगू बाजणौ जरूरी है। औ निरत अेक विसेस लय, ताल अर अभिनय मुद्रावां में सम्पन्न व्है। इण 'नृत्य' में जसनाथी सम्प्रदाय रा अनुयायी पूरबली अंजस जोग घटनावां री नकल उतारै। राजस्थान रा बीकानेर में इण 'नृत्य' रौ विसेस आयोजन सालोसाल करीजै।

12.2.5 कठपुतळी

कठपुतळी 'नृत्य–नाट्य' न्यारा–न्यारा रूपां में आखै संसार में चावो है। जूनै जमानै सूं औ नाट्य रंगमंच रौ महताऊ रूप रह्यौ है। इण नाट्य में काठ (लकड़ी) री बणायौड़ी पूतळियां नै डोरै रै सूं संचालित करीजै। आं रो सूत्रधार पड़दै रै लारै बैठौ रहै रैवै अर आपरा हाथां री आंगळियां मांय काठ–पूतळियां रा डोरा पकड़ियौड़ा राखै अर वांनै संचालित करै। राजस्थान में कठपुतळी खेल में अमरसिंह रौ खेल घणौ प्रसिद्ध अर प्रिय है। इणी भाँत भळै ई कैई सत सूरां–वीरां रा खेल खेलीजै। अजकाल आं कठपुतळियां रै मारफत लोक–गीत अर सिनेमाई सिणगारी गीत ई नृत्य रै साथै गाईजै! बिच–बिच मांय हँसी मजाक री बातां ई चालती रैवै।

12.2.6 भांड अर बहुरूपियां रा लोक नाट्य

राजस्थान में भांड हर जागां मिळै। इणी भाँत बहुरूपियां री संख्या भी खासी भली है। भांड अर बहुरूपिया भांत भांत रा साज सिणगार कर केई स्वांग रचै। अै लोग ज्यादातर दिन रा स्वांग करनै गाँव–गवाड़ अर गळी–मौहल्ला में घूमता फिरै अर आं स्वांगां रै पांण इज आपरी जीविका सारू रिपिया पईसौ कमावै। भांडां री आ

खासियत है कै अै स्वांग भरनै भांत–भांत री मुख–मुद्रावां बणावै अर इण प्रकार जन–साधारण नै हँसावै। आं रै स्वांगां में निरत तत्त्व री पूरी कमी रैवै। इणां रै स्वांगां में उछल–कूद भी जरूरत सूं ज्यादा इज होवै। अै स्वांग मुजब भेस धारण करै। भांड अर बहुरूपिया ज्यादातर काळका देवी, हड़मान, सिव भगवान, क्रिसन भगवान इत्याद रा स्वांग धारण करै। आजकाल आं रा स्वांगां मांय आधुनिकता रौ असर साफ–साफ निजर आवै।

12.2.7 बोलियाँ

जमानै रौ असर हुयौ अर लोक–जीवन सूं इण प्रकार रौ लोक–नाट्य अलोप हूवतौ दीसै। पैलड़ै जमानै में जद जंवाई आपरै सासरै आवतौ तद आड़ोस–पड़ोस री लुगायां भेळी हुय जावती। भांत–भांत सूं जंवाई रा लाडकोड करती। जकी जातियां में पड़दा प्रथा ही, वां में जंवाई अर आड़ोस–पाड़ोस री लुगायां रै बिचै आंगणै में मूंज रौ माचौ ऊभौ करीजतौ। उण मांचै री मूंज में आंगळियां घालनै दूजी कांनी बैठै जंवाई सूं लुगायां भांत–भांत रा सवाल–जवाब करती। इण बखत वे न्यारै–न्यारै सुर में बोलियां काढ़नै जंवाई रौ मनरंजन भी करती। कदैई कदैई वे कागद रा बणायौड़ा मुखौटा धारण करनै ऊँचै–नीचै सुर में कैई प्रकार री बोलियां निकाळती। इसी बोलियां काढ़ती बखत वे इण तथ्य रौ पूरौ पूरौ ध्यांन राखती कै बोलती बखत भासा रौ सरूप बिसौ इज हूवणौ चाहीजै, जिसौ भासा रूप उण जात री बोलचाल री भासा में है। इण नाट्य में गीत अर नाच नहीं व्है। इणमें आंगिक अभिनय री ठौड़ भासिक अभिनय ले राखी है। भारत रा दूजा किणी प्रदेस मांय भासिक अभिनय प्रधान लोक–नाट्य कठैई नीं मिळै। महिलावां इज आपरा बोलण रा सुर नै कीं ऊँचौ अर कठोर करनै पुरस चरित्रां रौ भासिक अभिनय करै। नारी समाज कानी सूं निकाळी जावण वाळी भासिक अभिनय प्रधान आं बोलियां में (1) बाप री बोली (2) दादै री बोली (3) भुवा री बोली (4) मैणा–मैणी री बोली (5) धोबी–धोबण री बोली (6) जाट–जाटणी री बोली इत्याद घणी प्रसिद्ध रैयी है। जरूरत मुजब अै लुगायां न्यारा–न्यारा जीव–जिनावरां अर पंखी पंखेरूवां री बोली ई निकाळती जावै। आं बोलियां रै मारफत चरित्र कै उण जाति–विसेस रै रहण–सहण, पैरवेस, खान–पान अर जीवण–पद्धति री भी जाणकारी दिरीजती। अै बोलियां जातीय गुण–दोसां री सूचक रैयी है।

12.2.8 टावरां रा नाट्य

राजस्थानी लोक–नाट्यां में टाबरां रा लोक नाटकां रौ भी विसेस महत्त्व है। आं नाटकां सूं इज बाळक आपरा भावी जीवन में प्रवेस पावण रौ जतन करै। आंसूं वांनै सांसारिक आचार–व्यवहार री सीख भी मिळै। आखातीज रै अवसर छोटा–छोटा टाबर बींद–बींदणी बणनै गाँव–गळी में घूमै। इण लोक–नाट्य की आ खासियत है के बींद रौ स्वांग भी लड़की इज करै। दो लड़कियां मांय सूं अेक लड़की इज मरदानौ भेस धारणकर बींद बणै अर दूजी लड़की बींदणी बणै। ब्याव में जिण भाँत री पौसाक बींद–बींदणी धारण करै उणी'ज भाँत री पौसाक अै बालिकावां भी

धारण कर्‌या करै। माथै पर मौड़ बांधै। नुंवी पौसाक धारण कर कपड़ै री पट्‌टी पकड़ बींद–बींदणी ज्यूं आगै–लारै चालै। इण भांत रा स्वांग सूं बाळ हृदय जीवन अर सांसारिक जीवण रौ पूर्वाभास करलैवै। अै बींद–बींदणी घर–घर जावै। साथै री बालिकावां गीत गावती रैवै। इणी भांत दिवाळी या कै होळी रै पछै वाळै रामासामा रै दिन दस बारै बरस रा टाबर लुगाई रा कपड़ा पैरनै घर–परिवार कै आड़ोस–पाड़ोस री बूढी–बडेरी लुगायां रै पगै लागता फिरै। इण बखत टाबर आपरा मुख नै घूंघटा में छुपायौड़ौ राखै। वे जद पगै लागै अर बूढ़ी–बडेरी साथी टाबरां नै पूछै कै इण बीनणी नै पिछांणी कोनी तद वो टाबर (जकौ कै छोरौ व्है) आपरौ घूंघटौ हटाय आपरी असळी पिछांण बतावै, तद सारा वातावरण में हँसी रा फंव्वारा फूट पड़ै। इण मोकै बूढी बडेरी हँसा–तमासा करणिया टाबर नै कीं रिपिया पईसा दैवै। औ इसौ मून प्रधान अभिनय है, जिणरी चरम सीमा प्रसन्नता अर प्रफुल्लता है। औ इज अेक मात्र इसौ लोक–नाट्य है जकौ टाबरां अर बूढा–बडेरां रौ अेकण सागै मनोरंजन करै। इणमें कदै ई कोई बच्ची घूंघटौ काढ़ बींदणी नी बणै।

12.2.9 ख्याल

राजस्थानी लोक–नाट्यां में सबसूं सिरै अर प्रभावकारी लोक–नाट्य 'ख्याल' नाम सूं जाणीजै। इण प्रदेस में भाँत–भाँत री सैलियां रा ख्यालां रौ सर्वाधिक प्रचार–प्रसार रयौ है अर आज दिन भी है। राजस्थान में 'ख्याल' परम्परा लोक–नाट्य री अेक विसेस सैली है, जकी अठांरा ख्याल–अखाड़ां में इज जलमी–पनपी है। अठांरा कैई गांवां में ख्याल–अखाड़ा हुआ करता। होळी सूं थोड़ा दिन पैलां सहर रै चौक या कै गाँव रै गवाड़ में किणी मिंदर माथै अेक झंडौ रोपीज जावतौ। आ अेक प्रकार री सूचना ही कै आवण वाळा दिनां में रात री बखत ख्याल खेलीजैला। ख्याल में अभिनय करण वाळा 'खिलाड़ी' संज्ञा सूं ओळखीजता। आं खिलाड़ियां रै आकरसण सूं इज चौथाळै री भीड़ भेळी हूवती। नामी–गिरामी खिलाड़ियां रा नांव घणा चावा हा। गाँव वाळां रै सहयोग सूं सारी व्यवस्थावां हुय जावती। ख्याल में अभिनय, गायन, नाच अर ताळ–आं च्यार ई बातां रौ मंजुल मेळ मिळै। 'ख्याल' रा प्रमुख पात्र अभिनय रै साथै–साथै गावण अर नाचण में भी पारंगत व्है। अठां री ख्याल परम्परा में गुरु–चेला परम्परा लगू रैयी है। पात्र आपरौ परिचय देवतां बखत आपरै उस्ताद (गुरु) रौ ओपतौ परिचय जरूर देवै। आगै री ओळयां मांय भाँत–भाँत रा 'ख्यालां' रै प्रतिपाद्य री दीठ सूं विवेचन करणौ जरूरी लखावै।

12.3. राजस्थानी ख्यालः विवेचन

राजस्थान में भाँत–भाँत री सामाजिक समस्यावां नै लेयनै 'ख्यालां' री सिरजणा व्ही तौ जन–साधारण नै रीत, नीत अर आदर्स री सीख देवण रै उद्‌देस्य सूं भी केई ख्याल रचीजिया। घणकरा ख्याल प्रेम, सिणगार, त्याग–बलिदान अर आखेट नै लेय'र लिखीजिया। मोटा–मोटी रूप सूं राजस्थानी ख्यालां रौ विसयवार विवेचन आं बिन्दुवां रै आधार पर करीज सकै।

12.3.1 पौराणिक ख्याल

भारतीय संस्कृति रा आदर्स चरित्रां नै आधार–बणाय'र राजस्थान में घणाई ख्याल रचीजिया है। अै इसा सांतरा चरित्र है, जका परमार्थ सारू आपरौ सो कीं त्याग दीनौ, पण त्यागती बेळा नाक में सळ ई नीं घालियौ। इसा ख्यालां में केई ख्यालां री कथा रौ संबंध साक्षात् भगवान अर वांरा अवतारी पुरसां री चमत्कारी लीलावां सूं है। ज्यूं कै–मेवात रा अलीबख्सी रो 'कृष्ण लीला'। आं पौराणिक ख्यालां में जीव–जगत्, आत्मा–परमात्मा अर संसार रै विधान बाबत घणी–घणी चर्चावां करीजी है। धरम री बातां री आं ख्यालां में प्रधानता है। दया, सेवा, परहित भावना इत्याद मिनखीचारै रा सराहणजोग गुणां रौ अै ख्याल घणौ बखांण करै। अलीबख्स रा 'कृष्ण लीला' में दुरमती कंस नै सीख देवतां साफ–साफ सबदां में कयौ गयौ है –

''पाप तेरे मन में छाया
धरम हिरदै से बिसराया।''

इणी'ज भाँत राजा हरिसचन्द्र रै ख्याल में वचन–निभावण री बात माथै पूरौ जोर दिरीजियौ है। रिसी पैली हरिसचन्द्र नै वचनां में बांधै अर पछै आपरी इच्छा बतावै। वचनां रौ बांधोड़ौ राजा राज–पाट छोड़ जावै। राजा, राणी अर कुंवर अणूतौ काया–कस्ट झेलतां बिखै रा दिन काटै। आपरा भूखा सिंघ सारू भख सरूप कुंवर नै मांगण सूं पैली रिसी राजा मोरध्वज नै वचनां में बांधै अर पछै खुद री मनसा बतावै। आं ख्यालां में पतिव्रत धर्म री उत्तमता भी वर्णित–विवेचित है। पति–धर्म नै सर्वोच्च मानणवाळी अै सतवंती रमणियां पति रा वाक्य नै ब्रह्म वाक्य कर मांनै। वे सदा आपरै सत माथै, अणूंतौ पतियारौ राखै। पति रौ कयौड़ौ नीं कदैई टाळै नीं कदैई बिसरावै। हर सुख–दुःख में पति रै साथै रैवै। पौराणिक ख्यालां में करूणा प्रधान वर्णनां री अधिकता व्है। इसा चित्रां नै देखनै देखणवाला रै मन में वां आदर्स चरित्रां रै प्रति घणौ आदर भाव जागै। आं सगळा ई ख्यालां में आ इज सीख दीयौड़ी है कै बुरी अर कठोर हालात मांय भी हीमत नीं हारणी। पौराणिक ख्यालां रा सगळा प्रमुख चरित्रां नै करड़ी परीक्षावां देवणी पड़ै अर आपरा फरज नै पूरौ करतां नै घणी अबखायां सूं जूंझणौ पड़ै पण सेवट जीत वांरी इज व्है। आदर्स री थरपणा आं पौराणिक ख्यालां रौ असली आधार व्है। इसा जोगा चरित्र संसारी माया–मोह, धन–दौलत अर विसै–भोग रै पचड़ै में कदै ई नीं पड़ै। इणा रौ मन तौ हरि चरणां में अर तन जन–सेवा में सदा निरत रैवै। ईस्वरीय प्रेम नै सार सरूप समझै अर जग नै जंजाळ बतळावै। राजा मोरधज आपरी राणी सूं कैवै –

''मोह माया नै छोड'र रांणी, कर भगवत सूं प्रीत।
पुत्र नहीं अब आयगा, रांणी कौल गयौ है बीत।।''

राजस्थानी भासा रा पौराणिक ख्यालां में सगुणोपासना रै साथै–साथै निर्गुणो–पासना अर हठयौगिक क्रियावां रा दरसाव भी मिळै। एक चित्रांम देखण जोग–

''तिरकोण आसण पर पदमासण, मन रोको भीतर काया।

अेक चिन्त सूं ध्यांन लगावौ, छोड राज री मोहमाया।।''

सार बात आ कै राजस्थान में खेलीजणवाळा सगळा ई पौराणिक ख्यालां में चरित्रां रै आदर्सवादी जीवण रा ओपता चित्रांम मंडियौड़ा। आं में अपनावण जोग धरम–भावना रा बरणाव, सै कीं त्यागण री उत्कट अभिलासा, इन्याव अर अधरम रौ जबर्दस्त विरोध करण री सीख दिरीजी है।

12.3.2 वीरता प्रधान ख्याल

राजस्थान री धरती वीर–वीरांगनावां री धरती है। इण धरती री मातावां आपरा टाबरां नै मरण री बडाई रा पाठ हालरियां हुलरावती इज सिखावती रैयी है। औ इण कारण है कै इण प्रदेस मांय खूब सारा वीरता प्रधान 'ख्याल' लिखीज्या अर चावा व्हिया। अठां रा वीरां रा अजब–गजब रा सतकरमां री बातां आज ई गाँव गवाड़ में इज नीं सात समन्दर पार ई चालै। अै वीर प्रजा रक्षक, समाज–कंटक–भक्षक अर धरती रा रूड़ा रूखाळा रिया। आं रौ जलम दुस्टां रै दळण सारू इज व्हियौ लखावै। अै आपरा प्रांणां री आहूती देय'नै ई दीयौड़ै वचन रो पालना करी, गरीब–गुरबै री मदद करी। भलांई पाबूजी राठौड़ व्है अर भलांई तेजाजी जाट, वचन–निभावण में अेक दूजा सूं आगै। पाछा पगलिया मेलणा तौ अै जांणै इज नीं। इसा वीर इन्याव कदै ई सहन नीं करै। अमरसिंह राठौड़ रै ख्याल मांय भी अमरसिंह री इसी इज गरब–गुमेज जोग बहादुरी रौ बरणाव है अर भाँत–भाँत सूं घात घालणियै सलावत खाँ रौ भी वर्णन है, जिणसूं ठा लागै कै मध्यकाल में मुगल सेनापति किण भाँतरा सड्यंत्र रचता रहता पण इण धरती रा जायोड़ां कदैई इणा सूं नीं घबराया। आं सगळा ई वीरां री परोपकार री भावना सराहणजोग है। सगळा ई वीरता व्यंजक ख्यालां में जोध–जवानां रौ उछाह–उमाव, अस्तर–सस्तरां री झाकमझीक, जुद्ध क्षेत्रां री भयानकता रा आख्यां देख्या चित्रांम मंडियौड़ा है। कठै ई रणभेरी रौ तूर्यनाद तौ कठै ई जुद्ध रा उमाया वीरां रै हिरदै उत्साह सांचरतै नगाड़ां रौ अकासां गूंजतौ घोस सुणीजै। ज्यूं कै –

''बजै तलवार खटाखट, गिरै खोपड़ियां कटाकट।

वीर निकळै बच झटपट, मरै कितरा ई चटपट।।''

वीरता प्रधान आं ख्यालां री अेक उल्लेख जोग खासियत आ कै आं में जोरावर जोधां नै मारण री हीमत किण में ई नीं लखावै। इण सारू कैई वार वांनै खपावण सारू दैवी–सगतियां नै भार सूंपीजै। 'बगड़ागत ख्याल' इणरौ ओपतौ उदाहरण है। गोगाजी नै ई अंतकंत धरती माता खुदोखुद इज आपरी गोद में उतारलैवै। आं ख्यालां में हीमत रा भाव रौ घणै चाव वरणन करीजियौ है। ख्यालकारां आं वीर नर–नारी रतनां रै मारफत घोसणा कीनी है कै हीमत सूं इज मिनख री कीमत व्है। हीमत रै बिना मिनखाजूण विरथा है। हीमत रै पांण इज मिनख में सगळा प्रकार रा संघर्सा सूं लड़ण रौ बळ बापरै। बलजी–भूरजी रै ख्याल में कहीज्यौ है –

'' हीमत बडी बळवांन, नर हीमत रौ जग में मोल जी

हीमत सूं ही कीमत बधै, हीमत बडी अणतोलणी।।''

12.3.3 प्रेम प्रधान ख्याल –

राजस्थान में तीन तरै रा प्रेम प्रधान ख्याल प्रचलित है।

(क) इण भाँत रा प्रेम प्रधान ख्यालां में इण प्रदेस रै टाळ भारत रा दूजा प्रदेसां रा प्रेमी–युगलां री प्रेम कथावां वर्णित–विवेचित है। इण श्रेणी में गिणावणजोग ख्यालां में लैला–मजनू, हीर रांझा रा ख्याल रौ नांव सिरै है।

(ख) भारत भर में राजस्थान इज अेक अैड़ौ प्रदेस है जठै चाळीस–पचास रै लगैटगै प्रेमाख्यान प्रचलित रह्या है। अै प्रेमी–प्रेमिकावां हकीगत में व्हिया है, पण वां रा प्रेम–प्रसंगां में समाज अर दूजौ मानखौ घणी अबखायां–विपदावां पैदा करी। पण अै साचा प्रेमीजन आं विरोधां–विघनां री कीं परवाह नीं करी अर प्रेम–नगर में आपरा नांव अमर कर दीना। इसा प्रेम प्रधान खयालां में सोरठ बींझा रौ ख्याल, निहालदे–सुलतान रौ ख्याल, रिसाळू–नोपदै रौ ख्याल, ढोला–मरवण रौ ख्याल, आभल–खिंवजी रौ ख्याल, फूलकंवर–फूलमती रौ ख्याल इत्याद घणा चावा ख्याल है। आं प्रेमी–चरित्रां बाबत इतिहास में भी कीं न कीं लेखौ–जोखौ या कै उल्लेख मिळै।

(ग) इण प्रकार रा प्रेम प्रधान ख्यालां में दरसाया प्रेमी चरित्र इतिहासू नीं होय'र वरग–विसेस या कै सामान्य नर–नारी रौ प्रतिनिधित्व करता दीसै। इसा चरित्रां में व्यक्तिवाची नाम नीं मिळै। इणरी ठौड़ संबंध सूची या कै सामान्य नाम मिळै। इसा ख्यालां में चरित्रां सूं सामाजिक प्रवृत्तियाँ अर हालात घणै असरदार ढंग सूं उजागर करीजीया है। इसा ख्याल अेक कांनी सामाजिक–विचारधारावां अर भावनावां नै घणै फूटरापे सूं उद्घाटित करै तौ दूजी कांनी समाज में पसरियौड़ी अनेकूं विकृतियाँ भी देखणियां सांमी राखै ताकि लोक वां सामाजिक बुराईयां सूं बच सकै। इसा ख्यालां रौ समाज सास्त्रीय दीठ सूं घणौ महत्त्व है। आं ख्यालां में सीलवंती–पतिव्रता नारियां रौ सील–धरम घणै ऊजळै अर आदर्स रूप में दरसाईजियौ है, तौ कैई ख्यालां में पथभ्रस्ट मिनखां अर लुगायां रा दोगला चरित्र ई सामी आवै है ताकि भावी पीढी इसी मनोविकृतियाँ सूं सबक ले सकै, बच सकै अर इण भाँत समाज में निरोगी परम्परावां कायम व्है। इण तरै ख्यालां में जैनै खसम रौ ख्याल, सेठ–सेठांणी रौ ख्याल, कंवर–कलाळी रौ ख्याल, काकी–जेठूतै रौ ख्याल, पतिव्रता अर सहजादै रौ ख्याल, चितारै रो ख्याल इत्याद घणा चावा ख्याल है।

सगळी भाँत रा प्रेम प्रधान ख्यालां में नायक–नायिकावां रै फूठरापै रा नख–सिख वर्णन मिळै। सगळा ई प्रेम प्रधान ख्यालां में वर्णित नायिकावां री सुन्दरता में अेकरूपता मिळै। अैड़ौ लखावै कै पद्यात्मक रूप वर्णन अेक जिसौ इज है, फगत

नायिका रौ नांव ख्याल रै हिसाब सूं बदळीजियौ है। आं ख्यालां में प्रेम–भाव नै लेयनै भी खूब चर्चा करीजी है। साचै प्रेम नै अणूंतौ बढ़िया बतायौ है अर वासनामय प्रेम नै महाघटिया बतायौ गयो है। इसा ख्यालां में सिकार रा बरणाव भी मिळै तौ नायक री मामीया या काकी री इसी मैणियां (व्यंग्य–वाक्य) भी मिळै, जको नायक नै विचलित करै अर अबखै मारगां चालण सारू प्रेरित करै। इसा ताना (व्यंग्य वाक्य) किणी सुंदरी कै नायक री बाळपणै री परणेतण (जकी आजतांई आपरै पीहर में इज बैठी काग उडा रैयी है) नै लावण बाबत दिरीजिया है। केसरसिंघ रै ख्याल में आयोड़ी अै ओळियां इण दीठ सूं मनन–जोग है –

''सूरतणी सिकारां तांई, सीख मांगबा आया।

फूलांदे रांणी का म्हांनै, मोसा वचन सुणाया।।''

प्रेमीजनां नै आपरै प्रेम में मदत लेवण सारू चतुर दास दासियां, अनुभवी मंत्रियां या कै बागां री रूखाळी राखण वाळी मालण रै भरोसै रहणौ पड़ै। अै प्रेमी दिलां नै मिळावण में मदत भी करै अर वां पर आंकस ई राखै। प्रेमी जन आं मदतगारां नै घणमूंघी चीजां बगसीस करता ई निजर आवै। अेक दाखलो इण भाँत –

''हार गळै रौ बगस दूं अे तूं कंवर मिळादे आंण।

जीवत जस भूलूं नहीं, म्हनै महादेव री आंण।।''

आं ख्यालां में बाग–बगीचां अर मेळां–खेळां रा चित्रांम ई मिळै, जठै प्रेमीजन आपसरी में मिळै। आं प्रेम प्रधान ख्यालां में सौतण रा ईसका रा जथारथ चित्रांम ई मिळै–

''मत कोई जुग में बात करजो

सौक रै बेवार की

सौक कैकयी कौसल्या नै

कर दीनी लाचारकी।''

अै प्रेम प्रधान ख्याल अणमेल ब्याव री हँसी उडावता ई लखावै। ब्याव सारू आखतै पड़तै बूढै डैण रै सरीर री सिथिलता अर विद्रूपता रौ वर्णन आं सबदां में देखीजै–

''नाक झरै लाळां पड़ै, स कोई बींदज हीरालाल।

मूंढा मांय माख्यां बड़ै, स कोई सूखा पड्या है गाल।।''

राजस्थान रा प्रेम प्रधान ख्यालां में नारी रा आदर्स पत्नी, त्यागमयी माता अर हर दीठ सूं भाई रौ सुभ चावण वाळी बैन रो रूप ई मिळै तौ छळगारी अर कामण–कळैगारी कांमणी रा डोळ भी सांमी आवै। आं ख्यालां में श्रेय अर हेय दोनूं ई पहलू दरसाईजिया है। कुळ मिळायनै ज्यादातर ख्यालां में समाज–विरोधी तत्त्वां री बुराई साथै धरम अर सद् वृत्तियां री विजय दिखाई जी है।

12.4. अभ्यास रा सवाल

(1) राजस्थानी ख्यालां री विससेतावां उजागर करौ।

(2) राजस्थानी में प्रेम प्रधान ख्याल किण भांत रा है?

(3) रावळां री रम्मत रा प्रमुख स्वांगां रा नांव लिखौ।

(4) 'तुर्रा–कलंगी' लोक–नाट्य में तुर्रो अर कलंगी किणरा प्रतीक हैं?

(5) वीरता प्रधान ख्यालां में वर्णित वीरां री उल्लेखजोग अर अंजसजोग विसेसतावां बतावौ।

12.5. संदर्भ ग्रंथ

1. मालवी लोक–साहित्य – डॉ. श्याम परमार
2. लोक–साहित्य विज्ञान – डॉ. सत्येन्द्र
3. लोक–साहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
4. लोक–साहित्य : स्वरूप और सिद्धांत – डॉ. एस. डी. चारण

इकाई 13

राजस्थानी लोकोक्ति–साहित्य : विवेचन

13.0 उद्देस्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 (1) कहावत : परिभासा

13.3 कहावत परम्परा अर राजस्थानी कहावतां

13.4 कहावतां री विसेसतावां

13.5 कहावतः वर्गीकरण अर विवेचन

13.5.1 मिनखा जूण संबंधी राजस्थानी कहावतां

13.5.2 समाज अर जात संबंधी कहावतां

13.5.3 अेतिहासिक कहावतां

13.5.4 भोजन अर स्वास्थ्य संबंधी कहावतां

13.5.5 लोक विस्वास अर सुगन संबंधी कहावतां

13.5.6 प्रकृति अर बिरखा संबंधी कहावतां

13.5.7 ईस दरसण संबंधी कहावतां

13.6.1 मुहावरा : परिभासा अर परिचय

13.6.2 मुहावरा – कहावत में फरक

13.6.3 मुहावरा – उदाहरण अर अरथ

13.7.1 पहेलियां : परिभासा अर स्वरूप

13.7.2 राजस्थानी पहेलियांः

13.8 सारांस

13.9 अभ्यास रा सवाल

13.10 संदर्भ ग्रंथ

13.0. उद्देस्य

राजस्थानी लोक मानस रै हियै अर बुद्धि में ज्ञान रौ अखूट भंडार भर्‌यौड़ौ है जिकौ उणरी वाक् सगती सूं प्रकट हुवै। औ ज्ञान अनुभव सिद्ध है अर पीढ़ियां री परम्परा सूं परखीजियौ है। आ साहित्यिक सामग्री कठैई लिख्यौड़ी कोनीं पण जणै–जणै री कंठहार बण्यौड़ी है। आज रौ जन मानस भलांई उणनै स्वीकार नीं करै या उणनै पुराणौ या गंवारू कैय अस्वीकार

कर देवै पण ज्ञान री आ अनुपम धरोहर जुगां जुगां सूं मानखै नै सीख ई नीं दैवै उणरै ज्ञान री ओळखांण पण करावै है।

साहित्यिक परम्परा में इण साहित्य नै लोक साहित्य रौ नाम दिरीज्यौ है जिकौ आभिजात्य सूं घर्णो अळगौ है। आ साहित्यिक परम्परा घणी समृद्ध रैयी है।

लोक कथा, लोक गाथा, लोक गीत, लोक नाट्य, लोकोक्ति साहित्य इणरी चावी अर खास विधावां है।

लोक मानस रै जीवण री कोई पळ नीं है जठै वो लोक साहित्य री किणी विधा सूं अळगौ हुयौ है या हुय सकै है। अे सगळी विधावां मानखै रै संस्कारी अर व्यावहारिक जीवण सूं सीधे रूप में जुड्यौड़ी है। हरैक विधा रौ न्यारौ सरूप अर न्यारी विसेसता अर विसय भी न्यारा–न्यारा है।

लोक साहित्य री इणा विधावां में लोकोक्ति साहित्य री सिमरध परम्परा है जिणमें कहावतां, मुहावरा अर पहेलियां रा न्यारा न्यारा रूप देखीजै है। इण इकाई में लोकोक्ति साहित्य री जाणकारी दिरीजी है, जिणमें कहावतां, मुहावरा अर पहेलियां रौ अरथ, परिभासा, रूप अर विसेसतावां नै समझावतां सगळी विधावां रो वर्गीकरण भी करीज्यौ है।

13.1 प्रस्तावना

जद सूं मिनख आपरी वाणी री सत्तां सूं खुद रा ज्ञान नै दूजां तक पुगावण रौ अर दूजां रै ज्ञान नै अंगेजण रौ उद्देस्य लेय आगै बध्यौ है, साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां रौ विकास हुयौ है। हरैक मिनख री सोचणै, बोलणै अर समझणै री सगती न्यारी हुवै इण वास्तै वो आपरी इच्छा या सामरथ मुजब साहित्य री उण विधा रौ चयन करै अर आपरी बात नै दूजां तक पुगावै। मानखै री इणी वृति रै कारण साहित्य री विधावां रौ विकास हुयौ है।

लोक साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां है, जिणमें लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोक नाट्य, अर लोकोक्तियां खास है। इणां मांय सूं लोकोक्ति साहित्य री सबसूं छोटी विधा कैयी जा सकै जठै बात कैवण वाळौ आपरी बात नै कम सूं कम सबदां में कैय देवै पण खासियत आ है कै उणरौ अर प्रभाव घणौ व्यापक अर गहरो हुवै।

लोकोक्ति में कहावत, मुहावरा अर पहेलियां नै गिणाइजै है। कहावत अर मुहावरां में कैवण वाळै री बुद्धिमता री ओळखांण हुवै अर पहेली में जिणसूं पहेली पूछीजै उणरी बुद्धि री परीक्षा हुवै। गहरौ अनुभव अर सबदां री गहरी पकड़ सूं सटीक बात कहीजै, जद ही इणारै उपयोग री सफळता सार्थक गिणीजै। इणरै साथै–साथै पहेली में अर्थ रौ सटीक छिपाव नहीं हुवै तौ पछै पहेली पूछण रौ सार नही, क्यूंकै जे बात प्रकट हुय जावै या अर्थ सामीं आय जावै तो पहेली रौ उद्देस्य खतम हुय जावै। इण वास्तै सबदां रौ सटीक चयन उणांरी खासयत कैयी जा सकै।

राजस्थानी जनमानस में इण विधा री महताऊ ठौड़ रैयी है जिकी इण विचार विस्तार सूं सामी आवै।

13.2 कहावत : परिभासा

कहावत उण खास सबदां रौ समूह है जिणरौ खास संकेत रै अर्थ में प्रयोग करै।

उक्ति वैचित्र्य सूं जुड़्यौ सबदां रौ वो समूह जिकौ किणी अेक कथन री साख भरै अर कैवण वाळौ आपरै अनुभव सूं छिप्यौड़ै अर्थ नै बिना विस्तार दियां सगळां नै समझाय देवै।

'कहावत' सबद सारू कैई कल्पनावां करीजी है, जिणमें 'कहाप्' धातु में 'त' प्रत्यय जुड़णौ, 'कथावत्' सूं विस्तार, 'कहना आवत' खास है। राजस्थानी परम्परा में कहावत सारू कैवत, कहावत, कुहावट, कुवावट, 'कुहावत' इत्याद सबद काम में लारीजै है। कहावत वो पारम्परिक वाक्य है जिकौ अनुभव सूं तप्यौड़ौ हुवै, सांच में ढळ्यौड़ौ हुवै अर जिणमें पीढ़ियां रो अनुभव मिळ्यौड़ो हुवै।

कहावतां री परम्परा घणी प्राचीन रैयी है। वैदिक जुग सूं इज कहावतां री परम्परा सरू मानीजी है। ब्राह्मण ग्रंथा में भी कहावतां कहीजी है। बां ग्रथां में कहावतां 'सूक्तियां' या 'सुभाषित' सबद रौ प्रयोग करीज्यौ है।

कहावतां भासा अर खेतर री संस्कृति रा खणकता गहणा रा पिटारा है। अे चिर काल रा अनुभवां री गम्भीरता रा निचोड़ है। कहावतां ग्यान रौ प्रकास है। आ प्राणवन्त विधा है जिण मांय अनुभव रो जथारथ, अनुभूति री सूक्ष्मता अर अभिव्यक्ति री कौसलता री तिरवेणी विद्यमान है। कहावतां रौ मुख्य अरथ 'परम्परा सूं जुड़यौड़ौ है। कहावता परम्परा–सूं पळी अर लोक सूं स्वीकार करियौड़ी उक्ति है। आ बडेरां रै अनुभूत करियौड़ै ग्यान रौ झरणो अर अक्षयकोस है। कहावतां पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित मौखिक परम्परा है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल रै मुजब 'कहावत **मानवीय ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र घनीभूत रत्न हैं।**' डॉ. उदय नारायण तिवारी लिखियौ है– **'लोकोक्तियाँ अनुभूत ज्ञान की निधि हैं।'** इण सारू कहावतां लोकचेतना अर समूह मानस री अनुभूतियां रौ प्रतिफल है। कहावतां लोक जीवण सूं जुड़ियौड़ी है। जदई कहावतां हियै नै बिंधै तो कदैई हंसावै, कदैई बहलावै तौ कदैई मूरखता माथै तीखो व्यंग्य करै।

कहावतां सूं मिनख री वाणी री चतुरता रौ पतौ चालै। इणरै मुजब किणी भी उक्ति मांय सगती आ जावै। कहावतां सूं दैनिक उद्योग री जटिल समस्याओं रौ सुळझवाड़ौ भी करियौ जा सकै। कहावतां आपणी अमूल्य निधि है। कहावतां मांय अनुभूति, निरीक्षण अर अभिव्यक्ति त्रिवेणी, लघुता अर सारगर्भिता, प्रभावसाली अर लोक–रंजकता, सरस सैली, अग्यात सिरजणहार इत्याद विसेसतावां रौ समाहार है।

'बाइबिल' मांय ज्ञानी लोगां री उक्तियां नै कहावतां कयौ गयौ है। कहावतां ज्ञान रौ सार है आ बात जूबर्ट नांवै विद्वान् कही है। पास्चात्य विचारक ट्रेचर रै मुजब–''लाकोक्तियां अर कहावतां अैड़ा कथन है जिणां रा रचणाकार अनाम पण अज्ञात होवै है।''

कहावतां देस रै इतिहास अर संस्कृति रौ अटूट खजानौ मांनीजै। राजस्थानी कहावतां घणी अमोली है। किणी ज्ञान री बात नै दिजावण री कळा रा गुण कहावतां में देख्या जा सकै है। इण खातर कहावतां नसीहत री कळा गिणीजी है। लोक कहावतां गैरी चोट करण वाळी अचूक व्यंग्य रचनावां होवै। कहावतां में अनुभव अर आंख्यां देख्या सांच रौ सार भर्‌यौ

होवै। कहावतां आम बोलचाल री भासा में होवै अर हियै माथै गैरौ असर करण वाळी है।

13.3 कहावत परम्परा अर राजस्थानी कहावतां

राजस्थानी कहावत परम्परा कठैई–कठैई तो वैदिक परम्परा नै भासा रा अन्तर रै साथै अंगेजी है ज्यूं 'चक्षुर्वे सत्यम' सूक्ति नै कहीज्यौ 'आंख्या देख्यो परसराम कदै न कूड़ौ होय'। इणी भांत 'रामायण' अर 'महाभारत' री उक्तियां नै भी राजस्थानी कहावत परम्परा में देखी जा सकै। ज्यूं–

रामायण री उक्ति

आम्रं छित्वा कुठारेण निम्बं परिचरेतु कः।
यश्चैन पयसा विंच्चन्नैवास मधुरो भवेत्।।

राजस्थानी कहावत

नीम न मीठो होय सींचौ गुड़ घी सूं।
ज्यांरा पड़ियां सुभाव जासी जीव सूं।।

महाभारत री उक्ति

सर्वोहि मन्यते लोकः आत्मांनं बुद्धिमतरम्।

राजस्थानी कहावत

परायै धन रौ अर आपरी अक्कल रौ कांई अंत।

'योगवाशिष्ठ' री उक्ति

यावत्तिलम् तथा तैलम्।

राजस्थानी कहावत

तेल तिलां सूं निकळै

13.4 कहावतां री विसेसतावां

राजस्थानी कहावतां घणी अमोलक है। अै कहावतां नीति सास्त्र री भांत मिनखां जूण रा सगळा पक्षां नै लेयर' चालै मिनख जीवण रौ सगळौ सांच आं कहावतां में समेटीजियौ है। इण सांच रै कारण इज कहावतां समाज में आपरी ठावी ठौड़ बणा राखी है।

समाज में मिनख रै व्यवहार नै तोलण रा कैई सूत्र आं कहावतां में दीखै है। लोक व्यवहार रौ पारखी मिनख आपरी कहावतां सूं दूजै मिनख नै सहजभाव सूं कहावत री साची बात समझाय सकै। कहावतां में लाक्षणिकता अर व्यंजना दोन्यूं समायोड़ी रैवै। कविवर अर भासाविद् जिण बात नै सहज नीं समझाय सकै, कहावत बो काम घणी सहजता सूं कर देवै।

कहावतां मिनख रै मरम गहरी चोट करै। कहावतां रै व्यंग–बाण सूं बींधीज्यौड़ौ मिनख कीं कैवण या कै कुतर्क करण जोगौ नीं रैवै। इण बात नै सास्त्रीय ढंग सूं कैय सकां' कै कहावतां री अप्रस्तुत योजना रै अभिव्यंजनात्मक विधान सूं घायल मिनख किणीं नै कोई

बात कैवण जोगौ नीं रैवै अर नीं वो कोई बात कैवण रौ साहस ई कर सकै है।

'अनुभूत' सत अर परतखता कहावतां री सबसूं मोटी विसेसता कैयी जा सकै। जिकौ आदमी आपरै अनुभव सूं किणी तथ्य नै परख्यौ है वो इज आपरी बात नै आछै ढ़ंग सूं राख सकै अर कैय सकै। उणरी बात रौ असर भी हुवै।

भासा री सरलता कहावतां री खास बात गिणीजी है। आं कहावतां रौ प्रयोग करण वाळौ आदमी छंद बंधनां सूं मुक्त हुवै, वो कठिन भासा रौ प्रयोग भी कोनीं करै अर थोड़ा सबदां सूं आपरी बात नै समझावण री कोसीस करै। सरल, सीधा, सपाट अर थोड़ा सबदां में बात नै सामीं राखण रौ काम कहावत करै।

कहावतां, लोक साहित्य री चावी विधा है, इण वास्तै ज्यूं लोक साहित्य री हर विधा व्यक्तिवादितां सूं अळगी हुवै, कहावतां भी व्यक्तिवादिता सूं न्यारी हुवै उणांमें किणी खास मिनख री छाप नीं हुवै। लोक ई इणरौ सिरजक, लोक ई उणरौ मानणहार भी हुवै। लोक सीख रौ महताऊ दायित्व भी आं कहावतां सूं हुवै जठै थोड़ा'क सबदां में मिनख नै सही बात रौ ज्ञान हुय जावै।

13.5 कहावतः वर्गीकरण अर विवेचन

कहावतां रा न्यारा–न्यारा विसय रिया है। यूं तो हरैक कहावत अपणै आप में अलग महत्त्व राखै। वांरा न्यारा–न्यारा विसय सामीं आय सकै। डॉ. श्याम सुंदर कहावतां रा विसयानुसार, स्थानानुसार, भासानुसार अर जाति अनुसार भेद मांनै। डॉ. कन्हैयालाल सहल कहावतां रै रूप अर विसय नै आधार मान'र इण मुजब वरग थरपिया है –

(1) ऐतिहासिक कहावतां

(2) स्थान संबंधी कहावतां

(3) समाज संबंधी कहावतां

(4) ज्ञान और साहित्य संबंधी कहावतां

(5) धरम अर दरसण संबंधी कहावतां

(6) खेती संबंधी कहावतां

(7) बिरखा संबंधी कहावतां

(8) सुगन संबंधी कहावतां

डॉ. सोहनदान चारण कहावतां रा दो भेद गिणाया है –

(1) मानव अर मानवीय जीवण सूं संबंधित कहावतां

(2) ईस अर प्रकृति सूं संबंधित कहावतां

अठै राजस्थानी कहावतां रौ विसयवार वर्गीकरण कर'र वां विसयां सूं संबंधित कहावतां देखण जोग है –

(1) मिनखाजूण संबंधी कहावतां

(2) समाज अर जातियां री कहावतां

(3) अेतिहासिक कहावतां

(4) भोजन अर स्वास्थ्य री कहावतां

(5) लोक विस्वास अर सकुन री कहावतां

(6) प्रकृति अर बिरखा सूं संबंधी कहावतां

(7) भगवान संबंधी कहावतां

आं विसयां सूं अलग भी कैई कहावतां है ज्यांनै किणी अेक विसय में भेळी नीं कर सकां। इणसूं ओ पतौ लागै'क कहावत साहित्य घणौ विसाळ है।

13.5.1 मिनखा जूण संबंधी राजस्थानी कहावतां

मिनखां सूं जुड़ी कहावतां में आदमी अर लुगायां सूं जुड़ी वांरै गुण अर लखणां संबंधित घणी कहावतां है। आं में कैई कहावतां टाबरां री भी है। आं में कठैई – कठैई सीख भी दिरीजी है –

- मिनख चाइजै रूंवाळौ, लुगाई चाइजै सूंवाळी।
- मिनखां री माया, रूखां री छाया।
- तिरिया रै दो आसरौ, कै पीहर कै सासरौ।
- टाबरां सूं घर चालै, तौ बाबौ बूढ़ी क्यूं ल्यावै।
- लुगाई रौ न्हावणौ, मरद कौ खावणौ।
  बेटी री मां राणी, भरै बूढ़ापै पांणी।

13.5.2 समाज अर जात संबंधी कहावतां

- बींद मरौ बीदंणी मरौ बामण रौ टक्कौ तय्यार
- राजपूत री जात जमी
- बाणियौ आंट में दै कै खाट में
- आगम बुद्धि बाणियो, पाछळ बुद्धि जाट।
- तुरत बुद्धि तुरकड़ौ, बामण सम्पट पाट।।

13.5.3 अेतिहासिक कहावतां

- तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार।
- तरवर जांही मोरिया, दारू ज्यांही मंस।
- पीथल धोळा आविया, बहुली लागी खोड़।
- पूरै जोबण पदमणी, ऊभी मुख्ख मरोड़
- प्यारी कहै पीथल सुणौ, धोळा दिस मत जोय।

नरां, नाहरा दिगंबरां पाक्यां ही रस होय।।

- मारवाड़ मनसूबै डूबी, पूरब डूबी गाणां सूं।।
- मारवाड़ नर नीपजै, नारी जैसळमेर।
- तुरी तो सिंधा सांतरा, करहल बीकानेर।।

13.5.4 भोजन अर स्वास्थ्य संबंधी कहावतां

मिनख जीवण रै वास्तै भोजन करै, पण किस्यौ भोजन अर किण भांत रौ भोजन उण सारू ठीक रैवै, उण भांत री कैई कहावतां देखण में आवै। अै कहावतां हरेक मिनख सारू घणी उपयोगी है –

- जैड़ा खावै अन्न वैड़ा चालै मन्न।
- पाणी पीजै छांण, मिंतर कीजै जाण।
- जीम – जीम दौड़ै वांरै लारै मौत दौड़ै।

किस्या महीना में किसी चीज नीं खावणी चाइजै उणरौ विस्तार सूं लेखो है। जे आंरौ प्रयोग कर्‌यौ जावै तो मनुज निरोगो रैवै।

- चेतै गुड़, बैसाखै तेल, जैठै पंथ, आसाढे बेल।
- सावण साग, भादवै दही, क्वार करेला, काती मही।
- अगहन जीरो, पूसे धाणा, माहे मिसरी फागण चिणा।।

13.5.5 लोक विस्वास अर सुगन संबंधी कहावतां

जीवण में मिनख कैई विस्वास लेय'र चालै अर वां सूं उणरा कैई काम बणै। घर सूं बारै निकळतां अर किणी काम नै सरू करतां जिण भांत रा सुगन हुवै वांसू उण काम रौ कांई नतीजो हुय सकै, अे बातां कहावतां में बतायौड़ी है –

- आटौ, खाटौ, घी घड़ौ, खुल्ला केसां नार।
- डावा भला न जीवणा जरख ल्याळी सुनार।।
- खर डावा, विस जीवणा।।
- आंख फ़डूकै दहणी, लात ममूकां सेहणी।।
- छींकत खाजै, छींकत पीजै, छींकत रहिजै सोय।
  छींकत परघर कदी न जाजै, लाठी बाजी होय।।
- खरच रा मोटा भाग।
- काणौ, कुडंडौ, काबरौ, ना छाती पर बाळ।
  दिनूंगै दरसण बुरा, दोपारां ही टाळ।

- जीमणौ मां रै हाथ रौ हुवौ भलांई जहर ही।
  रैणौ भायां में हुवौ भलां बैर ही।
  चालणौ गैलै रौ हुवौ भलां फैर ही।
  धीणौ भैस रौ हुवौ, भलां ई सेर ही।।

13.5.6 प्रकृति अर बिरखा संबंधी कहावतां

राजस्थान प्रदेश में बरखा रौ घणौ महत्त्व है, बिरखा नै राजस्थानी जनमानस किंया भूल सकै। लोक कहावतां उणरौ सबसूं मोटौ प्रमाण है। आं कहावतां में खेती, बिरखा अर प्रकृति रा न्यारा–न्यारा चितराम मांडीज्या है –

- पग पूगळ, सिर मेड़ता, उदरज बीकानेर।
  फिरतौ घिरतौ कोटड़ै, ठावौ जैसळमेर।।
- धन खेती, धिक्क चाकरी।
- घड़लां पाणी ऊकळै, चिड़िया धूड़ में न्हात।
  बिरखा नैड़ी आय रयी, आज या परभात।।
- सुकर वारी बादळी, रही सनीचर छाय।
  डंक कहै अे भडणी, बिन बरस्यां न जाय।।
- आगव सूजै सांडणी, दौड़ै थकां अपार।
  पग पटकै बैसै नहीं, जद मेह आवण हार।
- कीड़ी मुख में अंड ले, दर तज भूमि भमंत।
  बिरखा रितु विसेस यो, जळ थळ खेळ भरंत।।
- बुध बावणी, सुकर लावणी।
- खेती पातनी वीनती, मौरां तणी खुजाळ।
  जे सुख जावै जीव रौ, हाथौ हाथ संभाळ।।

13.5.7 ईस दरसण संबंधी कहावतां

राजस्थानी जनमानस आस्तिक समाज है अर ईस्वर री सत्ता में इणरौ गहरौ विस्वास है। इण संसार में जिकौ कीं हुवै बो ईस री इच्छा अर सगती सूं हुवै। अठै प्रभु रै रूप में राम री कल्पना करीजी है, राम ईस्वर रौ रुप है। भगवान री सत्ता, सूं जुड़ी कैई कहावतां घणी चावी है। ज्यूं –

- सै राम देखै है।
- आंधै री माख्यां राम उड़ावै।
- रामजी रै घरै न्याव है।

- ईस री सत्ता है अर वो ई पालणहार है।
- चूंच दियौ बो चुग्गौ देसी।
- उगसी जिकौ आथमसी।

आं विसयां सूं न्यारी भी केई कहावतां देखी जा सकै। घणकारी कहावतां में कथावां भी समाचौड़ी रैवै, आ यूं भी कैय सकां कै कहावतां कथावां रौ रूप धारण कर लेवै अर प्रचलन में आय जावै।

राजस्थानी कहावतां घणी विसद् है। जिणरौ खुद रौ अेक न्यारौ विधान है। लोक ई इणरौ सिरजक है अर वो इज उणसूं ज्ञान लेवै है। जीवण सूं जुड़ी आ साहित्यिक विधा आपरै सार रूप में सरल भासा में जणै–जणै नै सीख देवै। उणनै उत्तम जीवण सारू प्रेरणा देवै।

13.6.1 मुहावरा : परिभासा अर परिचय

कोई अेक बात, ओळी, उक्ति या कीं आखर किणी कारण सूं आपरै मूळ अर्थ नै छोड दूजौ अर्थ देवण लाग जावै वो सबद समूह, वाक्य या वाक्यांस मुहावरौ कहीजै।

किणी मिनख री कोई बात आदत बण जावै उण आदत सारू भी कहीजै – मुहावरौ पड़ग्यौ। मुहावरा रौ प्रयोग हमैस वाक्य में हुवै अर वो वाक्य रौ हिस्सौ बणै। स्वतंत्र स्वरूप में वो आपरौ अर्थ देवै पण उणरै प्रयोग री सार्थकता व्यंजना सूं इज हुवै।

13.6.2 मुहावरा अर कहावत में फरक

राजस्थानी भासा अर लोक व्यवहार में कहावतां अर मुहावरां रौ प्रयोग व्यापक सरूप में हुवै। कैई वार कहावतां अर मुहावरां नै अेक इज मान लियौ जावै जद'कै वां दोन्यां में फरक है। हिन्दी अर संस्कृत में मुहावरै सारू कैई सबद काम में लिरीजै ज्यूं–वाग्धारा, वाग्रीती, प्रयुक्तता, रमणीक अर रूढ़ि सबद रौ भी प्रयोग हुवै। कहावतां रा रूप तो संस्कृत अर वैदिक साहित्य में दीसै, पण मुहावरां रौ प्रयोग देखण में कम आवै।

कहावत रौ अर्थ स्वतंत्र रूप सूं सामीं आवै। स्वतंत्र रूप में मुहावरौ अभिधात्मक अर्थ तो देवै पण लाक्षणिक अभिव्यंजना नीं हुवै, उणनै किणी वाक्यांस सूं जुड़णौ पड़ै। कहावत रै सरूप में कदैई बदळाव नीं हुवै जद'कै मुहावरां रै वाक्यां में काल, पुरूस, वचन अर व्याकरण रै प्रभाव सूं बदलाव हुय जावै।

13.6.3 मुहावरा – उदाहरण अर अर्थ

अक्कल लारै लट्ठ लियां फिरणौ	–	मूर्खता पूर्ण काम करणौ
अंगूठौ दिखावणौ	–	कीं नी देवणौ
आंख दिखावणी	–	गुस्सै सूं देखणौ
आंख्या खुलणी	–	असलियत सूं चकित हू जावणौ
आग लगावणौ	–	झगड़ौ करावणौ

आडा हाथां लेवणौ	–	खरी खरी कैवणौ
आसमान सूं बातां करणी	–	घमण्ड करणौ
कमर टूटणौ	–	निरास हुवणौ
काळजौ ठंडौ करणौ	–	संतुस्ट करणौ
कान भरणा	–	किणी रै खिलाफ दूजा नै बात कैवणी
काम आवणौ	–	युद्ध में काम आवणौ/मरणौ
कुए भांग घुळणौ	–	सगळां री बुद्धि खराब हूवणी
गळौ काटणौ	–	नुकसाण पुगावणौ
गोडा देवणौ	–	दूजां रौ नुकसाण करणौ
गोडा टेकणा	–	हार मान जावणौ,
चुड़ियां पैरणी	–	डरपोक बणणौ
झक मारणौ	–	समय खराब करणौ
ठिकाणै लगावणौ	–	मार देवणौ
डकार जावणौ	–	माल हड़प जावणौ
तूं–तूं मैं–मैं करणौ	–	झगड़णौ
थूक'र चाटणौ	–	कैय'र नट जावणौ
दिन काटणा	–	समय नै कियां ई काटणौ
नाक रगड़णौ	–	गरजां करणी
नाक राखणौ	–	इज्जत बचावणी
पाचूं आंगळियां घी में	–	आणंद में रैवणौ
बात बणावणौ	–	झूठी बात करणीं
मन रा लाडू खावणा	–	उड़ती कल्पना करणी
हाथ पसारणौ	–	सहायता सारू प्रार्थना
हाथ पीळा करणा	–	ब्याव करणौ (बेटी रौ)
रफूचक्कर हुवणौ	–	गायब हुय जावणौ।

इण भांत आ बात कैयी जा सकै' कै मुहावरा बात में चमत्कार लावै अर बात में व्यंजनात्मक सैली रौ प्रभाव बढावै।

13.7.1 पहेलिया : परिभासा अर स्वरूप

मिनख हमैस आपरै ज्ञान रौ विस्तार चायौ है। वो जित्तौ जांणै उणसूं ज्यादा जाणणौ चावै अर आपरै ज्ञान री ओळख दूजां नै भी करावणी चावै। जद सूं ज्ञान री सोध–खोज हुयी

या मिनख आपरी खोळी सूं वारै आय बह्मांड या जगत् नै जाणणौ चायौ अर विकास करणी चायौ, उणरी प्रस्ठभूमि में पहेली रौ भाव पुख्ता सरूप में रह्यौ है। मैं कुण हूँ? जगत् कांई है? इणरी रचना कुण करी? इणरौ रहस्य कांई? अै इस्या सवाल है, जका मिनख रै मन में आवै, अै सवाल ई पहेली रौ विकास करियौ है।

आपरै अर्जित ज्ञान नै दूजै तांई पुगावण वास्तै भी मानखै रौ मन घणौ उत्साही रयौ है इण वास्तै वो दूजां रै मन में जिज्ञासा जगावै, आपरी बुद्धि रौ चमत्कार दिखावै, दूजां री परीक्षा कर खुद नै सर्वश्रेस्ठ सिद्ध करणौ चावै। पहेली इण बुद्धि परीक्षा में सहायक हुवै। इणी'ज कारण सूं समाज अर साहित्य में पहेली रौ प्रयोग हुवतौ आयौ है। यूं इण में मनोरंजन रौ भाव भी है पण बुद्धि परीक्षण रौ सबसूं मोटौ आधार इणमें गिणीज्यौ है।

पहेली सबद रौ विकास 'ब्रह्मोदय रै पर्याय अर 'प्रहेलिया' रै तद्भव रूप सूं हुयौ है। वैदिक कान में यज्ञ सूं पैली ब्रह्मोदय पूछ्या जावता। ओ इज कारण है आज भी कैई जातियां में ब्याव सूं पैली पहेलियां पूछीजै है।

मध्यकाल में जद सूं संतकाव्य लिखीज्यौ उणमें तौ इण तरै री पहेलियां रौ घणौ विकास हुयौ। दरसण सूं जुड़या कैई तत्त्व आं पहेलियां सूं सामीं आया है।

जद सूं पहेलियां लोक सूं जुड़ी इणा पहेलियां रौ न्यारौ ई सरूप निखरनै सामीं आयौ। राजस्थानी लोक साहित्य में इणां नै 'आडी' रौ नाम दियौ गयौ है। आं पहेलियां सूं जुड़या कैई गीत भी घणा चावा हुया है जिणमें 'रळी बधावणौ', 'अरथ वाळौ सुपनौ', 'आमौ मोळियौ' गीत खास कया जा सकै।

राजस्थानी में इज नीं सगळी भरतीय भासावां रा लोक साहित्य रौ अध्ययन कर्यौ जावै तो बठै पहेलियां रा घणा रूप देख्या जा सकै। पहेलियां रा गद्य पद्य दोन्यूं सरूप देख्या जा सकै है। पहेली विकसित विधा है जिणमें जीवण रै व्यावहारिक ज्ञान दिखावण रौ अेक तरीकौ है।

पहेलियां घणखरी छंदबद्ध हुवै, कठैई–कठैई कथा रूप में भी देखण में आवै। बाळ मनोविनोद में पहेलियां रौ घणौ प्रयोग हुवै। राजस्थानी जनमानस में पहेलियां घुळी–मिळी है,। बुद्धि चातुर्य री परीक्षा पहेलियां सूं हुवै गांव में जद जंवाई आवै तौ गांव री सगळी लुगायां भेळी हुय'र जंवाई नै 'आडी' बूझै। अै आडियां गीतां में गायीजै जिणमें चुनौती हुवै। अेक गीत री बानगी इण भांत है। जिणमें गीत रै साथै साथै पहेलियां आय रैयी है। इण गीत में आ बात कहीजै'क चतुर हुवौ तो ढोला आं रौ अरथ बताय देवौ, अगर नीं बताय सक्या तो समझौ थै घास काटण जोगा ई हौ।

''नानड़िया जंवाई म्हारी आडी रौ अर्थ दौ''

थारी सूरता करौ नीं विचार अर्थ द्यौ।।

नौ जाया नौ पेट में ढोला, नौ नानेरै जाय।

मतो करूं तो फेर जणूं, काळ में कै खाय। (काचरै री बेल)

बाबो सूतो साळ में, कोई पग पळसै सूं बारे।

थै जाणौ तो बतायदो, नीं सागै वाळै ने बुझलो (दीपक)

बाप भलौ बेटो भलौ ढोला, पोतौ बड़ौ सपूत।

पड़पोतौ ओ जलमियौ ढोला, सोळा मूठी ऊत।। (दूध, दही, घी, छंछेड़ू)

बाप बेटी दो जणांजी, ज्यां बिच अकल नार।

चतर वो तो बताय दे ढोला, मूरख लूणीजै घास। (आरसी अर दर्पण)

नानड़िया जंवाई राजन, म्हारी आड़ी रौ अर्थ द्यौ।''

पहेलियां रा न्यारा–न्यारा विसय रह्या है। यूं जिण सूं आडी पूछीजै उणरै ज्ञान मुजब इज विसय रौ निर्धारण हुवै। कठैइ–कठैई भक्ति अर दार्सनिक तत्त्वां नै लेय भी आडियां देखीजै है। पहेलियां नै कोरौ मनोरंजन सूं इज जोड़णौ ठीक नीं है। औ ज्ञान रौ विस्तार करै अर बुद्धिमता री ओळखाण करावै।

13.7.2 राजस्थानी पहेलियां

राजस्थानी जन जीवण सूं पहेलियां रौ गहरौ रिस्तौ रह्यौ है इण वास्तै रोजमर्रा रा उपादानां सूं जुड़ी आडिया घणी दीसै अर वांरौ इज प्रयोग कर्यौ जावै है।

हुक्कै री पहेलियां

आया म्हारा पावणा, जाको अन्त न पार।

प्यालौ पाणी आग को, सारा धाप्या जाय।।

बांकी बांकी जळभरी, ऊपर डारी आग।

जदै बजाई बांसरी, निकळ्यौ, काळौ नाग।।

नीचै समंदर झूल झिलोरा, ऊपर मैली आग।

कान्ह बजाई बांसरी, निकस्यौ काळौ नाग।।

बिलोवणा सूं जुड़ी पहेलियां

अम्बर में बछेरौ नाचै, मूरी म्हारै हाथ।

नारियल

दाढ़ी वाळो डोकरौ, बिकै बाजार बजार।

देवा रै माथै चढ़ै इरौ करौ विचार।।

दीपक

बाबो सूतो उरलै घर में, टांग पसारी परलै घर में।

चाकी

अेक नार दो बालक, दोनू अेकै रंग।

अेक भाजै दूजौ सोवे, दोनूं अेकै संग।।

रिस्तां सूं जुड़ी पहेलियां

नाईका रै भाईका बात कहूं यूं हेटी।

ई री सासू म्हारी सासू आपस में मां बेटी।। (ससुर–बहू)

इण पहेलियां रा उत्तर भी कठैई–कठैई अणूंती चतुराई सूं दिया जावै

बरसा बरसी रात नै, भींजी सा बणराय।

झाड़यां पाणी चढ़ गयौ, हाथी घोड़ा न्हाय।

घड़ो न डूबो लोट्यौ, पंछी प्यासा जाय।।

उत्तर

ओस पड़ी थी रात नै, भींजी सा बणराय।

झाड़ियौ छाट्या जम गई, पसुआं पीठ भिजाय।

घड़ो न डूबे लौटियौ, पंछी यूं प्यासा जाय।।

छंदबध पहेलियां

पैलै थां वौ मरद, मरद सूं नार कहाया।

पड्या समंदर बीच, घाव बरछी रा खाया।।

ताता पाणी न्हाय, पाप सब धोय गमाया।

बारे निकल्यौ जदी, मरद का मरद कैवाया।। (मोठ, दाल अर बडौ)

पहेलियां कठैई–कठैई उत्तर तर्क रौ आधार लियां हुवै जिणसूं आ बात कहीजै'क ओ काम हुयौ या नीं हुयौ।

इण में गुरू चेला संवाद भी आवै ज्यूं –

पान सड़ै घोड़ौ अड़ै, विद्या बिसर जाय

कहो चेला किण दाय। (गुरूजी फेरी नहीं)

चोखौ बण्यौ न चूरमो, बोली आवै न दाय।

श्रोता सुण रीझै नहीं, कहो चेला किण दाय। (गुरूजी मिठास नहीं)

अे पहेलियां जिणां नै राजस्थानी लोक मानस में आडी, अड़बी या पाळी कहीजै, मानखै री बुधबळ अर उणरी तेज दिमाग रौ परिचय करावै। पहेलियां मनोरंजन तो करावै साथ ही ज्ञान रौ विस्तार करै, वाक् सगती में तेज अर चतुराई लावै। इण बाबत राम नरेश लिखै – ''पहेलियों का प्रमुख कार्य मन बहलाव से ही संबंध रखता है, मगर मात्र मनोरंजकता ही इसका सब कुछ नहीं हैं यह वक्ता की मेघ ज्योत्स्ना तथा श्रोता की ज्ञान सूझ के आलोक स्वरूप साधन हैं।''

13.8 सारांस

कहावतां, पहेलियां अर मुहावरा मानखै री बोली ब्यौवार साथै ई विकसित हुया है अर

धीरै–धीरै मिनख री बौद्धिक खिमता रा पर्याय अर परिचायक भी बणग्या है लघुता रौ सहारौ अर सीधी साधी सरल भासा रौ आधार लियां लोक साहित्य री अै विधावां जुगां–जुगां सूं मानखै रै साथै आगै बढ़ रैयी है। वांरौ मनोरंजन कर रैयी है, वारौ ज्ञान बढाय रैयी है, वांरै ज्ञान री ओळखांण कराय रैयी है।

13.9. अभ्यास रा सवाल

(1) कहावतां रौ अरथ अर विसेसतावां बतावता वांरै महत्त्व नै समझावौ।

(2) लोकोक्ति साहित्य में किसी–किसी विधांवां भेळी करीजी है? विगतवार समझावौ।

(3) राजस्थानी पहेलियां रौ परिचय देवौ।

(4) कहावतां अर मुहावरां रौ फरक उदाहरणां सूं समझावो।

13.10. सन्दर्भ ग्रंथ

(1) राजस्थानी लोकसाहित्य : नानूराम संस्कर्ता

(2) राजस्थानी लोकसाहित्य : डॉ. नारायणसिंह भाटी
(परम्परा पत्रिका अंक)

(3) राजस्थानी लोकसाहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन : डॉ. सोहनदान चारण

(4) राजस्थानी कहावतां : भाग 1 से 4 : मनोहरसिंह राठौड़

(5) राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

इकाई – 14

राजस्थानी लोक–वाद्य

14.0 उद्देस्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 लोक–वाद्यां रा प्रकार

14.2.1 घन–वाद्य

14.2.2 अनुरूद्ध वाद्य

14.2.3 'सुषिर–वाद्य'

14.2.4 तार वाद्य

14.3 प्रमुख राजस्थानी लोक–वाद्य

1. कमायंचौ, 2. खंजरी, 3. घुराळियौ, 4. सारंगी (–गुजरातण, धांनी, सिंधी, जोगिया,) 5. चिंकारा, 6. मोरचंग, 7. मुरला, 8. सुरिन्दा, 9. मादळ, 10. बरगू, 11. पाबूजी रा माटा, 12. बांकियौ, 13. दुकाळी, 14. डेरू, 15. पूंगी, 16. खड़ताळ, 17. जंतर, 18. रावणहत्थौ, 19. नागफणी, 20. रावळां री मादळ, 21. श्री मंडळ, 22. रमझौळ, 23. अलगोजौ, 24. नड़, 25. भपंग।

14.4 सारांस

14.5 अभ्यास रा सवाल

14.6 संदर्भ ग्रंथ

14.0 उद्देस्य

किणी भी प्रदेस रै लोक–साहित्य बाबत जाणकारी तद तक अधूरी गिणीजै, जद तक कै उण प्रदेस री भांत–भांत री लोक–कलावां रौ खरो ज्ञान नहीं व्है। भांत–भांत रा मांडणा, भित्ति चित्र, पड़ चित्र अर लोक–वाद्य नै जाणनै इज उण प्रदेस रै लोक–साहित्य नै गहराई सूं समझ सकां। इणरै टाळ आ बात भी सोळै ई आना साची है कै लोक साहित्य री कुछैक विधावां तौ इसी व्है, जिणा साथै जे कोई लोक–वाद्य नीं व्है, तौ वे विधावां अलूंणी अर अडोळी लागै। आं लोक–वाद्यां में थोड़ा वाद्य बणगट री दीठ सूं सास्त्रीय वाद्यां सूं कीं बातां में भलांई मेळ खावता व्हौ पण वां री खुद न्यारी इज ओळखांण व्है। इण इकाई में प्रमुख राजस्थानी लोक वाद्यां री जाणकारी दिरीजसी। राजस्थान रा आं लोक–वाद्यां री बणगट किण भांत री व्है ? आं नै बणावणियां किणी खास जात रा लोग इज व्है कै नीं ? वांनै बणावण सारू किसी–किसी चीज–बस्तां अर साधन बपरावणा पड़ै ? किसा किसा लोक–वाद्यां रौ उपयोग किसी–किसी खास जात रा लोग इज कर सकै अर किसा किसा लोक–वाद्यां रौ उपयोग आम–आदमी कर सकै ? आं लोक–वाद्यां री पूजन री कांई विधि व्है ? किसौ वाद्य कुणसी खास लोक–गाथा साथै या कै लोक–गीत साथै जुड़ियौड़ौ

है ? आं लोक–वाद्यां रै बोदा या कै जूनां हुयां पछै या कै वां में कीं टूट भाग हुयां, वां री पधरावणी कठै अर कींकर करणी ? आं री सार–संभाळ सारू कांई कांई सावचेती राखणी ? इत्याद सवालां बाबत इण इकाई में चरचा करीजैला।

14.1 प्रस्तावना

लोक–गीत अर लोक गाथा री कैवण रै साथै जद कोई लोक–वाद्य जुड़ जावै तौ गाथा री सोभा सांतरी बध जावै। कैई लोक–गाथावां रै साथै तौ लोक–वाद्य जुड़ियोड़ा होणा जरुरी व्है। रावणहत्थै नांवै लोक वाद्य रै बिगर जे पाबूजी री पड़ बांचीजै तौ वा साव अनओपती लागै। राजस्थान में पसुपालक इसी जातियां है, जकी कांकड़ में ढांढ़ा चरावती बखत मन री मौज पूरी करण सारू कोई लोक–वाद्य बजावै। इणसूं रिंधरोही री सूनियाड़ भी वांनै अणखावणी नीं लागै अर सूनै दोपार री बेळा ई सोरी कटै। अेक औ भी कारण है कै जे वे गवाळिया दोपार रा कीं नीं गावै या कै नीं बजावै तौ वांनै नींद आय जावै अर तद गायां– भैस्यां या कै बकरियां अर लरड़ियां कठी री कठी जावै परी। आपरै पसु धन री सावचेती सूं रुखाळी खातर वांरौ जागतौ रैवणौ घणौ जरूरी व्है। जे वे नींद ले लैवै तो गौधन री अर अेवड़ री रिछ्या जंगळी जानवरां सूं कुण करैला ? इतरौ इज नीं, इण मौकै खास बतावण री अर सराहण जोग तौ आ बात है कै आं रौ गौ धन या कै अेवड़ ई आं रै लोक–वाद्यां रै हेवा हुयौड़ौ व्है। आं जिनावरां सारू ई न्यारा–न्यारा लोक–वाद्यां री न्यारी–न्यारी धुनां रा सांवठा अर्थ व्है। वांरौ पसुधन भली भांत जांणै कै किसी धुन बाजै तद नाडी माथै पांणी पीवण नै जावणौ, दोपारां किसी धुन बाजै तद चरणौ छोड रूंखां री गहरी छिंया में जाय बैठणौ अर पाछी किसी राग छेड़ीजै तद उठ परो'र गास चरण लाग जावणौ अर सिंझ्या री बेळा किसै सुर में राग अलापीजतां भेळा हूय'नै गांव कांनी बहीर हुय जावणौ। कैवण रौ मुतलब औ कै गावणिया–बजावणिया ई नीं, अठां रौ पसुधन ई लोक–वाद्यां रा भांत–भांत रा सुरां नै हदभांत समझै अर उणी रै अनुसार चालै। अेक बात ओर भी कै रात रा ऊँटां री कतार लादनै लांबौ गांवतरौ करता कतारिया पिलाणियौड़ा ऊँटां माथै बैठा–बैठा रात रा सूनियाड़ नै मेटण सारू ई केई लोक–वाद्यां सूं भांत–भांत रा सुर या कै राग–रागणियां बजावता रैवै। अठै रा लोक–साहित्य में भी अैड़ी कितरी ई बातां–बिगतां मिळै, जिणमें बतायौड़ौ है कै सिंझ्या–सवार पिणघट जावती या कै चांदणी रातां में गांव–गवाड़ में रमती सांईनी साथणियां इसा कतारियां रै लोक–वाद्यां री धुनां सुणी कै वांरी राग में सुरीलौ गीत सुण्यौ अर मन ई मन निरणै लेय'र आपस में सल्लासूत करली कै गावणियौ बजावणियौ जे म्हारी जात रौ व्हैला तौ म्हैं उणसूं परणीज जाऊंलां। गायोड़ै गीतां री रागणी अर लोक–वाद्यां री सुरीली धुनां रै पांण इसा ब्याव भी अठै खासा भला व्हिया है। इण प्रदेस री गायां, ऊँटा या कै बकरियां–लरड़ियां रै गळै बांधोड़ी घंटियां सूं भी न्यारी–न्यारी धुन या कै टोकरियां रा टणकारा सुणीजै, जिणनै सुण–सांभळनै साळस लोग पतौ लगायलै कै औ पसुधन किसै गांव रौ है ? न्यारी–न्यारी अेवड़ां पर ऊँटां रै टोळां रा टणकारा खास तरै री सुर लहरी में वांरै निजूपणै री पिछांण करावै। निजूपणै री ओळखांण करावणिया इसा टणकारां गमियोड़ै ओठारू (जानवरा) नै पाछौ लधायदैवै। आं रै धुन री दिस में जायनै मालिक आपरै धनरी खोज करलैवै। राजस्थान

में गीतां–गाथावां रै साथै कै अलग आपै–तापै कितरा लोक–वाद्य बजाईजै, वां मांय सूं कुछैक प्रसिद्ध लोक–वाद्यां री बिगत इण भांत है।

14.2 लोक–वाद्यां रा प्रकार

राजस्थान रा लोक–वाद्य भारत ही कांई आखै संसार में चावा। आं री संगीत रै क्षेत्र में अेक न्यारी–निरवाळी ओळखांण है। संगीत री दीठ सूं अर बजावण–गत री दीठ सूं राजस्थानी लोक–वाद्यां नै इण मुजब न्यारी न्यारी कोटियां में राख सकां।

14.2.1 घन–वाद्य

इण वर्ग में गिणाईजणिया वाद्यां रौ निर्माण पीतळ, तांबै, जस्तै या इणी भांत री कै आं सूं मेळ खावण वाळी किणी धातु सूं करीजै। इसा लोक–वाद्यां माथै हाथ, चिमटै कै डंडै सूं आघात करनै या चोट करनै या थाप देयनै इणानै बजाईजै। श्रीमंडळ, मजीरा, टंकोरौ, चींपियौ इत्याद इसा इज लोक–वाद्य है।

14.2.2 अनुरूद्ध वाद्य

अै लोक–वाद्य ताल सूं बजाईजै। इण वर्ग रा थोड़ाक लोक–वाद्य अेक कांनी सूं मंढीयौड़ा व्है अर कुछैक लोक–वाद्य दोनूं कांनी सूं मंढीयौड़ा व्है। ढोल, ढोलक, नगाड़ा, चंग इत्याद राजस्थानी लोक–वाद्यं इण श्रेणी रा चावा लोक वाद्य है।

14.2.3 'सुषिर वाद्य' (फूंक–वाद्य)

इसा लोक–वाद्यां में ठौड़ ठौड़ ठींडा या कै बेझका (छेद) व्है। बजावणवाळौ आं ठींडां (छेदां) में फूंक मारनै आं लोक–वाद्यां नै बजावै। इसा राजस्थानी लोक–वाद्यां में पूंगी, मुरला, सतारा इत्याद रा नांव गिणाया जा सकै।

14.2.4 तार–वाद्य

इसा लोक–वाद्यां में अेक या कै अेक सूं ज्यादा तार लागोड़ा व्है। बाजौ बजावणियौ इसा वाद्यां में लागोड़ा तारां नै झंकृत करनै बजावै। सारंगी, वीणा, रावणहत्थौ इत्याद राजस्थानी लोक–वाद्य इणी'ज वर्ग रा लोक–वाद्य गिणीजै।

14.3 प्रमुख राजस्थानी लोक–वाद्य

राजस्थान प्रदेस में लोक–गीतां, लोक–गाथावां, लोक–नाट्यां, लोक (नृत्यां) नाच साथै कैई भांत रा लोक–वाद्यां रौ उपयोग व्है। इणरै टाळ कैई वार आपरै अेकांत रै सूनैपणै नै मेटण सारू भी कोई अेवाळियौ निकेवळौ लोक–वाद्य बजाय'र इज राजी हुय जावै। इण प्रदेस रा खास–खास लोक–वाद्यां री ओळखांण इण भांत कराईज सकै–

14.3.1 कमायचौ

इणमें तार लागोड़ा व्है पण बिना परदै रौ व्है। इणनै कबाण सूं इज बजाय सकां। इणमें अेक तूंबौ व्है, जिण माथै चमड़ै री पतळी झिल्ली लागोड़ी व्है। इणरी घुरच (घोड़ी) बोहत चौड़ी व्है, जिण माथै तार लागोड़ा व्है। कुल 9 तारां मांय 4 मुख्य तार बटियोड़ी तांत रा व्है अर बाकी रा 6 तार स्टील रा व्है। इण लोक–वाद्य

री कुल लंबाई 75 से.मी. व्है। आथूणै राजस्थान रैवासी लंगा जात रौ औ प्रमुख लोक–वाद्य है।

14.3.2 खंजरी

औ वाद्य (बाजौ) डमरू रै प्रकार रौ वाद्य है। इणरौ ढांचौ लकड़ी सूं बणियोड़ौ व्है, जिण माथै बकरी री खाल मंढीयोड़ी व्है। इणनै अेक हाथ सूं पकड़नै दूजै हाथ री हथेळी अर आंगळियां सूं बजाईजै। इण वाद्य में खाल रै तनाव नै कम–बत्तौ करण रौ कोई तरीकौ नीं व्है। काळ–बेळिया अर जोगी जनजाति रा लोक गीत अर निरत सागै इणनै बजावै।

14.3.3 घुराळियौ

औ बांस रौ बणियोड़ौ व्है। औ वाद्य मोरचंग नांवै लोक वाद्य सूं खासौ भलौ मेळ खावै पण इणरौ किनारौ रस्सियां सूं बण्योड़ौ व्है। आं रै आपस में टकरावण सूं भांत–भांत री ध्वनियां निकळै। आंगळियां रै सहारै इणनै बजाइजै। गरासिया अर काळबेलिया जात रा लोग इणनै घणौ बजावै।

14.3.4 सारंगी

जकौ वाद्य सारंगी नांव सूं ओळखीजै, राजस्थान में उणरा कैई प्रकार है, जिका नीचै मुजब है–

14.3.4.1 गुजरातण सारंगी

औ तारां रौ अर बिना परदा रौ वाद्य है, जिणनै नखां सूं बजाइजै। इणमें कुल च्यार तार व्है। आं में दोय बटीयोड़ी तांत रा अर दो स्टील रा व्है। इणमें नौ रतबां व्है, जकी जींवणी कांनी खूंटियां सूं बंधियोड़ी व्है। इण वाद्य री कुल लंबाई अट्ठावन से. मी. व्है। लंगा जात रा लोग इणनै बजावै।

14.3.4.2 धांनी सारंगी

बिना परदा अर तारां वाळै इण लोक–वाद्य में लकड़ी रौ तूंबौ हुया करै। इणमें दोय तार स्टील रा अर दूजा दोय बटियोड़ी तांत रा व्है, पण मुख्य तार स्टील रा गिणीजै। इणमें कुल 14 रतबां व्है, ज्यां मांय सूं नौ तौ डांड माथै जींवणी कांनी अर पांच सांमी री खूंटियां सूं बंधीयोड़ी व्है। इणरी कुल लंबाई गुणपचास से. मी. व्है। इणनै कबांण सूं बजावै। जोगी जनजात रा लोग इणनै बजावै।

14.3.4.3 सिंधी सारंगी

आ सारंगी भी तारां वाळी पण बिना परदै री व्है। कबांण सूं आ बाजै। इणमें च्यार तार व्है, ज्यां मांय सूं दोय स्टील रा अर दूजा दोय बटियोड़ी तांत रा व्है। प्रमुख तार स्टील रौ व्है। इणमें कुल इक्कीस रतबां व्है। आं मांय सूं सोळै जींवणी कांनी डांड सूं बंधियोड़ी व्है अर बाकी री पाँच डावी कांनी ऊपर खूंटियां सूं बंधियोड़ी व्है। डांड रै बिचाळै छेद व्है। इणरी कबांण

दूजी सारंगियां री कबांण सूं न्यारी तरै सूं हिलाईजै। लंगा जात रा कलाकार गीतां रै साथै संगत सारू इणनै बजावै।

14.3.4.4 जोगिया सारंगी

बिना परदै रौ तारां वाळौ औ वाद्य कबांण सूं बजाईजै। इणरै तूंबै माथै खाल मंढीयोड़ी व्है, जिण माथै घुरच राखीजै। तुनलकड़ी सूं इणनै बणावै। इणमें कुल च्यार तार व्है, ज्यां मांय सूं दोय स्टील रा अर दूजा दोय बटियोड़ी तांतरा व्है। इणरौ मुख्य तार बटियोड़ी तांत रौ व्है। इणमें ग्यारह रतबां व्है। जोगी सम्प्रदाय रा लोग आपरा धार्मिक चरित्रां री जीवणियां गावतां बखत इणनै बजावै। भरथरी अर गोपीचंद बाबत भजन भी इण माथै इज गाईजै। राजस्थान री कुछेक ठौड़ां माथै निहालदे–सुलतान लोक–गाथा रै साथै ई संगत सारू इणरौ उपयोग व्है।

14.3.5 चिकारा

इणरौ तूंबौ नारेळ री खोळ रौ बण्योड़ौ व्है अर डांड बांस री बण्योड़ी व्है। जिण माथै आंगळी राखनै इणनै बजाईजै। तूंबै माथै खालड़ै री झिल्ली–चढायोड़ी व्है। जकी खोळ रै साथै सींवीजै। इणमें तीन तार व्है। दो तार बटियोड़ै बाळां रा अर अेक तार स्टील रौ व्है। अै सगळा तीनूं ई तार तूंबै रै नीचै कांनी कील सूं बंधियोड़ा व्है अर ऊपर कांनी डांड सागै खूंटियां सूं बंधियोड़ा व्है। लकड़ी रै बणियोड़ै कबांण सूं इणनै बजावै। औ पैंसठ सैन्टीमीटर लंबौ वाद्य है। गडरिया इणनै घणै चाव सूं बजावै। मौर्य जनजात रा लोग भी इण वाद्य नै संगत सारू बजावै, पण उणरै रूप में थोड़ौ सौ' फरक व्है। इणमें कबांण रै साथै घंटी लागोड़ी व्है, जकी बजावतां बखत धुन में कीं फरक लखाय दै।

14.3.6 मोरचंग

इण लोक–वाद्य नै फूंक मारनै बजाईजै। इणरौ किनारौ लोह सूं बण्योड़ौ व्है जिण माथै भी लोह री अेक जीभ लागोड़ी व्है। डावै हाथ में किनारां नै पकड़नै जींवणै हाथ री आंगळियां सूं खांचनै इणनै बजाईजै। अेवड़ वाळां रौ औ प्रिय वाद्य है।

14.3.7 मुरला

इणनै बजावण सारू ई फूंक मारीजै। औ लोक वाद्य नाळीदार व्है। इणमें दोय पोली लकड़ियां री नाळियां व्है। हरेक नाळी में अेक सरकंडौ लागोड़ौ व्है। अेक नळी सूं धुन अर दूजी नळी सूं सुर निकळै। अै सरकंडा रूंखडै री पतळी सी लकड़ी रा बणियोड़ा व्है। जिण नळी सूं धुन निकळै उणमें तीन छेद व्है। जका मोम (मैण) री सहायता सूं निस्चित सुर मिळायदैवै। औ लंगां रौ प्रिय वाद्य है।

14.3.8 सुरिन्दा

इणमें तीन तार व्है– दोय स्टील रा अर तीजौ तांत रौ व्है। अै तार ऊपर खूंटियां सूं बंधियोड़ा व्है। इणरै टाळ 6 रतबां व्है। इणरौ तूंबौ खास तरै सूं झुकियोड़ौ व्है।

कबांण री सहायता सूं बजाईजै। कबांण में घूघरा लागोड़ा व्है। कबांण लय रै सागै–सागै घुमाईजै। लंगा जात रा लोग इणनै बजावै।

14.3.9 मादळ

औ ढोलक जिसौ लोक–वाद्य है। औ माटी सूं बणियोड़ौ सुच्चाकार आकृति रौ वाद्य है। इणरै ऊपर खाळड़ै री झिल्ली रस्सी (डोरी) सूं बंधियोड़ी व्है। इणमें ढोलक री भांत छल्ला लागोड़ा नीं व्है। गीलौ आटौ लगायां इणनै आछी तरै सूं बजाईजै। इणरी लंबाई पचास से. मी. रै लगैटगै व्है। भील अर गरासिया जात रौ औ घणौ प्रिय लोक वाद्य है। ओ लोक–नृत्यां साथै संगत सारू बजाईजै।

14.3.10 बरगू

इण लोक–वाद्य नै बजावण खातर ई फूंक मारणी पड़ै। औ पीतळ रौ बणियोड़ौ व्है। इणरी आकृति अंगरेजी रै आखर 'यू' (U) जिसी व्है। इणरौ अेक भाग बेलणाकार अर दूजौ भाग सुच्चाकार व्है। सुच्चाकार भाग आगै सूं कपनुमा व्है। इणमें 'इन्टेग्रेटेड माउथ पीस' (Integrated Mouth Piece) लागोड़ौ व्है। इण मांय सूं बोहत धीमौ सुर निकळै अर सुरां री संख्या ई सीमित व्है। इणरी लंबाई एक सौ चौबीस सै. मी. रै लगैटगै व्है। सरगरा जात रा लोग इणनै बजावै।

14.3.11 पाबूजी रा माटा

अै माटी रा बणियोड़ा दोय मोटा मोटा माटा व्है, ज्यां रै मूंडा रौ व्यास सैंतीस सै. मी. रै लगैटगै व्है। आं रै मूंडां माथै खालड़ै री झिल्ली तसमां सूं बांधियोड़ी व्है। अै हाथां सूं थाप मारनै बजाईजै। एक साथै दोय आदमी आंनै बजावै। दोनूं ई माटां सूं न्यारौ–न्यारौ सुर निकळै। आथूणै राजस्थान में थोरी/नायक जात रा लोग आंनै बजावै, जका पाबूजी रा साचा भगत गिणीजै।

14.3.12 बांकियौ

औ लोक–वाद्य पीतळ रौ बण्योड़ौ व्है। ढोल रै साथै–साथै ब्याव–सावै या कै मंगळीक आंणै–टाणै औ लोकवाद्य बजाईजै। सरगरा जातरौ औ खांनदांनी अर पारम्परिक लोक–वाद्य है।

14.3.13 दुकाळी

औ लोक–वाद्य भील जात रौ लोक–वाद्य गिणीजै। पोली बेलणाकार लकड़ी सूं बणाईजै। इणरै अेक किनारै माथै खाल मंढीयोड़ी व्है अर दूजौ किनारौ खुलौ व्है। खाल रै बिच में सूं अेक तार लगाईजै जकौ हाथ सूं इच्छानुसार लय निकाळतां बणाईजै। खासकर नै औ लोक–वाद्य दीवाळी रै मौकै बजाईजै।

14.3.14 डेरू

औ भी डमरू रै प्रकार रौ लोक वाद्य व्है। इणरै सिरां माथै खालड़ै री झिल्ली लागोड़ी व्है, जकी दोनूं कांनी कीलां सूं टंगियोड़ी थकी रस्सियां सूं बंधियोड़ी व्है। अेक कांनी लकड़ी री चोट करनै इणनै बजाईजै। इण भांत इण मांय सूं भांत–भांत री धुनां

बजाईज सकै। सपेरा, काळबेलिया अर दूजी जनजातियां रौ औ प्रिय लोक–वाद्य है।

14.3.15 पूंगी

खोखलै बांसड़े रा बरोबर लंबाई वाळा दो टुकड़ां सूं पूंगी बणाईजै, जिणमें अेक पत्ती लगाईजै। इणरौ नीचलौ भाग मोम (मैण) रा तूंबै सूं जुड़ियोड़ौ व्है। बाजणियौ भाग तूंबै रौ बढियोड़ौ भाग व्हिया करै। अेक खोखलै बांस मांय आंगळिया राखण सारू (पेरवा देवण सारू) पाँच सूं लेयर आठ तक छेद (बेझका) व्है। अेक बांसड़ै सूं मूळ धुन निकळै अर छेद वाळै बांसड़ै सूं भांत–भांत रा सुर निकळै। पूंगी रै निचलै भाग में अंगूठौ राखण सारू छेद व्है। धुन नै काबू राखण सारू कैई वार तीजै बांसड़ै रै टुकड़ै रौ ई उपयोग करीजै। जोगी जातरा लोग अर सपेरा भी इणनै घणै चाव सूं बजावै।

14.3.16 खड़ताळ

खड़ताळ लकड़ी सूं बणयोड़ी चौड़ी अर चपटी आकार री जोड़ी व्है, जिणनै लोक कलाकार हाथां में राखनै आपस में टकरायनै बजावै। इणमें पीतळ री गोळ पतळी प्लेटां भी लागोड़ी व्है। इणरै साथै इकतारै सूं भी संगत करीजै। लंगा जात रौ औ प्रिय लोक–वाद्य है। राजस्थान रै भगती–संगीत में इणरौ खास महत्त्व है।

14.3.17 जन्तर

औ तारां वाळौ अर पड़दै वाळौ वाद्य है। इणमें डांड रै दोनूं कांनी लकड़ी रा मोटा तूंबा लागोड़ा व्है। डांड माथै 14 हट्टी रा पड़दा मैण (मोम) सूं चेपियोड़ा व्है। इणमें दोय तार स्टील रा व्है, जिण मांय अेक मुख्य तार अर दूजौ चिकारी रौ व्है। इणरी लंबाई एक सौ चऊदै सै. मी. रै लगैटगै व्है। ऊपरी तूंबै नै कांधै माथै टेकनै अर डांड नै नीचै हाथ में पकड़नै आंगळियां सूं इणनै बजाईजै। औ लोक–वाद्य वीणा सूं खासौ मेळ खावै। कैई इलाकां में 'बगड़ावत' लोक–गाथा री प्रस्तुति बखत इणरी संगत दिरीजै। राजस्थान रा भोपा धार्मिक रचनावां सुणावती बखत भी इणनै बजावै।

14.3.18 रावणहत्थौ

औ तारां वाळौ इसौ लोक–वाद्य है, जकौ कबांण सूं बजाईजै। इणमें दोय तार मुख्य व्है। आं दोनां तारां में अेक–घोड़े रा बाळां सूं बणियोड़ौ व्है अर दूजौ तारां नै आपस में गूंथ'र (बट'र) बणायोड़ौ व्है। इणमें तीन/सात/ग्यारह सोळै तक तरबां हुय सकै। जकी सुद्ध सप्तक में मिळाईजै। इणमें अेक घोड़ी लागोड़ी व्है। मुख्य तार घोड़ी रै ऊपर सूं अर तरबां रा तार घोड़ी रै बिचाळै सूं निकाळीयोड़ा व्है। इण रा तूंबा नारेळ रै खोळ रा अर डांड बांस री बण्योड़ी व्है। इणरी खूंटियां लकड़ी री व्है। नारेळ रै खोळ माथै झिल्ली लागोड़ी व्है जकी मंढ़ीयोड़ी नीं हूय'र डोरी रै साथै बंधियोड़ी व्है। कबांण माथै घोड़ै री पूंछ रा बाळ व्है। कबांण सूं मुख्य तार बजाईजै। किणी–किणी कबांण माथै छोटी–छोटी घंटियां भी लागोड़ी व्है, जिणसूं न्यारी

–न्यारी सुर–लहरी सुणीजै। पाबूजी री पड़ बाचणिया भोपां रौ औ प्रिय वाद्य है।

14.3.19 नागफणी

औ तांबै सूं बण्योड़ौ व्है। इणरौ अेक भाग बेलणाकार खोखलौ व्है, जिणरौ मूंडौ घंटीनुमौ अर खुल्लौ व्है। इण माथै भांत–भांत री चित्रकारी करीजियोड़ी व्है। दूजौ भाग नुकीलौ व्है, जिणमें फूंक मारीजै। इणरी लंबाई एक सौ गुणसाठ से. मी. रै लगैटगै व्है।

14.3.20 रावळां री मादळ

औ हाथ री थाप देयनै बजाईजणियौ लोक–वाद्य है। इणरी झिल्ली में गजरौ लगाय'र डोरियां सूं कसीजै। आं डोरियां रै बिच–बिच में गांठां लागोड़ी व्है। औ लोक–वाद्य ढोलक सूं घणौ मेळ खावै। इणनै डावी कांनी गीलौ आटौ लगाय'र पछै बणाईजै। रावळ जात रा लोग रम्मत रा स्वांग लावतां अर साथै–साथै निरत करती बखत इणनै बजावै।

14.3.21 श्री मण्डल

औ तरंग वाद्य गिणीजै। इण सूं सप्तक रा सगळा सुर निकाळीजै। इणमें 12.5 सूं 20.5 सैंटीमीटर व्यास री पीतळ या कै लोह री प्लेटां अेक लोह रै फ्रेम में जड़ियोड़ी व्है। इणनै लकड़ी री दो छड़ां री सहायता सूं बजाईजै। आं छडां में आगै गांठां लागोड़ी व्है।

14.3.22 रमझोळ

अै अेक तरै रा घूघरा इज व्है पण सामान्य आकार सूं आं रौ आकार कीं मोटौ व्है। अै घूघरा खाळड़ै री अेक पट्टी माथै टंगीयोड़ा व्है। आ पट्टी पींडियां माथै बांधीजै। खास करनै होळी रै मौकै नाचणिया आपरी पींडियां माथै आं नै बांधनै घणै चाव सूं नाचै।

14.3.23 अलगोजौ

इण लोकवाद्य नै फूंक देयनै बजाईजै। इणनै दोवड़ी बांसुरी भी कैय सकां। ओ दो खोखली लकड़ियां सूं बणै। दोनां में 6 छेद (बेझका) व्है। दोनूं बांसुरियां री लंबाई 48 सें. मी. रै लगैटगै व्है। ज्यादातर ऊपर रा तीन छेद (बेझका) बंद करनै इणनै बजाईजै। अेवाळिया अर गवाळियां रौ औ प्रिय वाद्य है। अलवर जिलै री मेव जात रा लोगां रौ औ प्रिय वाद्य है। इणमें जे एक इज बांसुरी रौ उपयोग करीजै तो इणरौ राजसथानी नांव 'पेली' केईजै।

14.3.24 नड़

औ 'सुषिर (फूंक) वाद्य' है, जकौ फूंक देयनै बजाईजै। औ अेक खास तरै रै बांस (कगोर) सूं बणाईजै। इणरी लंबाई अेक मीटर रै लगैटगै व्है। इण खोखलै बांस में तीन छेद (बेझका) व्है। यूं औ सबसूं अबखौ लोक वाद्य है। सोरै सास हर कोई इणनै नीं बजाय सकै। नड़ बजावण वाळै खास जाणकार रै रूप में करणा भील

रौ नांव चावौ हुयग्यौ। अजीब ढंग सूं सांस नै रोकणौ अर खास ढंग सूं पाछौ इणरी नाळ में छोडण सूं इणमांय सूं स्वर अर सुर दोनूं ई सुणीजै। अेवाळियां रौ औ प्रिय वाद्य है।

14.3.25 भपंग

औ लोक–वाद्य तूंबी सूं बण्योड़ौ व्है। तूंबी नीचै सूं मंढ़ीयोड़ी व्है अर ऊपरली कांनी सूं इणरौ मूंडौ खुल्लौ व्है। इणमें चमड़ै (खालड़ै) रौ अेक पतळौ तार (तांत) लागोड़ौ व्है। तूंबी नै खाख में दबायनै राखीजै अर तांत नै हाथ में पकड़'र लकड़ी रै गुटकै सूं इणनै बजाईजे। मेव, जोगियां अर फकीरां रौ औ प्रिय लोक–वाद्य है।

14.4. सारांस

लोक निधि रौ नीं छेह है नीं पार। रंगीलै राजस्थान रा रंगीला लोक में इतरा अणूंता लोक–वाद्यां रौ समै सार उपयोग व्है, कै वां सगळां रा नांव मात्र गिणावणा ई अबखौ काम है। इण खातर इण इकाई में प्रमुख–प्रमुख लोक वाद्यां री ओळखांण कराईजी है। मोटा रूप सूं लोक–वाद्यां नै च्यार वरगां में गिणाय सकां–

1. घन–वाद्य
2. अनुरूद्ध वाद्य
3. फूंक वाद्य (सुषिर वाद्य)
4. तार–वाद्य

इण वर्गीकरण रै पछै इसा सगळा प्रमुख–प्रमुख लोक–वाद्यां रौ संक्षिप्त परिचय दिरीजियौ है, जका घणा चावा है। यूं तौ लोक री निधि माथै सगळां रौ ई बरोबर रौ हक व्है, पण जद राजस्थान रा लोक–वाद्यां रै उपयोग बाबत विचार करां तद आ बात सांमी आवै कै इण प्रदेस में बसण वाळी कैई जातियां इसी है, जकां रौ किणी खास लोक–वाद्य पर बापोती हक मानीजै। दूजी जात रा लोग उण लोक–वाद्य नै नीं बजाय सकै। ज्यूं कै 'बांकियौ' बजावण रौ काम सरगरा जात रा लोग इज पीढियां सूं करता आ रया है। वांरी रोटी उणरै साथै जुड़ियौड़ी है। इणी भांत कैई वाद्य किणी खास गीत या कै गाथा साथै हद भांत जुड़ियौड़ा। रावण हत्थै री संगत बिना 'पाबूजी री पड़' री प्रस्तुति अलूंणी लागै अडोपती लखावै। आं लोक वाद्या री बणगट अर आं रा आकार–प्रकार बाबत भी इण इकाई में खासी चरचा करीजी है। सार बात आ कै आं लोक–वाद्यां रै सामाजिक, सांस्कृतिक ऐतिहासिक, धार्मिक अर आर्थिक आं सगळा ई पक्षां नै उजागर करण री कोसीस करीजी है।

14.5 अभ्यास रा सवाल

1. लोक–वाद्य रौ म्यानौ समझावो।
2. लोक–वाद्य कितरी प्रकार रा व्है।
3. कोई सा तीन लोक–वाद्या रा नांव बतावौ, जका फूंक देयनै बजाईजै।

4. 'नड़' लोक–वाद्य पर टिप्पणी लिखौ।

5. 'पाबूजी री पड़' साथै घणकरी वार किसै लोक–वाद्य रौ उपयोग व्है ?

6. लंगा जात सूं संबंधित च्यार लोक वाद्यां रा नांव बतावौ।

7. 'श्री मंडळ' किण भांत रौ लोक–वाद्य है? इणरै आकार बाबत विचार व्यक्त करो।

14.6 संदर्भ ग्रंथ

1. Standard Dictionary of Folklore - Maria Leach
2. American Folklore (Introduction) Botkin
3. ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन – डॉ. सत्येन्द्र
4. कविता कौमुदी (भाग) – रामनरेश त्रिपाठी
5. मालवी लोक–साहित्य : एक अध्ययन – डॉ. श्याम परमार
6. लोक–साहित्य : स्वरूप और सिद्धांत – डॉ. एस.डी. चारण

इकाई – 15

राजस्थानी लोकसंस्कृति

15.0. उद्देस्य

15.1. प्रस्तावना

15.2. संस्कृति निर्माण री प्रक्रिया

15.3. संस्कृति री परिभासा

15.4. लोक–संस्कृति रौ स्वरूप

15.5. स्वाधीनता पूर्व राजस्थानी जन–जीवण

15.6. स्वाधीनता रै पछै रौ राजस्थान

15.7. राजस्थानी लोक–संस्कृति अर मेळा

15.8. राजस्थानी लोक–संस्कृति अर लोक–साहित्य

15.9. राजस्थानी लोक–संस्कृति अर लोक–धर्म

15.10. राजस्थानी लोक–संस्कृति अर करसा अर मजदूर

15.11. राजस्थानी लोक–संस्कृति में जथारथ रा दरसाव

15.12. राजस्थानी लोक–संस्कृति री चुनौतियां अर खतरा

15.13. सारांस

15.14. अभ्यास रा सवाल

15.15. संदर्भ – ग्रंथ

15.0. उद्देस्य

हर समाज री आपरी अेक न्यारी निरवाळी ओळखांण व्हिया करै। इण ओळखांण रौ मुख्य आधार व्है–उण समाज री संस्कृति। संस्कृति मांय कैई–कैई बातां अर तत्त्व समाहित व्है। अै बातां अर तत्त्व अेक पीढी दूजी पीढ़ी नै सूपै अर वां नै आपरा बेवार में बपरावण री भोळावण दैवै अर इण भांत–वे तत्त्व उण समाज री आछी परम्परावां रो रूप गिणीजण लागै। राजस्थानी प्रदेस रा रेवासियां री जीवण सैली, उणांरी धार्मिक मान्यतावां, उणांरा, रीतिरिवाज, वेसभूसा, खानपान, उणांरा लोक विस्वासां, देवी–देवता, पूजापाठ, साहित्य, टूणा–टोटकां रो ज्ञान करावणौ इण इकाई रो उद्देस्य है। आं सैंग तत्वां, विसयां, सोच–विचारां सूं ही राजस्थानी लोकसंस्कृति री रचना व्ही है। इसी ओपती राजस्थानी लोक संस्कृति रै ज्ञान बिनां इण प्रान्त री आत्मा री ओळखांण नीं व्है सकै।

1.5.1 प्रस्तावना

किणी भी अंचळ प्रदेस, जनपद भूखण्ड रा रेवासियां री लोक संस्कृति जरूर होवै। उण

प्रदेस रौ पुरातत्व, इतिहास परम्परावां इण बात रौ प्रमाण है। मिनख रै आदिकाल सूं लेयर आज तांणी लोकसंस्कृति रौ कोई न कोई रूप जरूर मिलै। मानखौ है तो उणरी संस्कृति भी है ओ अेक अकाट्य सत्य है। राजस्थान प्रदेस री संस्कृति रौ हमेस एकरूप नीं रियौ। प्रदेस री प्रकृति, रितुवां मौसम, प्राकृतिक बनावट बठै घटण वाली राजनैतिक–सामाजिक घटनावां, आर्थिक फेरबदल लोकसंस्कृति नै प्रभावित करै। लोकसंस्कृति रौ इण वजै सूं हमेस अेकरूप नी रैवै। संस्कृति कोई जड़ वस्तु नीं व्है। बगत रै बायरै रै साथै समाज रै सोच में भी बदळाव आवै अर इण बदळाव परवांण उण समाज री संस्कृति में भी बदळाव आय जावै।

15.2. संस्कृति–निर्माण री प्रक्रिया

ऊपर आ बात स्पस्ट हो चुकी है कै मिनख रै जनम रै सागै ही कीं संस्कार, प्रवृत्तियां, भावनावां रौ जनम हुय जावै। जिण प्राक्तिक–सामाजिक राजनैतिक परिवेस में मिनख रेवै वो परिवेस उणरा मन–मानस नै प्रभावित करै। इण स्यूं भी मिनख री संस्कृति निर्मित हुवै। राजस्थान भारत रो सैकड़ां बरस प्राचीन भूखण्ड है। इणरा प्राचीन इतिहास में जावां तो कैई नई–नई बातां, नई–नई जाणकारियां मिलै। सार रूप में आ कह सकां कै इण प्रदेस रौ इतिहास जितरौ पुराणौ है, उतरी ही इण री लोक संस्कृति पुराणी है। अेक वक्त हो जद अठै आदिवासियां रौ ही चौतरफ निवास हो। धीमे–धीमे राजतंत्र थापित हुयौ, उणरो विकास हुयौ। युद्ध हुया, सत्तावां बदली, न्यारा–न्यारा राज्य बण्या, नया–नया राजा महाराजा आया नै गया। देस आजाद हुयौ। आज राजस्थान भारत रौ अेक महत्वपूर्ण प्रदेस है–अठै लोकतंत्र है, जन रो राज है। इतिहास रै इणी बदलाव में आज इणरी लोकसंस्कृति है अर इण में भी बदलाव चालू है।

15.3. संस्कृति रौ अर्थ (परिभासा)

किणी भी सबद री खासकर किणी पारिभासिक सबद (Term) रौ ठीक–ठीक अर्थ अर उणरी सही–सही परिभासा देवणौ घणौ कठिन काम है। ओही कारण है कै अेक पारिभासिक सबद रा न्यारा–न्यारा अर्थ नै परिभासावां मिलै। विद्वान आपरै सोच नै अनुभव सूं न्यारा–न्यारा अर्थ लगावै। लोक संस्कृति दो सबदां रो संयुक्त रूप है – लोक अर संस्कृति। इण वास्तै पैली लोक सबद रो अर्थ समझ लेणो जरूरी है। लोक सबद रा भी कैई अर्थ है पण लोक रो अेक तात्विक अर्थ है जो लोक साहित्य, लोक संस्कृति, लोक कलावा, लोकधर्म रा संदर्भां में प्रयुक्त हुवै। लोक मिनखजात रो बो वर्ग है जो आभिजात्य संस्कार, सास्त्रीयता अर पाण्डित्य री चेतना अर अंहकार सूं मुक्त है अर जो आद–जुगाद परम्परा रा प्रवाह में जीवै। लोक री इण परिभासा अर अर्थ सूं आ नीं समझणो चाहिजै कै वो आदिम समाज, अभद्र समाज या गांवाई पिछड़ो समाज अर दीनहीन समाज है। भारतीय दीठ सूं लोक अर वेद में भेद है। जो वेद में नीं है, वो सब ज्ञान, बातां रा तत्व लोक में होवै। लोक अेक मोटा अर्थ वाळो सबद है। भारतीय ऋषि–मुनी, विद्वान, इण नै घणो आदर देवै। आभिजात्य, नागरिक अर सिष्ट समाज सूं इंणनै अलग मान्यौ गयौ है। आभिजात्य अर नागरिक समाज में सास्त्रीयता होवै, अहंकार होवै, सिरजण री चेतना होवै कै ओ काम, आ रचना म्हैं करी। ओ 'म्हैपणौ' लोक में नी होवै। लोक रो समाज सहज, सरल,

सुबोध होवै। वो सनातन परम्परा री धारा में रेवै।

इणी क्रम में संस्कृति सबद री रचना अर उणरै अर्थ नै समझ लेवणो चाहिजै। आंरी अर्थ–ध्वनियां पर भी विस्तार सूं विचार जरूरी है। ओ सबद यूं छोटो है पण इणरा अर्थ जटिल अर व्यापक है। ओ सबद मूलरूप में 'संस्कार' सूं निर्मित है। संस्कार रौ अर्थ है, आपणी मूलवृत्तियां, प्रकृति अर सभाव रौ परिस्कार, परिमार्जन अर्थात् वांरो सात्त्विक रूप। भारतीय दरसण अर धरमसास्त्र रा ग्रंथां में इण प्रक्रिया नै संस्कार कैवै। जिण मिनख में अे बातां होवे वो सुसंस्कृत मिनख कहीजै। अे सगळा संस्कार जद अेक थिर रूप ग्रहण कर लेवै तद संस्कारां रा इण नवां स्वरूप नै संस्कृति कयौ जावै।

ओ साररूप में संस्कार रा मूळ आधार सबद संस्कृति रौ अेक विवेचन हुयौ पण आज ज्ञान विज्ञान री दीठ अर प्रणालियां प्रचलित है। समाज सास्त्र, इतिहास नृतत्वसास्त्र, सौन्दर्य सास्त्र, पुरातत्व इत्यादि री दीठ सूं भी संस्कृति सबद पर घणी विचार–विवेचना हुई है। दरसण, साहित्य, संगीत, चित्रकला, स्थापत्य, हस्तसिल्प, मन्दिर स्थापत्य, मूर्तिकला आं सै विसयां अर कलारूपां में मिनख रो चेतन–अचेतन मानस सक्रिय अर रचनात्मक रैवै। वो सोचै, व्यवहार करै, रचना करै। इण सब कामा में मिनख रौ मनो–संसार फलित होवै। उणरी आस्था विस्वास, उणरा लोक विस्वास प्रगट होवै। विद्वान मांनै कै अे संस्कृति रा ही अंग है।

किणी भी तात्विक सबद री अंतिम परिभासा देवणो कठिन है। 'संस्कृति' नै विद्वान कैई भांत सूं देखी–परखी है। आं सबदां रा इण वास्तै कैई अर्थ मिलै, कैई परिभासावां मिलै। इण सबद माथै भारतीय मनीसियां रा भी विचार मिलै। वांरी दीठ में इणरो मूलरूप में आधार धर्माचार अर दरसण है। लारला सौ–डेढ़ सौ बरसां सूं आपणै देस रा विद्वान पस्चिम रा विद्वानां रै बौद्धिक प्रभाव में है अर वांरौ सोच विस्तृत भी है।

आज आ मान्यता है कै मिनख खुद संस्कृति रौ निर्माण करै–आ उणरी खुद री उपलब्धि है। इण सूं आ बात सिद्ध होवै कै मुनस्य री जैविकता संस्कृति निर्माण करै। संस्कृति पूरी तरै आनुवांसिक नीं होवै अर्थात् पारम्परिक भी होवै। आ मिनख री खुद री रचना है, उणरी खुद री उपलब्धि है। संस्कृति–अर्जन रै खातर मिनख नै कर्म करणा पड़ै, परिश्रम करणा पड़ै – साधना करणी पड़ै। जैविकता जिण भांत अेक आधार है, उणी भांत मिनख री सामाजिकता भी अेक आधार है पण अे ही सब कुछ नीं है। संक्षेप में संस्कृति री रचना में कैई मनोतत्व, कैई परिस्थितियां, कैई अवस्थावां, कैई घटनावां रैवै। संस्कृति इण सब रो मिल्योजुल्यो संगठित रूप है।

आपरी प्रसिद्ध पोथी 'लोक साहित्य विज्ञान' में लोक साहित्य रा विद्वान डॉ. सत्येन्द्र संस्कृति सबद नै ठीक सूं समझायौ है। हरेक प्रकार रो उत्पादन, प्रजनन, धर्म, दरसण, अर्थाजन रा साधन, जादू टोना, तंत्रमंत्र, जीवनचर्या रा साधन विलास री चीजां, कलाकौसल आं सब संस्कृति रा तत्त्वां नै आं तीन चरणां में राख सकां हां –

(1) संस्कृति मिनख री चर्या री अेक प्रणाली है।

(2) वा अेक खास काल और मिनख समूह री है। संस्कृति किणी अेक मिनख री प्रतिभा

री उपलब्धि नीं है।

(3.) संस्कृति अेक समूह या समाज में प्रचलित रेवै अर अेक परम्परा रौ निर्माण करै। वा परम्परा ही जीवन रो आधार बण जावै। आ बात कही जा सकै कै संस्कृति किणी मनुज समाज री लम्बी साधना रौ अेक प्रगट रूप है।

संस्कृति रै बराबर या इणरै समानान्तर सबद ओर है वो है सभ्यता। कैई विद्वान सभ्यता नै संस्कृति रौ पर्याय मानै, पण दरअसल औ पर्याय है कोनी। दोन्यूं सबद न्यारा–न्यारा अर्थ राखै। समाजसास्त्री टाइलर अेड़ा ही विद्वान है जो दोन्यूं सबदां ने अेक ही मानै। इणरौ कारण है संस्कृति अर सभ्यता में जो वस्तुगत तत्व है, जो आसय है वे कीं अर्थां में समान सा लागै। डॉ. देवराज जो बहुत बड़ा दार्सिनिक, विचारक अर लेखक हुया – वे संस्कृति री परिभासा करता कैवै कै – 'मिनख रै व्यक्तित्व अर जीवण नै समृद्ध करबा वाळो चिन्तन, क्रियाकलाप सिरजण अथवा उणरा मूल्य संस्कृति है।'' सभ्यता में भी कीं अेड़ा ही तत्व होवै पण आ बात सब संस्कृति रा विद्वान स्वीकार करै कै सभ्यता मूलरूप सूं व्यक्ति रा बाहरी व्यवहार अर आचार–विचार है जिणमें उणरो सरीर ज्यादा सक्रिय रैवै। संस्कृति मूळरूप सूं मिनख री प्रकृति अर उणरै मनोजगत रो फळ है। खुद टाइलर भी आगै आ बात मानै। बे संस्कृति ने यूं परिभासित करै – 'आ अेक जटिल इकाई है जिण में ज्ञान, विस्वास, कला, आचार, विधि, रीति अर दूजी बै सब क्षमतावां अर अभ्यास सामिल है जो मिनख अेक समाज रा सदस्य रूप में उपलब्ध करै। इणसूं आ बात सिद्ध होवै कै संस्कृति सामाजिक परम्परा सूं उपलब्ध चिन्तन, अनुभव अर व्यवहार है। इण परिभासा नै सभी विद्वान स्वीकार करै। साररूप में आ कह सकां कै संस्कृति आन्तरिक अर मूल्य आधारित होवै।

15.4. लोक–संस्कृति रौ सरूप

अबै संस्कृति सबद नै लोक रै साथ जोड़र लोकसंस्कृति रो अर्थ समझायौ जा सकै। 'लोक' सबद पर भी गहराई सूं विचार जरूरी है। इण सबद रा भी कैई अर्थ अर आसय है पण लोक रौ अेक तात्विक अर्थ भी है जो लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति अर लोककलावां रा प्रसंग में व्यवहार में आवै। अबै आ बात साफ हो जावै कै लोकसंस्कृति आभिजात्य अर नागरिक वर्ग री संस्कृति नीं होवै। बा साधारण, सीधा–सादा, मामूली लोगां री संस्कृति होवै–आ वां लोगां री संस्कृति होवै जका प्रकृति रै नजदीक रैवै। लोकसंस्कृति में बणावटीपण नीं होवै, कोई व्याकरण नीं होवै–अर्थात् लोकसंस्कृति में कोई कठोर नियम–अनुसासन नीं होवै। वा छळकपट सूं दूर हीयै सूं जुड़ी होवै। बा बन्धन मुक्त होवे। बठै कीं भेदभाव नीं होवै। उणमें खुलापन होवै। लोकसंस्कृति में सर्वत्र स्वाभाविक जीवण रा दरसण होवै। लोकसंस्कृति में लोकजीवन मौजूद रेवै। लोकसंस्कृति रौ इतिहास उतरौ ही पुराणो है जितरो मानव जीवण रौ इतिहास।

लोकसंस्कृति रै सम्बन्ध में अेक बात और ध्यान राखबा री आ है कै आ किणी अेक जाति, किणी अेक कालखण्ड, किणी अेक क्षेत्र तक सीमित नीं होवै, आ विराट होवै, सर्वव्यापक होवै। जठै–जठै मिनख है बठै–बठै लोकसंस्कृति विद्यमान रेवै। जिण काल में भी जो मिनख

रियौ बठै उणरी लोक संस्कृति भी रैयी। ई सूं आ बात स्पस्ट होवै कै लोकसंस्कृति रो विभाजन नीं हो सकै, नीं किंणी अेक लोकसंस्कृति नै दूजी लोकसंस्कृति सूं कमजोर या हीन कह सकां। ओ अेक सनातन स्थाई भाव है। आप किणी भी देस, क्षेत्र, जाति कालखण्ड री लोकसंस्कृति उठा'र देखल्यो उणरा लोकतत्व, लोकआस्था, आचरण, रीतरिवाज करीब–करीब समान मिलेला। वांरा नांव दूजा हो सकै, वांनै मनाबा का तौर–तरीका दूजा हो सकै क्यूंकै लोक संस्कृति भौगोलिक परिवेस में जनम लेवै अर रूप ग्रहण करै।

लोक संस्कृति रा प्रसंग में कीं और बातां री जाणकारी भी जरूरी है। **ओ विसय इतरो सरल सहज कोनी जित्तो दिखाई देवै।** संस्कृति रो मतलब मूलरूप सूं संस्कारित होणो है। लोकचित जद संस्कारित हू जावै तद् वो लोक संस्कृति री कोटि में आ जावै। भासा प्रकृति, परिवेस अे सब लोकसंस्कृति रा कारक है। अठै आ बात भी याद राखण जोग है कै 'लोक' अर 'संस्कृति' अै दो न्यारा–न्यारा सबद है। लोक सबद संस्कृति सबद सूं सैकड़ां बरस पुराणो है। संस्कृति सबद रौ सबसूं पैली प्रयोग यजुर्वेद में मिलै अर लोक सबद भी सबसूं पैली ऋग्वेद में मिलै। 'लोक' आदिमानव री पृथ्वी विसयक चेतना रै रूप में काम में आयौ है अर संस्कृति मानखां री संस्कारित चेतना रो परिणाम है। संस्कृति सबद आधुनिक सबद 'कल्चर' रौ अनुवाद मानीजै पण बात आ कोनी। इण रा सही अर्थ अर परिभासा खातर लोक रा इतिहास अर परम्परा री जाणकारी जरूरी है। लोक बीज रूप में मिनख रा जीवण, उणरा आचार–व्यवहार उणरा चिन्तन में जरूर रेवै–वो कदी विलुप्त नीं होवै। अठै आ बात सदैव याद राखणी चाहिजै कै लोक पैलो अर संस्कृति दूजो सबद है। 'लोक' अर 'लोक संस्कृति' रा तत्व अथर्ववेद में जिण रूप में मिलै भारतीय साहित्य अर विस्वसाहित्य री किणी पोथी में नीं मिलै। अथर्ववेद में अेक महत्वूपर्ण ऋचा आवै 'माता भूमिः पुत्रः अहं पृथिव्या'। इण मंत्र सूं लोक अर संस्कृति रौ परस्पर सम्बन्ध सिद्ध होवै। लोक, भूमि पर पृथ्वी दोन्यां रै बीच में खड़ो हो'र खुद नै दोन्यां में बराबर बांट देवै।

लोक अर लोक संस्कृति सबदां रा अर्थ अर परिभासावां पर विस्तार सूं ऊपर चर्चा हुई है। राजस्थानी लोक संस्कृति नै सही–सही अर्थां में समझण खातर ओ विस्तृत विवेचन जरूरी हो। कई सबद देखण में छोटा लागै पण जद वांरा अर्थ अर परिभासावां री तह में जावां तौ कई तात्विक–वैज्ञानिक बातां री जाणकारी मिलै। आ बात अबै साफ हो जाणी चाहिजै कै लोक अर लोक संस्कृति री जाणकारी इतिहास अर परम्परा री जाणकारी बिना संभव नीं।

15.5. स्वाधीनता पूर्व राजस्थानी जन–जीवण

राजस्थानी लोक संस्कृति रौ अेक लम्बो इतिहास अर लम्बी परम्परा है। राजस्थान री भूमि पर जद मिनख रौ जनम हुयौ या यूं कैवां कै जद इण माथै मिनख रा पग मंडणा व्हिया, उणरी संस्कृति री रचना रौ प्रारम्भ भी उणी घड़ी सूं होयग्यौ। राजस्थान री लोक संस्कृति नै सही अरथां में समझण खातर इणरी राजनैतिक अर भौगोलिक रचना री कीं जाणकारी जरूरी है।

राजस्थान भारत रौ अेक विसाल भूखण्ड है। भारत री आथूणी सीमा रै लगोलग पाकिस्तान

री सीमावां है। हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेस, गुजरात, मध्यप्रदेस इणरी, च्यारूं कांनी सीमावां रै लगोलग है। उत्तर सूं दिक्खण में पसर्‌योड़ौ अरावली परबत इणनै दो भागां में विभाजित करै। पस्चिमी भाग में थार रेगिस्थान है। दक्षिण पूर्वी–उत्तरी भाग में काफी सरसता है, नदी–नाळा है, बड़ी–बड़ी नदियां है। ओ भाग हर्‌यौ–भर्‌यौ है।

स्वतंत्रता रै पैली राजस्थान राजपूताना रा नाम सूं जांणीजतौ। अंग्रेजां रै राज में इणरौ ओही नाम हौ। राजपूतानां में तद छोटी–मोटी इक्कीस नेड़ी रियासतां ही, ठिकाणा हा, जमीदारी प्रथा ही, जागीरी ही। कैवण रौ अर्थ औ कै राजस्थान छोटा छोटा अंचलां में बंटेड़ौ हो। आं अंचला री बोलियां, विभासावां भासावां न्यारी–न्यारी ही। आं अंचलां री प्रकृति में भी कीं फरक हो। ऊपर आ बात साफ हो चुकी है कै मिनख री संस्कृति रौ निर्माण, भूगोल, प्रकृति, भूमि, इतिहास राजनीति करै पण आर्थिक अवस्था भी अेक कारक तत्व है। स्वतंत्रता रै पूर्व आं रियासतां में रैवणवाळा लोगां रौ आवागमन, सामाजिक सम्बन्ध आपस में मिलबो–जुलबो घणौ सीमित हो। इण वास्तै आ बात कही जा सकै कै आं रियासतां में रैवणवाळा लोगां री संस्कृति, रीतरिवाज, आस्था–विस्वासां, पहनाव खांणपांन में कीं फरक हौ। आ सार बात कही जा सकै कै राजपूतानां में लोक सास्कृतिक अेकता रौ अेक अनूठौ अर खास भांत रौ सरूप विकसित व्हियौ। इण तथ्य नै ध्यांन में राख नै इण राजस्थानी संस्कृति री ओळखाण कर सकां।

15.6. स्वाधीनता रै पछै रौ राजस्थान

स्वाधीनता रै पछै धीमे–धीमे राजस्थान रौ अेकीकरण हुऔ–आ प्रक्रिया लम्बी चाली। कालक्रम में राजस्थान अेकीकृत हो'र अेक प्रान्त बणग्यौ। प्रदेस में नवी जीवण–पद्धति विकसित व्ही। प्रसासनिक अेकता, सामाजिक अेकता, परस्पर आवागमन, सामाजिक–जातीय सम्बन्धां रौ नुंवो सिलसिलौ सरु हुयौ–सिक्षा रौ प्रचार–प्रसार, सामाजिक जागृति, आर्थिक विकास, आवगमन रा नुवां–नुवां साधन, पंचायती राज, ग्राम्य जीवन में बदलाव कैवण रौ अर्थ औ कै अबै राजस्थान रौ जनजीवण अेक संगठित इकाई रै रूप में निर्मित होवण लाग्यौ। पूरा प्रदेस में अेक नई जागृति आई। राजस्थान आज अेक संगठित राजनैतिक–भौगोलिक इकाई रै रूप में चौमुखी विकास कर रियौ है।

राजस्थान री लोक संस्कृति नै इण सम्पूर्ण वर्तमान वातावरण में समझणौ अर्थ पूर्ण है। लोक संस्कृति रा तत्वां रौ उल्लेख ऊपर हो चुक्यौ है। लोक साहित्य री सगळी विधावां, लोक कलावां, लोक नीरत, लोकनाट्य, लोकधर्म, लोकदेवी–देवता, मेळा–खेळा, टूणां टोटका, मंत्र तंत्र, लोकानुस्ठान, लोकपर्व, लोकत्यौंहार, जन्म, मरण, विवाह, लोक विस्वास, लोकभासा, लोकतीर्थ अै सब लोक संस्कृति री रचना करै। आं तत्वां नै दीठ में राखतां हुया राजस्थानी लोक संस्कृति पर विचार करां तौ लागै कै आ संस्कृति न सिर्फ सुन्दर मनभावन है वरन् आ समाजसास्त्र, दरसणसास्तर, साहित्यसास्त्र, कलासास्त्र सब दीठ सूं विसाळ है, महत्वपूर्ण है। सास्त्रां में जफा जीवण रा सोळह संस्कारां रौ उल्लेख मिलै वां संस्कारां रौ पालन–अनुपालन राजस्थान रा लोकजीवण में लोकपद्धति सूं हुयौ। आं मौकां रा लोकगीत, अनुस्ठान, टूणा टोटका, रीतरिवाज पूरा राजस्थान में भरपूर मिलै। चाहै मारवाड़ अंचल हौ, चाहै सेखावाटी, चाहै मेवाड़, हाड़ौती अर भलाई मेवात। आं मौकां माथै लोग लुगायां

नाचै–गावै, नुवां–नुवां गामा–गहणा पैरै भांत भांत री मिठायां बणावै। खास उल्लेख जोग विसेसता आकै अै सब संस्कार सामूहिक रूप सूं मनाया जावै। लोक में सदैव सामूहिकता रौ भाव व्हिया करै।

15.7. राजस्थानी लोक संस्कृति अर मेळा

राजस्थानी लोकसंस्कृति लोकपर्वां, लोकत्योंहारां मेळां–खेळा री संस्कृति है। पूरै साल कोई लोकपर्व, कोई लोकत्योंहार, कोई लोक मेळो चालबो ही करै। चैत रा महीनां सूं फागण तांई, कोई इस्यो पखवाड़ो या महीनो नहीं जद कोई न कोई पर्व–त्योंहार नीं होवै। सीतलास्टमी, गणगौर, आखातीज, हरियाली अमावस, छोटी तीज, बड़ी तीज, राखी, गणेस चौथ, श्राद्ध, दुर्गास्टमी, सरदपूर्णिमा, दसरावो, दीवाळी, संकरात, सिवरात्रि, होळी–इण भांत अनेक तीज–त्योहार अर पर्व पूरे साल चालै। आं पर्वां, तीज–त्योहारां माथै लोकगीत, हरजस इत्याद तौ गाया ही जावै–मौका मौका माथै यां सूं जुड़ियौड़ी लोक कथावां भी महिलावां समूह में बैठनै कैवै। भांत–भांत सूं पूजा–अनुस्ठान हुवै।

15.8. राजस्थानी लोक संस्कृति अर लोक–साहित्य

राजस्थानी लोकसाहित्य लोक संस्कृति रौ अेक रूप ही है। राजस्थानी लोकगीत, लोककथावां, लोकनाट्य राजस्थान रा लोकजीवन नै पूरी तरह सूं दरसावै। लोककथावां रा कैई रूप मिलै, लोकगीतां रा भी घणा रूप मिलै अर लोकनाट्यां रा भी। प्रेम, सौन्दर्य, भक्ति–धर्म, दर्सन वीरता, सामाजिक बुराइयां–अे सब इण साहित्य में मिलै। इणी भांत राजस्थानी लोकोक्तियां अर कहावतां में लोकजीवन री मानिसकता उजागर होवै। तंत्र–मंत्र, टोटकां री बातां भी अठां रा लोक–साहित्य में वर्णित है। इणसूं लखावै कै मिनख कितरौ ही पढ़–लिख जावै, सभ्य–सुसंस्कृत हो जावै, वो लोकमानस सूं कदी मुक्त नीं हुय सकै। इणी वजह सूं आज भी राजस्थान रा लोकजीवण में नाना प्रकार रा लोक विस्वास, अर अंध विस्वास मौजूद है। अठांतक कै बलिप्रथा रा समाचार भी पढण में आवै।

15.9. राजस्थानी लोक संस्कृति अर लोक–धर्म

राजस्थानी लोक संस्कृति में लोकधर्म रौ गहरौ स्थान है–पसु–पक्षियां री पूजा, रूंखां री पूजा, नाग पूजा, पथवारी पूजा, सतियां–साधुवां री पूजा इत्याद आज भी विद्यमान है अर। लोक जीवन प्रकृति रै निकट रैवै। सूरज, चांद, तारा अर रितुवां सब लोक रै वास्तै पूजनीय है। रामदेवजी, तेजाजी, हड़बूजी, पाबूजी, केसरिया कंवर जी अै राजस्थान रा लोकदेवता है। आंरी पूजा–अर्चना लोक में पूरी आस्था रै साथ होवे। आं देवतावां री पूजा राजस्थान में रैवण वाळी सभी जातियां करै। अै लोकदेवता साम्प्रदायिक सद्भाव रा प्रतीक है। नदी, नाळा, कुआ, तळाब, सरोवर सबरी पूजा अठै रौ लोक करै। आ लोक आस्था प्रकृति रै सागै लोक रा अटूट सम्बन्धां नै दरसावै।

15.10. राजस्थानी लोक–संस्कृति में करसा अर मजदूर

खेती आज भी राजस्थान रौ मुख्य धन्धौ है। खेती सूं सम्बन्ध राखण वाळां अनेक लोकगीत, अनेक लोककथावां, मुहावरा लोकोक्तियां मिलै अर आं में करसां रै लोक जीवण रा दरसाव

हुवै। वांरी वेसभूसा, खाण पाण रहन सहन, रीतरिवाजां रौ पता लागै। घणी श्रमिक जातियां राजस्थान में रेवै–जियां कुम्हार, खाती, लुवार नै सुनार आदि। आं जातियां रै जीवण रा कामकाज भी राजस्थानी रा लोक साहित्य में मिलै। संक्षेप में आ बात कही जा सकै कै राजस्थान रा सामाजिक जीवण रा यथार्थ नै अगर समझणौ है तौ अठांरी लोक संस्कृति नै समझणौ जरूरी है।

राजस्थान में सदियां तांणी राजा–महाराजां रौ राज रह्यौ। ठाकर रह्या जागीर प्रथा रही। इण तंत्र–व्यवस्था रौ प्रभाव लोकजीवण माथै पड़ियौ। सोसण, बेगार, उत्पीड़ण, त्रास राजस्थान रा रेवासी, राजस्थान रौ लोकसमाज सदियां तांणी भोगी है। इण तंत्र व्यवस्था रा कीं रीतरिवाज हा, कीं नियम हा, कीं सिद्धान्त हा। अे सब लोकजीवण नै प्रभावित करता। राजा–महाराजा, अर जमीदारां, रा हुकम मानणा पड़ता। आज राजस्थान पूरौ स्वतंत्र है, अठै लोकतंत्र है पण राजस्थान रा लोकजीवण मै इण सामन्ती व्यवस्था रो प्रभाव थोड़ो–बहुत आज भी मौजूद है। राजस्थान रो लोकमानस इण प्रभाव सूं आज भी पूरी तरह मुक्त नी है। राजस्थानी लोक संस्कृति में भी ओ प्रभाव देख्यौ जा सकै।

15.11. राजस्थानी लोक–संस्कृति यथार्थ–निरूपण

लोक संस्कृति रै बाबत अेक बात सदैव याद राखणी चाहिजै कै लोक संस्कृति रौ निर्माण खुलापण में होवै, मुक्त वातावरण में होवै, प्रकृति रै बीच में होवै। आ किणी सास्त्रीय सिद्धान्तां रै बन्धन में नीं रेवै। आ स्थिर अर जड़ भी नीं रेवै। समय रा परिवर्तन रै सागै लोग संस्कृति में परिवर्तन री प्रक्रिया चालू रेवै। व्यक्ति–जीवण, समाजिक जीवण, सासन, तंत्र व्यवस्था रौ प्रभाव निरन्तर इण माथै पड़तौ रेवै। सामाजिक जीवण रौ घोर यथार्थ राजस्थानी लोक संस्कृति में देखण नै मिलै। मिनखां रा सम्बन्ध, यौन सम्बन्ध, बूढ़ौ पति अर जवान पत्नी, देवर–भाभी रा सम्बन्ध अै सब चित्रांम राजस्थानी लोक संस्कृति में दिखाई देवै। लोक समाज में जकी बुराइयां मौजूद होवै वांरौ चित्रण भी लोक संस्कृति में मिलै। संक्षेप में आ कही जा सकै कै लोक संस्कृति लोक समाज रौ दर्पण है। राजस्थान रा लोकजीवण नै समझणे व्है (सही–सही अर्थों में) तौ इणरी लोकसंस्कृति नै समझ लेवणौ चाहिजै। लोक संस्कृति में समाज रौ अतीत, वर्तमान अर भविस्य तीन्यूं बखत मौजूद रेवै।

राजस्थान रै लोक समाज रा तीन स्तर साफ है – एक जंगळ में रेवण वाळौ समाज अर्थात् आदिवासी समाज, दूसरौ पसुपालण करण वाळो समाज, तीसरौ है खेती आधारित समाज। अेक छोटौ सौ समाज ओर है जको विणज करै, नौकरी–चाकरी करै या दूजा व्यवसाय करै। राजस्थानी लोक संस्कृति में इण सम्पूर्ण समाज रै कामकाज रा लेखा है। न्यारा–न्यारा होता हुवां भी इणमें अेकरूपता मौजूद है। राजस्थानी लोक संस्कृति साहित्य दर्सन, धर्म, समाज, व्यक्ति, देस काल री दीठ सूं अेक सम्पूर्ण लोक संस्कृति है।

15.12. राजस्थानी लोक संस्कृति री चुनौतियां अर खतरा

यूं तौ अेक अमिट सत्य है कै जद तांई मिनख रेवै, मिनख री संस्कृति रेवै पण जुग परिवर्तन रै साथ उणरै आगै कैई खतरा, कैई चुनौतियां भी आवै। भणाई रै प्रसार–प्रचार रै सागै मिनख री बुद्धि रौ भी विकास हुवै, वींरौ सोच बदलै, चिन्तन बदलैं इण अर्थ में आधुनिक

सिक्षा भी लोक संस्कृति रै आगै अेक चुनौती है। इण रौ अर्थ औ नीं कै मिनख नै, या लोक नै सिक्षित नीं होणो चाहिजै। बुद्धि रा विकास रै सागै मिनख तार्किक होवण लागै, वो कई पुराणी मान्यतावां, विस्वासां, रीतिरिवाजां नै नकारण लागै। विज्ञान, उद्योग, प्रौद्योगिकी रौ विकास भी लोक संस्कृति रै आगै कैई सवाल खड़ा करै। दूररसण, मीडिया, टेक्नोलोजी रौ प्रचार–प्रसार भी लोक संस्कृति रै आगै नवीं–नवीं चुनौतियां अर खतरा खड़ा करै। आ अेक सच्चाई है। राजस्थान रा लोक जीवण में जको तेजी सूं परिवर्तन आ रह्यौ है, वो दिखाई देवै। आ बात सिर्फ राजस्थानी लोक संस्कृति माथै ही लागू नीं होवै सम्पूर्ण दुनिया री लोक संस्कृति पर लागू हो रही हैं। सोच बदल रह्या है, रीतरिवाज बदल रह्या है, खानपान बदल रह्या है, पौसाक बदल रही है। आज मिनख आधुनिक अर वैज्ञानिक होतो जा रह्यौ है पण अठै आ बात भी याद राखबो जरूरी है कै लोक में कदैई सम्पूर्णता खतम नीं होवै। ऊपरी तौर माथै परिवर्तन आवै, बदलाव आवै पण लोक रा अन्तर्मन में लोक जीवित रैवै। लोकमानस अेक सास्वत सनातन तत्व है चाहै दुनियां वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक असीम उन्नति कर लेवै–लोक हमेसा जीवित रेवैला।

15.13. सारांस

राजस्थान भारत रौ अेक घणौ पुराणौ, अतीत परम्परा रौ प्रांत है, इणरौ इतिहास घणौ महताऊ है। वीरता, भगती दरसण, धर्म, साहित्य, कला–सब विसयां में राजस्थान देस रौ अेक आगाऊ प्रदेस हैं। इण रा लोगां री संस्कृति सभ्यता पूरी दुनियां में प्रसिद्ध रही है अर आज भी है।

लोक अर संस्कृति सबदां रा अर्थ अर परिभासावां री चर्चा विस्तार सूं लारलां पानां में हो चुकी है। लोक मानव समाज रौ बो वर्ग है जको सहज, सरल, सुबोध है, जिण में सास्त्रीयता नीं होवै, पांडित्य नीं होवै, तर्क–बुद्धि रौ अंहकार नीं होवै। जको आपरी परम्परा में रेवै। इणी भांत संस्कृति मिनख रै अन्तर्मन रा संस्कारां रौ पुंज होवै।

वांरा विस्वास, धरम करम, देवी देवता, रीतरिवाज, आचार–विचार, कलावां, साहित्य, भक्तिभाव लोक संस्कृति री रचना करै। लोक संस्कृति स्थर नीं होवै। समय रै परिवर्तन सागै लोक संस्कृति में बदलाव आवै, पण कीं लोकतत्व अैड़ा होवै जो कदी भी नीं खतम होवै।

राजस्थानी लोक संस्कृति री आपरी सुन्दरता है, आपरौ महत्त्व है। सिर्फ भारत में ही नीं विदेसां में इण संस्कृति री तारीफ हुवै। ओही कारण है कै इण प्रदेस में विदेसी पर्यटकां रौ जमावड़ौ रेवै। भूमण्डलीकरण, निजीकरण विज्ञान, उद्योगधन्धा, तकनीक, प्रौद्योगिकी रा विकास रौ प्रभाव इण संस्कृति माथै पड़ै पण इणरा मूलतत्त्वां नै खतरौ नीं है। लोक संस्कृति अेक अर्थ में अजर–अमर रेवै।

15.14 अभ्यास रा सवाल

1. लोक अर संस्कृति सबदां रा अर्थ अर परिभासा समझावो ।
2. राजस्थानी लोक संस्कृति री विसेसतावां रौ उल्लेख करौ।
3. वर्तमान समय में राजस्थानी लोक संस्कृति री चुनौतियां अर खतरां माथै प्रकास डालौ।

4. स्वाधीनता पूर्व रै राजस्थान रै जन–जीवनण बाबत विचार प्रकट करौ।

5. लोक–संस्कृति अर लोक–साहित्य रौ कांई संबंध है? खुलासौ करौ।

15.15. संदर्भ ग्रंथ

1. लोक संस्कृति व अन्य निबन्ध – डॉ. रामप्रसाद दाधीच
2. समाज और संस्कृति – सम्पा. श्याम महर्षि
3. लोक साहित्य विज्ञान – डॉ. सत्येन्द्र
4. राजस्थानी लोक संस्कृति – श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत
5. राजस्थानी लोक संस्कृति – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत
6. राजस्थानी संस्कृति की रूपरेखा – मनोहर शर्मा।
7. लोक – साहित्य : सिद्धांत और स्वरूप – डॉ. सोहनदान चारण